अवधी व्रत-कथाएँ

इन्दुप्रकाश पाण्डेय

भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन

लोकोदय ग्रन्थमाला : ग्रन्थांक-२४६

सम्पादक एवं नियामक

लक्ष्मीचन्द्र जैन

Lokodaya Series Title No 246

AWADHEE VRATA KATHAYEN

(Belles Letteres)

INDUPRAKASH PANDEYA

Bharatiya Jnanpith
Publication

First Edition 1967

Price Rs. 6.00

भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन

प्रधान कार्यालय
९ अलीपुर पार्क प्लेस कलकत्ता २७

प्रकाशन कार्यालय
दुर्गाकुण्ड मार्ग वाराणसी ५

विक्रय-केन्द्र
३६२०/२१, नेताजी सुभाष मार्ग दिल्ली-६

प्रथम संस्करण १९६७
मूल्य ६.००

सन्मति मुद्रणालय
वाराणसी ५

ये अवधी व्रत-कथाएँ अवध क्षेत्र-
की उन सभी महिलाओंको सादर
समर्पित हैं जो अपनी समृद्ध
परम्पराओंको भूलती जा रही हैं।

• • •

प्रारम्भमें ऐसा विचार था कि इन व्रत-कथाओंके साथ लोक-कथाओं-का वैज्ञानिक अध्ययन भी प्रस्तुत किया जाये। इसके पूर्व मैंने अवधी लोकगीत और परम्परा नामक अपनी पुस्तककी भूमिकामें लोकगीतोंका समाजशास्त्रीय दृष्टिसे अध्ययन भी प्रस्तुत किया था। परन्तु अब मैं सोचता हूँ कि पुस्तकमें या तो व्याख्यासहित सामग्री ही प्रस्तुत की जाये या उस सामग्रीपर आधारित समग्र अध्ययन। दोनोंकि एक साथ होनेसे अनेक कठिनाइयाँ उपस्थित हो जाती हैं। अत प्रस्तुत ग्रन्थमें केवल सामग्री है अध्ययन पृथक ग्रन्थमें प्रस्तुत किया जायेगा। इन कथाओंके साथ उन तीज-त्योहारों अथवा अवसरों एव विधियोंको भी प्रस्तुत किया गया है जिनके बिना कथाओंका कोई विशेष महत्त्व नहीं है। ग्रन्थमें कुछ अल्पनाएँ भी प्रस्तुत की गयी हैं जो इन कथाओंसे घनिष्ठ सम्बन्ध रखती हैं।

जो सामग्री मैंने यहाँपर प्रस्तुत की है वह पूरे अवध क्षेत्रमें बिल-कुल ज्योंकी त्यों मिल जायेगी ऐसा दावा मैं नहीं कर सकता। अवध क्षेत्रमें ही इन कथाओं, अल्पनाओं एवं पूजाविधियोंमें अनेक प्रकारान्तर मिल जायेंगे। वस्तुत लोक-साहित्यमें प्रकारान्तरोंका अध्ययन भी एक बहुत रोचक विषय है। मैंने सैकड़ों घरोंमें जाकर अल्पनाओंको देखा है। स्थूलरूपसे समान अभिप्रायों और उद्देश्योंके होनेपर भी उनमें बहुत अन्तर है। ग्राम देवता, कुल देवताकी विविधताकी भाँति ही इन कथाओं और अल्पनाओंमें भी भेद हैं परन्तु फिर भी मूल प्रेरणा एक है।

प्रस्तुत ग्रन्थकी अनेक अल्पनाएँ मेरी बनायी हुई हैं। इन अल्पनाओंका यही एक विशेष दोष है। रेखाओंमें प्रौढ़ता एवं कठोरता आ गयी है, कुछ नागरिकता एवं परिष्कार भी आ गया है जिससे सच्ची अल्पनाओंकी सुकुमारतामें कमी आ गयी है। ऐसा करनेके लिए मुझे विवश होना पड़ा क्योंकि सभी अल्पनाओंके कोठरियोंमें होनेके कारण अच्छे चित्र नहीं लिए जा सके। ऐसी स्थितिमें मैंने अल्पना बनाना सीखा और ग्रामीण स्त्रियोंके निरीक्षणमें मैंने ये अल्पनाएँ बनायीं। इनका रूप बिलकुल प्रामाणिक है। जिस प्रकार इन अवधीकी कथाओंको सामान्य पाठकोंकी सुगमताके लिए खड़ी बोलीमें प्रस्तुत किया गया है उसी प्रकार अल्पनाओंको भी कुछ अधिक स्पष्टताके साथ प्रस्तुत करनेके लिए अच्छी तरहसे बनाया गया है। नागपंचमीके नागोंके बनानेके लिए निश्चित सूत्रोंका आधार आवश्यक है। महिलाएँ इन्हीं सूत्रोंके आधारपर इन अल्पनाओंकी रचना करती हैं। अनेक अल्पनाओंके लिए निश्चित सूत्र हैं। मैं सोचता हूँ कि अल्पनाओंका पृथक 'अलबम' तैयार किया जाये जिसमें इन सूत्रोंकी विस्तृत व्याख्या भी की जाये।

गीतोंकी अपेक्षा कथाओंका संकलन-कार्य अधिक कठिन है। गाँवों की स्त्रियाँ संगीतकी धुनमें मस्त होकर गीत सिखाती चली जाती हैं। ठीकसे न लिख पानेपर वे फिरसे उसी प्रकार दोहरा भी देती हैं। परन्तु उसी प्रकार वे इन कथाओंको बोलकर नहीं लिखा पातीं। लिखानेके समय वे स्वयं इतने सुधार करती जाती हैं कि मौलिक कथा का रूप काफ़ी परिवर्तित हो जाता है। जितनी कठिनाई इन कथाओंको एकत्र करनेमें मुझे हुई उतनी गीतोंको एकत्र करनेमें न हुई थी। वस्तुतः इन कथाओंको बार बार सुनकर याद करना पड़ा और फिर लिखना पड़ा। लिखनेके बाद मैंने खुद इन कथाओंको उन्हीं स्त्रियोंको सुनाया। वे सुनती जातीं और आवश्यक संशोधन बताती जातीं। दूसरोंकी भूल सुधारनेकी प्रवृत्ति सभीमें स्वाभाविक रूपसे होती है। अस्तु

ग्रामीण स्त्रियाने मेरी अनेक भूलोंको सुधारा। मैंने अनेक स्त्रियोंसे ये कथाएँ सुनीं और अन्तर भी पाये। परन्तु प्राय ये अन्तर बहुत साधारण या केवल विस्तार-सम्बन्धी थे। जहाँतक हो सका, मैंने कथाओंमें सर्वमान्य रूप ही प्रस्तुत किया है।

सन् ३२में शुरू किया कार्य धीरे धीरे अब पूरा हो रहा है। इन कथाओंके संकलनमें मेरे स्वर्गीय अनुज प्रेमप्रकाशने बड़ी सहायता की थी। दीर्घकालीन रुग्णताके कारण वह सदैव घरपर ही रहता था और सभी तीज-त्योहारोंमें मौजूद रहता था। अनेक वर्षों तक कई बार सुननेके कारण उसे बहुत-सी कथाएँ याद भी हो गयी थीं। उसे कथाओं-से रुचि भी बहुत अधिक थी और उसके मनोरंजनके लिए घर और बाहरकी स्त्रियाँ उसे कथाएँ सुनाया भी करती थीं।

प्रस्तुत ग्रन्थमें केवल उन्हीं कथाओंको संकलित किया गया है जो किसी व्रत या त्योहारसे सम्बन्ध रखती हैं। इसीलिए पुस्तकका नाम भी अवधी व्रत-कथाएँ रखा गया है। ये कथाएँ केवल अवध क्षेत्र तक ही सीमित नहीं हैं, प्रत्युत कुछ भेदान्तरोंके साथ समस्त भारत वर्षमें कही-सुनी जाती हैं। अनेक स्थलोंपर मैंने कुछ तमिल और मराठीकी कथाएँ भी तुलनाके लिए प्रस्तुत की हैं। वस्तुत इन कथाओं का मूल स्रोत हिन्दू पौराणिक साहित्य है जिससे समस्त हिन्दू धार्मिक भावनाएँ अनुप्राणित हैं। अनेक देवी देवताओंके आख्यान और उनके माहात्म्यका विस्तृत वर्णन इन्हीं पुराणोंमें है। इन्हीं देवी देवताओंके माहात्म्यकी सक्रिय स्वीकृति इन व्रतों एवं अनुष्ठानोंमें है। अधिकांश कथाएँ पौराणिक आख्यानोंके रूपान्तर मात्र हैं। पुराणोंमें उपलब्ध आख्यानों एवं इन लोक-कथाओंके तुलनात्मक अध्ययनसे अनेक रोचक निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं। इसीलिए अनेक व्रतों एवं तत्-सम्बन्धी कथाओंके पौराणिक सन्दर्भोंका भी मैंने उल्लेख किया है। दुबले महाराजकी कथाको लेकर कुछ ऐतिहासिक अटकलें भी लगायी हैं। इस

समस्त सामग्री एवं व्याख्याका उद्देश्य अध्ययनकी सामग्री प्रस्तुत करना है जिसका उपयोग कोई भी कर सकता है।

लोक-साहित्य एवं लोक-संस्कृतिके अध्ययनको प्रारम्भ करनेके पूर्व आवश्यकता इस बातकी है कि शोधार्थीके समक्ष प्रामाणिक सामग्री विद्यमान हो। अभी तो शोधार्थी स्वयं संकलनकर्त्ता भी है जो प्रायः सामग्रीमें अपनी आवश्यकतानुसार हेर फेर भी करता रहता है। प्रायः शोधार्थीकी असमर्थताएं सामग्रीको ओर भी अप्रामाणिक बना देती हैं। अनेक अन्य कठिनाइयां भी उत्पन्न हो जाती हैं। अत मेरा यह सुझाव है कि सर्वप्रथम समस्त लोकसंस्कृति सामग्रीको निःस्वार्थ भावसे एकत्र कर लिया जाये और उस सामग्रीको अनेक शोध-संस्थाओंके पुस्तकालयोंमें सुरक्षित किया जाये। लोकसंस्कृतिके समस्त पक्षोंका समुचित अध्ययन कर लेनेके बाद शोधकार्य अधिकारी निरीक्षकोंकी देख रेखमें प्रारम्भ हो। हिन्दी लोकसंस्कृतिके अध्ययनके क्षेत्रोंमें शोध-कार्य अभीतक पर्सनल ऐडवेंचर के सिवा और कुछ नहीं रहा है। अभीतक न तो किसी ऐसे शोध-संस्थानकी आयोजना ही हो पायी है और न किसी क्षेत्रका लोक-साहित्य ही एकत्र हो पाया है। जहाँ अन्य देशोंने लोक-साहित्यके अध्ययनकार्यको लगभग पूर्ण कर लिया है और विश्वविद्यालयोंमें 'फोकलोर' एक सैद्धान्तिक विषयके रूपमें पढ़ाया जाता है वहाँ हमारे देशमें इस दिशाकी ओर अभी कदम भी नहीं उठाया गया है। इस क्षेत्रमें व्यक्तिगत साहसिकताकी आवश्यकता इतनी नहीं जितनी व्यवस्थित संगठनकी है।

औद्योगीकरणके कारण नागरिक सभ्यताका प्रसार बड़ी तीव्रतासे होता जा रहा है। धर्म निर्णायक तत्त्वोंका स्थान अर्थ एवं विज्ञान लेते जा रहे हैं। समाजमें बौद्धिकताका प्रभाव बढ़ता जा रहा है जिससे प्राचीन मान्यताओं एवं आस्थाओंपर प्रश्नचिह्न लगते जा रहे हैं। व्रत-पूजा-पाठ पिछड़ेपन, पुरानेपनके रूपमें माने जाने लगे हैं। अन्य

सामाजिक एवं नैतिक मूल्योंमें भी परिवर्तन शीघ्रतासे हो रहे हैं। हिन्दू समाज परिवर्तनके चौराहेपर आकर खड़ा हो गया है। ध्यानसे अध्ययन करनेपर विदित होगा कि जिन व्रतों एवं अनुष्ठानोंका वर्णन प्रस्तुत पुस्तकमें हुआ है उनका पालन अधिकांशतः परम्पराके रूपमें हो रहा है। यह परम्परापालन भी स्त्रियों तक ही सीमित है और प्रायः परिवारके पुरुष वर्ग स्त्रियोंका परिहास भी करते हैं। विज्ञान और तकनीकके क्षेत्रमें विकासोन्मुख समाज धार्मिक परम्पराओंका तिरस्कार करने लगा है। कुछ कथाओंमें भी ऐसे पात्रोंका उल्लेख हुआ है जो देवी-देवताओंके महत्त्वको नहीं मानते पर कुछ ऐसी स्थितियोंके कारण उन्हें भी उनके महत्त्वको स्वीकार करना पड़ा है। पर आज स्थिति अधिक सन्दिग्ध हो गयी है। देवी-देवताओंका प्रभाव कम होता जा रहा है। यह भी अध्ययनके लिए अत्यन्त रोचक विषय है कि समाज इन कथाओंकी मान्यताओंसे कितना आगे बढ़ गया है। अमेरिकामें इस प्रकारके अध्ययनको बड़ा महत्त्व मिल रहा है। फिर भी ग्रामीण समाजमें आज भी धार्मिक विश्वासोंकी प्रचुरता है। आज भी बहुत-से लोग जादू-टोना भूत प्रेत बाधामें विश्वास करते हैं। उनकी कलात्मक अभिव्यक्तियाँ धर्म-सापेक्ष्य हैं। धार्मिक दृष्टिसे पिछड़े हुए समाजमें ये भावनाएँ काफ़ी बल प्रदान करती हैं। इन कथाओंमें वे अपनी आकांक्षाओं एवं अभिलाषाओंकी तुष्टि पाते हैं। फिर भी आजका ब्राह्मण समाज धार्मिकताके संरक्षणके लिए उतना क्रियाशील एवं गम्भीर नहीं है अब धर्म उसकी मुख्य आजीविका नहीं रहा। अतः समुचित संरक्षणके अभावमें ये मान्यताएँ धीरे-धीरे विघटित हो जायेंगी। और तब यह लोक-सामग्री कुछ वर्षों बाद इतिहासका भी काम दे सकती है।

दूसरी बात जो ध्यान देनेकी है वह यह कि धार्मिकता वार्धमिकताकी कसौटीपर कसी जानेपर प्रायः निस्सार प्रतीत होने लगती है। बौद्धिकताके विकासके साथ प्रत्येक देशके धार्मिक विश्वासोंके साथ

समस्त सामग्री एवं व्याख्याका उद्देश्य अध्ययनकी सामग्री प्रस्तुत करना है जिसका उपयोग कोई भी कर सकता है।

लोक-साहित्य एवं लोक संस्कृतिके अध्ययनको प्रारम्भ करनेके पूर्व आवश्यकता इस बातकी है कि शोधार्थीके समक्ष प्रामाणिक सामग्री विद्यमान हो। अभी तो शोधार्थी स्वयं संकलनकर्ता भी है जो प्रायः सामग्रीमें अपनी आवश्यकतानुसार हेर-फेर भी करता रहता है। प्रायः शोधार्थीकी असमर्थताएँ सामग्रीको और भी अप्रामाणिक बना देती हैं। अनेक अन्य कठिनाइयाँ भी उत्पन्न हो जाती हैं। अतः मेरा यह सुझाव है कि सर्वप्रथम समस्त लोकसंस्कृति सामग्रीको निःस्वार्थ भावसे एकत्र कर लिया जाये और उस सामग्रीको अनेक शोध-संस्थानोंके पुस्तकालयोंमें सुरक्षित किया जाये। लोकसंस्कृतिके समस्त पक्षोंका समुचित अध्ययन कर लेनेके बाद शोधकार्य अधिकारी निरीक्षकोंकी देख रेखमें प्रारम्भ हो। हिन्दी लोकसंस्कृतिके अध्ययनके क्षेत्रमें शोध-कार्य अभीतक 'पर्सनल ऐडवेंचर' के सिवा और कुछ नहीं रहा है। अभीतक न तो किसी ऐसे शोध-संस्थानकी आयोजना ही हो पायी है और न किसी क्षेत्रका लोक-साहित्य ही एकत्र हो पाया है। जहाँ अन्य देशोंने लोक-साहित्यके अध्ययनकार्यको लगभग पूर्ण कर लिया है और विश्वविद्यालयोंमें 'फोकलोर' एक सैद्धान्तिक विषयके रूपमें पढ़ाया जाता है वहाँ हमारे देशमें इस दिशाकी ओर अभी कदम भी नहीं उठाया गया है। इस क्षेत्रमें व्यक्तिगत साहसिकताकी आवश्यकता इतनी नहीं जितनी व्यवस्थित संगठनकी है।

औद्योगीकरणके कारण नागरिक सभ्यताका प्रसार बड़ी तीव्रतासे होता जा रहा है। धर्म निर्णायक तत्त्वोंका स्थान अर्थ एवं विज्ञान लेते जा रहे हैं। समाजमें बौद्धिकताका प्रभाव बढ़ता जा रहा है जिससे प्राचीन मान्यताओं एवं आस्थाओंपर प्रश्नचिह्न लगते जा रहे हैं। व्रत-पूजा-पाठ पिछड़ेपन पुरानेपनके रूपमें माने जाने लगे हैं। अन्य

इस संकलनके तैयार करनेमें मैं अवध क्षेत्रकी उन अनेक महिलाओं का ऋणी हूँ जिन्होंने मुझे यह उपयोगी सामग्री प्रदान की। मैं अपने अनुज प्रेमप्रकाशका भी कृतज्ञ हूँ, जिसने मेरी बहुत सहायता की। अन्तमें मैं भारतीय ज्ञानपीठका आभारी हूँ जिसके माध्यमसे यह संकलन आप तक पहुँचा। यह कार्य करते समय जो आनन्द मुझे प्राप्त हुआ वही आप सबको प्राप्त हो—यही कामना है।

ग्राम : शिवपुरी
रायबरेली (उ० प्र०)

—इन्दुप्रकाश पाण्डेय

अनुक्रम

चैत्र मासके व्रत-पूजन

१ शीतला-अष्टमी ... १

वैशाख मासके व्रत-पूजन

२ आसामाई ... १९

आषाढ़ मासके व्रत-पूजन

३ जगन्नाथ स्वामी और सोमेश्वर भगवान् ... २५

श्रावण मासके व्रत-पूजन

४ नागपंचमी ... ४९

५ मिठरी मायें ... ६७

भाद्रपद मासके व्रत-पूजन

६ बहुरा चौथ ७१

७ हरछठ ... ८०

८ मोक दुवास ... ९२

९ मघा ... ९६

१० गणेश चतुर्थी ... १००

आश्विन मासके व्रत-पूजन

११ पितृपक्ष ... ११९

१२ महाकाली-महालक्ष्मी ... १२५

कार्तिक मासके व्रत-पूजन

१३ करवा चौथ ... १३५

१४ अवही आठें (अशोक अष्टमी) १४८
१५ इच्छा नवमी १५५
१६ दीवाली .. १६३
१७ गोवर्धन पूजा १७३
१८ चिरैया गौर १८२
१९ भैयादूज (यम द्वितीया) .. १९०
२० ममचीता रानीकी पूजा ... २०२
२१ देवोत्थानी एकादशी २०६
२२ तुलसी पूजा २११
२३ कार्तिक माहात्म्य .. २१७

माघ मासक व्रत-पूजन

२४ सकठ ... २२३

फाल्गुन मासके व्रत-पूजन

२५ महाशिवरात्रि ... २३४
२६ वार व्रत .. २४०
२७ रविवार २४२
२८ बुधवार २५६
२९ बृहस्पतिवार .. २६२
३० शुक्रवार २७४
३१ शनिवार २८७
३२ अमावस्या, पूर्णमासी तथा संक्रान्ति .. २९३
३३ सोमवती अमावस्या .. २९७
३४ सकठा महारानी ... ३०४
कुछ विशिष्ट अवधी शब्द और उनके अर्थ ३०९

■

शीतला-अष्टमी

यह पर्व अवध क्षेत्रके गाँवोंमें चैत बैशाख जेठ और आषाढ़ महीनों-की कृष्ण अष्टमीको प्रायः सर्वत्र मनाया जाता है। गाँवकी स्त्रियाँ इस व्रतको बड़ी ही श्रद्धा भक्तिसे करती हैं क्योंकि उनका अटल विश्वास है कि ग्रीष्मकालीन रोगोंसे मुक्त रहनेके लिए शीतला माताकी कृपा अनिवार्य है। विशेष रूपसे चेचक (शीतला) को तो शीतला माताकी अकृपासे ही जन्मा माना जाता है और यही कारण है कि गाँवोंमें चेचकको शीतला' 'महरानी' या देवी के नामसे जानते हैं। शीतला माता जुड़ानी रहें फिर कौमों रोगुवोभु मगीचे न आई—के विश्वासपर शीतला मातापर जल चढ़ाना, पूजा करना और उनका निर्माल्य लाकर रोगीको पिलाना इत्यादि बातें सामान्य रीतिसे गाँवोंमें देखी जाती हैं। घरमें रोगके आ जाने पर शीतला माताको 'जुड़वाने के लिए उनकी मण्डपीको पानीसे भर देते हैं। जूते पहनना बाल-नाखून कटवाना, यात्रा करना या किसीके यहाँ जाना छौंकना-बघारना इत्यादि तमाम बातें निषिद्ध हो जाती हैं। चेचक हो जानेको शीतलामाताका आगमन मानते हैं और उनको शीतल करनेके लिए सभी प्रयत्न करते हैं। उस समय रोगीके पास शीतल जलका कलश और नीमके पत्ते रखते हैं। इस प्रकार भीगे हुए नीमके पत्तोंको थोड़ी-थोड़ी देरमें रोगीके ऊपर झलते हैं जिसकी शीतलतासे रोगीको आराम मिलता है। शीतलास्तोत्रमें शीतलामाताके स्वरूप प्रभाव इत्यादिके बारेमें लिखा हुआ है जिसके अनुसार

शीतलामाताका स्वरूप निम्नप्रकार है

'वन्देऽहं शीतलां देवीं रासभस्थां दिगम्बराम् ।
मार्जनीकलशोपेतां शूर्पालंकृतमस्तकाम् ॥

अर्थात् शीतला दिगम्बरा हैं, गधेपर सवार हैं, सूप, झाड़ू और नीमके पत्तोंसे अलंकृत हैं और हाथमें शीतल जलका कलश है। शीतलाष्टमीके दिन कलश स्थापनाके पूर्व धरतीको गोबरसे लीपकर स्त्रियाँ चौरीठ या ऐपनसे अल्पना बनाती हैं। अल्पनामें कलश और गंगाजलसे भरे लोटेके बीचमें सात पुतले, और बीचमें फूल बनाया जाता है, जिस पर गंगाजलसे भरकर कलश या शितलघटकी स्थापना होती है। इस फूलके बाहर गोलाईमें गधेपर सवार सात पुतले होते हैं। बायीं ओर हनुमान् और दाहिनी ओर गणेशजीकी आकृतियाँ अंकित होती हैं। सातकी संख्या धार्मिक सन्दर्भोंमें विशेष महत्त्वकी है। सातकी संख्या सप्तमातृकाओं और सात देवियोंके आधारपर भी हो सकती है यद्यपि यहाँपर केवल शीतलाका ही अंकन होता है जो गधेपर सवार हैं। आगे दी गयी शीतलादेवीकी दूसरी कथामें घरसे निकाली गयी सातों बहनें शीतलादेवी बन जाती हैं जिन्हें गधेपर सवार बताया जाता है। वे सबमुचकी शीतलादेवी बन जाती हैं और अपनी शक्तिसे भाटके बच्चेको ठीक करती हैं और राजाका अभिमान चूर करती हैं। लोककथाकी ये सातों बहनें शीतलादेवी हैं जो प्रसन्न होकर चेचक जैसे भयंकर रोगसे छुटकारा दिला सकती हैं। इस अल्पनामें हनुमान् का अंकन भी महत्त्वपूर्ण है जो पहली कथाके अनुसार सार्थक है जिसमें शीतलामाताकी श्रेष्ठता स्थापित की गयी है। गणेशजी तो विघ्न विनाशक देवता हैं ही। उनकी पूजा सर्वत्र सर्वप्रथम की जाती है।

शीतलाके दिगम्बरा होनेकी बात भी ध्यान देने योग्य है। शीतलामाताकी कोई मूर्ति नहीं होती और न उन्हें किसी विशिष्ट आकृतिमें प्रस्थापित ही किया जाता है। शीतलाकी मण्डपीमें मूर्तिके

नामपर केवल सात ही नहीं बल्कि बहुत से टेढ़े मेढ़े कंकड़-पत्थर रखे रहते हैं जिनकी पूजा होती है। इन मूर्तियोंपर किसी प्रकारके वस्त्राभूषणोंका आडम्बर नहीं होता। दूसरी लोककथाके अनुसार राजाने इन सातों बहनोंपर जलता हुआ तेल डलवाया था जिसकी जलनसे ये छटपटाती हुई कुएँकी जगतपर निर्वसना पड़ी थीं। भाटकी पत्नीने उन्हें शीतल जलसे शीतल किया। यही शीतल जलसे शीतल करनेका कार्य गाँवोंकी स्त्रियाँ नियमसे गर्मीके चार महीने करती हैं। शीतला माताके सन्तप्त तन-मनको शीतलता पहुँचाकर शीतलाके प्रकोपका शान्त रखना चाहती हैं। स्कन्दपुराणमें चैत वैसाख, जेठ और आषाढ़ चारों महीनोंमें शीतला-अष्टमीके व्रत एवं पूजनका विधान है। शीतला अष्टमीके दिन चूल्हा नहीं जलाया जाता और किसी प्रकारका भी गरम भोजन नहीं किया जाता। इसीलिए एक दिन पूर्व शामको पूरी पुआ इत्यादि बनाकर रख लिया जाता है और अष्टमीके दिन यही बासी और ठण्डा भोजन किया जाता है अर्थात् 'बसेउड़ा' खाया जाता है। शीतला माताको शीतल रखनेके लिए ही यह व्यवस्था भी गयी है। शीतल भोजन करना और आगका न जलाना अनिवार्यत आवश्यक है। रातमें किसी एक घरमें एकत्र होकर स्त्रियाँ जागरण करती हैं और अचारी (देवियोंके गीत) और भजन गाती हैं। इस प्रकार जिन घरोंमें शीतला-अष्टमीके दिन व्रत-पूजा होती है उनके घर बुखार, नेत्र रोग तथा फोड़े फुंसीके रोग नहीं आते।[1]

---

[1] भक्षयेद् भक्ष्यकान् पूर्वास्त्वैत्रे शीतजलान्वितान्।
वैशाखे सक्तुकं चापद् साज्य शर्करयान्वितम्॥
एवं वा कुरुते नारी व्रतं वर्षचतुष्टयम्।
तत्कुले नोपसर्पन्ति गलगण्डग्रहादयः॥
विस्फोटकभयं घोरं कुले तस्य न जायते।
शीतले ज्वरदग्धस्य पूतगन्धगतस्य च॥
प्रणष्टचक्षुषः पुंसस्त्वामाहुर्जीवनौषधम्।

सूर्योदयके पूर्व स्त्रियाँ उठकर घरकी मुख्य देहरीके आगे सीतला देवीके आगमनके लिए 'बाट' लीपती हैं और तब स्नानादि करती हैं। फिर लिपे हुए घरमें एक स्थानपर अल्पना बनाती हैं और 'सितलघट' की स्थापना करती हैं और पूजा करती हैं। तदुपरान्त सीतला देवीकी मण्डपोंमें जाकर उनकी पूजा करती हैं और उनका अपने घरोंमें आह्वान करती हैं। घर आकर कन्या और बुढ़िया खिलाती हैं। चैत महीनेकी अष्टमीको पूरी पुआका "बसेउढ़ा" (बासी भोजन) खाया जाता है। बैसाखकी अष्टमीको सतुआही अष्टमी कहते हैं जब जौ और चनाके सत्तू खाये जाते हैं। जेठकी अष्टमीको खिचरस भात खाया जाता है और आषाढ़की अष्टमीको फिर पूरी पुआ और खीर खायी जाती है। स्कन्दपुराणमें इस क्रमके पालनकी बात पूरी तरहसे नहीं मिलती क्योंकि लोक-परम्परा सदैव अपना पृथक रूप ग्रहण कर लेती है।

स्त्रियाँ प्रतिदिन स्नान करके सीतलादेवीपर और नीमपर पानी चढ़ाती हैं। तत्पश्चात् घर आकर सितलघटमें शीतल जल डालती हैं क्योंकि गरमीके कारण सितलघटका पानी काफ़ी सूख जाता है। चार महीने तक यही क्रम चलता रहता है और आषाढ़की अष्टमीके दिन कलशको गंगा या अन्य किसी नदी या तालाबमें विसर्जित कर दिया जाता है। इन चार महीनोंमें नीमका दातून भी नहीं तोड़ी जाती क्योंकि नीममें इस कालमें सीतलादेवीका वास माना जाता है। सितलघटमें एक नीम का टेम्हुरा रखा जाता है। इस कालमें बच्चोंको भी देहरीपर नहीं बैठने दिया जाता। पहली तीनों कथाओंमें शीतलादेवीके माहात्म्यको स्थापित किया गया है। गाँवोंके देवी-देवताओंमें सीतला और हनुमानका विशेष महत्त्व है। पहली कथामें सीतलादेवीको हनुमानसे भी अधिक महत्त्वपूर्ण दिखाया गया है। सीतलामातापर स्त्रियाँ अपना विशेषाधिकार मानती हैं और उनकी अद्‌भुत शक्तिपर अटूट विश्वास रखती हैं।

उत्तर भारतकी भयंकर ग्रीष्मकालीन कठिनाइयोंसे बचनेके लिए यह शीतलोपचार है। कष्टदायक प्राकृतिक व्यापारोंसे बचनेका यह आदिकालीन उपक्रम है जिसका धार्मिक रूप प्रदान किया गया है। अदृश्यके प्रकोपसे मुक्त होनेके लिए उनकी पूजा-अर्चना प्रवृत्तिमूलक धर्मभावना है जो सभ्यताके विकासका प्रारम्भिक रूप है। सामाजिक एवं धार्मिक परम्पराके रूपमें यह भावना सभ्य और विकसित समाजमें भी विद्यमान रहती है।

कुछ स्थानोंपर शीतलाव्रत एवं पूजा माघ शुक्ल षष्ठीको की जाती है जिसका मुख्य उद्देश्य पुत्रकामना है। परन्तु ठण्डा भोजन करनेका विधान यहाँ भी है। विशेषरूपसे बंगालमें शीतकालमें ही शीतला षष्ठीका व्रत किया जाता है। इस सम्बन्धमें एक बड़ी ही रोचक लोककथा उपलब्ध है एक ब्राह्मण अपनी ब्राह्मणी पुत्र और पुत्र वधूके साथ रहता था। उसकी बहूके कोई सन्तान न थी। एक वर्ष शीतला षष्ठीकी पूजा-अर्चनाके बाद वह गर्भवती हुई परन्तु पूरा वर्ष बीत गया और कोई सन्तान न उत्पन्न हुई। एक दिन वह घाटपर गयी और फिसलकर गिर गयी। गिरनेपर कुम्हड़ेके आकारके थैलेको जन्म दिया। घर आनेपर उसने अपनी साससे कहा सास घाटपर आयी और देखा कि कौओंने चोंचसे मारकर उसे फोड़ डाला है और उसमें-से छोटे छोटे कीड़े-से बच्चे निकलते चले आ रहे हैं। ब्राह्मणका बेटा बुलवाया गया और वह उस थैलेको घर ले गया। उसमें-से साठ लड़के निकले। होते-करते वे कुछ दिनोंमें विवाहके योग्य हुए। उन लड़कोंकी माँने निश्चय कर लिया था कि वह एक ही परिवारमें साठोंका विवाह करेगी। अब समस्या यह थी कि ऐसा परिवार कहाँ मिले, जिसमें साठ लड़कियाँ हों। ढूँढ़ते-ढूँढ़ते एक बूढ़ा मिला, जिसके साठ लड़कियाँ थीं, पर वह दहेज न दे सकनेके कारण उनका विवाह न कर सकता था। अतः विवाह पक्का कर दिया गया और शीघ्र ही

सभी लड़कोंका विवाह हो गया।

शीतला षष्ठी पूजाका दिन आया। बड़ी सर्दी पड़ रही थी। सास ठण्डे पानीसे न नहा सकती थी। अतः उसने बहूआसे पानी गरम करवा कर स्नान किया। उसने चावल भी पकवाया, और खाया। यह शीतला षष्ठीके दिन मना है। परिणाम यह हुआ कि उसका इतना बड़ा परिवार नष्ट हो गया। वह फूट फूटकर रोने लगी। आस-पड़ोस के लोग एकत्र हो गये शीतलामाता भी प्रकट हो गयीं। उन्होंने कहा 'इनको कमके पके भातसे उबटो और गरम पानीसे नहलाओ।" उसने वैसा ही किया। सभी फिरसे जीवित हो गये।

'व्रतराज'में शीतला-व्रत एवं पूजन सप्तमीको होना लिखा है। कदाचित् इसी प्रमाणके कारण श्रीरामप्रताप त्रिपाठीने भी अपनी पुस्तक हिन्दुओंके व्रत, पर्व और त्योहार में शीतला-व्रतको श्रावण मास शुक्ल सप्तमीको ही माना है। शीतलादेवीका प्रकोप माता या चेचक की बीमारीके रूपमें प्रस्फुटित होता है—ऐसा विश्वास है। सौभाग्यवती एवं सन्तानवाली स्त्रियाँ शीतलाके व्रतका अनुष्ठान करती हैं, जिससे सन्तान, सुख, सौभाग्य धन-सम्पत्तिकी प्राप्ति होती है तथा बाधाओंका निराकरण होता है। अन्य विस्तार लगभग एक-से हैं। भविष्योत्तर पुराणमें भी शीतला-सप्तमीके माहात्म्यकी कथा है।

व्रत-परिचय नामक ग्रन्थमें लेखक श्री हनुमान शर्माने शीतलाका व्रत एवं पूजन चैत्र कृष्ण अष्टमीको माना है। स्कन्द-पुराणमें चैत्र वैशाख ज्येष्ठ और आषाढ़की कृष्ण अष्टमीको व्रतका विधान है जिसमें प्रत्येक मासकी अष्टमीके भिन्न खाद्य पदार्थोंका विवरण दिया गया है। विस्तारोंमें कोई विशेष अन्तर नहीं है। अवध क्षेत्रमें शीतलाष्टमी ही मनायी जाती है और चैत्र वैशाख ज्येष्ठ और आषाढ़ महीनोंमें होती है। शीतलाष्टमी-व्रतका मुख्य उद्देश्य नैरोग्य और सुख-सौभाग्यकी प्राप्ति है।

पृथक पृथक महीनोंकी अष्टमीके लिए भिन्न भिन्न खाद्य पदार्थोंका विधान है परन्तु लप्सी, गुलगुलियाँ, ऐंठी-गोंठी, मीठी-सीठी पूरी बेर, गुझिया विशेष हैं। वैशाखकी अष्टमी तो सतुआही' होती है और जेठकी अष्टमीको केवल सिखरन भात खाया जाता है परन्तु उपयुक्त चीजें जरूर चढ़ायी जाती हैं यद्यपि उनको पकाया नहीं जाता। ये चीजें कच्ची ही पूजापेम सम्मिलित कर ली जाती है। लौंगकी माला या लौंगको देशीकी मठियामें अवश्य चढ़ाया जाता है। शितलघटके पानीम लौंग डाली जाती है जो भैषज्यजल बन जाता है। फूलवाली लौंगका विशेष महत्त्व है। लौंग और नीमकी पत्तियोंको औषधिके रूपमें इस्तेमाल किया जाता है।

शीतला अष्टमीकी कथाएँ

१

एक दिन हनुमान् और शीतलामातामें होड़ लगी। हनुमान् कहें हम बड़े' और शीतलामाता कहें हम बड़ी'। शीतलाष्टमीके दिन शीतलामाताने कहा "अगर बड़े हो तो जाओ भीख माँग लाओ। देखें किसको ज्यादा मिलती है। हनुमानजी कोरा झण्डा लेकर तयार हो गये और घर घर भीख माँगने लगे। पर आज तो थी शीतलाष्टमी। सभी औरतें लहँगा ओढ़नी पहने शीतलामाताकी बुढ़िया कुमाँरी खिलाने में लगीं थीं या पूजाकी तैयारीमें जुटी थीं। उन सबने हनुमान्से कहा अभी हाथ खाली नहीं है फिर आना। हनुमान् मन मारे, उदास खाली हाथ लौटे। शीतलामाताके सामने कोरा झण्डा फेंककर बोले 'मुझे भीख देनेके लिए किसीके हाथ ही खाली नहीं।

शीतलामाताने कहा 'अच्छा देखो अब मैं जाती हूँ।' शीतला माताने लहँगा पहना, ओढ़नी ओढ़ी और झोरिया लेकर चल दीं।

एक घर गयीं, दो घर गयीं और इसी तरह सात घर गयीं। जहाँ भी जाती उनका बड़ा स्वागत होता। सभी स्त्रियाँ समझतीं कि घर बैठे बुढ़िया मिली। उनकी झोरिया भर गयी और अब लेकर घरको चली तो राहमें भीख बिखरती जाती। घर पहुँचकर हनुमान्के सामने झोरिया पटक दीं और बोलीं, "लो खाओ जितना खाना हो।'

हनुमान्ने कहा 'अच्छा! तुम्हीं बड़ी हो। पर जहाँ तुम्हारी जाप वहीं हमारी थाप रहेगी।

२

एक था राजा और एक थी रानी। कहनेको तो थे वे राजा रानी पर एक जून (वक्त) भोजनके भी लाले थे। उनके थीं सात लड़कियाँ। रानी फिर गर्भवती हुई। राजाने पूछा रानी! कुछ खानेकी इच्छा है" रानीने कहा इच्छा तो बहुत कुछ है पर मिले तब तो। फिर इन अभागिनोंके मारे कुछ खा भी पाऊँगी? राजाने कहा 'जो इच्छा हो बोलो! रातमें बनाकर खा लेना।" रानीने खीर खानेकी इच्छा प्रकट की। राजाने दूध चावल शक्कर इत्यादिका माँग-जाँचकर प्रबन्ध कर दिया। इधर लड़कियोंने राजा रानीकी सब बातें सुन ली थीं। अतः उन्होंने दूसरी ही चाल चली। रसोईका सारा सामान वे अपने पास उठा ले गयीं और सब सामानको छिपाकर सो गयीं।

जब काफ़ी रात हो गयी तो रानीने सोचा अब सब सो गयी होंगी, चलो बनाकर खीर खा लें। यह सोचकर चोरका सामान लिये हुए रानी रसोईमें पहुँचीं। चूल्हा जलानेके लिए दियासलाई ढूँढ़ने लगीं। पर दियासलाई वहाँ होती तब तो मिलती। रानीने सोचा कि चुपचाप बड़ीको जगा लूँ। थोड़ी खीर उसे भी मिला दूँगी। बड़ीको उन्होंने चुप-चाप जगाया। उसने दियासिलाई दे दी। माँने बड़ी मिन्नतसे चूल्हा जलाया पर खीर बनाती किसमें? बटलोई नदारद थी। बड़ीने कहा

"छागीने कहीं रखी है। उसकी रखी चीज कभी मिली है कि आज ही मिलेगी। मैं अभी उसे जगाय लाती हूँ। ' माँ ने कहा नहीं नहीं। मैं खुद जगाय लाती हूँ। तू जगायेगी तो सारा घर जाग उठेगा। माँने बड़ी होशियारीसे उसे जगाया। उसने झटपट आकर घटलोई दे दी। चमचेके लिए तीसरी जगायी गयी और इसी प्रकार किसी न किसी चीजके लिए सभी जगायी गयीं। यह स्थिति देखकर रानी जल-भुनकर राख हो गयीं।

किसी तरह येमन खीर पकायी। छोटी लड़की सबसे होशियार। उसने खीरमें छोटे-छोटे पत्थर डाल दिये। रानीने सोचा कि ऊपर-ऊपर की पतली खीर उन्हें परस दूँ और बादमें नीचेकी गाढ़ी-गाढ़ी खुद खाऊँगी। इस तरह उसने ऊपर ऊपरकी सब खीर अपनी लड़कियोंके लिए परस दीं। लड़कियोंने चटपट खीर खाकर डकार ली और जाकर सो रहीं। जब रानीने घटलोई अपनी थालीमें उलटी तो थाली बज उठी। खीरकी जगह कंकड़-पत्थर। खैर किसी प्रकार उसने पत्थरोंसे छुड़ा-छुड़ाकर खीर खायी और मन मारकर सो गयी। सबेरे उसने राजासे शिकायत की।

राजाने सातों लड़कियोंको बुलाया। लड़कियोंके आ जानेपर राजाने कहा इन लोगोंके लिए थोड़ा कलेवा बाँध दो। जाऊँ इन सबको घेर मकोइया खिला लाऊँ। रानी ऊबी तो थी ही झटपट कलेवा बाँधकर ले आयी। रानी छागीसे ज्यादा गुस्सा थी इसलिए सबके लिए तो कुछ खानकी चीज बाँधी पर छोटीके लिए राख बाँध दी। चलते चलते वे सब एक बीहड़ घने जंगलमें पहुँचे। राजा एक पेड़के नीचे बैठ गये और बोले "मैं थक गया हूँ, आराम करूँगा। तुम लोग छिटककर बेर-मकोइया खाओ। मैं इस पेड़पर-से पगिया फहराऊँगा तब लौट आना। सातों खूब मजेमें घूम-घूमकर जगली फल खाने लगीं। इधर राजा पेड़की डालसे पगिया बाँधकर चला गया। जब लड़कियाँ खा

आषाढ़की अष्टमी तक उसने ऐसा ही किया। उसकी भक्ति देखकर शीतला माताके मनमें बड़ी गाढ़' पड़ी। सोचने लगीं कि उसको कैसे सुखी रखा जाय? न इसके बाप न माँ न कोई भाई भतीजा। अभी इसका विवाह भी नहीं हुआ कि लड़का देकर इसे खुश कर दूँ।

वहीं पासके जंगलमें एक दिन एक राजा शिकार खेलने आये। शीतला माताने सारे जंगलका पानी सोख लिया। राजाको बड़ी प्यास लगी पर कुएँ-तालाब तो सब सूख पड़े थ। राजाने एक ओर चील्ह कौओंको उड़ते हुए देखा तो अपने सिपाहियोंको भजा—"वहाँ जरूर पानी होगा। राजाके सिपाही वहाँ पहुँचे। वहाँ एक बारह वर्षकी कन्या लहर-लहर झूम रही थी और महर-महर गा रही थी। पासमें एक दोनैयामें सत्तू और 'सुतुइया'में पानी रखा था। सिपाहियोंने पास जाकर पूछा बेटी यहाँ कहीं पानी नहीं है? राजाको बड़ी प्यास लगी है। लड़कीने कहा यहाँ कहीं पानी नहीं है। तुम मेरी सुतुइया लेते जाओ और सत्तू लेते जाओ। इसीसे तुम्हारे राजा नहा लेंगे पानी पी लेंगे। हाथी घोड़े-फ़ौज-फाटा सब नहा-धो लेंगे और पानी पी लेंगे। और इस सत्तूसे सबका पेट भर जायेगा। सिपाहियोंने कहा कि हम राजाके हुकुम बिना नहीं ले सकते। सिपाही राजासे पूछनेके लिए वापस आये। वे राजासे बोले 'वहाँ ताल तलैया, नदी सरोवर कुछ भी नहीं है। वहाँ तो केवल एक बारह बरसकी कन्या लहर लहर झूम रही है और महर महर गा रही है। पासमें एक दोनैयामें सत्तू और एक सुतुइयामें पानी रखा है। वह कहती है कि यह सुतुइया भर पानी और दोनैया भर सत्तू ले जाओ। इसमें तुम्हारे राजाकी सारी फ़ौज नहा धो खा पी लेगी। आज्ञा हो तो ले आयें। राजाने कहा 'यह भी कोई पूछनेकी बात है? यहाँ तो प्यासके मारे जान निकली जा रही है। सुतुइया भर पानीमें और नहीं तो मेरा गला तो भिग ही जायेगा। सिपाही चल दिये और तुरन्त लड़कीके

पास पहुँचे और तुतुइया भर पानी और दोनैया भर सत्तू लेकर राजाके पास लौटे।

राजाने स्नान किया पूजा सन्ध्या की, खाया पिया। सारे लाव लश्करने नहाया खाया पिया। हाथी घोड़ोंने नहाया खाया पिया पर दोनैया भरीकी भरी रही और तुतुइयाका पानी उतनाका उतना। राजाको बड़ा आश्चर्य हुआ। राजा सिपाहीसे बोले कि लड़कीका सामान लौटा आओ और उससे पूछ आओ कि तुम्हारे माँ-बाप कौन हैं। सिपाही लड़कीके पास आये और उसका बड़ा एहसान माना। लौटते समय लड़कीसे पूछा तुम्हारे माँ बाप कौन हैं?' लड़कीने बताया कि हमारे तो कोई नहीं है। केवल तपा (तपस्वी) हैं, वे भिक्षाके लिए गये हुए हैं। रातमें आयेंगे। वे यहाँ रात भर रहते हैं। हमें दोनैयामें सत्तू और तुतुइयामें पानी देकर बड़े सबेरे चले जाते हैं। सिपाहीने कहा जब तुम्हारे तपा आयें तो कहना कि राजा साहेबने बुलाया है।

रातमें जब तपा आये तब बेटी बोली तुमको राजाके सिपाही बुला गये हैं। तपा बोले, न राजाकी सीमामें रहता हूँ और न उनका दिया खाता हूँ। राजा हमको क्या बुलायेंगे? पर भोर होते ही राजाके सिपाही वहाँ पहुँचे और तपासे बोले 'चलो तुमको राजा साहेबने बुलाया है। बहुत चिरौरी बिनती करनेपर तपा सिपाहियोंके साथ राजाके पास गये। राजाके पास पहुँचकर तपाने पूछा 'राजा! मुझे क्यों बुलाया है? राजाने प्रणाम करके कहा, आप अपनी कन्या हमको दे दीजिये। तपाने कहा ब्याही लो चाहे कुआँरी— बेटी आपकी हुई।

आतात्र थूनी (स्तम्भ—यज्ञयूप) पातास मँड़वा गाड़कर राजाने ब्याह किया। बारह बरस तक राजा गाँठ जोड़े एक ही करवट बैठे रहे। राजाके छह और भी रानियाँ थीं। पर उनमें-से किसीके सन्तान न थी।

इस रानीसे उनको सन्तानकी उम्मीद हुई। राजाको सारी प्रजा समझाने लगी कि आप बारह बरस गाँठ जोड़े बैठे हैं और उधर राज्य नष्ट हुआ जा रहा है। महाराज राजकाज भी सँभालिए। राजा चले तो रानीने कहा हमारे बाल-बच्चा होनेको है और आप जा रहे हैं। हमारे पेटमें पीड़ा होगी तो क्या होगा ? राजाने कहा 'हम घण्टा बाँधे जाते हैं जब जरूरत हो बजा देना हम फ़ौरन आ जायेंगे।

राजा चले। थोड़ी ही दूर गये होंगे कि रानीने घण्टा बजा दिया। राजा यहीं थोड़ी दरवाजेपर आ पहुँचे। राजाने रानीसे पूछा 'क्यों रानी ? किसलिए बुलाया ? रानी बोली 'मैंने तो राजा, तुम्हारी परीक्षा ली थी। राजा इसपर कुछ न बोले और सिपाहियोंके साथ फिर चले गये। इधर रानीके पेटमें सचमुच पीड़ा होने लगी। रानी घण्टा बजा-बजाकर हलाकान हो गयी पर राजा न आये। राजाके नौकरोंने उन्हें बहुत समझाया पर राजाने उनकी एक न सुनी। राजाने कहा, 'रानी हँसती खिलखती है। उसे कोई तकलीफ़ नहीं।" जब राजा न आये तब रानीने निराश होकर सौतों और दासियोंसे पूछा कि लड़का कैसे होता है ? सौतें जली-भुनी तो थी ही। उन्होंने कहा, " 'खाने मूँड़' 'सिहाने गोड़' करना जो कंकड़-पत्थर होना होगा हो जायेगा। थोड़ी देरमें शीतला माताके पुण्य प्रतापसे रानीके छह लड़के और एक लड़की हुई। रानियोंने दासीसे कहा जब तो इसके सन्तान न थी तब तो राजा इतना चाहते थे अब तो इसके छह-छह बेटे और एक बेटी है। अब तो राजा सीधे मुँह भी हमारी बात न पूछेंगे। कोई चाल चलनी चाहिए।' दासीको कुछ कानमें समझाया। दासी चुराकर सातों बच्चोंको कुम्हारके आँवामें डाल आयी। जब राजा आये तो बड़ी रानियाँ बोली ठोली मारने लगीं। हम न बियानिन तो न बियानिन' पर कंकड़-पाथर तो न 'बियानिन। राजा इस आघातको न सह सका और उसने गुस्सा खाकर छोटी रानीको टाटकी अँगिया और मूँजकी धनी पहनवाकर

घरसे बाहर निकाल दिया और एक बाँस देकर कहा "जा सारे नग
कौए हाँक। मरती क्या न करती ? सारे नगरके कौए हाँकने लग
चैतमें शीतला अष्टमी आयी तो गाँवके लोग शितलपट लेने कुम्हा
यहाँ गये। कुम्हार बोला 'न जाने क्या बात है आँवा ठण्डा ही न
होता तो कैसे आँवा खोलें और कैसे शितलपट दें।' सब ल
फ़रियाद लेकर राजाके यहाँ गये 'राजा साहेब! कुम्हार शितलपट न
देता। राजाने कुम्हारको बुलवाया और आनेपर पूछा 'शितल
क्यों नहीं देते ? कुम्हार बोला, 'माई-बाप! आप अन्नदाता हैं। च
जो सजा दें पर क्या करूँ? आँवा ठण्डा ही नहीं होता तो कैसे खोलूँ
राजाने सोचा जरूर कोई बात है जिससे आँवा शीतल नहीं होत
विचारके लिए राजाने पण्डितोंको बुलवाया। पण्डितोंने विचार क
बतलाया कि आँवामें किसी माँका बालक है जो जल रहा है। इस
आँवा शीतल नहीं होता।

राजाने सारे नगरमें ढिंढोरा पिटवा दिया कि नगरकी जित
पुत्रवती स्त्रियाँ हैं सब आँवामें अपने आँचलका दूध छिड़कें जिससे आँ
शीतल हो। सारी स्त्रियाँ आँवाकी परिक्रमा करके दूध छिड़कने लगी
सभी स्त्रियोंने दूध छिड़का पर आँवा शीतल न हुआ। राजाने पण्डितों
कहा, तुम्हारा विचार झूठा है।" पण्डितोंने कहा 'हमारा विच
झूठा नहीं हो सकता। अभी नगरमें जरूर कोई स्त्री है जिसने अप
आँचलका दूध नहीं छिड़का है। राजाने कहा कि नगरमें अब कोई स
नहीं है सिवाय कौआहँकनीके।' पण्डितोंने पूछा कि क्या कौआहँक
स्त्री नहीं है ? राजाने कौआहँकनीको भी बुलवाया। वह बाँस छोड़क
दौड़ी-दौड़ी आयी। अन्य स्त्रियोंकी भाँति उसने भी परिक्रमा की औ
अपने आँचलका दूध छिड़का। दो ही परिक्रमामें आँवा शीतल हो गया
राजाने कहा 'कुम्हार लो तुम्हारा आँवा शीतल हो गया। खो
आँवा और लोगोंको शितलपट दो। कुम्हार आँवा खोलने लगा त

उमम-से सोने, चाँदी पीतल काँसेके बरतन निकलने लगे। कुम्हार डरा कि राजाने अगर इन्हें देख लिया तो फ़ौरन पकड़कर महलमें ले जायेगा। इसलिए उसने आँवा खोलना बन्द कर दिया। राजा बोले "कुम्हार! आँवा खोल। शीतला माताका दिया जो भी निकलेगा वह तुम्हारा है। हम कुछ नहीं लेंगे। कुम्हारने आधा आँवा खोल डाला। आगे खोला तो देखा कि शीतला माता छहों लड़का और सातवीं लड़कीको लिये पालनामें झूल रही हैं। राजाको देखकर शीतला माता बोलीं धत्! पापी!! चाण्डाल!!! तेरे मुँहको सलाम? ओआहेंकनीकी ओर इशारा करके बोलीं यह बिटिया थी। कुआँरी होकर शीतलाकी बाट सींपती थी और मुझसे प्रार्थना करती थी कि मुझे सुखसे रखना। इसके माँ-बाप भाई भतीजे कोई नहीं था। मैं इसे कैसे सुखी रखती। राजा तब तुमने नहीं जाना जब सारे जगलका पानी सूख गया था और जब तुम प्यासे मर रहे थे तब तुमने और तुम्हारे सारे लाव-लश्करने इसी कन्याके दोनया भर सत्तू और तुलइया भर पानीसे जान बचायी थी। तब तुम्हें पता नहीं चला कि यह कैसी लड़की है? राजा शीतला माताके पैरोंपर गिर पड़े और बोले मनुष्य अन्धी खोपड़ी! हम कुछ नहीं जानत। जा जानें सो आप। माता हमें क्षमा करो।' शीतला माताको दया आ गयी। राजासे बोलीं, 'तुम्हारा कोई कसूर नहीं है। कसूर तो तुम्हारी छह रानियोंका है और उस दासीका है, जिन्होंने मिलकर यह दुष्ट काम किया। जब तुम उनको खोदके गड़वा दोगे तो अपनी सन्तानको पाओगे।

राजाने छहों रानियों और दासीका खोदके गड़वा दिया और अपनी सन्तान और रानीको लेकर सुखपूर्वक रहने लगे। शीतला माता की कृपासे ओआहेंकनी फिर माँ हुई और राजा बाप हुए। सभी सुखसे रहने लगे।

एक था राजा। एक थी रानी। रानी बड़े सबेरे कच्चे सूतकी रस्सीसे कोरे घयलना (मिट्टीकी कच्ची मटकी) में पानी भरकर लातीं और राजा कुल्ला-दातुन करते। रानीका रोजका यही नियम था। एक दिन रानीको पानी लानेमें देर हो गयी। कुएँपर गाँवकी और भी स्त्रियाँ पानी भरने आ गयी थीं। सब स्त्रियोंने रानीको देखा तो बड़ा आश्चर्य करने लगी। आपसमें चर्चा करने लगीं, हैं—यही रानी है? नंगी बुच्ची। न कपड़े न गहना-गुरिया। रानीने जब यह सुना तो बहुत दुःखी हुईं। घर आकर 'मूँड़ मूँड़' (सिरदद) कर लेट गयी। राजाने पूछा, "रानी क्यों लेटी हो? रानीने कहा, 'सिरमें दर्द है। राजाने पूछा क्यों दर्द है? और कैसे जायेगा?' रानीने कुएँपर घटी हुई घटनाको विस्तारसे साथ बतलाया। राजाने कहा, "तो इसमें दुखी होनेकी कौन-सी बात है? एक दिनमें तुम्हारे सब कुछ हो जायेगा। राज्यमें रहनेवालोंसे एक-एक कौड़ी वसूल कर ली जायेगी और तुम गहनोंसे लद जाओगी। राजाने सारे देशमें ढिंढोरा पिटवा दिया। सब लोग दरबारमें हाजिर हुए। राजाने सबसे एक एक कौड़ी वसूल की और रानीके लिए सहर पटोर, गहना-गुरिया, सब कुछ मँगवा दिया। साथ ही रेशमकी डोरी और सोनेका घयलना भी मँगवाया जिसमें सबेरे रानी पानी भरने जायेंगी। राजाने सभी चीजें रानीके आगे रख दीं।

दूसरे दिन रानी रेशमकी डोर और सोनेका घयलना लेकर छमा छम और चमाचम करती हुईं कुएँपर पानी भरने पहुँची। रानी कुएँ पर पहुँची तो सभी स्त्रियाँ उसे देखकर दंग रह गयीं। सबकी छातीपर साँप लोट गया। रानीने रेशम डोरमें सोनेका घयलना बाँधकर कुएँमें बोरमाया। खींचते ही रेशम-डोर टूट गयी सोनेका घयलना कुएँमें जा गिरा। पुरइनपात फट गया और राहूमें काला नाग काटनेको

दौड़ा। रानी प्राण लेकर घरको भागी। घर आकर रानी फिर मुँह-मूड़ कर लेटी। राजा आये तो देखा कि रानी लेटी हैं। राजाने पूछा, 'आज क्या हुआ रानी। रानी बोली "सिरमें दर्द है।" राजाने पूछा, "क्यों है और कैसे ठीक होगा?" रानीने कहा, 'हमको रैयतकी कौड़ी नहीं फली। जिससे कौड़ी ली है लौटा दो।" उसने कुएपर-का सारा हाल सुनाया "रेशम डोर टूट गयी सोनेका घयलना फूट गया, पुरइनपात फट गया और काला नाग काटनेको दौड़ा। हमारा पुराना ढंग ही ठीक है। राजाने रानीकी बात मान ली और राज्य भरमें फिर ढिंढोरा पिटवा दिया। जब प्रजाने राजाका ढिंढोरा सुना तो बड़े क्रोधित हुए और कहने लगे अभी उस दिनकी कौड़ीसे पेट नहीं भरा।" पर करते भी क्या? मन मारकर दरबारमें हाजिर हुए। राजाने सबकी कौड़ी लौटा दी। सभी खुश-खुश घर लौटे। दूसरे दिनसे रानी उसी सादी पोशाकमें कुएँपर पानी भरनेके लिए जाने लगी। कच्चे सूतकी रस्सीसे कोरे घयलनामें पानी भरती और राजाके लिए कुल्ला-दातुन के लिए पानी देती। न कच्चा सूत कभी टूटा और न कोरा घयलना कभी फूटा।

■

आसामाई

आसामाई लोक-परम्पराके अन्तर्गत एक क्षेत्रीय पर्व है जिसका उल्लेख पुराणोंमें नहीं मिलता। व्रत-सम्बन्धी पुस्तकोंमें भी इस पर्वका कोई उल्लेख नहीं है। अवधी क्षेत्रमें यह पव वैशाख कृष्ण द्वितीयाको मनाया जाता है। इस पवका विधान साधारण और संक्षिप्त है। इस व्रतका उद्देश्य सन्तानकी मंगलकामना और सौभाग्य आकांक्षा है।

प्रातःकाल स्नान करके स्त्रियाँ पर्याप्त मात्रामें चन्दन घिसकर तैयार करती हैं और धुले हुए शुद्ध पाटेपर चन्दनसे चार पुतलियाँ बनाती हैं। इनमें-से एक 'भूख माई', दूसरी पियासमाई तीसरी 'नींद माई' और चौथी आसामाईकी है। प्रस्तुत लोककथामें इन चारों पुतलियोंका उल्लेख हुआ है जिनमें-से आसामाईको ही विशेष महत्त्व प्रदान किया गया है। इस कहानीमें कथानायकसे चारों पूँछती हैं कि तुमने किसको प्रणाम किया? कथानायक 'टटजुआरी' प्रत्येकसे उनका परिचय पूछता है और परिचय पानेपर स्पष्ट्तया कह देता है उसने न तो भूखदेवी न पियासदेवी और न नींददेवीको प्रणाम किया क्योंकि वह इनके बिना भी अपना काम चला सकता है। परन्तु जब आसामाई अपना परिचय देती हैं तब वह स्वीकार करता है कि उसने आसामाई को प्रणाम किया था। वह जानता है कि इन सबके बिना जीवनका कुछ अंश व्यतीत किया जा सकता है। परन्तु यदि भविष्यके सम्बन्धमें कोई आशा न हो तो वर्तमान ही किसलिए जिया जाये। कहावत भी है कि मनुष्य प्रेम प्रशंसा और आशाके सहारे जीता है। प्रेम,

प्रशंसा न भी मिले परन्तु यदि आशा प्राप्त है तो उसके सहारे जीवन व्यतीत किया जा सकता है।

इस कथामें कितनी स्पष्टतासे इस बातको सिद्ध किया गया है कि मनुष्य केवल रोटीके लिए नहीं जीता। ऐसी कोई लालसा होती है, जिसकी प्राप्तिकी आशामें कठिनसे कठिन यत्नमामसे संघर्ष करता रहता है। वस्तुतः यह कथा न तो बहादुरीकी है और न कठोरताओंसे संघर्ष की। यह तो कथा है—भाग्यकी और यह व्रत भी भाग्योदयके लिए आसामाईकी प्रार्थना है। जिस प्रकार आसामाईने खुश होकर 'टटबुआरी' की कौड़ियाँ दी थीं जिनसे खेलमेंपर वह हमेशा जुआमें जीता। इसी प्रकार जीवनके इस जुआमें भाग्यके साथ देनेके लिए आसामाईके माध्यमसे भाग्यकी प्रार्थना है जिससे वह व्रतीके अनुकूल हो सके।

पाटापर इन चारों पुतलियोंकी रचनाके उपरान्त उनकी विधिवत् पूजा होती है। पुष्प अक्षत, धूप, दीप और नैवेद्यसे सारा पाटा भर जाता है। अनेक प्रकारके पकवान बनाये जाते हैं। पूरी, पुआ, खीर इत्यादि तो बनती ही हैं परन्तु आसें अवश्य बनती हैं। आसें, लंकाके नक्शेकी आकृतिके पुए होते हैं जो पूजाके लिए विशेष रूपसे आवश्यक होते हैं। घरमें विवाह या जन्मसे नये प्राणीके आनेपर गाँव-भरमें आसें बाँटी जाती हैं। बाँटनेके लिए बनायी गयी आसें कुछ बड़ी होती हैं। इस व्रतको घरकी पुरखिन ही करती है। इस व्रतमें दोपहर तक भोजन किया जाता है। शामको केवल फलाहार किया जाता है। पुतलियोंपर रक्षाके लिए कच्चा धागा चढ़ाया जाता है, जिससे माँ अपने पुत्रकी मंगल कामना करती है।

इस कथामें जुआके माध्यमसे 'टटबुआरी' का भाग्योदय दिखाया गया है जिससे यह स्पष्ट है कि हमारे समाजमें जुआ न केवल मनोरंजनका साधन था बल्कि ऐश्वर्य प्राप्त करनेके साधनोंमें-से एक था। समाजमें जुआको बुरा तो अवश्य माना जाता था परन्तु वर्ज्य नहीं था।

तीसरी महत्त्वपूर्ण बात सास-ननदके सम्मानकी है। 'टटजुआरी' की पत्नी गोबरकी सास-ननदकी मूर्तियोंकी पूजा करती थी क्योंकि वह नहीं जानती थी कि उसके सास-ननद हैं। 'टटजुआरी' का जब यह मालूम होता है तो वह अपनी पत्नीको अपने घर ले जाता है जहाँ वह सास-ननदके दर्शन पाकर और चरणरज लेकर धन्य हो जाती है।

आसामाईकी कथा

एक राजा था। उसके एक लड़का था। एकलौता बेटा होनेके कारण राजा उसे बहुत अधिक प्यार करता था। उसकी हर इच्छा पूरी करनेके लिए वह हमेशा तैयार रहता था। बहुत ज्यादा लाड़-प्यारके कारण लड़का बिगड़ गया। उसने जुआ खेलना शुरू किया। वह बड़ा उपद्रवी भी हो गया। लोगोंने उसका नाम 'टटजुआरी' रख दिया। उसके उपद्रवोंसे सारा नगर परेशान हो गया था। वह पनघटपर जाता। पत्थर मार-मारकर पनिहारिनोंके घड़े फोड़ डालता। जब लोगोंकी सहन शक्तिके बाहर बातें बढ़ने लगीं तो तंग आकर उन्होंने राजासे शिकायत की। राजाने लड़केसे तो कुछ न कहा। उन लोगोंको कुछ रुपये-पैसे दे दिये और कह दिया कि पीतलके घड़े बनवा लो। पीतलके घड़े फूट तो नहीं सकते थे इसलिए टटजुआरी उन्हें ढुलका देता पानी फैला देता। ढुलकनसे घड़े टेढ़े-मेढ़े हो जाते। इधर-उधर पिचक जाते। राजासे फिर शिकायत की। राजा रोज रोजके इन उलाहनोंसे ऊब गया। उसको अपने लड़केपर गुस्सा आ गया 'अकेला लड़का है पर इसका यह मतलब तो नहीं कि सबको सताया करे। उसने अपने लड़केको देश निकालाकी सजा दे दी। राजाने फाटकपर देश-निकालाकी आज्ञा लिखकर टँगवा दी और इस देशके पानी पीनेकी भी कसम दे दी।

लड़का शामको जब खेल-कूदकर घर वापस आया तो उसने फाटक-पर आज्ञा पढ़ी। उलट पैरों वह चल दिया। उसने उस देशको छोड़

दिया और जमलकी ओर बढ़ा। एक जगह उसने देखा कि एक पलक नीचे चार स्त्रियाँ बैठी बातचीत कर रही हैं। जब वह उनके सामनेसे निकला तो उसके अचानक काँटा लग गया। वह झुककर काँटा निकालने लगा इधर चारों स्त्रियाँ आपसम विवाद करने लगीं कि इस युवकने झुककर मुझे प्रणाम किया है। जब फ़ैसला न हो सका तो 'टंटकुमारी' को बुलाया। टंटकुमारी उनके पास गया। सबने एक साथ ही पूछा तुमने हममें-से किसको प्रणाम किया है ?'

'तुम सब कौन हो ? टंटकुमारीने पूछा। एक स्त्री बोली, "मैं भूख हूँ।

टंटकुमारी बोला अगर मैं भूखा होऊँगा तो जो कुछ रूखा-सूखा मिलेगा हाथमें रखकर खा लूँगा। सोने चाँदीके बर्तनोंमें अगर छप्पनों प्रकारका भोजन मिलगा तो वह भी खा लूँगा। और अगर कुछ भी न मिला तो भूखा रह लूँगा। तो तुम इतना निश्चित समझ लो 'भूख देवी' मैंने तुम्हें प्रणाम नहीं किया। दूसरीकी ओर अँगुली उठाकर पूछा, 'तुम बोलो। तुम कौन हो ?' दूसरी बोली 'मैं प्यास हूँ।

'प्यास ! युवक बोला। तब तो तुमको भी मैंने प्रणाम नहीं किया क्योंकि अगर सोने चाँदीका कटोरा मिल गया तो उसीमें पानी पी लूँगा और नहीं तो चुल्लूसे ही किसी नाले या नदीसे पी लूँगा। मुझे तुम्हारी कोई जरूरत नहीं। अच्छा तुम बोलो क्या कहती हो ?' — उसने तीसरीसे पूछा।

तीसरी स्त्री बोली, मैं नींद हूँ।

नींद तो मोटे मोटे गद्दोंमें सोने चाँदीके पलंगोंपर भी आ जाती है और बिना बिछी नंगी चट्टानोंपर भी आ जाती है। इसलिए मैंने तुम्हें भी प्रणाम नहीं किया। इतना कहकर उसने चौथीकी ओर देखा।

चौथीने कहा, बेटा ! मैं आसामाई हूँ।'

टंटकुमारीको एकदमसे याद आ गया कि मेरी माँ आसामाईकी

पूजा करती थी। जब मेरी माँ इनकी पूजा करती थी तो यह अवश्य पूज्य है। टटजुआरी बोला सब तो मैंने तुम्हें ही प्रणाम किया है।' स्त्री ऐसा सुनकर गद्‌गद हो गयी। बोली 'बेटा आज सबके सामने तुमने मेरा मान रख लिया मैं तुमसे बहुत प्रसन्न हूँ। और तो नहीं ये कौड़ियाँ ले जाओ। इनसे तुम हमेशा जीतोगे।

कौड़ियाँ लेकर राज-पुत्र आगे बढ़ा। गायोंका एक बड़ा खेड़ मैदान-में चर रहा था। टटजुआरीने अपनी कौड़ियाँ लेकर उस खेड़के मालिकसे जुआ खेला और वह जीत गया। इस प्रकार वह उन सब गायोंका मालिक हो गया। इसी तरह आगे चलनेपर उसे बैलों घोड़ों, ऊँटों और हाथियोंके झुण्ड मिले। वह सभी जगह विजयी हुआ। इन सब जानवरोंकी बड़ी सेना लेकर वह आगे बढ़ा। आगे एक राजाका राज्य था। वह राजा बड़ा कुशल जुआरी था। लोगोंने राजाको बताया कि एक बड़ा भारी जुआरी सबको जीतता हुआ चला आ रहा है। अब वह इस राज्यमें प्रवेश कर रहा है। राजाने कहा, 'आने दो। मैं भी तो देखूँ वह कैसा जुआरी है?" राजा और टटजुआरीकी बाजी लग गयी। अपनी जितौनी कौड़ियोंके कारण वह फिर जीत गया और राजा हार गया। राजा सब कुछ हार गया। उसने अपना सारा राज-पाट टटजुआरीको सौंप दिया। खुद दरिद्र हो गया। राजाके एक कन्या थी उसने सोचा कि बिना धनके इसका विवाह कैसे होगा? ऐसा सोचकर उसने टटजुआरीसे प्रार्थना की कि वह उसकी कन्यासे विवाह कर ले। टटजुआरीने विवाह कर लिया। अपनी पत्नीके साथ वह बड़े ठाटसे राज-पाट करने लगा। होते-करते टटजुआरीके एक पुत्र भी पैदा हुआ।

टटजुआरीकी पत्नी कुछ पुराने विचारोंकी स्त्री थी। शृंगार आदि करनेके बाद या अन्य शुभ कार्योंके उपरान्त वह सबसे छिपाकर गोबर से बने सास-ननदके पैर छूती। यह काम वह छिपाकर करती थी, जिससे कोई जान न पाय। एक दिन जब वह पूजा कर रही थी कि

उसी समय टटप्रुमारी आ पहुँचा। स्त्रीने झटसे गोबरके सास-ससुरको छिपा लिया। पर टंटप्रुआरीने देख ही लिया। पूछा, "क्या है ?" स्त्री कुछ घबड़ायी-सी कुछ लजायी-सी बोली "कुछ भी तो नहीं।" टटप्रुआरी बोला कुछ तो।' बड़े वाद विवादके बाद स्त्रीन गोबरकी मूर्तियाँ दिखायीं। उसने पूछा कि 'य कौन हैं ? स्त्रीने कहा, 'मेरे सास-ननद नहीं हैं इसलिए इन्हें ही मानकर मैं इनके पैर छू लेती हूँ।" टटप्रुमारी बोला, यह तुमसे किसने कहा कि तुम्हारे सास-ननद नहीं हैं। अपने पितासे आज्ञा ले लो चलो तुम्हें दिखा लाऊँ।

पितासे आज्ञा लेकर दोनों फ़ौज फाटेके साथ चल दिये। टटप्रुआरी बोला, 'राहमें चार स्त्रियाँ मिलेंगी। उनकी गोदमें बच्चा डाल देना और अपने दुपट्टेसे उनकी लार और नाक पोंछ लेना।' स्त्रीने ऐसा ही किया। वे बड़ी प्रसन्न हुईं। उधर राजाका लोगोंने खबर दी कि एक राजा बड़ी सी सेना लेकर चढ़ाई करने आ रहा है। राजा बूढ़ा और अन्धा हो गया था। उसन सोचा किसके लिए लड़ूँ ? बेटा था वह तो चला ही गया। अब क्या फ़ायदा इस राज-पाटका। इसलिए अधीनता स्वीकार करना ही ठीक होगा। वहीँका वहीँही और पाग लेकर वह अधीनता स्वीकार करन चल दिया। टंटप्रुआरीने जो अपने पिताको पैन्ल आते देखा तो तुरन्त हाथीसे उतर पड़ा और पिताके पाँवोंपर गिरा और बोला 'मैं आपका निर्वासित बेटा हूँ। राजा पुत्रको छाती से चिपकाता हुआ बोला 'बेटा ! अब सँभाल तू अपना राज-पाट और मुझे छुट्टी दे। उसन अपन पोते और पुत्रवधूका स्वागत किया। स्त्रीन महलमे पहुँचकर अपनी सास-ननदमे दर्शन किये और उनके चरणों की धूल अपने माथेमें लगायी। इस प्रकार व सब लोग आरामसे रहन लगे। आसामाईकी कृपासे जसे उनके दिन बहुरे वैसे सबके बहुरे। (जैसे उनके दिन फिरे वैसे सबके फिरें)।

■

जगन्नाथ स्वामी और सोमेश्वर भगवान्

लोक-कथाओंके आधारपर ऐतिहासिक तथ्योंकी यथार्थता अधिक विश्वसनीय नहीं मानी जा सकती, फिर भी, कुछ ऐसी कथाएँ मिल ही जाती हैं जो कुछ ऐसी परम्पराओंका उल्लेख करती हैं जिनके विकास में इतिहासका बड़ा हाथ होता है। पौराणिक आख्यानों और अवदानों (Legends) में कुछ-न-कुछ सत्यका अंश होता ही है। और व्रत सम्बन्धी लोककथाएँ मौखिक लोक परम्परामें पौराणिक आख्यान ही सा हैं। जगन्नाथ स्वामीके व्रत सम्बन्धी बुड्ढे ब्राह्मणकी कथा काल्पनिक हो सकती है परन्तु जगन्नाथ स्वामीकी स्थापना और उनकी पूजा-परम्पराके पीछे निश्चित ऐतिहासिक पृष्ठभूमि है। जगन्नाथ स्वामीके व्रत के साथ सोमेश्वरकी पूजा और कथाके संलग्न होनेके पीछे भी निश्चित ऐतिहासिक वस्तुस्थिति है। शैव और वैष्णव धर्मावलम्बियोंके समन्वय की कथा एक वास्तविक सत्य है, जो हमारी लोक-परम्परामें भी परिलक्षित होती है। इस प्रकरणमें जो दो कथाएँ दी जा रही हैं वे क्रमशः विष्णु और शिव पूजासे सम्बन्ध रखती हैं परन्तु दोनों एक ही दिन एक ही पूजा-व्रतके साथ कही जाती हैं।

जगन्नाथ स्वामीके इस व्रतका सम्बन्ध आषाढ़ शुक्ल द्वितीयाको होने वाली जगन्नाथ स्वामीकी रथ-यात्रासे है पुरीमें जिसे बड़ी धूम-धामसे मनाया जाता है। सोमेश्वर व्रतका पौराणिक विधान श्रावणके प्रथम सोमवारसे प्रारम्भ करनेका है, जो साढ़े तीन महीने तक किया जाता है। समन्वयकी प्रक्रियामें प्रथमसे आषाढ़ और दूसरेसे सोमवारको ले

लिया गया है। तिथिका आधार रखनेपर सोमवार न मिलता और श्रावणके प्रथम सोमवारकी प्रतीक्षामें रथ-यात्राका पर्व निकल चुका होता। अत जगन्नाथ स्वामीकी दृष्टिसे आषाढ़ और रामेश्वरके प्रभाव से सोमवारको ग्रहण कर लिया गया है। अस्तु, अवधी क्षेत्रमें यह समन्वित पर्व सोमवारको ही मनाया जाता है। एक विशेषता और पैदा हो गयी है—यह पव चैत वैशाख या आषाढ़के किसी भी सोमवार को किया जा सकता है। अधिकाश परिवारोंमें यह चैत मासक सोम वारको ही सम्पन्न किया जाता है। इस पर्वके इतने अग्रिम करनेके दो कारण हो सकते हैं। एक तो ऐतिहासिक कारणोंसे शैव प्रभावम कुछ कमी और दूसर रथयात्रामें सम्मिलित होनेवाल तीर्थयात्रियोंकी लगभग दा महीन पूर्व यात्रारम्भ। पुरान जमानम यात्रासम्बन्धी सुवि धाओंके अभावमें काफ़ी पहले यात्रा शुरू करनी पड़ती थी। बुढ़ले ब्राह्मण जगन्नाथपुरीकी यात्रा करते हैं, जिसका प्रस्तुत लोककथाम विस्तृत वर्णन किया गया है। जेठ महीनेमें इस पर्वका नहीं मनाया जाता। इसका कारण भी यात्रा सम्बन्धी कठिनाई ही है। लोकोक्ति है कि जेठमें यात्रा नहीं करनी चाहिए। (चतै गुड़ बैसाखै तेल, जेठै पन्थ, आसाढ़ै बेल इत्यादि)।

अब प्रश्न इस समन्वयकी ऐतिहासिक अनिवार्यताका है। उड़ीसामें ७वीं शताब्दीसे ११वीं तक शिवभक्त सोमवंशियोंका राज्य था जिन्होंने भुवनेश्वरमें सैकड़ों उत्कृष्ट शिवमन्दिरोंका निर्माण करवाया था। कहा जाता है कि भुवनेश्वरमे एक कम एक लाख मन्दिर हैं। भले ही यह संख्या बिलकुल सही न हो परन्तु इतना तो सत्य है कि एक सप्ताहमें भी सभी मन्दिरोंको ठीकसे नहीं देखा जा सकता। पचीस मन्दिर तो आज भी अपनी उत्कृष्ट कला और भव्यताके लिए विश्वविख्यात हैं। मन्दिर निर्माण-कलाके इतने सुन्दर नमून अन्यत्र दुर्लभ हैं। १२वीं शताब्दीम गंगावंशियोंने इस सोमवंशी राज्यका अन्त करके अपनी शासन व्यवस्था

स्थापित की ।[१] ये गंगावंशी विष्णु भक्त थे और इन्होंने अपनी विजयके प्रतीकके रूपमें पुरीमें कीर्तिस्तम्भका निर्माण किया जिसके सामने ११९२ ई० में जगन्नाथ मन्दिरका निर्माण प्रारम्भ हुआ जो ११४८ ई० में पूर्ण हुआ । इस मन्दिरमें जगन्नाथ स्वामीके रूपमें कृष्णका उनके भाई बलभद्र और बहन सुभद्राके साथ प्रतिष्ठित किया गया है । २० फ़ीट ऊँची कुरसी (peynth) पर निर्मित यह मन्दिर ४०० फ़ीट लम्बा और ३०० फ़ीट चौड़ा है जिसका बाह्य क्षेत्र ६६५फ़ीट × ६४० फ़ीट है । और इसका शिखर जिसमें सुदर्शन चक्र और गरुड़ध्वज है १९२ फ़ीट ऊंचा है । स्थापत्य-कलाकी दृष्टिसे इस मन्दिरकी रचना लिंगराज मन्दिरके अनुकरणपर हुई है परन्तु इसमें न तो वह कलात्मक सुकुमारता है और न सौन्दर्य । गंगावंशियोंने वैष्णव धर्म और विष्णु-भक्तिके प्रचारके लिए अनेक प्रयत्न किये । भुवनेश्वरमें बिन्दुसागरके पूर्वी किनारे पर अनन्त वासुदेवका मन्दिर बनवाया । इस मन्दिरका निर्माण १२७८ ई० में अनंगभीम (तृतीय) की पुत्री चन्द्रादेवीकी इच्छासे हुआ था ।[२] भुवनेश्वरमें यही एक वैष्णव मन्दिर है । इसके अतिरिक्त

१ The Somavansa dynesty with their Saiva worship, had been superseded about 1078 by Gangavansa who were nominally much devoted to the service of Visnu; and they set to work at once to signalise their triumph by erecting the temple to Jagannath which has since acquired such a world wide celebrity Puri holds for the Vaisnava cult —'A History of Indian & Eastern Architecture James Fergusson

२ The impact of Vaisnavism which rose to prominence during the Ganga Supremacy left its imprint not only on second (Anant Vasudeva) temple the only important Vaisnava temple at Bhubaneshwar but also

लिंगराज मन्दिरमें भी 'हरि (विष्णु) को प्रतिष्ठित करनेके प्रयत्न किये गये, जिसके परिणामस्वरूप अब हरक पार्श्वमें हरिको भी स्थान मिल गया है। साथ ही लिंगराज मन्दिरके भीतर छोटे मन्दिरोंमें अनेक वैष्णव मूर्तियोंको प्रस्थापित कर दिया गया है। ऐसे ही एक छोटे मन्दिरमें बलराम, सुभद्रा और कृष्णकी मूर्तिको भी प्रतिष्ठित किया गया है।[१] इन उदाहरणोंसे यह स्पष्ट हो जाता है कि किस ऐतिहासिक परिस्थितियोंमें सोमेश्वर और विष्णु भक्तिका समन्वय किया गया है।

इस विषयमें यह प्रश्न उठ सकता है कि सोमेश्वर शंकरका सम्बन्ध उड़ीसाके इस समन्वयसे किस प्रकार है? इस सम्बन्धमें शिवपुराणकी निम्नलिखित कथा द्रष्टव्य है युधिष्ठिर बोले 'हे हृषीकेश! मैंने अनेक प्रकारके व्रत और दान किये हैं। अब आपसे उस व्रतको सुनना चाहता हूँ जो सम्पत्ति देनेवाला हो, जिसके करनेसे मुझे राज्य फिरसे मिल जावे।" श्री भगवान् बोले ' मैं आपको एक व्रत कहता हूँ जो शुभका देनेवाला और लक्ष्मीकी वृद्धि करनेवाला है और धर्म अर्थ काम, मोक्षको देने वाला है।" युधिष्ठिरने कहा 'भगवान्! पहले आप मुझे यह बतला इए कि सबसे पहले इस व्रतको किसने किया और कौन इस प्रकाशमें लाया। भगवान् बोले "पहले सोम नामका एक राजा था वह क्षात्र धर्ममें कुशल और प्रजापालनमें तत्पर था। उसकी प्रजा धर्म-परायण

---

on the personification of the presiding deiy of the Lingraj as the combined menifestation of Hari and Har That Saivism had to compromise with Vaisnavism is also apparent in the introduction of a number of Vaisnava rites in the worship of Lingraj —'Bhubaneshwer' Debala Mitra.

१ Besides a few stray Vaisnava images, a set of images of Balram Subhadra and Krishna is also installed in a small shrine within the enclosure of the Lingaraj

—Ibid

थी। राजाके मन्त्री सौम्य और सुख देनेवाले थे। उसके नगरमें एक तालाब था, जहाँ सोमेश्वर शिवका वास था। वहाँ एक वेद-वेदान्तोंका ज्ञाता और शास्त्रवेत्ता ब्राह्मण रहता था जिसका नाम सामशर्मा था। उसकी पत्नी सदाचारिणी, मिष्टभाषिणी और पतिव्रता थी। निर्धनताके कारण दोनों बड़े खिन्न रहते। निर्धनताको दूर करनेके लिए सोमशर्मा सोमेश्वरमें भक्ति करने लगा। नित्यप्रति (सोमेश्वर) तालाबमें स्नान करके शंकरकी पूजा करता। उसकी अटल भक्तिको देखकर सोमेश्वर वृद्ध ब्राह्मणके रूपमें प्रकट हुए और उन्होंने पूछा इतने विद्वान् होकर तुम दुःखी क्यों हो?' सोमशर्मा बोला "उस जन्ममें मैंने कुछ दानपुण्य नहीं किया था इसीलिए मैं इस जन्ममें दरिद्र हूँ।' वृद्ध ब्राह्मणने कहा, "मैं तुम्हें एक व्रत बतलाता हूँ। इसको नियमपूर्वक कर लोगे तो सब सम्पत्तियाँ मिल जायेंगी।" सोमशर्मा ध्यानसे सुनने लगा। वृद्ध ब्राह्मणने सविस्तार सर्वसिद्धिदायक व्रत विधान बतलाया। इस विधानमें बिल्व-पत्रों और रोटक व्रतपर विशेष बल दिया गया है।

इस कथामें दो बातें ध्यान देने योग्य हैं। एक तो सोम राजा, जिसका उल्लेख उड़ीसाके शासक वंशके रूपमें किया जा चुका है और दूसरा वह तालाब जिसके किनारे सोमेश्वरके आवासका उल्लेख हुआ है। जिस सोमेश्वरसागरकी कथा इस प्रकरणमें प्रस्तुत है वह बहुत सम्भव है भुवनेश्वरका बिन्दुसागर ही हो जो वैष्णव प्रभावके अन्तर्गत सोमेश्वरसागरसे बिन्दुसागर हो गया हो। कथामें इसी सोमेश्वरसागरका माहात्म्य बतलाया गया है। इस प्रकार लोकमानस में दोनोंके महत्त्वकी स्वीकृति है। लोक धार्मिक आचरण खण्डन और अस्वीकृतिपर नहीं मण्डन और स्वीकृतिपर आधारित हैं। यही कारण है कि शूद्र पुजारियोंके द्वारा पकाया भात जगन्नाथ स्वामीका प्रसाद होकर कुलीन ब्राह्मणोंको भी प्रिय हो जाता है। 'जगन्नाथका भात जगत पसारे हाथ'। जगन्नाथ स्वामीके मन्दिरके पुजारी और नैवेद्य

राजाओंने मन्दिरपर सबरोंके अधिकारको स्वीकार कर लिया। इसी लिए जगन्नाथके माहात्म्यके कारण कुलीन ब्राह्मण भी वहाँ जाकर उनके हाथका पका भात तो खा लेता है परन्तु अपने घरकी रसोईमें अशुद्धता देखनेपर व्यंग करनेसे नहीं चूकता — रसोईको जगन्नाथ बाबाका भण्डारा बना रखा है।

अतएव ब्राह्मण घरोंमें जय जगन्नाथ स्वामीकी पूजा होती है तो उनकी स्थापना रसोईके भीतर ही या रसोईके निकट की जाती है क्योंकि कच्ची रसोई अपने स्थानसे अलग होनेपर भ्रष्ट हो जाती है। वहीं एक स्थानपर चौक पूरकर उसपर पाटा रख दिया जाता है। उस पाटापर जगन्नाथके बेंत (जिनकी महिमा दुबलेकी कथामें वर्णित है) ताम्रपत्रोंमें बलराम, कृष्ण और सुभद्राकी आकृतियाँ और पुरीसे ही लायी गयी जगन्नाथ स्वामीकी तसवीरें रखी जाती हैं। अनेक प्रकार के फूलोंके साथ कुसुमका फूल और अन्य अन्नोंके साथ जौकी बाली अवश्य चढ़ायी जाती है। कैरियोंकी 'गौद' (गुच्छा) भी चढ़ायी जाती है। पकवानोंमें गुझिया गुरधनियाँ और पुआ चढ़ाये जाते हैं। जगन्नाथ स्वामीके लिए कच्ची और पक्की दोनों प्रकारकी रसोई बनती है। कुछ घरोंमें छुआछूतके कारण दो सोमवारोंको यही व्रत रखा जाता है और जगन्नाथ स्वामीकी पूजा होती है। जगन्नाथपुरीसे प्रसाद स्वरूप पका भात यात्री अपने साथ ले आते हैं और सुखाकर रख लेते हैं। इसको भोगमें अवश्य रखते हैं। इस भातका बड़ा माहात्म्य है। विवाह-शादी ब्रह्मभोज इत्यादि अनेक छोटे-बड़े काम-काजोंमें इस भातके एक दो 'सीत'को कड़ाहीमें डाल दिया जाता है। बखारियोंमें अनाज भरनेसे पूर्व एक दो सीत (दाना) डाल दिये जाते हैं। भण्डारा भरा रहनेके लिए प्रारम्भमें 'जय जगन्नाथ' की गोहार की जाती है जिससे घर धन धान्यसे भरा-पूरा रहे। पूजाके बाद इन्हीं पकवानोंसे जगन्नाथकी पिटरिया भरी जाती है जिसका उल्लेख दुबलेकी कथामें हुआ है।

पूजाके उपरान्त घरके सभी लोगोंके बेंत मारे या छुआये जाते हैं। इन बेंतोंके स्पर्शसे कथाके अभिशप्त प्राणियोंकी भाँति परिवारके लोग भी शापमुक्त हो जाते हैं। इसी पूजाके पूरे होनेपर दुर्बलेवाली कथा कही जाती है और बादमें सोमेश्वरसागर वाली कथा कही जाती है।

दोनों ही माहात्म्य कथाएँ हैं जिनमें क्रमश: जगन्नाथ और सोमेश्वर की महिमाको स्थापित किया गया है। दुबलेवाली कथामें अनेक विधि निषेध भी समाविष्ट कर दिये गये हैं। कथामें मूल निषेध अहंकारका है, जिसका प्रतिनिधि दुबले स्वयं है। इसके अतिरिक्त देवताओंके प्रति विनम्रता और भक्तिभावको अनिवार्यतापर बल दिया गया है। दुबले, उनकी बड़ी बटी और ग्वालिन अभिमान करते हैं और तुरन्त दरिद्र हो जाते हैं। और एक ग़रीब चरवाहा विनम्रताके कारण सम्पन्न हो जाता है। अन्य अभिप्रायोंके द्वारा पतिभक्ति बड़ोंका सम्मान, दूसरोंकी सहायता शिक्षितका विद्यादान इत्यादि आवश्यक गुणोंका विधान किया है और कलह, जादू-टोना अस्वच्छता इत्यादिका निषेध किया गया है। इस प्रकार यह कथा विधि निषेधोंका विवरण देते हुए जगन्नाथ स्वामीके माहात्म्यकी कथा है और इस कथामें पौराणिक कथाके सभी गुण विद्यमान हैं। 'सोमेश्वरका सागर कथा केवल माहात्म्य कथा है। परन्तु फिर भी शैली एव उद्देश्यकी दृष्टिसे वह भी एक पौराणिक कथाके अनुरूप है। पुराणोंमें प्राप्त कथाएँ तो पौराणिक हैं ही परन्तु उसी पद्धति और उद्देश्यसे कही जानेवाली मौखिक परम्परामें प्रचलित लोक-कथाएँ भी पौराणिक कथाएँ ही हैं।

डॉ० हरेकृष्ण मेहताबने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ हिस्ट्री ऑव उड़ीसा' में जगन्नाथ पूजाके उद्‌भव और विकासपर विस्तारसे विचार किया है। उनकी गवेषणाओंके आधारपर इस सम्बन्धमें कुछ जानकारी देना अनुचित न होगा। उनकी खोज मूलत: दो प्रकारोंके समाधानके रूपमें

प्रारम्भ होती है प्रथम, कृष्ण-वासुदेवके लिए जगन्नाथ नामका प्रयोग, और दूसरे कृष्ण और बलभद्रके बीचमें सुभद्राकी मूर्ति। प्रत्येक देवताकी शक्ति उसके साथ होती है जो पत्नी रूपमें होती है परन्तु सुभद्रा कृष्णकी बहन हैं, जो कृष्णकी शक्तिके रूपमें नहीं हो सकतीं।

डॉ० मेहताबका कथन है कि बहुत प्राचीन कालमें तीन प्रतिमाएँ थीं जिनमें जगन्नाथकी प्रतिमा प्रमुख थी। और बीचकी प्रतिमा किसी देवीकी थी जो दोनोंकी बहन थी। जब कृष्ण वासुदेवकी पूजाका महत्त्व पूर्व और दक्षिणमें बढ़ रहा था उस समय जगन्नाथकी अति प्राचीन प्रतिमाको कृष्ण माना जाने लगा। यदि इन तीन प्रतिमाओंमें से एकको कृष्ण मान लिया तो स्वाभाविक है कि दूसरी पुरुष प्रतिमाको बलभद्र माना जाये। और क्योंकि इन प्रतिमाओंके सम्बन्धमें यह मान्यता कि बीचकी देवीकी प्रतिमा उन दोनोंकी बहन है अतः कृष्ण और बलभद्रकी बहन सुभद्रा समझ ली गयी। प्रत्येक देवताके साथ शक्तिकी अनिवार्यता जबतक निश्चित हुई, तबतक जगन्नाथ नाम इतनी मजबूतीसे जम चुका था कि उसको बदलकर कृष्ण कहना असम्भव हो गया। जगन्नाथ विष्णुके अवतार नहीं हैं। जगन्नाथ तो उनके सृष्टि-संरक्षणके गुणके कारण हैं। अतः यह स्वाभाविक प्रश्न उठता है कि यदि ये प्रतिमाएँ कृष्ण, सुभद्रा और बलभद्रकी नहीं हैं तो किस की हैं?

बौद्ध, जैन, शैव, वैष्णव आपसमें इतने पृथक नहीं हैं कि समानान्तर जीवित न रह सकें। समय-समयपर विभिन्न मत-मतान्तरोंका वैभव और पराभव होता रहा। पूजा-पद्धतियों और विचार-सरणियोंमें निरन्तर पारमेल होता रहा। ७८८-८२० ई० के आस-पास शंकराचार्य पुरी आये थे और उन्होंने जगन्नाथ और गीताका उपदेश देनेवाले पुरुषोत्तमको एक ही घोषित किया था। इससे यह भी सिद्ध होता है कि जगन्नाथका मन्दिर गंगावंशी राजाओंसे पूर्व भी था। और इन

राजाओंने प्राचीन मन्दिरका जीर्णोद्धार करवाया था। स्कन्दपुराणके उत्कलखण्डमें भी जगन्नाथके मन्दिरका वर्णन विस्तारसे किया गया है। अत गंगावंशियोंने जगन्नाथके पुराने मन्दिरके स्थानपर नये मन्दिरका निर्माण करवाया था। कलचुरी राजाओंके ब्रह्मदेव मन्दिरमें खुदे हुए अभिलेखसे प्रतीत होता है कि बहुत पहलेसे उड़ीसाको पुरुषोत्तम क्षेत्र माना जाता रहा है। ब्रह्मपुराण नारदपुराण पद्मपुराण, कपिल संहिता नीलाद्रि महोदय तथा उड़िया बँगला एवं तेलगू भाषाके प्राचीन ग्रन्थोंमें एक ही परम्पराका वर्णन हुआ है जो संक्षेपमें निम्न प्रकार है जगन्नाथकी पूजा एक शबर करता था। इन्द्रद्युम्नने अपने मन्त्री विद्यापतिको नीलमाधव (जगन्नाथ) के सम्बन्धमें पूरी जानकारी प्राप्त करनेके लिए भेजा। विद्यापति नीलाचल पहुँचा जहाँ उसे पता लगा कि विश्वावसु नामके शबरने उसे छिपा दिया है और किसीको वहाँतक नहीं जाने देता। विश्वावसुके राजमहलमें एक अतिथिके रूपमें विद्यापति किसी प्रकार पहुँच गया। वह विश्वावसुकी कन्याको प्यार करने लगा। उसकी मददसे विश्वावसुने पता लगाया कि नीलमाधवको कहाँ छिपाकर रखा था। इन्द्रद्युम्नको सूचना भजी। इन्द्रद्युम्नने बहुत बड़ी सेना लेकर उड़ीसापर आक्रमण कर दिया। घमासान युद्ध हुआ पर विश्वावसु हार गया और उसने इन्द्रद्युम्नसे सन्धि कर ली। परन्तु जिस नीलमाधवके लिए इन्द्रद्युम्नने आक्रमण किया था वह प्रतिमा गायब हो गयी।

इन्द्रद्युम्नने २१ दिन तक उपवास किया और घोर तपस्या की। तब स्वप्नमें इन्द्रद्युम्नको मालूम हुआ कि नीलमाधवने दारु लकड़ीके मोटेका रूप धारण कर लिया है। अब उसे चाहिए कि इस दारुके नीलमाधव बनवाकर उनकी पूजा करे। एक वृद्ध बढ़ईके रूपमें ब्रह्मा स्वयं इन्द्रद्युम्नके सम्मुख उपस्थित हुए। उनकी शर्त थी कि एक निश्चित अवधि तक जबतक वह प्रतिमाओंका निर्माण करेंगे दरवाजे बन्द

रहेंगे। जब बहुत दिन हो गये और रानीकी व्यग्रता बढ़ने लगी तो उसने एक दिन दरवाजे खुलवा दिये। बढ़ई गायब हो गया और आधी बनी प्रतिमाएँ पड़ी रह गयीं। उन्हीं आधी बनी प्रतिमाओंकी ही तबसे पूजा होती है। और प्रतिमाओंके लुंज-पुंज होनेका यही कारण समझा जाता है। परन्तु पुराणोंके अतिरिक्त अन्य किसी इतिहास ग्रन्थ या ताम्रपत्रमें इन्द्रद्युम्नका उल्लेख कहीं नहीं मिलता।

सर ए० कनिंघम दि स्तूप ऑव भरहुत में लिखते हैं कि जिन जिन देशोंमें बौद्धधर्म प्रचलित हुआ उन देशोंमें सर्वत्र 'त्रिरत्न' प्रतीककी प्रमुखत: पूजा होती है। वील इसे मणिप्रतीक बतलाते हैं और एक अन्य स्थानपर उनको पूजाके तीन रूप—'बुद्धम' 'धम्मम' और 'संघम' बतलाते हैं जो विशेष रूपसे पूज्य हैं। मुख्य द्वारका यह मुख्य प्रतीक है। यह प्रतीक स्त्रियोंके कर्णफूलोंमें, पताकाओंमें तथा हारके लॉकिटोंमें बनवाया जाता था। यह त्रिरत्नप्रतिमा भरहुतमें बुद्धके सिंहासनपर है। वस्तुत: जगन्नाथ मन्दिरकी तीनों प्रतिमाएँ इसी त्रिरत्न प्रतीकसे विकसित हुई हैं। यह त्रिरत्न प्रतिमा साँचीकी मूर्तियोंमें मिली है। जगन्नाथकी भोंडी मूर्तियाँ त्रिरत्नके ही वैष्णव रूप हैं। मथुरा और बनारसमें बुद्धके लिए इसी त्रिरत्न प्रतिमाका प्रयोग किया गया है। उड़ीसामें यह प्रचलित विश्वास है कि जगन्नाथकी प्रतिमामें कृष्णकी एक हड्डी है और क्योंकि ब्राह्मण या वैष्णव हड्डी या समाधिकी पूजा नहीं करते, इसलिए यह माना जा सकता है कि हड्डीका यह अवशेष बुद्धका ही होगा। और जगन्नाथकी त्रिमूर्ति बुद्धकी त्रिरत्न प्रतिमा ही होगी जो बुद्ध धर्म और संघका प्रतिनिधित्व करती है। कुछ ही वर्ष पूर्व भुवनेश्वरमें अशोकयुगीन पॉलिशवाला एक पत्थर मिला है जिसके एक सिरेपर बुद्ध धर्म और संघके प्रतीक हैं, जिनकी पूजा मनत्र होम तभी थी। यह पत्थर आजकल कलकत्ताके आशुतोष म्यूजियममें सुरक्षित है। ये प्रतीक जगन्नाथकी कृष्ण सुभद्रा और बलभद्रकी प्रतिमाओंसे

बिलकुल मिलते-जुलते हैं। इससे यह सिद्ध होता है कि उड़ीसा प्रदेशमें बौद्धधर्मावलम्बी इन प्रतीकोंकी पूजा अशोकके जमानेसे करते आ रहे हैं।

उपर्युक्त बातोंसे यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि अशोकके शासनकालमें ही उड़ीसाके शबरोंको बौद्ध बना लिया गया था। पुरीमें एक बौद्ध स्तूप बनाया गया था, जिसमें त्रिरत्नका प्रतीक था। पहली ईसवीके आस पास महायान बौद्धोंके प्रभावके अन्तर्गत बुद्ध और बोधिसत्त्वोंकी प्रतिमाओंकी पूजा होने लगी थी। सीधे-सादे शबर त्रिरत्नपूजा करने लगे थे। इन तीनों प्रतिमाओंको मिलाकर जगन्नाथ कहा जाता था। तिब्बती सूत्रोंसे विदित हुआ है कि जगन्नाथ बुद्धका ही दूसरा नाम है। और तन्त्र युगमें समन्वयके समय जगन्नाथ विष्णु नाम जाने लगे थे। ज्यों-ज्यों पूजा बढ़ती गयी, त्यों-त्यों त्रिरत्नके प्रतीकोंको मानवीय आकृति प्रदान की गयी।

७ वीं ८ वीं शताब्दीमें जब बुद्धका विष्णुका अवतार माना जाने लगा, उस समय त्रिरत्नकी जगन्नाथ रूपमें पूजा होने लगी थी। अतः विष्णुके अवतार बुद्ध जगन्नाथके नामसे प्रख्यात हो गये। जगन्नाथकी तीन मूर्तियोंमें एक बुद्धकी है जो कृष्ण या जगन्नाथ स्वयंकी है। दूसरी मूर्ति सुभद्राकी मानी जाती है, वह बौद्ध धर्मके अनुसार धर्मकी प्रतिरूप है क्योंकि बौद्ध धर्मको स्त्रीके रूपमें माना गया है। त्रिरत्नमें जो संघका प्रतीक है, वह जगन्नाथकी मूर्तिमें बलभद्रके रूपमें स्वीकृत हुआ और उसका सबसे बड़ा आकार दिया गया है संघम बौद्ध भिक्षु तथा भिक्षुणियोंके बीच भाई-बहनका सम्बन्ध माना जाता है, इसलिए पत्नी रूपमें स्वाभाविक स्थानपर बहन सुभद्राको स्थापित किया गया है।

स्नानयात्रा और रथयात्राकी परम्परा भी बौद्ध परम्परा है। फाहियान (५वीं ई०) ने खोतनकी रथयात्राका विस्तृत वर्णन दिया

है। फाहयानके विवरणके अनुसार खोतनकी रथयात्रा आषाढ़में होती थी। राजा आगे-आगे मार्गमें झाड़ू लगाता चलता था। विष्णुकी किसी भी पूजामें रथयात्राका कोई वर्णन नहीं आता। जगन्नाथकी रथ यात्रा बौद्ध रथयात्राकी भाँति आषाढ़में होती है और उड़ीसाका राजा यात्राके पूर्व मार्गको साफ करता है। स्नानयात्रासे रथयात्राकी समस्त पूजा इत्यादि शबरवंशी लोग ही करते हैं। दुर्बलेकी कथासे स्पष्ट है कि जगन्नाथकी पूजाके प्रति विरोध था। दुर्बले ब्रह्मभोज तो करना चाहते हैं परन्तु जगन्नाथका ब्रह्मभोज नहीं करना चाहते। इस प्रकारके विरोध को दबाकर जगन्नाथकी पूजा ब्राह्मणोंमें प्रचलित की गयी।

सरलादासने अपने महाभारतके वनपर्वमें लिखा है कि इन्द्रद्युम्नने जब मन्दिरके दरवाजे खोले तो उन्हें बिना हाथ-पाँवकी तीन मूर्तियाँ मिलीं जो बुद्धके प्रकाशमण्डलसे चमक रही थीं। उन प्रतिमाओंके नाक कान मुँह और आँखें नहीं थीं—न अंगुलियाँ थीं और न पंजे। महान् बुद्ध केवल तीन रेखाओंमें प्रकट हुए थे। इससे सर कनिंघमकी मान्यता ठीक उतरती है। जगन्नाथपुरीके मन्दिरपर वज्रयानी बौद्धोंका विशेष प्रभाव दिखाई देता है जो मिथुन और काम मूर्तियोंसे स्पष्ट है।

जगन्नाथजीकी कथा

एक गाँवमें एक ब्राह्मण रहता था। उसका नाम था दुर्बल। वह बहुत धनवान् था और उसे अपनी धन-सम्पदापर घमण्ड था। एक दिन उसने सोचा कि जगन्नाथ भगवान्का ब्रह्मभोज किया जाये। ऐसा सोचकर उसने ब्राह्मणोंको न्योता भेज दिया। वह अभिमानी तो था ही इसलिए जगन्नाथजीका नाम न लेता था। जो कोई उससे पूछता कि दुबल तुम्हारे यहाँ क्या है तो दुर्बल कहता कि ब्रह्मभोज है। यह न कहता कि जगन्नाथजीका ब्रह्मभोज है। जब जगन्नाथजीने यह देखा कि

ब्राह्मण मेरा नाम नहीं लेता हो उन्होंने ब्राह्मणका रूप धारण कर लिया। दुबले जहाँ कहीं न्योता देने जाता जगन्नाथजी ब्राह्मणके रूपमें पहुँच जाते और दुबलेको चिढ़ानेके लिए पूछते कि तुम्हारे यहाँ क्या है ? पर दुर्बले हमेशा यही कहता कि ब्रह्मभोज है। ब्राह्मणके बार-बार पूछनेपर दुर्बलेने खीझकर जवाब दिया पचास बार कह दिया ब्रह्म भाग ब्रह्मभाग ब्रह्मभोज है। इससे ज्यादा आपको क्या लेना देना है ? आप चले जायें मेरे सामनेसे और फिर यह सवाल न पूछें।' ब्राह्मणके रूपमें जगन्नाथ स्वामी चले गये।

ब्रह्मभोजका दिन आया। देश-देशसे ब्राह्मण कुटुम्ब, कगला सब टूट पड़े। दुर्बलेने सभी ब्राह्मणोंके पैर धोये। उनको यथास्थान आसनों पर बिठाया। लोगोंके सामन पत्तलें पड़ने लगीं। पारूस (परासना) शुरू हुई। जगन्नाथ स्वामीकी माया–सभी पूरियाँ पत्ते हो गयीं, दूध, दही, खीर साग भाजी इत्यादि कीच-काँदा हो गया। मिठाई-शक्कर सब पकड़ पत्थर हो गयी। दुर्बले यह देखकर बड़ा दुःखी हुआ। अपने-अपने आसनोंसे सभी ब्राह्मण उठ खड़े हुए। उनके क्रोधका पार न रहा। क्रोधमें सबने दुर्बलेको शाप ' दिया, 'तुमने ब्राह्मणोंको घर बुलाकर उनका अपमान किया है इसी प्रकार तुम्हारा भी दर-दर अपमान होगा। तुम्हारा सब धन हुर-बदुर जायेगा। दाने-दानेको तरसोगे।" दुर्बलेके मुँहसे बोल न फूटा। माँथा ठोककर धरतीपर बैठ गया। ब्राह्मणोंका समाधान अब करे भी तो किस मुँहसे ?

जगन्नाथजीने फिर उसी ब्राह्मणका रूप धारण किया और दुर्बलेके पास आये। 'दुर्बले क्यों उदास लेटे हो ? ब्राह्मणको देखते ही दुर्बलेके तन-बदनमें आग लग गयी। दुर्बलेने सारा क्रोध उसी ब्राह्मणपर उतारा 'तुम्हारे बार बार टोकनेसे ही ऐसा हुआ है। मेरा अपमान हुआ। मेरी धन-सम्पत्ति गयी। अब भी तुमको सन्तोष नहीं ?

ब्राह्मणने कहा 'जो होना था सो हो गया। अब तुम कर ही क्या

सकते हो ? भगवान्‌की शायद यही इच्छा थी। अब तुम्हारे पास न लाख रुपये होंगे और न अब तुम्हारा पेट भरेगा। ब्राह्मण हो, भिक्षा माँगकर पेट पालो।' दुर्बलेको ब्राह्मणकी बातें जलेपर नमककी तरह लगीं। पर खूनका घूँट पीकर रह गया। दुर्बलेने मन-ही-मन विचार किया—हो न हो किसी देवताका ही कोप है। तो अब भीख ही माँगनी पड़ेगी। भाग्यमें शायद यही लिखा था। ऐसा सोचकर दुर्बले दण्ड कमण्डलु लेकर निकल पड़ा। शाम तक द्वार-द्वार भीख माँगी, तब कुछ अनाज मिला। अनाज लेकर घर लौटा और अपनी पत्नीके सामने रख दिया। उसकी पत्नीने अनाज कूटा-पीसा और रसोई बनायी। रसोईसे निकलकर हाथ धोये। ब्राह्मणी जब दुर्बलेके लिए भोजन परोसने लगी तो देखा कि एक रोटी और एक अगरासन ही बचा है। अब वह क्या करे ? मन मारकर उसने एक रोटी दुर्बलेके सामने परोस दी और अगरासन बच्चोंको दे दिया। एक ही रोटी पाकर दुबला बोला अरी ! मैंने तो काफ़ी अनाज इकट्ठा किया था और तुम केवल एक ही रोटी दे रही हो ? और तुमने रोटियाँ भी कम नहीं बनायी थीं। क्या हुई सब रोटियाँ ? दुर्बलेकी पत्नीने कहा, 'मेरे पास तो जो कुछ है वह इतना ही है।' दुबलेको शक हुआ कि उसकी पत्नी झूठ बोलती है। उसने जरूर रोटियाँ बचाकर रखी हैं। दूसरे दिन दुबलेने रसोई पकाते समय छिपकर देखा। उसकी पत्नीने बहुत-सी रोटियाँ बनायीं पर रसोईसे निकलनेके बाद केवल एक रोटी और अगरासन बचा। दुबलेने अपनी पत्नीसे कहा कि 'मैंने सब छिपकर देखा है। एक रोटी और अगरासन बचता है। तुम क्या खाती हो ?" तब दुर्बलेकी पत्नीने कहा, मैं तो कुछ नहीं खाती। क्या करूँ ? रसोई तो बहुत बनाती हूँ पर कुछ बचता ही नहीं।' तब दुर्बलेने पूछा, 'तुम कुआँरेमें किसी देवी-देवताकी पूजा अर्चा करती थी ? किसी देवताके शापसे ही ऐसा हुआ है। सोचो कोई उपाय निकालो।

उनकी पत्नीने कहा 'कुआँरेपनमें सोमवारको मैं जगन्नाथ स्वामीका व्रत करती थी। दुर्बलने पूछा 'क्यों छोड़ दिया ? उसने कहा मुझे संकोच होता था आप क्या कहेंगे ? आप सोचेंगे कि कुआँरेपनमें क्या टिटम्बर करती थी। इसीलिए छोड़ दिया।" तब दुर्बलेने कहा तुम व्रत करो और मैं जगन्नाथ स्वामीका दर्शन करके ही अन्न-जल ग्रहण करूँगा।" इतना कहकर दुर्बले जगन्नाथ स्वामीके दर्शनके लिए चल दिया।

दुर्बले महाराजको मार्गमें बड़ी लड़कीका घर मिला। दरवाजेपर उसके लड़के खेल रहे थे। दुर्बलने बच्चोंसे कहा, 'जाओ अपनी अम्मासे कहो कि नाना आये हैं।' बच्चोंने भीतर जाकर माँसे कहा "अम्मा नाना आये हैं। माँने पूछा, "तुम्हारे नाना किस तरहके हैं, क्या पहने हैं ?" तो बच्चोंने बतलाया 'फटे कपड़े पहने हैं और हाथमें दण्ड कमण्डलु लिये हैं।" माँने कहा, 'तो वे तुम्हारे नाना नहीं हैं। हमारे मायकेमें ऐसा कोई दरिद्र नहीं है। उन्हें जाने दो। बच्चोंने बाहर आकर दुर्बलेको मार भगाया। दुबले अपने भाग्यको कोसते हुए आगे चले। इधर लड़कीकी सारी धन-दौलत गायब हो गयी। कुछ दूर चलनेपर छोटी लड़कीका घर मिला। छोटी लड़कीके बच्चे बाहर खेल रहे थे। दुबलेने उनसे भी कहा, जाओ अपनी अम्मासे कहो नाना आये हैं।' बच्चोंने भीतर जाकर माँसे कहा 'नाना आये हैं।' माँने पूछा, 'नाना कैसे हैं ?' बच्चोंने बताया 'नाना फटे कपड़े पहने हैं और हाथोंमें दण्ड-कमण्डलु लिये हैं। माँने कहा, 'तो जाओ अपने नानाको भीतर ले आओ। दुबले भीतर आकर अपनी छोटी लड़कीसे बड़े प्रेमपूर्वक मिले। उन्होंने लड़कीसे कहा मैं जगन्नाथ स्वामीकी कथा कहता हूँ – तुम सुनो। कथा सुनाकर ही मैं पानी पिऊँगा।" वह छोटी लड़की बड़ी गरीब थी। उसके घरमें पूजाके लिए कोई सामान भी न था। वह अपने एक बच्चेको लेकर बनियेके घर पहुँची और उसे

गिरवी रखकर पूजाका सामान लायीं। दुर्बलेने बड़ी भक्तिसे पूजा की और बड़े प्रमसे कथा कही। कथा कहकर जलपान किया और नैवेद्यका बचा हुआ सामान ढँककर रख दिया। दुबले आगे चले। जब छोटी लड़की का पति आया तो उसने अपने पतिको जगन्नाथ स्वामीका प्रसाद देनेके लिए नवेद्यकी पिटारी खोली तो देखते ही दंग रह गयी। नैवेद्यकी जगह सोना चाँदी। धन लेकर वह अपने लड़केको छुड़ाने बनियेके यहाँ गयी। बनियेने पूछा अभी तो तुम उस बच गयी थी, अब इतनी जल्दी कहाँसे सोना चाँदी आ गयी कि छुड़ाने आ गयीं? लड़कीने कहा, 'हमारे पिताजी जगन्नाथ स्वामीके दर्शनके लिए जा रहे थे उन्होंने जगन्नाथजीकी कथा कही नैवेद्य चढ़ाया। वही नैवेद्य सोना-चाँदी हो गया।' जब बनियेको जगन्नाथ स्वामीका प्रभाव मालूम हुआ तो उसने कुछ लिए बिना ही लड़का लौटा दिया।

दुबले रोज जगन्नाथ स्वामीकी पूजा करते और कथा कहकर पानी पीते और अपनी यात्रापर आग चल पड़ते। रास्तेमें एक दिन दहीकी दहेंड़ी लिये एक ग्वालिन मिली। उससे दुर्बलेने कहा, 'तुम हमारी कथा सुन ला तो मैं पानी पिऊँ। ग्वालिनने कहा हमारे एक लाख गौएं हैं। जबतक तुम्हारी कथा सुनेंगी हमारी गौएँ बिछुर जायेंगी। मैं नहीं सुनती तुम्हारी कथा। दुर्बले आगे चले। इधर ग्वालिनकी गौएँ बिछुर गयीं। राहमें उसे एक लड़का मिला। उसके एक टूँड़ी गैया थी। दुबलेने उससे कहा, हमारी कथा सुन लो तो पानी पिऊँ।" लड़केने प्रेमसे बैठकर कथा सुनी और दुबलेको गायका दूध पिलाया। दुर्बले आगे चले। रास्तेमें एक आमका पेड़ मिला। उसन पूछा, "दुर्बले कहाँ जा रहे हो?' दुबलेने कहा "जगन्नाथपुरी जा रहा हूँ। आमने कहा 'जगन्नाथ स्वामीसे मेरा भी एक सन्देश कहना कि हम फूलते-फलते हैं पर पकनेपर कीड़े पड़ जाते हैं। पता नहीं किन पापोंके कारण?' दुर्बले आमका सन्देश लेकर आगे चले। थोड़ी

दूर जानपर दुबल्न बालस बंधा एक हाथी झूमते देखा। हाथीने पूछा, 'दुबले, कहाँ जा रहे हो ?" दुर्बलने कहा, "जगन्नाथजी। हाथीने कहा, "जगन्नाथ स्वामीसे मेरा एक सन्देश कहना, मैं इतने डीलडौलका जानवर हूँ, फिर भी एक थानमें बंधा झूम रहा हूँ। न कोई मुझपर सवारी करता है और न मैं चल पाता हूँ। न जाने किसका श्राप है ?' दुबले और आगे बढ़। आगे दो तलैयाँ मिलीं। उन्होंने पूछा, कहाँ चले दुबले ?' उन्होंने जवाब दिया, 'जगन्नाथजी। उन्होंने कहा, "एक हमारा सन्देश कहना — हम इतने पास हैं पर सावन भादोंमें भी नहीं मिलने पातीं। किन पापोंसे? दुबलेजी आगे बढ़े। आगे एक गैया-बछड़ा मिले। गैयाने भी वही पूछा और सन्देश ले जानेके लिए कहा "दस महीने इसे पेटमें रखकर जन्म दिया, पर दूध नहीं पिला पाती, यह किन पापोंके कारण ?" दुर्बले आगे बढ़े। आगे चलनेपर उन्हें एक शिला मिली। उसने भी अपना सन्देश कहा 'मेरा इतना अच्छा पत्थर है पर दिन रात तपती हूँ और कोई एक लोटा पानी भी नहीं डालता। इसका क्या कारण है ?' दुर्बले आगे चले तो एक लकड़हारा सिरपर बोझ रखे मिला। उसने भी अपना सन्देश दिया 'यह बोझ न दिन उतरे न रात। ऐसा किन पापोंसे होता है ?' दुर्बले और आगे चले। आगे सिरपर जलती हुई सिरोसी लिये एक स्त्री मिली। उसने भी दुर्बलसे अपना दुःख रोया, यह जलती हुई सिरोसी सिरसे न दिन उतरे न रात, किन पापोंसे ?' दुर्बले आगे चले तो एक औरत मिली जिसके चूतड़ोंसे पाटा चिपका था। उसने भी अपनी मुसीबत बतायी और जगन्नाथ स्वामीसे पुछवाया कि किन पापोंसे ऐसा है ? आगे चले तो एक और औरत मिली जिसका कूबड़ आसमानमें लगा था और मुँह जमीनमें। उसने भी दुर्बलेसे कहा 'मेरा सन्देश कहना कि मैं न दिन सीधी हो पाती हूँ और न रात। किन पापोंसे ?'

इन सब लोगोंके सन्देश लेकर दुर्बले महाराज चलते चलते एक

दिन जगन्नाथपुरी पहुँचे। जगन्नाथपुरी पहुँचनेको तो पहुँच गये पर मन्दिर कहीं भी दिखाई न दिया। दुबले अब पुरीमें भटक रहे थे तब जगन्नाथ जी फिर उसी ब्राह्मणके वेशमें मिले। और पूछने लगे, 'दुर्बले कहाँ जा रहे हो?' दुर्बलेने झुँझलाकर कहा 'तो तुम यहाँ भी आ पहुँचे मुझे परेशान करनेको?' ब्राह्मणने कहा 'दुर्बल! तुम्हारा निश्चय बड़ा अटल मालूम देता है। अच्छा आँखें बन्द करो। तुम्हें जगन्नाथजी यहींपर मिलेंगे।' दुर्बलेने आँखें मूँद लीं। आँखोंके बन्द करते ही दुर्बलेके चारों ओर पल भरमें पुरी बस गयी। बाग बगीचा लग गये। सामने मन्दिर दिखाई देने लगा। भीतर जाकर जगन्नाथ स्वामीके दर्शन किये। दुबले कुछ दिन वहाँ रहे। एक दिन जगन्नाथ स्वामीने दुर्बलेसे कहा 'अब तुम घर जाओ नहीं तो सब लोग यहाँ कहेंगे कि दुर्बल जगन्नाथजीके दर्शन करने गये थे पर वहीं मर मिटे।" दुबलेने कहा 'अब मैं आपके चरणोंको छोड़कर कहाँ जाऊँगा? यहाँ मुझे सभी प्रकारका सुख है। अब जंजालमें क्यों फँसूँ?' जगन्नाथजीने कहा, 'नहीं! नहीं! अब तुम घर जाकर अपनी गृहस्थी सँभालो।' दुर्बलेने जब देखा कि अब वापस जाना ही पड़ेगा तो राहमें मिलनेवालोंके सन्देशे सुनाये। जगन्नाथ स्वामीने उसे पाँच बेंत दिये और कहा 'इन बेंतोंको ले जाओ। लोगोंको छुआ देना सबके पाप दूर हो जायेंगे।

दुर्बले ब्राह्मण जगन्नाथ स्वामीको प्रणाम करके और बेंत लेकर वापस चल पड़े। रास्तेमें कुबड़ी मिली। दुबलेने उसे बताया कि 'तुमने पिछले जनम अपने पतिका निरादर किया था। उससे मुँह घुमा घुमा कर ऐंठती थीं। इसी कारण तुम्हें इस जनममें कष्ट मिल रहा है।" इतना कहकर दुर्बलने उसके दो बेंत मार दिये और क्षण भरमें उसका कूबड़ ठीक हो गया। दुर्बले आगे चले तो उन्हें वही औरत मिली जिसके चूतड़ोंसे पाटा चिपका था। दुर्बलेने उसे बताया, 'तुमने बड़ोंका सम्मान नहीं किया। उनके सामने भी पाटा चढ़ी बैठी रहीं।

इसीसे तुम्हारे पाटा चिपका रहता है।' दुर्बलेने इस औरतके भी दो बेंत छुआ दिये और पाटा छूट गया। आगे चलनेपर दुर्बलेको वही लकड़हारा सिरपर बोझ लादे हुए मिला। उसको बतलाया "पिछले जनम तुमने दूसरोंके सिरपर बोझ रख तो दिया पर उतरवाया नहीं। इसीलिए तुम्हारे सिरका भी बोझ नहीं उतरता।' उसके भी दुर्बलेने बेंत छुआये। उसके सिरका बोझ उतर गया। दुर्बले आगे बढ़े। राहमें वही गैया मिली। दुर्बलेने उससे कहा "तुम उस जनमकी डोनहिनी हो। दूसरोंके बच्चोंको बिछुड़ाया। उन्हीं पापोंका यह भोग है।" उसको भी दो बेंत मार दिये। वह भी शापस मुक्त हो गयी और उसका बछड़ा रँभाकर दूध पीने लगा। दुबले आगे चले तो दोनों तलैयाँ मिलीं। उसने कहा, "तुम उस जनमकी देवरानी जेठानी हो। तुमने आपस कभी बतकर नहीं दिया। इसीलिए यह वियोग है। ऐसा कह कर दुर्बलेने पाँच चुल्लू पानी इस तलैयासे उसमें और उससे इसमें डाल दिया। दोनों तलैया बिना बरसात मिलने लगीं। दुबले आगे बढ़े। उन्हें वह स्त्री मिली जिसके सिरपर जलती हुई बिरौसी रखी थी। उन्होंने उससे कहा 'तुमने तवा चूल्हेसे नहीं उतारा और रसोईसे निकल आयीं। इसीलिए तुम्हारे सिरपर बिरौसी जला करती है।" ऐसा कहकर उसके भी दो बेंत छुआ दिये। बिरौसी उतर गयी। दुर्बले आगे बढ़े। आगे चलनेपर शिला मिली। उससे उन्होंने कहा कि 'तुम उस जनमकी कायस्थ हो। पढ़ तो लिया पर अपनी विद्या किसीको नहीं दी।" उसके भी दो बेंत मार दिये। वह भी शापमुक्त हो गयी। आगे चलनेपर दुर्बलेको बालमें बँधा हुआ हाथी मिला। उन्होंने कहा, 'तुम उस जनमकी नाउन हो। तुमने बाल काढ़े पर टूटे बालोंको बाँध कर नहीं फेंका इसीलिए बालमें बँधे हो।" दुबलेने उसे भी पापमुक्त किया। आगे चलनेपर उन्हें वही आमका पेड़ मिला। उन्होंने उसे बताया 'तुमने पिछले जनम खराब फल दानमें दिये और अच्छे खुद

जाये। इसीलिए तुम्हारे फलोंमें पकनेपर कीड़े पड़ जाते हैं।" मंत्र मार कर उसे भी पापमुक्त किया।

इस प्रकार मार्गमें सबसे मिलते-जुलते दुर्बल गाँव पहुँचे। पर उनको अपना घर नहीं मिल रहा था। जगन्नाथ स्वामीकी कृपासे उनकी झोपड़ीकी जगहपर आलीशान महल खड़ा था। झोपड़ी ढूँढ़ते हुए दुबलेके बाल सुनकर उसकी पत्नी बाहर आ गयी। पर दुर्बलेको अपनी आँखोंपर विश्वास नहीं हुआ। उसकी पत्नीने बताया कि यह सब जगन्नाथ स्वामीकी कृपासे है। वह घर गये। जगन्नाथ स्वामीका ब्रह्म भोज किया। सब लोग आये। उसी ब्राह्मणके वेशमें जगन्नाथ स्वामी फिर आये। वह बार-बार पूछते 'दुर्बले आज क्या है ?' दुर्बले कहते, "आज जगन्नाथ स्वामीका ब्रह्मभोज है। वह बार बार पूछते और दुर्बले बार-बार जगन्नाथ स्वामीकी जय-जयकार करते।

सोमेश्वरका सागर

एक सोमेश्वरका सागर था। उसमें एक सोमड़ीने स्नान किया। जब वह नहाकर बाहर निकली तो उसका सारा शरीर सोनेका हो गया। अपना शरीर देखकर वह हँसने लगी और बड़ी खुश हुई। वहीं एक कोढ़ी बैठा था। उसने सोचा यह दुष्ट सोमड़ी मेरी देहको देखकर हँस रही है। उसने सोमड़ीसे कहा 'तुम मुझे देखकर क्यों हँसती हो ?' सोमड़ीने कहा 'मैं तुम्हें देखकर नहीं हँसी। मैं तो सोमेश्वरके सागरको देखकर हँसी थी। देखो मैंने इस सागरमें नहाया और सारा शरीर सोनेका हो गया।' कोढ़ीने सोचा मैं भी नहाऊँ तो मेरा कोढ़ अच्छा हो जाय। उसने भी जाकर सागरमें गोते लगाने शुरू किये। एक गोता लगाया दो लगाये और तीसरेके लगाते ही उसकी काया कंचन-जैसी चमकने

लगी। सारा कोढ़ दूर हो गया। अपने शरीरको देखकर कोढ़ी बड़ा खुश हुआ और जोरसे हँसा। उधरसे एक बुढ़िया जा रही थी। उसने सोचा कि यह आदमी मुझे देखकर हँस रहा है। बुढ़ियाने उससे पूछा "तुम मुझे देखकर क्यों हँसे।" उसने कहा, 'मैं तुमपर नहीं हँसा मैं तो सोमेश्वरके सागरपर हँसा।" लोमड़ीने नहाया सोनेकी काया पायी, मैं नहाया मेरी काया सुधर गयी।' बुढ़ियाने सोचा मैं भी नहाऊँ तो मेरा बटा मिल जाय। उसने भी सागरमें स्नान किया। एक डुब्बी लगायी, दो डुब्बी लगायी और तीसरी डुब्बी लगाते ही उसका लड़का सामने आकर खड़ा हो गया। लड़केको देखकर माँ बड़ी खुश हुई और खूब हँसी। लड़केने पूछा, "अम्मा तुम मुझपर क्या हँसी ?" माँने कहा, 'मैं तुमपर नहीं हँसी। मैं तो सोमेश्वरके सागरपर हँसी।' लड़केने पूछा, "क्यों अम्मा ?" माँने कहा "लोमड़ीने नहाया तो सोनेकी देह पायी, कोढ़ीने नहाया तो उसकी काया सुधर गयी, मैंने नहाया तो तुम आ गये।" लड़केने सोचा मैं भी नहाऊँ तो मेरा विवाह हो जायेगा। ऐसा सोचकर उसने एक डुब्बी लगायी दो डुब्बी लगायी और तीसरी डुब्बी लगाते ही एक सुन्दर-सी दुलहिन उसके सामने आकर खड़ी हो गयी। लड़का बड़ा खुश हुआ और जी भरकर खूब हँसा। दुलहिनने पूछा, 'तुम मुझे देखकर क्यों हँसे ? लड़केने कहा "मैं तुम्हें देखकर नहीं हँसा। मैं तो सोमेश्वरके सागरपर हँसा। लोमड़ी नहायी तो कचन काया पायी कोढ़ी नहाया तो सुन्दर देह पाया बुढ़िया नहायी तो लड़का पाया और मैं नहाया तो तुम्हारी-जैसी दुलहिन पाया। यह सुनकर उसने भी सोचा मैं भी नहाऊँ तो मेरे भी बिन पीगका लड़का हो। ऐसा सोचकर उसने एक डुब्बी मारी दो डुब्बी मारी और तीसरीके मारते ही उसके एक सुन्दर-सा बालक हो गया। बालकको देखकर दुलहिन बड़ी खुश हुई और खूब हँसी। लड़केने पूछा 'तुम मुझपर क्यों हँसी माँने कहा 'मैं तुमपर नहीं हँसी। मैं तो सोमेश्वरके सागरपर हँसी कि देखो

लामड़ी नहायी तो कंचन काया पायी कोढ़ी महाया तो उसने सुघड़ काया पायी बुढ़िया महायी तो उसने अपना लड़का पाया, लड़का नहाया तो मुझे पाया और मैं नहायी तो तुम्हारा-जैसा बेटा पायी।' बेटाने कहा, 'अम्मा मैं भी नहाऊंगा।' माँने पूछा, 'बेटा तुम किस लिए नहाओगे? उसने कहा मैं नहाऊंगा कि कहींका राजा बनूं।" और उसने सागरमें एक डुब्बी मारी दो डुब्बी मारी और तीसरेके मारते ही उसके सामने राजाके सिपाही आ पहुँचे और उससे बोले, 'चलो हमारा राजा मर गया है और उसकी गद्दीपर वही बैठ सकता है जो आज पैदा हुआ हो। तुम आज ही पैदा हुए इसलिए चलो, सिंहासन सूना पड़ा है। लड़का हँसा। बड़ा प्रसन्न हुआ और सिपाहियों के साथ चल दिया और राजसिंहासनपर बैठा। सिंहासनपर बैठकर वह खूब हँसा। राजाके सभी कर्मचारियोंने समझा कि राजा उनपर हँसा। उन्होंने राजासे पूछा 'आप हम लोगोंपर क्यों हँसे? राजाने कहा 'मैं तुमपर नहीं मैं तो सोमेश्वरके सागरपर हँसा कि देखो तो सोमेश्वरके सागरका प्रताप कि लामड़ी नहायी तो उसने कंचन काया पायी कोढ़ी नहाया तो उसने सुघड़ देह पायी, बुढ़िया नहायी तो उसने अपना बिछुड़ा लड़का पाया लड़का नहाया तो उसने दुलहिन पायी और दुलहिन नहायी तो उसने मुझ-सा पुत्र पाया और मैं नहाया तो मैंने राज्य पाया।' कर्मचारियोंने कहा हम भी नहायेंगे।" राजाने पूछा 'तुम लोग क्यों नहाओगे?" कर्मचारियोंने कहा, 'हम इसलिए नहायेंगे कि किसीकी नौकरी न करनी पड़े और आरामसे अपने घरोंमें स्वतन्त्र जीवन बितायें।" सभी कर्मचारियोंने सोमेश्वरके सागरमें स्नान किया और लौटकर सभी अपने अपने घरोंमें आनन्दसे रहने लगे। सोमेश्वरके सागरकी कृपासे सभी देशवासी आनन्दका जीवन बिताने लगे।

नागपचमी

अवधी क्षेत्रमें नागपञ्चमीके त्योहारको 'गुड़िया' भी कहते हैं। नाग-पूजाके साथ यह गुड़ियोंका भी त्योहार है। नाग-पूजासे गुड़ियोंका कोई सम्बन्ध नहीं है फिर भी दोनों पर्व एक ही दिन मनाये जाते हैं। गुड़ियोंका खेल विशेषतः लड़कियोंका खेल है। लड़कियाँ सुन्दर-सुन्दर गुड्डी-गुड्डे बनाकर जीवनका नाटक खेलती हैं, गुड्डे-गुड्डीका ब्याह रचाती हैं, बारातें ले जाती हैं, दावतें करती हैं। लड़कोंको ये घरेलू खेल कम पसन्द आते हैं और वे अपनी बहनोंके मनोरंजनके इस उपक्रममें प्रायः बाधाएँ उपस्थित करते रहते हैं। विशेष रूपसे श्रावण मासके सुहावन मौसममें, जब आकाशमें बादल छाये होते हैं, रिमझिम रिमझिम वर्षाकी फुहारें गरमीसे तपे-मुरझाये मनको धोकर फिरसे हरा कर देती हैं, बालक और युवक घरमें नहीं बैठे रह सकते। वे लड़कियों-को भी बाहर खींच लाते हैं और उनकी गुड्डी-गुड्डोंको तोड़-मरोड़ कर बड़े हुए उफनते नदी-पोखरोंमें विसर्जित कर देते हैं। अपने भाइयोंकी यह उद्दण्डता और अरुचिकर उत्पात सावनके इस मौसममें मोहक और प्रिय बन जाता है। अब तो यह दिन गुड़ियोंके पीटनेका पर्व ही बन गया है। लड़कियाँ अनेक प्रकारकी छोटी-बड़ी सुन्दर गुड़ियाँ बनाती हैं और उनको खूब सजाती हैं और पिटवानेके लिए बाहर ले जाती हैं। लड़के अरहरके सगोठा (अरहरकी सूखी छड़ियाँ) लेकर निकलते हैं। इस प्रकार लड़कियाँ और लड़कोंके झुण्ड घरके बाहर निकल पड़ते हैं। लड़कियाँ गुड़ियाँ फेंकती जाती हैं और लड़के

उन्हें पीटते चलते हैं। किसी तालाब या देवीकी मण्डपीके पास पहुँचकर यह पिटाई चरम सीमापर पहुँच जाती है और सभी गुड़ियाँ पीट पाटकर पानीमें डाल दी जाती हैं। लड़कियाँ लड़कोंको गरी किसमिस भीगे चने इत्यादि खानेको देती हैं। लड़कियाँ वापस घर आती हैं और लड़के अखाड़ोंमें जाकर कुश्ती लड़ते हैं और लम्बी कूद कूदते हैं। हमारे यहाँ अखाड़े कुश्ती लड़ने और कूदनेका काम देते हैं। शामको बड़े-बड़े गाँवोंमें दंगलें होती हैं जिनमें जबर्दस्त कुश्तियाँ होती हैं।

इस पर्वका दूसरा पक्ष है झूला। इस झूलेके लिए विवाहिता लड़कियाँ भी सावनमें अपने मायके वापस आ जाती हैं। सावनके अनेक गीतोंमें विवाहिता लड़कीके मायके पहुँचनेकी तीव्र आकांक्षाका अनुपम वर्णन हुआ है। वह अपने भाईके विदा करवानेके लिए आनेकी प्रतीक्षा करती है[1]। मायके पहुँचनेपर अपने माँ-बाप, भाई-बहनोंसे मिलकर वह अद्भुत आनन्दका अनुभव प्राप्त करती है। ऐसे समयपर विदा करानेके लिए यदि पति भी पहुँच जाता है तो उस नवविवाहिताको पसन्द नहीं आता[2]। झूलेकी बहार रहती है। थोड़ा अँधेरा होते ही चारों ओरसे सावन कजली और बारहमासियोंकी सुहावनी धुनें गूँजने लगती हैं। झूलेकी पेंगोंके साथ गीतोंका आरोह-अवरोह बड़ा ही प्यारा लगता है। विवाहकी प्रतीक्षामें और नवविवाहिता युवतियाँ जवानीके जोशमें झूलेको वृक्षकी फुनगी तक चढ़ा देती हैं। प्रौढ़ाएँ झूलके दोनों ओर एकत्र होकर सावन, कजली और बारहमासियाँ

---

१ छन छन बाजा स्वै देसी मैं पाया सोमवा मरैलो ठारो चौक रे।
चौक ठार कलमा फिरतो, आ रे बीरजु म्हारे म्हारु रे॥
जेठे भैया हाथे न पठ्या उनके बीच बसै ससुरारि रे।
छोट भैया हाथे न पठ्यो वह ही रोर चार से चाव रे॥

२. रिमझिम की हरिया माँ परे है हिंडोला सैंया के मारे कतार रे।
गरी सगी मैं तो झूलिहि न पाउँ डोला हो देखे उधार रे॥

गवाती हैं और अपनी युवावस्थाकी याद कर अनोखी मस्तीसे भर जाती हैं। समस्त ग्रामीण वातावरण अलौकिक आह्लादसे भर जाता है। चारों ओर खिले हुए फूलोंसे रक्ताभ मण्डल और हरियाली-सी उमगती हुई खुशियाली दीवाना बना देती है। अन्यथा परदेमें बन्द कुण्ठित जवानी आग उन्मुक्त कण्ठसे गा उठती है—

लगे सावन उठे घनघोर झींगुर बोलत झनझनन मुहुकत मोर।
कहाँ रह्यो प्रीतम प्यारे मार करत नहीं, रैनि होत नहीं भोर॥

युवक भूलेकी बहारमें शामिल होनेकी कोशिश करते हैं पर दोनों ओर खड़ी प्रौढ़ाएँ उन्हें विफल मनोरथ कर देती हैं।

विवाहके बाद लड़की पहले सावनमें अपने मायके अवश्य जाती है। आह्लादकारी नये अनुभवोंसे पूर्ण नवयुवती अपनी सखी-सहेलियोंसे मिलकर जितना खुश होती है उतनी खुशी कदाचित् किसी विजेताको होती हो। वह अपने पतिकी—अपनी ससुरालकी बातें कहते नहीं अघाती। एक साथ ब्याही लड़कियाँ अपन नये अनुभवोंकी तुलना करती हैं। अविवाहित सखियोंके समक्ष तो व अपनेको विलायत पलटसे भी ज्यादा महत्त्वपूर्ण मानती हैं। चाल-ढाल और बातचीतके लहजेमे एक अजीब मस्ती भर जाती है—एक ऐसा भाव प्रकट होता है कि व एकोऽहम् द्वितीयो नास्ति के सिद्धान्तको इस नश्वर धरतीपर चरितार्थ कर दिखाती हैं। युवक और युवतियोंको दीवाना बना देनेवाला यह त्योहार बड़ा ही अनोखा है। इससे अधिक सुखद अवसर हमारे ग्रामीण समाजमें स्त्रीको न तो विवाहके पूर्व और न विवाहके पहले सालके बाद कभी मिलता है।

और इस दिन नागपंचमीका त्योहार भी होता है जब नागोंके दर्शनका विशेष माहात्म्य माना जाता है। आजके दिन नागोंकी पूजा होती है और श्रावण मासमें साँप मारना मना है। यदि पूरे श्रावण मास नहीं तो कमसे कम नागपंचमीके दिन धरती नहीं खोदी जाती। इस निषेधकी भावनाके पीछे वह कथा है जिसमें एक किसानके हलकी

मॉकस लेठ ओसते समय सांपके बच्चे बिचकर मर गये थे और नागिनने तुरत उसी रात किसानके घर जाकर उसके माँ-बाप और बच्चोंको मार डाला था। क्यल एक लड़की बच गयी थी। जब नागिन उसे डसने गयी तो लड़कीने कटोरा भर दूध उसके सामने रख दिया। वह दूध पीकर लड़कीपर बड़ी प्रसन्न हुई और वर मांगनेको कहा। लड़कीने अपने माँ-बाप तथा भाइयोंका जीवन वापस मांगा। वह वरदान देकर चली गयी। सब जीवित हो गये। तभीसे ग्रामवासीयोंको नागोंको प्रसन्न रखनेके लिए जिससे वे काटें नहीं उनकी पूजा की जाती है। ग्रामीणोंके लिए सांप साक्षात् काल है और खेतों खलिहानों पर बाहर सभी जगह विशेष रूपसे बरसातमें कालकी तरह सदा मँडराया करते हैं। इनसे बचावका कोई उपाय नहीं। सांपके काटेका कोई इलाज नहीं। गारुडी जो गाँवोंमें मिल जाते हैं जिनके तन्त्र-मन्त्रका पृथक् अध्ययन होना चाहिए। ऐसे घातक जन्तुसे भगवान् ही बचायें या नाग देवता स्वयं कृपा करके किसीको अपने कोपका भाजन न बनायें।

सांपोंके सम्बन्धमें विश्वास है कि वे बदला लेनेमें भी कभी नहीं चूकते। इसीलिए यह कहावत भी प्रचलित है कि सांपका बच्चा बारह बरस तक कभी-न कभी बदला ले लेता है। ऐसी लोक मान्यता है कि सांपकी आँख बड़ी तेज होती है और मारनेवालेका अक्स उसकी आँखोंमें खिंच जाता है जिसे देखकर वे उसी मारनेवालेको काटकर बदला लेते हैं। बदला लेनेमें नागिन बड़ी तेज होती है। इस बातको तो वैज्ञानिकोंने भी सिद्ध कर दिया है कि सांपकी आँखें कैमराके लैंसकी भांति बड़ी 'सैंसिटिव' होती हैं। अन्लेकी बात कहांतक सही है निश्चयके साथ नहीं कहा जा सकता परन्तु 'करियाका काटा पानी नहीं मांगत' या 'करियाका काटा लहिरिउ नहीं लेत' बिलकुल सही है। जिस प्रकार पानीमें रहकर मगरसे बैर लेना खतरनाक है उसी प्रकार गाँवोंमें रह-कर सांपसे बैर रखना अत्यन्त घातक है। ग्रामीण निकट न जाकर

मगरसे बचा जा सकता है परन्तु साँपोंसे बचनेके लिए तो धरती ही छोड़नी पड़ेगी। अत इस अनिवार्य अनिष्टसे बचनेके लिए उसकी पूजाका विधान बनाया गया। और क्योंकि बरसातमें इनका प्रकोप अत्यधिक बढ़ जाता है इसलिए श्रावणमें जो वर्षाका महीना है इनकी पूजा की जाती है और उन्हें खुश करनेके लिए दूध पिलाया जाता है। घरोंमें साँपोंके चित्र बनाये जाते हैं और उनपर पूजा नवेद्य चढ़ती है। गाँवके आस-पास साँपकी बाँबीमें दूध चढ़ाया जाता है और पूजा की जाती है।

नागपूजाकी प्रथा आर्य हो चाहे अनार्य मूलप्रेरणा एक ही है। भारत बरमा मलाया स्याम इत्यादि देशोंमें जहाँ साँपोंकी अधिकता है वहाँ उनसे बचनेके लिए उतना ही उपक्रम करना पड़ता है उतनी ही अधिक उनकी पूजा की जाती है। पूजा विवश एव असमर्थ मानवका घातक सकटसे बचनेका उपक्रम है। इस पूजाके आधारपर हिन्दुओंके अहिंसाप्रेम समत्वभाव एव दयालुताकी बातें न उठाना ही ठीक होगा। अहिंसा समत्वभाव एव दयालुताके मूलमें अन्य कोई भी भाव हो सकता है परन्तु भय नहीं होता। और नागपूजाके मूलमें भयकी भावनाके अतिरिक्त अन्य कोई भावना नहीं है। अपनेको सकटसे बचानेके प्राय जब सब साधन असफल सिद्ध होते हैं तब असमर्थताके कारण पूजाभाव जागता है। यह पर्व साँपोंसे अभय प्राप्त करनेकी याचनाका पर्व है। साँपोंको दूध प्रिय है अत दूधकी बनी खीर भी खिलायी जाती है। सफ़ेद कमल जो इस मौसममें खूब फूलता है पूजामें विशेषत रखा जाता है। इस पर्वका पौराणिक विधान काफ़ी विस्तृत है। सभी नागोंका नाम लेकर उनका आह्वान किया जाता है। घरके दरवाज़ेपर गोबरसे साँपोंकी आकृतियाँ बनायी जाती हैं व्रत रखा जाता है, और भक्तिभावसे पूजा की जाती है।

अवधी क्षेत्रमें भी यह पूजा बड़ी भक्तिसे की जाती है और सँपेरे साँपोंका दर्शन करवाते हैं जिन्हें दूध पिलाया जाता है। बाँबीकी पूजा

कम हो रही है क्योंकि असली साँपोंको दूध पिलानेका सौभाग्य मिल ही जाता है। पूरी, कचौड़ी खीर इत्यादि खाद्यपदार्थ बनते हैं और स्त्रियाँ एकभुक्त व्रत करती हैं। अवधी क्षेत्रमें गोबरसे साँपोंकी आकृतियाँ दरवाजेपर नहीं बनायी जातीं। घरके भीतर, जहाँ अन्य चित्र बनाये जाते हैं साँपोंकी आकृतियाँ बनायी जाती हैं और उनकी पूजा होती है। इस सम्बन्धमें नागपंचमीकी अल्पनाएँ प्रमुख हैं। इस क्षेत्रमें इस अवसरपर कथाएँ नहीं कही जातीं परन्तु जिस कथाका उल्लेख अभी हुआ है वह सभीको मालूम है। यहाँपर तीन कथाएँ प्रस्तुत हैं जिनमें-से पहलीमें नाग देवतुल्य एवं पूज्य हैं, दूसरीमें राजाके समान महत्त्वपूर्ण हैं और तीसरीमें पिताके समान एक सतायी गयी बहूको प्यार देते हैं। विदाके समय इतनी बिदाई देते हैं कि उसकी दुष्ट सास भी उसपर प्रसन्न हो जाती है और परिवारमें उसका भी सम्मान होने लगता है। यहाँपर नागिनको बदला लेनेकी भावनासे प्रेरित दिखाया गया है परन्तु वह भी अपने पुत्रोंके लिए मंगल कामनाएँ सुनकर बहूको किसी प्रकारकी हानि नहीं पहुँचाती। पिता रूपमें साँपके हृदयमें तो बदलेकी भावना भी नहीं दिखाई देती। ये कथाएँ नागोंसे सीधा सम्बन्ध रखती हैं भले ही नागपंचमीके दिन कहीं कहीं न कही जाती हों।

१

एक राजा था। उसके कोई सन्तान न थी। राजा बड़ा दुःखी रहता था। उसे हमेशा चिन्ता लगी रहती कि मेरे बाद राज-काज कौन सँभालेगा? क्या मेरा वंश समाप्त हो जायेगा? किसी पण्डितने बताया कि नाग देवताकी पूजा किया करो। अगर वह प्रसन्न हो गये तो अवश्य सन्तान देंगे। राजाने पूजा शुरू कर दी।

बहुत दिनोंकी पूजाके बाद नाग देवता प्रसन्न हुए। उन्होंने राजासे कहा। 'राजन्! वर माँगो!' राजाने पुत्रकी कामना प्रकट की। नागने घर आकर अपने पुत्रसे कहा कि राजाके यहाँ चले जाओ। पुत्र मान गया।

राजाके यहाँ होते करते नौ महीनेके बाद पुत्र हुआ। बड़ा उत्सव मनाया गया। धीरे-धीरे पुत्र बड़ा होने लगा। उसकी पढ़ाई-लिखाईका प्रबन्ध हुआ। बड़े होनेपर एक दिन राजाने शुभ मुहूर्तमें राजकुमारका विवाह कर दिया। राजाने अब समझ लिया कि पुत्र सब प्रकारसे योग्य हो गया है तो उसे राज्य सौंप दिया और आप राज्य-काजसे मुक्ति पाकर भजन-पूजन करने लगा। राजकुमार भी राजा बनकर राज्य करने लगा। इसी प्रकार सुखसे दिन बीत रहे थे। राजकुमार अपनी रानीके साथ बड़े प्रेम और हास विलासके साथ रह रहा था।

एक दिन नागिनने मनमें सोचा कि पुत्र गये बहुत दिन हो गये हैं। अब तो उसे लौट आना चाहिए। सो एक रातको उसने राजाको सपनाया। नागिन बोली 'बेटा! राजाके यहाँ रहते तुम्हें बहुत दिन हो गये। क्या तुमको अपनी माँकी याद नहीं आती? अब घर लौट आओ। बहुत हो गया। छोड़ो राजाका घर।

राजकुमार बोला 'माँ! तुम कहती तो ठीक हो। पर पिताजीने तो मुझे राजाको दे डाला था। अब इस जन्ममें मैं तुम्हारे पास कैसे आ सकता हूँ?

पर माँका दिल न माना। वह जिद पकड़े रही कि मैं तुम्हारे बिना नहीं रह सकती। अन्तमें वह कहती गयी कि तुम्हें मेरे पास आना ही पड़ेगा। राजकुमार समझ गया कि अब मेरी माँ कोई-न कोई तरकीब करेगी। अतः उसने अपनी रानीसे कह दिया कि चाहे कोई हजार सिरवा भी क्यों न आये तुम उससे मत मिलना। रानी उस वक्त तो मान गयी।

एक दिन दोपहरको मालिन चुड़िहारिनका वेश धरकर आयी। चूड़ियोंका टोकरा सिरपर रखकर महलके दरवाजेपर पहुँची और चूड़ियाँ लो चूड़ियाँ की गोहार लगाने लगी। रानीने उसे भीतर बुला लिया। चुड़िहारिन चूड़ियाँ पहनानेके बदले तरह-तरहकी बातें करने लगी। बातों ही-बातोंमें वह बोली जान पड़ता है तुम्हें राजा प्यार नहीं करता।'

रानी बोली नहीं तो। कौन कहता है ? राजा तो मुझे बहुत प्यार करते हैं।'

चुड़िहारिन बोली कहाँ ? अगर प्यार करते तो अपनी ही थाली में तुम्हें न खिलाते ?'

रानी बोली यह कौन-सी बड़ी बात है ? आज ही ला।

चुड़िहारिन चली गयी। रातको राजा आये तो रानी बोली ''मैं तुम्हारे साथ एक ही थालीमें भोजन करूँगी।'

राजाको यह सुनकर कुछ शक हुआ। बोला, 'हाँ हाँ आओ। शौकसे खाओ।

दोनों खाने लगे। राजा बड़ी होशियारीसे केवल रोटी सूखी तर कारियोंसे खा रहा था। खानेके बाद राजाने पूछा, ' कोई आया तो नहीं था ? रानी झूठ बोल गयी।

दूसरे दिन चुड़िहारिन फिर आयी। आते ही उसने पूछा, "क्यों खिलाया तुम्हें अपने साथ ?

रानी अभिमानसे बोली हाँ, हाँ। बस हमने एक ही थालीमें साथ-साथ खाया।

चुड़िहारिनने मुँह बिचकाकर कहा 'मैं तो तब मानूँ जब तुम दोनों एक ही थालीमें खीर खाओ।

रानी बोली अच्छी बात है।"

जब राजा आया तो रानीने मचलकरके कहा मैं तो तुम्हारी

थालीमें खीर खाऊँगी।"

राजा बड़े चक्करमें पड़ गया। अब क्या करे? कुछ सोचकर बोला "अच्छा जाओ खीर ले आओ।'

खीर आयी। राजाने बड़ी होशियारीसे बीचमें एक लकीर खींच दी। थालीके नीचे गुटका लगाकर अपनी ओर झुका ली। दोनोंने खीर खायी। राजाको कुछ शक हो गया। उसने पूछा, 'रानी! आजकल तुम्हें यह क्या उल्टी-सीधी बातें सूझा करती हैं। क्या कोई तुमसे कुछ कहता है?'

रानी बोली 'नहीं तो। मेरी ही इच्छा थी।

चुड़िहारिन फिर दूसरे दिन आयी। आते ही उसने पूछा 'राजाके साथ खीर खायी?

रानीने बड़ी तपाकसे उत्तर दिया हाँ। खायी क्यों नहीं?'

चुड़िहारिनको विश्वास न हुआ। पर समझ गयी कि राजा फिर कोई चाल खेल गया। खैर जायगा कहाँ? उसने रानीसे कहा "आज तुम राजाका जूठा पानी पीना। देखो राजा क्या कहता है? वह कभी नहीं पिलायेगा।'

रानी बोली भला भला। तुम्हारी सब बातें झूठी हैं।"

रातको राजा जब खाना खाकर पानी पीने लगा तो रानीने कहा, मैं तुम्हारा जूठा पानी पिऊँगी।'

राजा झल्लाकर बोला 'आजकल तुम क्या बच्चोंकी-सी बातें किया करती हो?'

पर रानी न मानी। विवश हो राजाने कहा गिलास ले आओ। रानी पानी भरकर गिलास ले आयी। राजा इधर-उधरकी बातें करता रहा और मौका पाकर थोड़ो-सा पानी खिड़कीसे बाहर फेंक दिया और बोला लो पियो पानी।

रानीने पानी पी लिया। चुड़िहारिनका यह दाँव भी खाली गया।

पर वह हिम्मत हारनेवाली न थी। उसने पूछा 'क्या राजाने तुम्हें कभी जूठा पान खिलाया है। आज माँगना। वह जूठा पान नहीं देगा।'

रानीने कहा 'इसमें कौन-सी बड़ी बात है?'

रातको रानीने राजासे जूठा पान माँगा। राजा समझ गया कि संकट अब आकर ही रहेगा। फिर भी, बोला "अच्छा लाओ पान।" पान आया और राजाने बातों-ही-बातोंमें पानको हथेलीसे मसलकर आधा पान स्वयं खा लिया और आधा पान रानीको दे दिया। रानी सन्तुष्ट हो गयी।

चुड़िहारिन अपनी चाल बराबर आरती गयी। अब वह खुले रूपमें मामलेका फ़ैसला कर डालना चाहती थी। उसने कहा, 'रानी! आज तुम राजासे पूछना तुम्हारी जाति क्या है?'

रानी बोली 'क्या वह कोई और जातिके हैं?

वह बोली 'हाँ! इसमें बड़ा रहस्य है। उनकी जाति कुछ और ही है। चाहे जितना बहलायें तुम मानना मत।

रानी बोली, अच्छा।

रातमें राजाके आनेपर रानीने पूछा 'राजा तुम्हारी जाति क्या है?"

राजा सपाटेमें आ गया। पर घबराया नहीं। बोला 'क्यों दिखाई नहीं देता तुम्हें? मनुष्यकी जाति है मेरी।

रानी बोली 'नहीं तुम छिपा रहे हो। तुम्हारी यह जाति नहीं है। अपनी सच्ची जाति बताओ।"

राजाने पूछा, रानी क्या तुम्हें किसीने बहकाया है?

रानी बोली 'नहीं पर अपनी जाति बताओ।'

राजाने कहा, क्या तुम्हें विश्वास नहीं? मैं तो राजवंशमें पैदा हुआ क्षत्रिय हूँ।

रानी बोली 'नहीं! अपनी असली जाति बताओ।

राजाने बहुत समझाया। पर रानीने हठ न छोड़ा। अन्तमें राजा विवश होकर बोला, "सुबह बताऊँगा।'

सुबह होते ही रानीने फिर पूछना शुरू कर दिया 'राजा अपनी जाति बताओ।'

राजा बोला जाति पूछि पछितैहौ रानी।'

रानी, नाही राजा! जाति बताओ।'

राजा फिर बोला जाति पूछि पछितैहौ रानी।'

रानीने हठ ठान ली "नाहीं राजा! जाति बताओ।'

राजाने कहा अच्छा चलो बाहर। नहीं मानती तो बताता हूँ।"

दोनों एक तालाबके किनारे आये। राजाने कहा 'रानी अब भी मौका है। मान जाओ।

पर रानीके मनमें तो धकाका भूत पैठ गया था। तिरिया हठ तो जग जाहिर है। रानी पागलोंकी भाँति दुहराती जाती "नाहीं राजा! जाति बताओ।

राजा पानीमें उतरा और घुटने घुटने पानीमें गया। रानीसे बोला "रानी जिद छोड़ दो। जाति मत पूछो। नहीं तो पछताओगी।"

रानी 'नाहीं राजा! जाति बताओ।'

राजा आगे बढ़ा। अब पानी उसकी कमर तक था। राजा कातर होकर बोला रानी! अब भी मान जाओ। जाति पूछि पछितैहो रानी।

रानी, 'नाहीं राजा! जाति बताओ।'

राजा पानीमें आगे बढ़ा। अब पानी छाती तक था। राजाकी आँखोंमें आँसू छलछला आये। रानी मान जाओ। जाति न पूछो।

रानी 'नाहीं राजा! जाति बताओ।

पानी गले तक पहुँच गया। राजा बोला अब भी कुछ नहीं बिगड़ा है, अब भी मान जाओ।'

रानी, 'नाहीं राजा ! जाति बताओ।'

राजा अब नाक तक पानीमें चला गया। "रानी ! क्यों जान लेनेपर उतारू हो। मर बाद रोओगी। अब भी मान जाओ।

रानी, 'नाहीं राजा ! जाति बताओ।"

राजा डुबकी मार गया। और दूसर ही क्षण उसी जगह पानीमें फन काढ़े काला नाग तैरने लगा। उस देखकर रानी अचेत हो गयी। जब होश आया तो सिर धुन धुनकर विलाप करने लगी। पर अब क्या हो सकता था। राजाको पता लगा तो वह और भी दुखी हुए। पण्डितोंने कहा कि नदी पार साँपकी बाँबियाँ हैं उन्हींकी सेवा करो। रानीने मन लगाकर दूध और पानीसे उनकी सेवा की। नाग देवता प्रसन्न हुए। नागिन बोली "बोलो बेटी ! क्या चाहिए ?' रानीने हाथ जोड़ प्रार्थना की मेरा सुहाग दे दो।

नागिन बोली 'जा। तुझे तेरा सुहाग मिल जायेगा। मैंने तुझे छला और तूने मुझे छला। इतना कहकर नागिनने अपना पुत्र रानीको लौटा दिया। राजा रानी फिर सुखस रहने लग। जैसे उनके दिन बहुरे तैसे सबके बहुर।'

२

एक था राजा एक थी रानी। रानी जब गर्भवती हुई तो उसकी इच्छा बन करैली खानेकी हुई। उसने राजासे कहा 'मैं तो बन-करैली खाऊँगी।' राजा बन-करैली लने गया। लाजते-खोजते उस एक जगह करैलियाँ दिखाई दीं। राजाने करैलियाँ तोड़कर इकट्ठा कीं। उसी समय वहाँपर एक विषधर साँप आ गया। उसने राजास कहा तुमने बिना पूछ मरी करैलियाँ कैसे तोड़ लीं ?" राजाने बताया मरी रानी गर्भवती है उसकी इच्छा बन-करैलियाँ खानेकी हुई। मैं ढूँढने निकला। कहीं न दिखाई दीं। यहाँ दिखाई दीं तो मैंने तोड़ लीं। मुझे मालूम तो

था नहीं कि ये करेलियाँ आपकी हैं। मालूम होता तो जरूर पूछ लेता।'

नागने कहा, बेकार बातें मत करो। या तो करेलियाँ यहीं रख जाओ या वादा करो कि पहली सन्तान मुझे दे दोगे।

राजाने वादा कर लिया—यह सोचकर कि बादकी बादमें देखी जायगी अभी तो करेलियाँ ले चलो। राजा करेलियाँ लेकर घर आया। रानीको सारा वृत्तान्त बतलाया। रानीने भी सन्तान देना स्वीकार कर लिया पर अपनी करेली खानेकी इच्छा न छोड़ी।

समय आनेपर रानीने एक पुत्री और एक पुत्रको जन्म दिया। नागको पता लगा तो फ़ौरन दौड़ा हुआ आया। उसने राजासे कहा राजन्! अब अपना वादा पूरा करो। अपनी पुत्री मुझे दे दो।

राजाने कहा 'पसनीके बाद ले जाना। नाग पसनीके बाद आया। 'राजा लड़की लाओ। राजाने कहा, मुण्डनके बाद ले जाना। नाग मुण्डनके बाद आया तो राजाने कनछेदनके बाद आनेको कहा। इसी तरह राजा टालता गया और दिन बढ़ाता गया और नागको बह लाता रहा। अन्तमें जब नाग बहुत गुस्सा हुआ तो राजा बोला विवाहके बाद जरूर ले जाना। नाग चला गया। घर जाकर उसने सोचा कि विवाहके बाद तो लड़की दूसरेकी हो जाती है। उसपर पिता का अधिकार नहीं रहता। तो विवाहके बाद मुझे लड़की नहीं मिलने वाली। उसे तो विवाहके पहले ही लाना चाहिए। वह घातम लग गया।

एक दिन राजा तालाबमें नहाने गया। लड़कीने साथ चलनेकी जिद पकड़ी। राजा मना न कर सका। दोनों तालाबके किनारे पहुँचे। किनारे एक बड़ा सुन्दर कमलका फूल उतरा रहा था। लड़की बोली, पिताजी! मैं इसे तोड़ लूँ? राजाने मना किया पर लड़की बोली किनारेपर ही तो है। अभी तोड़े लेती हूँ। यह कहकर वह तालाब में पैठी। जैसे जैसे लड़की आगे बढ़ती गयी, वैसे-वैसे फूल आगे खिसकता गया। और बीच तालाबमें जाकर फूल गायब हो गया। लड़की वहीं

डूब गयी। जहाँ लड़की डूबी वहीं साँपने फन ऊँचा करके कहा राजन्! मैं लड़कीको ले चला। राजाने जो सुना तो बड़ा व्याकुल हुआ और वहीं मूर्छित होकर गिर पड़ा। होश आनेपर कन्याके वियोगमें वहीं सिर पीट-पीटकर वह मर गया।

जब यह समाचार, (लड़कीको नाग देवता ले गये और राजा वियोगमें मर गये) घर पहुँचा तो रानी उस समय सफ़ाई कर रही थीं। इस दुःखद समाचारको सुनकर उसे इतना गहरा धक्का लगा कि वह भी तुरन्त ही मर गयी। रह गया अकेला लड़का। छोटा तो था ही। लोगों ने घात पाकर उसका राज-पाट छीन लिया और उसे दर-दरका भिखारी बना दिया। वह घर घर भीख माँगता और कहता,

"जीवित पोतस माँ मरी बाप मरा ताछा के तीर
बहिनी का लैमे नाग देवता भैया ने माँगी भीख।

इसी तरह माँगते-माँगते जब वह नाग देवताके दरवाजेपर पहुँचा और यही पद गाया तो बहन चौंकी। उसे आवाज पहचानी-सी लगी। उसके जीवनमें भी ऐसा ही कुछ हुआ था। वह बाहर आयी। भाईको पहचाना और प्रेमसे घर लायी। इस प्रकार फिर भाई और बहन नाग देवताके घर प्रेमसे रहने लगे।

३

एक परिवार था। उस परिवारमें बहूकी हालत बहुत खराब थी। बेचारीको ठीकसे खाना तक नहीं मिलता था। अकसर तो उसे भूखा ही सो जाना पड़ता था। ऊपरसे दिन भरकी टहल चाकरी। उसकी सास बड़ी दुष्ट थी। वह बहूका बिलकुल भी विश्वास नहीं करती थी। बहूको अनेक प्रकारसे यातनाएं देती। घरमें खेती-बारी काफ़ी थी। पुरुष तो सभी खेतोंपर काम करने चले जाते थे और पहर रात गए घर लौटते। घरमें दिन भर सास-बहूमें कलह होती। सासकी बन

आती और मरदोंकी गरहाजिरीमें वह बहूको खूब सताती। दोपहरका खाना सास स्वयं खेतपर ले जाती। उसे डर लगा रहता कि अगर बहू खाना ले गयी तो रास्तेमें कुछ-न-कुछ चुराकर खा लेगी।

एक दिन खीर और पुआ बने। जब दोपहरको उसकी सास खेतपर खाना ले जानेको तैयार हुई तो बहू बोली, 'लाओ अम्मा! आज मैं ही खाना दे आऊँ।' 'हाँ हाँ! दे क्यों न आयेगी। खीर-पुआ देखकर लार टपकी पड़ रही है। तुझे रास्तेमें खानेके लिए दे दूँ।' बहू बोली 'नहीं अम्मा! चाहे जिसकी क़सम खिला लो मैं नहीं खाऊँगी। तुम मेरे मुँहमें लकीरें बना दो। अगर वे मिटी न होंगी तो समझना कि मैंने नहीं खाया और अगर मिट जायें तो समझना कि मैंने खाया है।' सासने एसा ही किया उसके मुँहमें लकीरें बना दी, और खाना बाँधकर बहूको भेज दिया। राहमें इमलीका पेड़ मिला। उसमें एक खोखला स्थान था। बहूने कुछ खीर और थोड़े पुए निकालकर उसी खोखलमें रख दिये। बाक़ीका खाना खेतोंपर आदमियोंके पास पहुँचा दिया। खेतसे वापस आकर बोली 'देख लो अम्मा! सब लकीरें ठीक हैं या नहीं?' सासने देखा। सभी लकीरें ठीक थीं। उसने विश्वास कर लिया कि बहूने चुराकर खाना नहीं खाया।

थोड़ी देर बाद बहू टट्टीके बहाने लोटेमें पानी लेकर इमलीके पेड़के पास पहुँची। खीर और पुए निकालनेके लिए उसने खोखलमें हाथ डाला। पर वहाँ तो कुछ भी नहीं था। बेचारीकी आँखोंमें आँसू भर आये। भरर्ये गलेसे बोली 'मैं तो समझती थी कि इस दुनियामें सबसे ज्यादा मैं ही दु:खी हूँ पर मुझे अब ऐसा लगता है कि मुझसे भी अधिक दुखिया कोई है जो खीर-पुआ खा गया।' खोखलमें नाग देवता बैठे सब सुन रहे थे। उन्होंने ही खीर-पुए खाये थे। नाग देवता बाहर निकल आये और बोले 'बेटी क्या बात है?" बहूने कहा "घरमें खाना नहीं मिलता। आज चोरी करके कुछ खाना यहाँ छिपाकर रख

गयी थी कि लौटकर खाऊँगी पर किसीको मालूम हो गया और वह सब खा गया। नागने कहा 'बेटी! खीर-पुआ तो मैंने ही खाया है। अब तुम चिन्ता मत करो। मेरे साथ मेरे घर चलो। मैं तुम्हें अच्छा अच्छा भोजन कराऊँगा। बहूने कहा 'पर मेरे घरवाले क्या कहेंगे? मेरी सास तो मुझे मार ही डालेगी। नाग भीतर गया और थोड़ी देरमें बहुत-सा धन लेकर बाहर आया और बोला, 'जाओ यह ले जाओ और अपनी सासको दे देना और कहना मेरे पिताजी विदा कराने आये हैं सो विदा कर दो।

बहूने सब धन लाकर अपनी सासको दे दिया और कहा मेरे पिता जी विदा कराने आये हैं। लालची सास धनमें इतना लीन हो गयी कि उसे और कुछ ध्यान ही न रहा। बोली 'तू जा।' बहू नागके साथ चली गयी। उसे लेकर नाग देवता एक बाँबीके पास आये और बोले, बेटी घर चलो। बहूने कहा, मैं बाँबीके भीतर कैसे जा सकती हूँ?" नाग देवताने कहा अपनी आँखें बन्द कर लो।' उसने आँखें बन्द कर लीं और क्षण भरमें वह कहाँकी कहाँ पहुँच गयी। बहूने जब आँखें खोलीं तो अपनेको विशाल महलमें पाया। महल तरह-तरहकी चीजोंसे सजा हुआ था। नागने कहा बेटी! अबतक तुम्हारी इच्छा ही नहीं रहा। पेट भर खाओ पिओ और मौज करो। उसने घूम-घूम कर बड़े उत्साहसे अपना सारा महल दिखाया। छह कोठरियाँ तो सामने ऐसी दिखायीं जिनमें हीरे-जवाहरात भरे हुए थे। खाने-पीनेकी तो वहाँ कोई कमी न थी। नागने कहा ' इन छह कोठरियोंके सामानको काम में लाना सब तुम्हारा है परन्तु सातवीं कोठरी मत खोलना नहीं तो तुम्हारी धन-माया नागिन तुम्हारी जान ही ले लेगी।" धर्मकी बेटीने कहा, अच्छा।

कुछ दिन तो वह बहुत ही आनन्दपूर्वक रही। मा पीछे उसने अपनी आँखोंसे देखी भी न थी वह खायी पहनी और मौज उड़ायी।

पर कुछ ही दिनों बाद उसका मन भर गया। उसका ध्यान तो अब सातवीं कोठरीपर था। कब मौक़ा मिले और उसे खोलकर देखूँ कि उसमें क्या रखा है। पर धर्म पिताकी चेतावनी याद करके उसे न खोलती। एक दिन उसका मन न माना और मौक़ा पाकर उसने कोठरी खोल दी। इस कोठरीमें छोटे-छोटे साँप-ही-साँप भरे थे। जैसे ही उसने दरवाज़ा खोला किसीकी पूँछ कट गयी किसीका मुँह कुचल गया कोई दब गया और तमाम अण्डे फूट गये। उसने झटसे किवाड़ बन्द कर दिये और अपने कमरेमें आकर लेट गयी।

जब नागिनने अपने बच्चोंकी यह दुर्दशा देखी तो आग-बबूला हो गयी। उसी समय नागको बुलवाया। नाग आया तो बोली कौन किसकी धर्म-माता और कौन किसकी धर्म-बेटी? तुम्हारी लाड़ली धर्म बेटीने मेरे बेटोंको लूला-लँगड़ा और अन्धा बना दिया। मैं अब इसे नहीं छोड़ूँगी। नागको दुःख तो हुआ पर तरफ़दारी करते हुए बोला 'उसने कोई जान-बूझकर तो ऐसा किया नहीं। अनजानेमें उससे भूल हो गयी। उसे क्षमा कर दो।' पर नागिन नहीं मानी। उसने कहा 'मैं इसे क्षमा तो नहीं कर सकती। मैं जब अपने बच्चों-बूचोंको देखूँगी तो मुझे इसका ध्यान आ जायगा। हाँ अपने घरमें उसे नहीं मारूँगी। इसके घर जाकर बदला लूँगी। इसे अब घरसे बाहर करो। नाग देवताने लाचार होकर बेटीसे कहा तुम्हारे घरवाले तुम्हारी याद करते होंगे चलो तुम्हारे घर छोड़ आऊँ। बेटीने आँख मूँदी और जब खोली तो बाँबीके बाहर। धन-दौलत हीरे-मोती गाड़ियोंमें भरे फाँदे घर पहुँची।

इतना अधिक धन देखकर सास भौंचक्की-सी रह गयी। उसने बहू का बड़े आदर भावसे स्वागत किया। धन पाकर सासका स्वभाव नरम पड़ गया। बहूसे अब वह बहुत प्यार करने लगी। जो बहू एक दिन घरमें नित्यप्रति मारपीट सहती थी भूखी रहती थी वही आज धन

की बदौलत प्यारी हो गयी। रातमें बहू सोनेके लिए चित्रसारीमें गयी और औंचलसे दिया बुझाकर बोली

'नाग बाढ़े नागिन बाढ़े बाढ़े राज छमासी।

बूँद-घण्ड मेरे भैया बाढ़ें, जिन पुरई मोरी माथी।"

पति बोला "इस बार तो तुम मायके-से बहुत-सी बातें सीख आयी हो।" नागिन ताक लगाये खाटके नीचे बैठी थी। जब बहूके मुँहसे उसने अपने परिवारकी मंगल-कामना सुनी तो बहुत खुश हुई। उसने सोचा बच्चे तो नहीं मेरे पुत्र जीवित तो हैं। यह उनकी मंगल-कामना करती है उनकी दुश्मन नहीं हो सकती। ऐसा सोचकर नागिन घर लौट गयी। नाग देवता चिन्तामग्न बैठे नागिनकी ही राह देख रहे थे। अभी नागिन डसकर आती होगी। जैसे ही नागिन आयी नागने पूछा, 'डस आयी बेटीको ?' नागिनने उत्तर दिया, 'अपनी बेटीको क्यों डसूँगी ? क्या कोई अपनी बेटीका भी अमंगल सोचता है ? मेरी बेटी जुग-जुग जिये और अखण्ड सोहाग भोगे और मेरे बच्चे भी जियें।' नाग यह सुनकर बहुत खुश हुआ। सब लोग सुखपूर्वक रहने लगे।

■

निउरी नावें

श्रावण शुक्ल नवमीको यह पर्व होता है, जो अवधी क्षेत्रका बहुत ही महत्त्वपूर्ण त्योहार है। नागपचमीमें नागोंकी पूजाके बाद यह आवश्यक ही है कि गाँवोंके लोग साँपोंके आक्रमणसे बचनेके लिए कोई अच्छा प्रबन्ध करें। इस नवमीको नेवलकी पूजा होती है। नाग पंचमीके दिन नागोंकी पूजा करके और उन्हें दूध पिलाकर प्रसन्न करनेका कुछ सन्तोष भले ही प्राप्त हो जाये परन्तु पूर्ण निश्चिन्तता असम्भव है। यदि ऐसा हो सकता तो 'साँपको दूध पिलाना' और 'आस्तीनमें साँप पालना'— जैसी कहावतें प्रचलित न होतीं। ग्रामीण जनताके समक्ष वैसे तो पूरे साल-भर साँपोंका भय बना रहता है परन्तु सावन भादोंमें वर्षाके कारण यह भय बहुत बढ़ जाता है। इसीलिए साँपोंसे सुरक्षाके लिए ही नाग पंचमीमें नागोंकी पूजाके बाद भी नवमीको नेवलेकी पूजा होती है। शत्रुके शत्रुको मित्र बनाना सामान्य नीति है। प्रस्तुत लोक-कथामें नवलेकी हत्याका पश्चात्ताप और प्रायश्चित्तका भाव और जोड़ दिया गया है जिससे नेवलेके प्रति पूज्यभाव और भी बढ़ गया है। यह लोक कथा 'बिना बिचारे जो करे सो पाछे पछिताय' के उदाहरण स्वरूप प्रचलित हो चुकी है। अपने हितैषीकी हत्याके प्रायश्चित्तके लिए यह पर्व है जब अपनी भूलको स्वीकार किया जाता है और क्षमा-याचना की जाती है।

पूजाकी विधिके पूर्व अल्पना बनायी जाती है। यदि जन्म या विवाहसे घरमें नये प्राणीका प्रवेश होता है तो दो पुतलियाँ बनायी

जाती हैं और यदि कोई ऐसा विशेष बात नहीं होती तो प्रतिवर्ष एक ही पुतली बनायी जाती है। पुतलीके शरीरका निचला भाग १३ चौकोर घरोंसे बनाया जाता है। बीचके ४ घर खाली सफेद छोड़ दिए जाते हैं बाकी ९ घरोंमें नवग्रोंके चित्र बनाए जाते हैं। उसके बीच आवश्यकतानुसार लक्ष्मण हनुमान् गणेश गंगा यमुना सरस्वती सगुन चिरैया, सूरज चन्द्रमा इत्यादि बनाये जाते हैं। इस प्रकार इस पर्वमें अन्य देवताओंके साथ नवग्रहोंका प्रमुख स्थान दिया गया है और सहयात्री अधिकताके कारण उसकी प्रमुखता और भी उभर आती है। पूजाके लिए इन चित्रित देवताओं और नवग्रहोंके साथ पुतलियोंके रूपमें लोर बचायाली वह स्त्री भी होती है जिसने मूसल नवलकी हत्या कर डाली है। नवग्रहके लिए वातावरण अनुकूल बनानेके लिए चारकोंमें पौधोंके गमले भी बनाये जाते हैं। ९ की संख्या नवमी तिथिके कारण है जब यह प्रायश्चित्त व्रत किया जाता है। परिवारमें वृद्धि होनेपर दो पुतलियाँ चित्रित की जाती हैं क्योंकि सुरक्षाका प्रश्न अधिक वास्तविक हो जाता है। नवविवाहिता बहू घर आकर बच्चोंको जन्म देगी ही अतएव मंर क्षणका भार बढ़ ही जायगा। बच्चेके जन्म होनेपर उस पर दोहरी अल्पना बनायी जाती है। यह अल्पना पसनी (अन्नप्राशन)के समय भी बनायी जाती है। इस चित्रण परिष्कारके साथ ग्राम्यता भी खूब की गया है परन्तु सिकरी मायेका प्रतीक पाकना कुछ गर्भित हो गयी है तथापि इसमें नयलाकी आकृति कहीं भी नहीं होती। इस अल्पनाका नाम भी सिउरी मायें हो गया है परन्तु सहूरी बनावटमें आकृतिकी सुन्दरता तो पैदा हो गयी है और अनियन्त्रित बनी गयी है। बालककी सुरक्षाके लिए दोहरी पुतलियाँ पसनीके समय बनायी जाती हैं। इस चित्रका रंगना बनाना बड़ी ही सुन्दर होती है।

पुत्रवती स्त्रियाँ यह व्रत बड़े मनोयोगसे करती हैं। प्रातःकाल स्नान करके कलशकी स्थापना की जाती है और गणेशकी पूजा करके दान-दीन

रोज पहलेसे घमी इस अल्पनाकी पूजा की जाती है। घी-गुड़से विशेष पूजा होती है और नैवेद्यमें बेढ़ई (उद और चनेकी पीठी भरकर रोटी की भाँति सेंकी हुई कचौड़ी) चढ़ायी जाती है। प्रत्येक पुत्रवती स्त्री ९ बेढ़इयाँ चढ़ाती है और बादमें वही प्रसाद रूपमें खाती है। इस दिन के व्रतका यही भोजन है। बस एक बार भोजन किया जाता है। पूजा करनेके बाद नैवेद्यका प्रसाद लेकर प्रस्तुत लोककथा कही-सुनी जाती है।

१

एक किसान अपने परिवारके साथ रहता था। उसके बच्चे तो होते थे पर एक साँप आकर डँस जाता था। किसान तो खेतमें काम करता रहता और उसकी पत्नी पानी भरने या खेतपर खाना लेकर जाती। उसी बीचमें साँप आता और बच्चेको डँस जाता। दोनों बड़े परेशान क्या किया जाये ? उन्होंने एक नेवला पाला वे यह सोचकर कि नेवलेके डरसे साँप नहीं आयेगा। अब जब कभी भी दोनों बाहर होते नेवला चौकीदारी करता।

एक दिन स्त्री पानी भरने गयी उधर साँप मौक़ा पाकर बच्चेको डँसनेके लिए भीतर घुसा। नेवला तो वहाँ था ही। उसने साँपके टुकड़े-टुकड़े कर डाले। और दौड़कर देहरीके ऊपर बैठ गया, जिससे मालकिन आते ही देखे कि मैंने कितनी मुस्तैदीसे काम किया। स्त्री पानी भरा घड़ा लिये चली आ रही थी। उसने देहरीपर नेवलेको बैठे देखा। उसके मुहमें खून-ही-खून लगा था। स्त्रीने सोचा कि हो-न हो यह बच्चेको ही मारकर यहाँ बैठा है। तभी तो इसके मुहमें खून लगा है। बस उसने आव देखा न ताव भरा घड़ा नेवलेके ऊपर दे मारा। नेवला बेचारा साँस भी न ले सका। वहीं मरकर ढेर हो गया।

भीतर जाकर देखा तो बच्चा मजेमें पालनेमें खेल रहा है। उसके

नीचे साँप मरा पड़ा है। सारी बात स्त्रीकी समझमें आ गयी। वह छाती कूट-कूटकर रोने लगी। 'हाय मेरी ही मूर्खतासे मेरा नेवला मारा गया।' स्त्रीका पछतावा रुकता ही न था।

रातमें स्त्री जब थककर सो गयी तो नेवलेने सपनाया 'जो हो गया सो हो गया। अब और शोक मत करो। आजसे आगे जितनी पुत्रवती माताएँ मेरा चित्र बनाकर मेरी पूजा किया करें। पूजा करनेसे उनके पुत्रोंकी रक्षा होगी।' तबसे नेवलेकी पूजा होने लगी।

■

बहुरा चौथ

बहुरा चौथका पर्व भादोंकी कृष्ण चतुर्थीको होता है। यही सकष्ट चतुर्थीका दिन है जब गणेशजीकी पूजा होती है। वैसे तो गणेश चतुर्थी प्रत्येक मासके कृष्ण पक्षमें होती है परन्तु भाद्रपदकी गणेश चतुर्थीका विशेष माहात्म्य है क्योंकि इसी दिन गणेशजीका व्रत किया जाता है। अवधी क्षेत्रमें यद्यपि गणेशजीका महत्त्व कम नहीं है तथापि बहुरा चौथका अधिक लोकप्रियता प्राप्त है। इस व्रतको पुत्रवती स्त्रियाँ ही करती हैं। वन्ध्याओंको इस व्रतके करनेका अधिकार नहीं है। बहुरा चौथकी प्रस्तुत दूसरी कथामें एक ब्राह्मणीकी कहानी दी गयी है। उसके छह लड़कियाँ हैं परन्तु लड़का एक भी नहीं है। इसलिए वह बहुरा चौथका पर्व नहीं मना सकती। उसकी गायके भी छह बछिया है। वह सोचती है कि अगर उसके ही एक बछड़ा होता तो वह बहुरा चौथका व्रत करती। गायके बछड़ा होनेपर ब्राह्मणी व्रत करती है और बड़े उत्साहसे व्रतको मनाती है। अत: केवल पुत्रवती स्त्रियाँ ही पुत्रकी मंगलकामनासे यह व्रत करती हैं। वन्ध्याएँ और केवल लड़कियोंकी माँ पुत्रकी इच्छासे इसी दिन सकष्ट चतुर्थी मनाती हैं और गणेशजीका व्रत करती हैं। बहुत-सी स्त्रियाँ प्रतिमासकी कृष्ण चतुर्थीका, जो गणेश चतुर्थी होती है व्रत करती हैं और गणेश चतुर्थीके अन्तर्गत दी कथाएँ कहती हैं।

पुत्रवती स्त्रियाँ इस दिन व्रत करती हैं। गायका दूध दही माठा इत्यादि (चनाके अतिरिक्त अन्य) सभी अन्न और शक्कर खानेका

नीचे साँप मरा पड़ा है। सारी बात स्त्रीकी समझमें आ गयी। वह छाती कूट-कूटकर रोने लगी। 'हाय मेरी ही मूर्खतासे मेरा नेवला मारा गया।' स्त्रीका पछतावा रुकता ही न था।

रातमें स्त्री जब थककर सो गयी तो नेवलेने सपनाया, 'जो हो गया सो हो गया। अब और शोक मत करो। आजसे आजके दिन पुत्रवती माताएं मेरा चित्र बनाकर मेरी पूजा किया करें। पूजा करनेसे उनके पुत्रोंकी रक्षा होगी। तबसे नेवलेकी पूजा होने लगी।

■

बहुरा चौथ

बहुरा चौथका पर्व भादोंकी कृष्ण चतुर्थीको होता है। यही संकष्ट चतुर्थीका दिन है जब गणेशजीकी पूजा होती है। वैसे तो गणेश चतुर्थी प्रत्येक मासके कृष्ण पक्षमें होती है परन्तु भाद्रपदकी गणेश चतुर्थीका विशेष माहात्म्य है क्योंकि इसी दिन गणेशजीका व्रत किया जाता है। अवधी क्षेत्रमें यद्यपि गणेशजीका महत्त्व कम नहीं है तथापि बहुरा चौथका अधिक लोकप्रियता प्राप्त है। इस व्रतको पुत्रवती स्त्रियाँ ही करती हैं। वन्ध्याओंको इस व्रतके करनेका अधिकार नहीं है। बहुरा चौथकी प्रस्तुत दूसरी कथामें एक ब्राह्मणीकी कहानी दी गयी है। उसके छह लड़कियाँ हैं परन्तु लड़का एक भी नहीं है। इसलिए वह बहुरा चौथका पर्व नहीं मना सकती। उसकी गायके भी छह बछिया है। वह सोचती है कि अगर उसके ही एक बछड़ा होता तो वह बहुरा चौथका पर्व करती। गायके बछड़ा होनेपर ब्राह्मणी व्रत करती है और बड़े उत्साहसे पर्वको मनाती है। अतः केवल पुत्रवती स्त्रियाँ ही पुत्रकी मंगलकामनासे यह पर्व करती हैं। वन्ध्याएँ और केवल लड़कियोंकी माँ पुत्रकी इच्छासे इसी दिन संकष्ट चतुर्थी मनाती है और गणेशजीका व्रत करती हैं। बहुत-सी स्त्रियाँ प्रतिमासकी कृष्ण चतुर्थीका जो गणेश चतुर्थी होती है व्रत करती हैं और गणेश चतुर्थीके अन्तर्गत दो कथाएँ कहती हैं।

पुत्रवती स्त्रियाँ इस दिन व्रत करती हैं। गायका दूध दही माठा इत्यादि (चनाके अतिरिक्त अन्य) सभी अन्न और शक्कर खानेका

नीचे साँप मरा पड़ा है। सारी बात स्त्रीकी समझमें आ गयी। वह छाती कूट-कूटकर रोने लगी। हाय मेरी ही मूर्खतासे मेरा नेवला मारा गया। स्त्रीका पश्चाताप रुकता ही न था।

रातमें स्त्री जब थककर सो गयी तो नेवलेने सपनाया 'जो हो गया सो हो गया। अब और शोक मत करो। आजसे आजके दिन पुत्रवती माताएँ मेरा चित्र बनाकर मेरी पूजा किया करें। पूजा करनेसे उनके पुत्रोंकी रक्षा होगी। तबसे नेवलेकी पूजा होने लगी।

■

होकर अपनी ही बहनको कैसे खा सकता है ? यहाँपर लोकमानस अधिक व्यावहारिक प्रतीत होता है। भेर यदि सत्य और वचन पालनका आदर न करता तो गायको अपनी जानसे हाथ धोना पड़ता। इसलिए मामाका रिश्ता बिठाया गया है जो अधिक विश्वसनीय और भरोसे-का है।

बहुरा चौथकी प्रस्तुत कथाओंमें तीसरी कथा भाव और शैली दोनों दृष्टियोंसे बड़ी सुन्दर है। इस कथामें बच्छराज (बछड़ा) और बघराज (शेरका बच्चा) के आदर्श मैत्री भावको प्रस्तुत किया है। इस कथा में बघराज अपनी माँको सहेलीके साथ विश्वासघात करनेपर कुएँमें धकेल देता है और अपने मित्र बच्छराजकी आकस्मिक मृत्युपर अपनी जान दे देता है। मित्रके बिना जीवनमें क्या अर्थ ? इस प्रकार यह कहानी विश्वासघातको मृत्युदण्डके योग्य घोर पातक समझती है और मित्र प्रेमको स्वप्रेमसे भी अधिक मानती है। प्राकृतिक रूपसे स्वभावतः जो विरोधी एवं शत्रु हैं यह कथा दिखाती है कि उनमें भी आदर्श मैत्री भाव स्थापित हो सकता है। इसीकी दृष्टिसे यह कथा अन्य लोक कथाओंकी भाँति अपनी कथावस्तुके विकासमें न तो सरल है और न एक स्तरीय ही। कथावस्तु अनेक स्तरोंसे गुजरती हुई विकसती चली जाती है और चरम सीमामें पहुँचकर मुख्य तत्त्वको प्रतिपादित करके समाप्त हो जाती है। यह एक दुःखान्त कथा है जिसमें आदर्श पालन कर्ताको अपने जीवनका उत्सर्ग करना पड़ता है। लोक-कथाओंमें यह अनुपम कथा है और अपने इन्हीं तत्त्वोंके कारण यह विशेष प्रभावशाली हो गयी है। बहुराकी इन कथाओंसे माता और पुत्र दोनोंको पवित्र भावनाओंका उपदेश मिलता है जिससे जीवनमें शुचिता उत्पन्न होती है। इन्हीं कारणोंसे ये लोक-कथाएँ हमारे लोक-जीवनके पुराण माने जा सकते हैं जो सद्भावना और पवित्र जीवन व्यतीत करनेके लिए प्रेरणा और प्रोत्साहन देती रहती हैं। इसीलिए इन कथाओंको 'दस्त

निषेध है। इस व्रतमें केवल चनेकी पूरियाँ ममकसे खायी जाती हैं। पुराणोंमें एक बहुला गायकी कथा आती है, जो पूजाके बाद कही जाती है। इसी बहुलाको अवधी क्षेत्रमें बहुरा कहते हैं—पाणिनिका सूत्र 'रल योरभेद' लागू होता है। बहुरा या बहुरी इस क्षेत्रमें भुने हुए अन्नोंके लिए भी प्रयुक्त होता है जिसे चबेना भी कहते हैं। अतएव इस दिन बछड़ेवाली गायका तो विशेष माहात्म्य है ही पर साथ ही बहुरीका भी बहुत मान है। मिट्टीके छोटे छोटे कुल्हड़ोंमें चार प्रकारके भुने अन्न अर्थात् बहुरी पूजाकी सामग्रीमें रखी जाती है। इस क्षेत्रमें यह भुला या चुका है कि बहुला या बहुरा पूज्य गायका नाम था, परन्तु बहुरीके सन्दर्भमें पूरी तरह समझा जाता है। अतः आजके दिन बहुरी–(तरह तरहका चबेना) खूब खानेको मिलती है।

आज गाय और शेरकी एक साथ पूजा होती है। स्त्रियाँ पाटापर गाय बछड़ा और शेरकी मूर्तियाँ बनाती हैं और फिर उनकी पूजा करती हैं। पूजामें बहुरीके अलावा खीरा और नीबू भी काम आते हैं। घरमें इन मूर्तियोंकी पूजा करके यदि अपने घर बछड़ेवाली गाय हुई तो उस गाय और बछड़ेकी और न हुई तो जिसके यहाँ हुई वहाँ गाय और बछड़ेकी भी गृह-ऐपन सेन्दुरसे पूजा करती हैं। गाय, बछड़ा और शेर की पूजाका कारण लोककथामें भी विद्यमान है। यह कथा बहुलाकी पौराणिक कथाका एक रूपान्तर मात्र है। इस कथामें गायका अपने पुत्र के प्रति प्रेम सत्यनिष्ठा एवं वचन पालन ग्राह्य हैं। इससे यही सन्देश मिलता है कि सत्यनिष्ठासे भयंकरसे भयंकर बाधाओंका सफलता-पूर्वक सामना किया जा सकता है। शेरके लिए गाय सबसे अधिक स्वादिष्ट भोजन है परन्तु फिर भी वह उसे नहीं खाता। सत्यनिष्ठाके प्रति शेरके हृदयमें भी सम्मानकी भावना है। लोककथामें शेरके साथ रिश्तेदारी भी जोड़ दी गयी है और इस प्रकार उसको और भी मानवीय धरातलपर खींच लाया गया है। बच्चे शेरको मामा कहते हैं। अब शेर मामा

गाय घर पहुँची। बछड़े तथा बछियोंने आकर उसे घेर लिया। गाय बड़ी उदास थी। उसके रोयें फटे-फटे थे। आँखोंसे आँसू बह रहे थे। बछड़ेसे बोली, 'आयो बेटा! आज जितना दूध चाहो पी लो।' बछड़ेने दूध पिया और बोला 'माँ! आज तुम्हारा दूध कैसा है? तुम उदास क्यों हो? तुम रो क्यों रही हो?' बछियोंने भी यही सवाल पूछे। पहले तो गायने बतानेसे बड़ी आना-कानी की पर अन्तमें अपनी आनेवाली विपदा बतानी पड़ी। सब बछिया-बछड़े बोले 'शेरके पास हम भी चलेंगे। तुम्हें अकेले नहीं जाने देंगे। गायने बहुत समझाया पर वे न माने। गाय जब सवेरे चलने लगी तब सभी बच्चे उससे आगे आगे चलने लगे। इधर शेर बड़ी बेचैनीसे उसकी राह देख रहा था कि देखा गाय सिर झुकाये धीरे धीरे चली आ रही थी। उसके बच्चोंको साथ आता देखकर वह और भी खुश हुआ—इतना शिकार एक साथ। अच्छी दावत रहेगी। ऐसा सोचता हुआ जल्दी-जल्दी टीलेसे उतरकर मैदानकी ओर बढ़ा। सबसे छोटी बछिया और बछड़ा सबसे आगे थे। दोनों दौड़कर शेरके पास आये और बोले 'मामा प्रणाम। शेर चकसे रह गया। बोला यह तुमने क्या कह दिया? अब तो तुम लोग मेरे भाभी मांज हुए और तुम्हारी माँ मेरी बहन। बहन और बहनके बच्चों को कैसे खाऊँ? जैसे मैंने तुम्हें छला वैसे ही तुमने मुझे छला। अब हम तुम सम्बन्धी हुए। आजके दिन पुत्रवती स्त्रियाँ व्रत करेंगी और हमारी-तुम्हारी पूजा करेंगी।'

इसी कथाका प्रारम्भिक भाग निम्न प्रकार भी कहा जाता है

एक कपिला गाय थी और एक थी हुरहुँटी। कपिला सीधी-सादी। बचारी जंगलमें जाकर सूखी-साखी घास चरती और पानी पीकर चुप चाप घर लौट आती। हुरहुँटी खेत खाती और इसलिए कभी-कभी मार भी। पर उसकी आदत न छूटती। एक दिन हुरहुटी कपिलासे बोली 'बहन चलो नदी किनारे—वहाँ अच्छा मुलायम चारा है। वहाँ कोई

कथा' न मानकर पौराणिक आख्यान मानना ठीक होगा जो जीवनके उच्च मूल्योंको प्रस्थापित कर समाजमें व्यवस्था एवं सुचारुता उत्पन्न करती हैं।

१

एक गाय थी। उसके छह बछिया थीं। बड़ी पूजा-पाठके बाद भगवान्‌की कृपासे सातवाँ बछड़ा हुआ। छह बछियोंके ऊपर हुआ बछड़ा गायको बड़ा दुलारा बड़ा पियारा था।

एक दिन गाय चरते चरते दूर चली गयी। जब प्यास लगी तो नदीमें पानी पीने लगी। कुछ ही दूरपर बहावकी ओर एक शेर पानी पी रहा था। गायकी लार बहकर शेरके मुँहमें गयी। शेरको बड़ी मीठी लगी। शेरने सोचा—जब इसकी लार इतनी मीठी है तो इसका माँस न जाने कितना मीठा होगा। शेर चमाने चटकारने लगा। वह उछल-कर गायके पास पहुँचा और बोला "मैं तुमको खाऊँगा।" बेचारी गाय तो गाय ही ठहरी। डर गयी। 'ना' कैसे कहती। बोली, "पर अभी तुम मुझे मत खाओ। मेरे एक बछड़ा है। उसे मैं बहुत प्यार करती हूँ। वह मेरे बिना नहीं रह सकता। आज मुझे जाने दो। कल सबेरे ही उसे समझा-बुझाकर मैं आ जाऊँगी।" शेर बोला "कहीं ऐसा भी होता है? आज तुम जान बचाकर चली जाओगी तो क्या कल फिर जान देने आओगी?'

'नहीं। नहीं।' गायने कहा "मेरा विश्वास करो। मैं सबेरे जरूर आऊँगी।"

शेरने कहा 'इसका सबूत?'

गाय बोली "चाँद और सूरजको साखी बनाकर कहती हूँ कि कल सबेरे जरूर आऊँगी।

शेरने कहा, "जाओ। कल तुम्हारी ईमानदारीकी परीक्षा है।'

क्या अन्धी है, अपने बछड़ेको चूमती चाटती भी नहीं तो मैं चढूँगी और अपने बछड़ेको प्यार करूँगी और अगर किसीने कह दिया बछिया हुई है तो मैं चुपचाप इसी कुएँमें कूद जाऊंगी। थोड़ी देरमें गायके पेटमें बड़ी जोरकी पीड़ा हुई और उसने बच्चेको जन्म दिया। परन्तु उसने सिर उठाकर बच्चेकी ओर देखा भी नहीं। न किसीने कुछ कहा न उसने कुछ किया। वह वैसे ही पड़ी रही। थोड़ी देर बाद किसी राहीने कहा 'बछड़ा कैसे मजेसे जगतपर कूद रहा है। कैसी अन्धी गाय है कि उसको कुछ परवाह नहीं। इसके किसान भी बड़े मनमौजी हैं कुछ ध्यान नहीं रखते। इतना सुनना था कि गाय उठकर खड़ी हो गयी और बछड़ेको चूमने-चाटने लगी।

जब ब्राह्मणको पता लगा तो वह कुएँपर आकर अपनी गाय और बछड़ेको बड़े प्रेमसे घर ले गया। भाग्यसे वह बहुरा चौथका दिन था। ब्राह्मणीने बड़े उत्साहसे विधिपूर्वक बहुरा चौथका त्यौहार किया। गायके भाग्यसे ब्राह्मणीको बहुरा चौथका फल मिला। जैसे उनके दिन फिर वैसे सबके फिरें।

३

एक ब्राह्मण ब्राह्मणी थे। उन्होंने एक गाय पाल रखी थी। एक दिन जब ब्राह्मण देवता भोजन कर चुके और ब्राह्मणी भोजन करने बैठी तो सामने बाँधी गयी गाय पागुर करने लगी। ब्राह्मणीने कहा, यह गाय बड़ी दुष्टा है। मुझे खाते देखकर (मुँह चिढ़ा) चिरा रही है। इसको मेरी आँखोंकी ओट करो। ब्राह्मण हँसा और बोला, अरे कहीं गाय भी चिराती है? वह तो अपना भोजन हजम कर रही है। ब्राह्मणीने कहा, 'नहीं। अब यह मेरे घर एक पल भर भी नहीं रह सकती। इसी समय इसे घरसे बाहर करो। विवश होकर ब्राह्मण उस बेचारी गायको एक जंगलमें छोड़ आया।

भी नहीं जाता। आओ वहीं परँ चलकर।' कपिलाने अपने स्वभावके अनुसार ही कहा, 'न बहन! मुझे तो सूखी घास ही भली। मैं वहां नहीं जाऊंगी। हरहेंटीके बहुत समझाने-फुसलानेपर कपिला मान गयी। कपिलाको हुरहेंटीके साथ जाना पड़ा। असलमें वहाँ शेरकी माँद थी जिसमें एक शेर रहता था। इसीलिए वहाँ कोई नहीं जाता था। हुरहेंटीने जल्दी जल्दी पेट भरकर घास खायी और बोली बहन अब तो मैं जाती हूँ।" कपिला बोली जाओ। अभी तो मेरा पेट नहीं भरा।

पेट भरकर घास चरनेके बाद कपिला नदीमें पानी पीने गयी। वहाँपकी ओर एक शेर पानी पी रहा था''। (शेष कथा उसी प्रकार है)

२

एक ब्राह्मण-ब्राह्मणी थे। उनके एक गाय थी। ब्राह्मणीके लड़कियाँ-ही-लड़कियाँ पैदा होती थीं और उनकी गायके भी बछियाँ-ही-बछियाँ होती थीं। बहुरा चौथका पर्व आया। सब घरोंमें बहुरा चौथ मनायी गयी। ब्राह्मणी कहने लगी कि सब घरोंमें बहुरा चौथ मनायी जा रही है। यही ऐसी अभागिन है कि बहुरा चौथ नहीं मना सकती। मेरे भी एक बेटा होता तो मैं भी बहुरा चौथ मनाती। हमारे नहीं है तो नहीं सही अगर हमारी गायके ही बछड़ा होता तो भी हम बहुरा चौथ मनाने लगतीं। यह बात गायने सुन ली। उसको बहुत दुःख हुआ कि मेरी मालकिन अपने दुःखसे तो दुःखी है ही, मेरी वजहसे भी दुःखी है। गाय उन दिनों गाभिन थी। उसने सोचा कि इस बार भी अगर मेरे बछिया हुई और बछड़ा न हुआ तो मैं कुएँमें डूबकर मर जाऊँगी।

होते-करते गायके बियानेका दिन आया। गाय कुएँमें सिर डालकर जगतपर लेट गयी। उसने सोच लिया कि अगर कोई कहेगा कि गाय

बया अच्छी है, अपने बछड़ेको चूमता चाटती भी नहीं तो मैं चढ़ूंगी और अपने बछड़ेको प्यार करूंगी और अगर किसीने कह दिया बछिया हुई है तो मैं चुपचाप इसी कुऍमें कूद जाऊंगी। थोड़ी देरमें गायके पटमें बड़ी जोरकी पीड़ा हुई और उसने बच्चेको जन्म दिया। परन्तु उसने सिर उठाकर बच्चेकी ओर देखा भी नहीं। न किसीने कुछ कहा न उसने कुछ किया। वह वैसे ही पड़ी रही। थोड़ी देर बाद किसी राहीने कहा "बछड़ा कैसे मजेसे जगतपर कूद रहा है। कैसी अच्छी गाय है कि उसको कुछ परवाह नहीं। इसके किसान भी बड़े मनमौजी है कुछ ध्यान नहीं रखते। इतना सुनना था कि गाय उठकर खड़ी हो गयी और बछड़ेको चूमने-चाटने लगी।

जब ब्राह्मणको पता लगा तो वह कुऍपर आकर अपनी गाय और बछड़ेको बड़े प्रेमसे घर ले गया। भाग्यसे वह बहुरा चौथका दिन था। ब्राह्मणीने बड़े उत्साहसे विधिपूर्वक बहुरा चौथका त्यौहार किया। गायके भाग्यसे ब्राह्मणीको बहुरा चौथका पद मिला। जैसे उनके दिन फिर वैसे सबके फिरें।

३

एक ब्राह्मण ब्राह्मणी थे। उन्होंने एक गाय पाल रखी थी। एक दिन जब ब्राह्मण देवता भोजन कर चुके और ब्राह्मणी भोजन करने बैठी तो सामने बाँधी गयी गाय पागुर करने लगी। ब्राह्मणीने कहा, यह गाय बड़ी दुष्ट है। मुझे खाते देखकर (मुँह चिढ़ा) चिढ़ा रही है। इसको मेरी आँखोंकी ओट करो। ब्राह्मण हँसा और बोला, अरे कहीं गाय भी चिढ़ाती है? वह तो अपना भोजन हजम कर रही है। ब्राह्मणीने कहा, 'नहीं। अब यह मेरे घर एक पल भर भी नहीं रह सकती। इसी समय इसे घरसे बाहर करो। विवश होकर ब्राह्मण उस बेचारी गायको एक जंगलमें छोड़ आया।

जंगलमें एक बाघिन रहती थी। गायसे उसकी बड़ी दोस्ती हो गयी। दोनों साथ-ही-साथ रहतीं। साथ-ही-साथ घूमतीं और एक ही जगह बसेरा लेतीं। होते-करते दोनों गाभिन हो गयीं। गायने बछड़ेको जन्म दिया और बाघिनने बाघको। बच्छराज और बग्घराजमें भी परम मित्रता हो गयी। दोनों एक साथ ही खेलते घूमते और सोते। इस तरह ये चारों मित्रकी तरह रहते थे और सुखसे जीवन व्यतीत करते थे।

परन्तु बाघिनके मनमें पाप आ गया। गायके हृष्ट-पुष्ट शरीरको देखकर उसके मुँहमें अकसर पानी भर आने लगा पर मित्रताकी बात सोचकर वह अपना मन मारकर रह जाती। पर जातिकी बाघिन कब तक अपने शिकारको मित्र मानती और उसे न खाती। एक दिन गाय मैदानमें चर रही थी और बाघिन वहीं पास खड़ी थी। अच्छा मौका जानकर बाघिन गायपर टूट पड़ी। और उसे चीर फाड़कर खा डाला। इस तरह बाघिनने अपने शेरत्वका सफाया कर दिया।

जब अकेले-अकेले बाघिन घर लौटने लगी तो दोस्तकी कमी खट कने लगी। पर अब कर ही क्या सकती थी? उदास-उदास घर लौटी। पेट तो खूब छक गया था पर प्रेम मिल चला गया था। घर पहुँचकर बग्घराजसे बोली, 'आ दूध पी ले। बग्घराजने अपनी माँको जब अकेले लौटते देखा तो उसे कुछ शंका हुई। उसने माँसे पूछा 'माँ बच्छराज की माँ कहाँ रह गयी? वह तेरे साथ क्यों नहीं आयी? बाघिन बोली 'बेटा! तुझे इन बातोंसे क्या लेना-देना है? तुझे दूध पीना है तो पी।' बग्घराज बोला 'नहीं माँ! मैं तो बच्छराजके साथ ही पिऊँगा। जब बच्छराज अपनी माँका दूध पियेगा तभी मैं भी पिऊँगा।' माँ बोली 'तो तुझे दूध नहीं पीना है।' बग्घराज समझ गया कि मेरी माँने ही गायको मार डाला है। वह बोला "अच्छा चलो। कुएँ के ऊपर पिऊँगा।' कुएँके ऊपर दूध पीते-पीते बग्घराजने जोरसे धक्का दे दिया। बाघिन कुएँमें जा गिरी।

बग्घराम मच्छराजके पास आया और बोला 'तुम्हारी माँको मेरी माँने खा डाला था इसीलिए मैंने अपनी माँको कुएँमें धकेल दिया। अब संसारमें हम दोनों अकेले हैं पर चिन्ता न करना। मैं तुम्हारी प्राण रहते रक्षा करूँगा। हम दोनों भाई हैं।

एक दिन बग्घराज बाजार गया और वहाँसे एक घण्टा ले आया। मच्छराजके गलेमें उसने घण्टा बाँध दिया और बोला, "जब कोई आफ़त आ जाये तो इस घण्टेको बजा देना, मैं फ़ौरन आकर तुम्हें बचा लूँगा और दुश्मनको फाड़ डालूँगा।" मच्छराज वहीं जंगलमें रहता बेरोक-टोक चरता और मस्त रहता। एक दिन वह बड़ी जोरसे कूदा-फाँदा तो घण्टा बज गया। बग्घराज क्षण भरमें आ पहुँचा। उसने देखा मच्छराज खूब उछल-कूद रहे हैं। इसीसे घण्टा बजा है वैसे कोई बात नहीं है। अत वह चुपचाप लौट गया। थोड़ी देरमें कसाइयोंकी एक बारात जंगल पार करके कहीं जा रही थी। उन्होंने जा इस अच्छे-तगड़े बछड़ेको देखा तो सोचा कि इसको पकड़ा जाये, सारी बारातकी दावत हो जायेगी।

बारातने वहीं डेरा डाल दिया। थोड़ी देरके प्रयत्नसे उन्होंने मच्छ-राजको पकड़ लिया। मच्छराज बहुत उछले-कूदे और खूब घण्टा बजा पर बग्घराज न आये तो न आये। बग्घराज समझता था कि मच्छराज खेल रहे हैं अत नहीं आया। इधर कसाइयोंने मच्छराजको काटा और उसको पकाया। थोड़ी देरमें खा-पीकर बारात वहाँसे चल दी। शामको जब बग्घराज वहाँ आया तो देखा कि मच्छराजकी हड्डियाँ पड़ी हुई हैं और चूल्हा अभी भी धधक रहा है। बग्घराज मच्छराजकी इस आकस्मिक मृत्युसे बहुत दु खी हुआ और उसने सोचा जब मित्र ही न रहा तब मैं जी कर क्या करूँगा? और वह उसी आगमें कूद पड़ा और मित्रके विरहमें जल भुनकर भस्म हो गया।

■

हरछठ

हरछठका त्यौहार भाद्रपद कृष्णपक्षकी छठ या षष्ठीको मनाया जाता है। बहुराकी भाँति 'हर' भी हलका अवधी रूप है, अर्थात यह हरछठ हलछठ ही है। श्रीकृष्णके बड़े भाई बलरामका जन्म आजके ही दिन माना जाता है। बलराम बड़े बलशाली थे और उनके लिए साधारण तलवार या गदा उपयुक्त अस्त्र न थे अतः इन्होंने हलको ही अपना आयुध बना लिया था। इसीसे बलराम हलधरके नामसे भी प्रख्यात हैं।

बहुरा चौथकी भाँति यह पर्व भी पुत्रकी मंगल-कामनाके लिए मनाया जाता है। आजके दिन पुत्रवती स्त्रियाँ व्रत करती हैं। आजके दिन न तो जोते खेत मझाये जाते हैं और न स्त्रियाँ हल-द्वारा जोत खेतोंमें पैदा अन्न इत्यादि ही खाती हैं। तालाबोंमें अपने-आप हो जाने वाला फसईका भात खाती हैं। शक्कर भी नहीं खायी जाती। केवल भैंसका दूध दही घी काममें लाया जाता है। गायका दूध-दही मना है। हरछठकी अल्पना दो-चार दिन पहले ही दीवालपर बना ली जाती है। दीवालको गायके गोबरसे लीपकर यह अल्पना ऐपनसे बनायी जाती है। हरछठके दिन इस अल्पनाकी विधिवत् पूजा होती है। इस अल्पना के मध्यमें न्हे पुतले हैं जो पुत्रोंके प्रतीक हैं और उनके पलँगके नीचे नेवलेकी आकृति होती है जो सपबाधासे संरक्षणके लिए, आवश्यक है। इसके चारों ओर अनेक देवी-देवताओंकी आकृतियाँ होती हैं। मोर और गाय और बछड़ोंकी भी आकृतियाँ होती हैं। इस अल्पनाकी पूजाके

उपरान्त स्त्रियाँ आँगनमें झरबेरी और पलाशकी डालको काँसके साथ बाँधकर गाड़ती हैं। इसके नीचे महुआ चौथके दिन पाटेपर बनायी गयी बाघ गाय और बछड़ेकी मूर्तियोंको रखती हैं और उनकी पूजा करती हैं। पूजा-सामग्रीमें काफ़ी विविधता होती है। छह प्रकारकी बहुरी एक दिन पहले भुनवा ली जाती है और हर एक बहुरीको छह [1]कुड़ेलवाओंमें रखा जाता है। इस प्रकार ३६ कुड़ेलवाओंमें बहुरी रखी जाती है। यदि उस वर्ष घरमें किसीके पुत्र हुआ है तो ७२ कुड़ेलवाओंमें बहुरी रखी जाती है। [2]परईमें दही [3]नोन पानीके आम इत्यादि चीज़ रखी जाती हैं। पत्तोंमें थोड़ा थोड़ा दही और पसईके चावल रखे जाते हैं। प्रत्येक व्रत करनेवाली स्त्री छह-छह पत्ते बाँटती है। बहुरी भरे कुड़ेलवा लड़कोंको दे दिये जाते हैं और परिवारके सभीको दहीके छह-छह पत्ते दिये जाते हैं। छठके कारण ही छहकी संख्यापर विशेष आग्रह है। उस दिन आये अतिथिको भी कमसे कम दो पत्ते प्रसादरूपमें अवश्य दिये जाते हैं। पाँचवीं कथामें पूजा सामग्रीमें निम्न चीज़ोंके रखनेकी बात कही गयी है: खिलौने कुसुम दावात पुस्तक कलम दही चावल छह प्रकारकी बहुरी सभी प्रकारके मेवा पोस्ताका दाना, महुआ मीठी सीठी पूरियाँ शक्कर। हरछठपर पीले वस्त्र भी चढ़ाये जाते हैं। कुछ स्त्रियाँ आभूषण भी पूजामें चढ़ाती हैं। ये सभी चढ़ी हुई चीज़ें घर ही में रह जाती हैं। इस कथाके अनुसार माँ इन सभी चीज़ोंको एकत्र करके रखती है जिससे जब उसका पुत्र आये तो किसी चीज़की कमी न पाये। यदि पुत्र असन्तुष्ट हो गया तो फिर अपनी ससुराल चला जायेगा और वृद्ध निस्सहाय माँको पुत्रवियोग सहना पड़ेगा।

---

१ लोटेकी आकृतिका मिट्टीका छोटा-सा बरतन। कुल्हिया।

२ परईकी आकृतिका मिट्टीका बरतन। इन्हें कुम्हार दे जाता है।

३ नमकके पानीमें पके आमोंको एक दो महीने तक रखा जाता है।

इस प्रकार विधिवत् पूजा करके स्त्रियाँ आगे दी गयी कथाएँ कहती हैं। इन कथाओंमें मुख्यरूपसे पुत्रोंपर आयी कठिनाईको दूर होते दिखाया गया है। पहली कथामें राजा लोकरंजन और प्रजापालनके लिए अपने पोतेका बलिदान कर देता है, परन्तु माँकी हरछठ-निष्ठाके कारण पुत्र तालाबमें कमलके पत्तेपर मुसकराता हुआ वापस मिल जाता है। दूसरी कथामें अधजली बहू गायके बछड़ेको पका डालती है और दासीके पुत्रोंको जला डालती है परन्तु हरछठकी कृपा दया और दासीकी 'पुन्याय' (पुण्यकार्यों) से सभी जीवित हो जाते हैं। तीसरी कथामें ग्वालिनको हरछठके दिन परोपकार करनेसे बिना पापके लड़के मिलते हैं। ग्वालिन अविवाहित थी। चौथी कथामें भगा दी गयीं अपमानित गैया भैंसियाको वापिस लाते दिखाया गया है। पाँचवींमें ससुरालमें बस जानेवाले पुत्रको अपनी माँके पास वापस लौट आता दिखाया गया है और छठीमें मरा हुआ बेटा हरछठकी कृपासे पुनर्जीवित होते दिखाया गया है। अस्तु।

१

एक था राजा। उसने तालाब खुदवाया। उसने लाख जतन किये पर तालाबमें पानी न भरा तो न भरा। बरसातका पानी भी उसमें न रुकता। राजाने पण्डितको बुलवाया और पूछा कि तालाबमें पानी क्यों नहीं भरता? पण्डितने बताया, "राजन्! हरछठके दिन अगर किसी बालककी बलि दी जाये तो तालाब भर जाये।"

राजा यह सुनकर बड़े असमंजसमें पड़ गया। सोचने लगा कि भला ऐसा भी कोई होगा जो मुझे बलिके लिए अपना बच्चा देगा? राजाने एक चाल चली। हरछठके दिन जब बलि दी जाने वाली थी, तब राजाने अपनी बहूको बुलाया और कहा बेटी! तुम्हारे पिता बहुत बीमार हैं। ईश्वरको न जाने क्या मंजूर है। वह तुमको देखना चाहते हैं। तुम

फ़ौरन चली जाओ। बच्चोंको यहीं छोड़ जाना। ऐसे मौक़ोंपर बच्चा का होना अच्छा नहीं। बहूने कहा, 'लेकिन पिताजी! आज तो हर छठ है। मैं कैसे जा सकती हूँ?' राजाने कहा, तुम्हारी डोली मेंड-मेंड जायेगी—जोते खेतोंसे नहीं जायेगी? मैं जानता हूँ आज न जोता मम्भाया जाता है और न जोता अन्न खाया जाता है। बेटी अब देर करना ठीक नहीं।

फ़ौरन डोली तयार की गयी। उसमें बहू बठकर अपने पिताके घर के लिए चल दी। उसके पिता भी राजा थे। बहूकी डोली जब नगरके पास पहुँची, तो सुना कि हरछठके बाजे बज रहे हैं। उसने सोचा कि अगर मेरे पिता बीमार होते तो किसमें इतनी हिम्मत थी कि बाजे बजवाता! अवश्य ही कहीं कुछ गड़बड़ है। उसने कहारोंसे डोली फेरनेको कहा। कहारोंने डोली घुमायी और घरकी ओर वापस ले चले। जब नगरके पास डोली पहुँची, तो बहूने सोचा कि यहीं कहीं मेरे ससुर ने तालाब खुदवाया है, जिसमें पानी नहीं भरता—क्यों न चले हाथों उसे देखती चलूँ? ऐसा सोचकर उसने कहारोंको हुकुम दिया कि जिस तरफ़ मेरे ससुरने तालाब खुदवाया है—उसी तरफ़से डोली ले चलो। तालाबके किनारे आकर उसने देखा उसमें अथाह जल लहरा रहा है। मोतियोंसे भरे पुरइन पात लहक रहे हैं और सफ़द लाल कमल अपनी गरदनें उठाये सिर डुला रहे हैं और पत्तोंके ऊपर उसका लड़का किलकारी मार-मारकर खेल रहा है। बहूने सोचा—देखो आज हरछठके दिन मुझे घरसे बाहर भेजा और मेरे बेटेकी भी खोज-खबर न रखी। वह यहाँ तालाबमें डूब रहा है। उसने आव देखा न ताव। फ़ौरन पानीमें कूद पड़ी और अपने बेटेको निकालकर पानीसे बाहर लायी। बेटेको कलेजेसे लगा लिया। बार बार चूमा चाटा। फिर उसे लेकर महलमें आयी। इधर महलमें सास फाँसी लगाकर मर जानेकी तैयारी कर रही थी। वह सोच रही थी कि अब बहू वापस लौटेगी और बच्चा माँगेगी तो

मैं बच्चा कहाँसे लाऊँगी ? उसको क्या मुँह दिखाऊँगी। इससे तो अच्छा है मैं जान ही दे दूँ। इतनेमें बच्चेको लेकर बहू सासके पास पहुँची और बोली अम्मा ! आज हरछठके दिन मुझे घरसे निकाला और मेरे बेटे को भी बाहर निकाल दिया। अगर मैं मौक़ेपर न पहुँच जाती तो बच्चा तो डूबकर सागरमें ही मर जाता !

रानी बहूको बालकके साथ देखकर बड़े अचम्भेमें पड़ गयी। परन्तु बच्चेको वापस पाकर बड़ी खुश हुई। बहूकी गोदसे बेटेको लेकर कलेजे से लगा लिया। रो रोकर कहने लगी बेटी तुमने तो घर बचेकी बलि दे दी थी। इसी बलिसे तालाब भरा है। बेटी मैं बड़ी पापिन हूँ। बेटी अपनी बूढ़ी सासको माफ़ कर दे। हरछठ माताकी कृपासे तेरा बच्चा तुझे वापस मिल गया है। इस बीच राजा भी वहाँ आ गया। राजा भी ग्लानि और पश्चात्तापकी आगमें जल रहा था। दोनों बहूके पैरोंपर गिर पड़े। बहूने अपने पैर खींच लिये। आगे बढ़कर उसने सास-ससुरको उठाया और बोली 'आप लोग मुझे क्यों नरकमें भेजना चाहते हैं। मेरे पाँव पकड़कर मुझपर पाप चढ़ाते हैं। मुझे तो मेरा बच्चा वापस मिल गया। मुझे और क्या चाहिए। आपने तो ऐसा प्रजाकी खुशीके लिए ही किया था। अब आप दुखी न हों।"

हरछठकी कृपासे सब लोग सुखसे रहने लगे। तालाब बारहों महीने पानीसे भरा रहता।

२

एक थीं सास-बहू। सास थी सीधी और बहू थी चमकीली। उसके हर काम चालाकी-से होते। उनके एक बछड़ा था जिसका नाम था गाहुआँ। गाय तो चारके साथ चली जाती परन्तु पर गोहुआँ दरवाजे पर बँधा रहता। पड़ोसमें एक दासी रहती थी। उसके दो बच्चे थे जिनके नाम थे ठेंगरिया मोगरिया। जब वह कामपर आती तो अपने

बच्चोंको अघबैलीकी सासको सौंप जाती। एक दिन सासने कहा "मैं बाहर जा रही हूँ। शाम तक लौटूँगी। तब तक तू ठेंगरिया मोगरिया लगाकर गोहुआँ पका लेना।

वह अघबली तो थी ही। गोहुआँ बछड़ेको समझी। बछड़ेको काट डाला और बटलोईमें भरकर चूल्हेपर चढ़ा दिया। सास ठेंगरिया मोगरिया लकड़ीके लिए कह गयी थी उसने समझा दासीके बच्चोंको। उसने दासी के दोनों बच्चोंको चूल्हेमें लगा दिया। शामको जब सास घर लौटी तो उसने पूछा गोहुआं पकाया? वह चिढ़कर बोली, 'वाह! अच्छा बता गयी थीं। गोहुआं पकता ही नहीं और ठेंगरिया मोगरिया जलते नहीं। सासने जब चूल्हा बटलोई देखी तो करम ठोककर रह गयी। हाय अभी गाय अपना बछड़ा माँगेगी तो मैं क्या दूँगी? अभी दासी अपने बच्चे माँगेगी तो क्या दूँगी? इस पागल बहूने तो सबको खाकर रख दिया। हाय! अब क्या होगा। इसी तरह वह बहूको कोसती जाती और रोती जाती। इतनेमें चरागाहसे गाय आ गयी। गोहुआंकी माँ दरवाजेपर खूँटेके पास आकर खड़ी हो गयी। गोहुआंके लिए रँभाई और सींघसे घूर देखा। घूरसे उसका गोहुआं निकल आया। सासको कुछ सन्तोष हुआ। पर ठेंगरिया-मोगरियाकी चिन्ता फिर भी उसे खाये जा रही थी।

इधर दासी काम करके जब अपने बच्चे लेने अघबलीकी सासके घरकी ओर चली तो रास्तेमें उसे चींटियोंकी पाँत मिल गयी। वह खड़ी हो गयी और पाँतके खतम होनेकी प्रतीक्षा करने लगी। वह बेचारी खड़ी पर पाँत जब खतम हो तब न। बहुत समय बीत जाने पर आखिर पाँत खतम हुई तो दासी आगे बढ़ी और उसने देखा कि उसके दोनों बच्चे नारके बीचमें खेल रहे हैं। उसने दौड़कर अपने दोनों बच्चोंको उठा लिया। दोनोंको बड़े प्यारसे चूमा चाटा और धूल झाड़ी। सासके पास गुस्सेमें भरी आयी और बोली इसी तरह बच्चों की देख भाल होती है। पहले वह यदीं अगर देख भाल नहीं करती

थी। मैं कुछ और इन्तजाम करती। तुमने तो उन्हें लावारिस छोड़ दिया। अभी जानवरोंके पैरोंके नीचे कुचल जाते तो क्या होता?'

सास बोली 'बेटी! बच्चे तो तुम्हारे मर ही चुके थे। पर हरछठके प्रतापसे और तुम्हारी पुण्याईसे तुम्हारे बच्चे तुम्हें वापस मिल गये!' इतना कहकर उसने अपनी अधमलीके कारनामे सुनाये। हरछठकी कृपासे सभी फिर सुखपूर्वक रहने लगे। दोनोंने हरछठको हाथ जोड़े।

२

एक थी ग्वालिन। सिरपर दहीकी मटकी धरे शहर जा रही थी दही बेचने। रास्तेमें खीरे-ककड़ीकी एक बाड़ी मिली। बाड़ीवाला बोला "ग्वालिन! मेरे खीरे-ककड़ी भी लेती जाओ।' ग्वालिन सोचने लगी कि मैं दोनों चीजें कैसे ले जा सकती हूं! फिर शहरमें अपना दही बेचूंगी या इसके खीरे-ककड़ी? बेचारी बड़े धर्मसंकटमें थी। पर अन्तमें उसने ले लिये।

राहमें एक खेत मिला। एक किसान हल चला रहा था। ग्वालिन किसानसे बोली "भैया मेरे खीरे ककड़ी देखते रहना। मैं दही बेचकर अभी आती हूं तब इन्हें ले जाऊंगी।' किसानने कहा "अच्छा रख दो।" ग्वालिन उधर गयी दही बेचने और इधर खीरे-ककड़ी लड़के बन गये। सब टोकरेसे निकल आये और किसानको घेर लिया। किसानका हल जोतना मुश्किल हो गया। कोई आगे आ जाता तो कोई बगलमें, कोई पीछे। किसान घबराया कहीं कोई हलके नीचे आ गया तो। उसने हल जोतना बन्द कर दिया, बैल खोल दिये और सभी बच्चोंको बटोरकर बैठ गया। थोड़ी देरमें ग्वालिन वापस लौटी तो किसानने कहा, "वाह। मैं तो खीरे ककड़ी तुम्हें रख गयी थी। वे तो सब बालक हो गये। लो संभालो अपने लड़के।

इसने सारे लड़कोंको पाकर ग्वालिन बड़ी प्रसन्न हुई। लड़कोंको लेकर उसी खेतपर नाचती-गाती पहुँची

जोता खाँव न जोता रौंदौं
आज मरे हर वौं वौं वौं वौं।'

हरछठके प्रतापसे ग्वालिनको बिना पापके लड़के मिले। तबसे हरछठके दिन लड़केवाली माँ न जोता रौंदती हैं और न जोते खेतोंका अन्न खाती हैं।

४

एक सास-बहू थी। सास तो बड़ी सीधी थी पर बहू बड़ी दुष्ट थी। सास अपनी बहूके व्यवहारसे बड़ी दुःखी रहती। एक दिन सास बहुत तड़के खेतोंपर जाने लगी तो बहूसे बोली बहू बछड़ोंकी सेवा-टहल कर लेना। वहाँसे गोबर-सोबर हटाकर सफ़ाई कर देना। सासके चल जानेपर बहू जानवरोंके स्थानपर गयी। वहाँ देखा तो गन्दगी ही गन्दगी। चारों ओर गोबर पेशाब फैला पड़ा है और दुर्गन्ध आ रही है। उसने सोचा ऐसे गन्दे जानवर पालनेसे क्या फ़ायदा। उसने एक डण्डा उठाया। उन्हें खूटोंसे खोलकर उसने चार चार डण्डे मारे और जंगलमें खदेड़ दिया।

शामको सास आयी। उसने पूछा बहू गाय भसियाके नीचे सफ़ाई कर दी थी?' बहूने कहा, अम्मा ये सब बड़े गन्दे थे। उनकी सेवा-टहल क्या करती। मैंने तो चार-चार डण्डे मारकर सबको जंगलमें भगा दिया। सासने माथा पीट लिया। 'हाय बहू यह तूने क्या किया? जो हमारे जीवनके सहारा हैं जिनकी वजहसे हमें घी दूध अन्न धन मिलता है तूने उन्हींके साथ ऐसा व्यवहार किया। क्या वे हमें क्षमा करेंगे?' सास जंगलकी ओर दौड़ी गयी। दूरपर उसने अपने गाय-भैंसों और बैलोंको चरते देखा। पुकारकर उन्हें घर चलनेको

कहा। उन्होंने वहींसे जवाब दिया "अब तुम्हारे घरमें तुम्हारा राज्य समाप्त हो गया है। अब तो तुम्हारी बहूका राज्य चलता है। उसके शासनमें हम लोग नहीं रह सकते।' सासने कहा, "नहीं माता, ऐसा अनर्थ मत करो। बड़ी भूल हो गयी हमें क्षमा करो। अभी भी सभी मेरा कहना मानते हैं। अब तुम्हें कोई कष्ट नहीं देगा।' इस प्रकार सासने उन्हें बहुत समझाया-बुझाया, चिरौरी विनती की। वे मान गये। सबको लेकर सास वापस लौटी। सब लोग फिर आनन्दसे रहने लगे और उस दिनसे गाय-भैसोंको किसीने कभी नहीं सताया।

५

एक महतारी-बेटा थे। माँने बड़े चावसे अपने बेटेका विवाह किया। उसका बेटा ही एक मात्र सहारा था। परन्तु उसकी दुलहिनने कुछ ऐसा जादू डाला कि वह अपनी दुलहिनके साथ अपनी ससुरालमें रहने लगा। माँ अपने बेटेको देखनेको तरस जाती। बहुरा चौथ, हरछठ-जैसे त्योहार आकर निकल जाते पर वह अपने बेटेका मुँह भी न देख पाती। वह बड़ी दुःखी रहने लगी। पर भाग्यसे कोई वश नहीं। हरछठका पर्व आ रहा था। इस बार भी उसे अपने बेटेके आनकी कोई आशा नहीं थी। अतः वह स्वयं अपने बेटेकी ससुराल गयी और कुतिया बन कर घरके भीतर पहुँची। उस समय बहू-बेटेमें बातें हो रही थीं। बेटा कह रहा था "मैं इस बार हरछठके दिन अपनी माँके पास जाऊँगा। बहुत दिनोंसे माँको नहीं देखा है। वह भी मेरे लिए बेचैन होगी। बहूने कहा 'अगर जाओगे तो फिर तुम्हें तुम्हारी माँ आन नहीं देगी। वह कहेगी कि इतने दिन ससुरालमें रहे हो अब कुछ दिन अपनी माँके पास भी रहो। तो वापस कैसे आओगे? बेटेने कहा किसी-न किसी बहानेसे चला आऊँगा। बहूने कहा, "मैं बहाना बताती हूँ। हरछठके दिन माँ बढ़िया लहँगा ओढ़नी पहने पूजा कर रही होगी।

तुम 'भूरभूरे भूरभूरे (गदे) आना और अगर गोदमें न बिठायें तो सीधे वापस लौट आना। खिलौने माँगना। न दें तो वापस चले आना। क़लम दावात किताब माँगना। न दें तो वापस चले आना। ऊख माँगना, दही-चावल माँगना, मीठी सोठी पूरी माँगना महुआ माँगना कोरा नीबू माँगना, छह प्रकारकी बहुरी (चबेना) माँगना सब प्रकारका मेवा माँगना पोस्ताका लावा और भपकर माँगना और तुम्हारी माँ न दें तो चले आना। और जब आना तो काम सेन्दुर और रतन-तरकुला हमारे लिए लेते आना।''

माँ यह सब सुनकर सीधी घर आयी और सब चीजें जुटाने लगी। धीरे-धीरे बुढ़ीने माँग-जाँचकर खिलौने क़लम-दावात किताबें बहुरी मेवा ऊख, पोस्ताका दाना, भपकर नीम पानीके आम एकत्र किये और हरछठके दिन मीठी-सीठी पूरियाँ बनायीं। लहँगा-ओढ़नी पहन कर पूजा करने बैठी। सभी चीजें उसने हरछठपर चढ़ायी। इतनेमें उसका 'भूरभूरा भूरभूरा' बेटा आ गया और उसी प्रकार गन्दे कपड़े पहने माँकी गोदमें बैठने लगा। माँने बड़े प्यारसे अपने बेटेको गोदीमें बिठाया और चूमने चाटने लगी। इसके बाद बेटा अपनी दुलहिनकी बतायी सभी चीजें एक-एक कर माँगने लगा। माँने सभी चीजें बड़े प्रेमसे अपने लड़केको दीं। लड़का बड़ा खुश हुआ। लड़का सोचने लगा कि माँ मेरा कितना प्यार करती हैं। मेरे लिए क्या-क्या चीजें जुटायी हैं? अब मैं माँके पास ही रहूँगा और ससुराल नहीं जाऊँगा।

यह सोचकर वह अपनी माँके पास रहने लगा। जब इस प्रकार कुछ दिन बीते तो माँने काम-सेन्दुर और रतन-तरकुला लाकर बेटेको दिया। और कहा 'बेटा! अब तुम ससुराल जाओ। दुलहिन तुम्हारी राह देखती होगी। और यह काम-सेन्दुर और रतन-तरकुला अपनी दुलहिनको दे देना। यह देख-सुनकर बेटा भौचक्का हो गया। उसने माँसे पूछा 'माँ तुम्हें यह कैसे मालूम हुआ कि मेरी दुलहिनने काम-सेन्दुर और रतन

सरकुला मँगाया है ? मौने सारा किस्सा कह सुनाया कि यह किस प्रकार कुतिया बनकर गयी थी और सारी बातें सुन आयी थी।

यह सुनकर बेटेको अपने इस स्वार्थी व्यवहारपर बड़ा दुःख और पश्चात्ताप हुआ। उसने तै कर लिया कि अब वह अपनी माँके साथ ही रहेगा और अपनी बहूको भी ले आयेगा और दोनों मिलकर माँकी सेवा करेंगे। ऐसा सोचकर वह काम-सेन्दुर और रतन-सरकुला लेकर ससुराल पहुँचा। उसने सारी बातें अपनी दुलहिनको बतलायीं। दुलहिन अपनी ससुरालमें आकर रहनेपर राजी हो गयी। दोनों वापस आये और माँके पास रहने लगे। हरछठके प्रतापसे बुढ़ी असहाय माँको अपने बेटा-बहू मिले। वह बहू-बेटेके साथ सुखसे रहने लगी।

६

एक थी ग्वालिन। रोज दही-मही बेचती। उस दिन हरछठ थी। उसे मालूम न था। वह गाय और भैंसका दही-मही बेच आयी। घर आकर जब उसे मालूम हुआ तो वह उन घरोंमें वापस पहुँची। उसने सबको बताया कि दही-मही गाय भैंसका मिला हुआ है। हरछठके दिन गायका दूध-दही नहीं खाया जाता। जोता मझाया नहीं जाता। वह अपना लड़का छोड़ आयी थी खेतकी मेंड़पर। परन्तु लेने नहीं गयी क्योंकि जानेपर खेत मझाने पड़ते। सुबह जब अपने लड़केको मेंड़पर छोड़ने गयी थी तब तो खेत मझाये ही थे। अब हरछठकी बहपासे हलके फालसे लड़का घायल होकर मर गया। उसका भाई हल जोत रहा था। एक बार वह लड़का अचानक उसके हलके सामने आ गया। भाई अपने अपराधसे बड़ा लज्जित हुआ। लज्जाके कारण उसमें इतनी भी हिम्मत न थी कि वह मरे हुए लड़केको लेकर घर जाय। वह यही सोचता कि बहनको क्या मुँह दिखाऊँगा ? वहीं खेतकी मेंड़पर लड़केको रात भर लिये बैठा रहा। और ग्वालिन खेत मझानेके डरसे घरपर न

गयी। वह सोचती थी कि उसका भाई जब दोपहरमें खाना खाने आयेगा तब लेता आयेगा। परन्तु जब दोपहरको उसका भाई न आया तो उसने सोचा कि शामको काम पूरा करके आयेगा और लड़केको लेता आयगा। पर उसका भाई बड़ी रात गये भी न आया तो उसे बड़ी चिन्ता हुई। पर वह नहीं गयी।

प्रातःकाल हरछठपर बड़े खीरा और महुरीका पारण कर खेतपर पहुँची तो देखा कि लड़का मेंड़पर खेल रहा है। पर उसका भाई जैसे जैसे वह पास आती जाती वैसे-वैसे दूर भागता जाता। भाईके इस व्यवहारसे बहनको बड़ा अचरज हुआ। उसने भाईसे कहा "भैया! तुम्हें यह क्या हो गया है? लड़का अकेले मेंड़पर खेल रहा है और तुम भाग जा रहे हो? कल रातको भी घर नहीं आये?" भाईने जब सुना कि लड़का खेल रहा है तब वापस आया। और बहनके पैर छुए। उसने सारा क़िस्सा सुनाया और कहा "बहन! तुम्हारे भाग्य और हरछठकी कृपासे यह जी गया नहीं तो हम मुँह दिखाने लायक़ नहीं थे।

■

ओक दुआस

ओक दुआसका ही दूसरा नाम बछि दुआस्सी है जो लोक-कथामें तालाबमें पानीके लिए दी गयी बलियोंकी ओर संकेत करता है। व्रतोत्सवमें इसीको वत्सद्वादशी कहा गया है। यह पर्व भाद्रपदकी कृष्ण पक्षकी द्वादशीको किया जाता है। यह पर्व बहुत कुछ हरछठकी भाँति ही पुत्रकी मंगल-कामनासे किया जाता है। इस अवसरपर जो कथा कही जाती है वह हरछठकी पहली कथासे अधिक भिन्न नहीं है। इस कथामें भी राजा तालाब खुदवाता है परन्तु पानी नहीं आता। पानीके लिए राजा अपने पोतेकी बलि देता है। [illegible] भेजी गयी बहू वापस आकर अपनी पूजाके बलसे उसे जीवित पाती है और घरमें सास-ससुरको अपने कुकृत्यके प्रति लज्जित पाती है। इस कथामें भी बहूको हरछठके दिन ही उसके मायके भेजा जाता है क्योंकि बछिकी मानता हरछठको ही बनी थी। वह अपने मायके पहुँचकर हरछठकी पूजा करती है। उसकी माँ दो चार रोजके लिए रोक लेती है और चाहती है कि वह ओक दुआसकी पूजा करके जाये परन्तु माताका उद्विग्न हृदय नहीं मानता और वह एकादशीके रोज ही चल देती है। पूजाका सामान अपने साथ ही ले लेती है। दूसरे दिन प्रातःकाल अपने ससुरके बनवाये तालाबके पास पहुँचती है जिसका पानी दूर-दूर गाँवों गलियारोंमें भरा है। वह वहाँ स्नान करती है। मिट्टीके बाघ-बाघिन बनाती है उनकी पूजा करती है और भीगे हुए चने चढ़ाती है। इस प्रकार भक्तिपूर्ण पूजाके

परिणाम-स्वरूप वह अपने बच्चेका पा जाती है। इस कथामें बलिके सम्बन्धमें कुछ अधिक विस्तार दिये गये हैं।

पुत्रवती स्त्रियाँ ही इस व्रतको करती हैं। बहुरा चौथकी भाँति पाटापर गोली मिट्टीसे गाय बछड़ा बाघ और बाघिनकी आकृतियाँ बनायी जाती हैं। अंकुरित मूँग, मोठ चना ही नैवेद्यमें चढ़ाय जाते हैं जिन्हें वे प्रसाद रूपमें खाती हैं। आज द्विदलीय अन्नोंका माहात्म्य है। गेहूँ, जौ गायका दूध दही, घी इत्यादि आजके दिन नहीं खाया जाता। मूँग मोठके चिल्ले चनेकी दाल इत्यादि आजके भोजनमें रहते हैं।

कथा

एक था राजा। एक थी रानी। उनके तमाम लड़के-बच्चे थे। सब बड़े हुए समर्थ हुए। विवाह हुए। उनके भी लड़के-बच्चे हुए। राजाने सोचा अब सन्यास लिया जाय। राजाने पण्डितोंको बुलवाया और अपनी इच्छा बतायी। पण्डितोंने समझाया कि केवल संन्याससे ही पुण्य थोड़े ही होता है। घर ही बैठे धर्म-पुण्य कर सकते हो। राजाने स्वीकार कर लिया। पर क्या किया जाये कि धर्म-पुण्यका काम हो। पण्डितोंने सुझाया, 'बाग लगाओ, कुआँ खुदाओ पौसाला बँधवाओ ताल खुदाओ।' तालाब बनवाना सबसे अच्छा है क्योंकि तालाबमें तो पशु पक्षी सभी पानी पी सकते हैं और बिना रस्सी-लोटेके पानी पिया जा सकता है। राजाने तालाब खुदवाया। चारों ओरसे उसे पक्का बँधवाया। पर उसमें पानी न फूटा। सब उपाय किये पर पानी न निकला सो न निकला। काशीसे पण्डित बुलवाये गये। उन पण्डितोंने कहा कि इसमें तो बलि देनी पड़ेगी। पण्डितने बताया 'अगले हुलकी गोंई कबरा कूकर, भूरी बिलारि, जेठे पूतक लड़केकी बलि दो तो पानी निकलगा।' राजा बड़े असमंजसमें पड़े। भला किसीए इतना अधर्म! फिर ज्येष्ठ लड़केक तो एक ही लड़का है। कैसे उसकी बलि

मघा

मघाके व्रतके लिए कोई तिथि निश्चित नहीं है। मघा एक नक्षत्र है। इसका आगमन प्रायः बादलोंकी गरज और बिजलीकी चमकसे उद्घोषित होता है। जिस प्रकार मृगशीर्ष नक्षत्र अपनी भयंकर तपनके लिए उत्तर भारतमें प्रख्यात है उसी प्रकार मघा वर्षाके लिए। मघा नक्षत्र प्रायः भादोंके महीनेमें पड़ता है। शृंगारके सन्दर्भमें कवियोंने मघाकी फुहारोंका प्रचुर मात्रामें वर्णन किया है। मघा नक्षत्रमें जब वर्षाके देवता अपनी उग्रता और भीषणताकी दुन्दुभी पीट रहे हों तभी किसी एक दिन मघाका व्रत रखा जाता है। इस दिन दानकी विशेष महिमा है। अपना दिया ही किसी दिन आपत्तिकालमें सहायक होता है। अतिवृष्टिके कारण अनेक प्रकारकी कठिनाइयाँ सम्भव हैं, और मघा नक्षत्र वर्षाका मुख्य नक्षत्र है जो कभी कभी दुर्भाग्यका कारण भी बन जाता है। अतः मघाको प्रसन्न करनेके लिए यह व्रत-पूजा होती है। इस दिन प्रातःकाल स्त्रियाँ स्नान करके रक्षाका धागा लेती हैं। सर्वप्रथम कलशकी स्थापना की जाती है और उसके कण्ठमें धागा बाँधा जाता है। उसी धागेको पाटेपर बनी पुतलियोंपर चढ़ाया जाता है। फिर वही धागा घरके लोगोंके हाथोंमें रक्षा-बन्धनकी भाँति बाँधा जाता है। कलशमें इस प्रकार वरुण देवताका आह्वान किया जाता है और उनसे रक्षाकी प्रार्थना की जाती है। इसी रक्षा-बन्धनको अपने परिवार की रक्षाके लिए काममें लाया जाता है। रक्षा-बन्धनके त्योहारकी भाँति इस दिन भी ब्राह्मण शुभ कामनाओंके साथ रक्षा बाँधते हैं परन्तु रक्षा

मन्यनके त्यौहारकी लोकप्रियताके सम्मुख मघाका सामाजिक महत्त्व कम हो गया है। अब यह केवल परिवारका त्यौहार रह गया है। आजके दिन विशेष भोजका आयोजन होता है। लोकोक्ति प्रचलित है 'मघाके बरसे, माताके परसे' से क्रमशः धरती और पुत्रकी भूख मिटती है। अस्तु। माँ अनेक प्रकारके पकवान मिठाइयाँ खीर पूरी इत्यादि बनाकर अपने पुत्रोंको खिलाती हैं।

यदपि यदपि देवताके कोपसे बचनेके लिए ही यह पर्व है। प्रस्तुत लोक-कथामें मघाके बादल और बिजली अधार्मिक एवं मघाका तिरस्कार करनेवाली रानीसे बदला लेनेके लिए उसके पतिको मार डालनेका यत्न करते हैं। परन्तु दासीके धार्मिक आचरण राजाके प्रति उसकी मंगल कामनाएँ और मघाके सम्मानसे राजाकी रक्षा होती है। मघाका धागा न लेनेसे यह आपत्ति उसपर आ रही थी परन्तु क्योंकि दासीने मघाका सम्मान किया था और ब्राह्मणीसे धागा स्वीकार कर उसको दक्षिणा दी थी इसलिए राजाकी रक्षा होती है। इसी रक्षाकी भावनासे यह पर्व किया जाता है।

कथा

आकाशमें काले-काले बादल छा गये। बड़ी-बड़ी बूँदें धरतीपर गिरने लगीं। पनारे बह चले। ओरौंतीसे पानी झरने लगा। गली कोलियोंमें पानी भर गया। पण्डितजीने पत्रा निकाला और विचार करके बोले मघा नक्षत्र लग गया। पण्डिताइनने मघाका धागा लिया और चल दी रानीको धागा देने जिससे राजाकी रक्षा हो लम्बी आयु मिले और पण्डिताइनको दक्षिणा मिले।

रानी यह सब ढकोसला मानती थी। उसने आज तक कोई दान-पुण्य नहीं किया था। अगर कोई ऐसा प्रपंच रचकर आता तो वह उसे दूरसे ही दुत्कार देती। ब्राह्मणी जब धागा लेकर रानीके पास

पहुँची तो रानीने देखते ही मुँह फेर लिया। पण्डिताइन बोली, "अमर हो राजा युग-युग जिये धन धान्य बढ़े रानीजी यह धागा बाँध लो भला करेगा। रानी अपनी बाँदीसे बोली, 'इस दुष्टाको महलसे बाहर कर दो। यह तो मेरे कान खाये जाती है और सिर चाटे जाती है।" बाँदी ब्राह्मणीको ले गयी और एकान्तमें जाकर उसके पाँव छुए। धागा ले लिया और थोड़ी बहुत दक्षिणा देकर पण्डिताइनको विदा किया। ब्राह्मणी अपने मुँहमें ही गुनगुनाती-बुदबुदाती घर आयी।

रानी तो पूजा-पाठ करती न थी पर बाँदी रानीकी आँख चुराकर गायके लिए एक चँदिया जरूर निकाल देती थी। एक दिन राजा शिकार खेलने गया। शिकारके पीछे घोड़ा दौड़ाते-दौड़ाते राजा अपने साथियोंसे बिछुड़ गया। अकेला वन जंगलमें इधर-उधर भटकता फिरा। मघा राजाके ऊपर नाराज थी ही गरजन-तरजन लगी। बिजली लपक लपककर राजाको मार डालना चाहती थी। एक बार ज्यों ही जोरसे मघा गरजी और बिजलीने राजाको मारनेके लिए हमला किया कि बाँदीकी दान की हुई चँदिया राजाके चारों ओर रक्षा-कवचकी तरह लिपट गयी। इस तरह राजा बच गया। राजा अपने बच जानेपर बड़ा चकित हुआ। बहुत रात गये महल पर आया।

राजाने घर आकर बताया कि न जाने किसके दान-पुण्यसे आज उसकी जान बची है। रानीने कहा कि मैं तो कभी दान-पुण्य करती नहीं पता नहीं किसके पुण्य प्रतापसे तुम बचे। उन्होंने बाँदीसे पूछा। बाँदीने डरते-डरते बताया और तो कुछ नहीं, मैंने ब्राह्मणीसे धागा ले लिया था और आपसे चुराकर गायके लिए एक चँदिया अपामन निकाल देती थी। राजाने कहा 'बस! तुम्हारे ही कारण मैं बचा।"

दूसरे वर्ष फिर मघाकी बूँदें पड़ीं। पनारे बह चले। पण्डिताइन फिर महलोंमें बाँदीको धागा देने गयी। अबकी बार रानीने पण्डिताइनका बड़ी आव भगतसे बैठाया। पाँव छुए। धागा माँगा। पर पण्डि

ताइनने धागा देनेसे इनकार कर दिया। और कुछ व्यंग्यसे बोली "अब क्यों ज़रूरत पड़ गयी महारानीजी? पहले तो तुमने निरादर कर दिया अब क्या है?" रानीने हाथ जोड़े पाँव छुए। माफ़ी माँगी। बड़ी चिरौरी बिनती की तब कहीं पण्डिताइन पसीजीं। रानीको मघाका धागा दिया। उस दिनसे रानी भी भगतिन हो गयीं। वह भी पूजा-पाठ और जप-तप करने लगीं।

■

गणेशचतुर्थी

विघ्नविनाशक देवताके रूपमें गणेशजी सर्वोपरि हैं और सर्वत्र पूज्य हैं। कोई ऐसा मांगलिक कार्य नहीं है जिसमें सर्वप्रथम गणेशजीकी पूजा न होती हो। गणेशजीका यह रूप इतना लोकप्रिय हो गया है कि उनके अन्य गुणोंको भुला दिया गया है। यद्यपि भाद्रपद शुक्ल चतुर्थीको सिद्धिविनायक व्रत कहा जाता है क्योंकि इस दिन मध्याह्नको इनका जन्म हुआ था, तथापि प्रत्येक पूजा व्रत अनुष्ठान इत्यादिमें इनकी पूजा सर्वप्रथम अनिवार्य रूपसे होती है। यह विद्या और सिद्धियों के देवता हैं।

इनकी विलक्षण बुद्धि और प्रतिभाके सम्बन्धमें महाभारत लेखनकी कथा प्रख्यात है। व्यासजीको महाभारत लिखनेके लिए लिपिककी आवश्यकता थी। नारदजीने गणेशजीका नाम सुझाया। गणेशजीने एक शर्तपर लिखना स्वीकार किया। इनकी शर्त थी कि व्यासजी बिना रुके हुए बोलते जायें। यदि व्यासजी किसी भी कारणसे अटके तो गणेशजी फिर नहीं लिखेंगे। व्यासजीने भी इस शर्तको स्वीकार करते हुए यह शर्त रखी कि गणेशजी बिना समझे एक भी पंक्ति नहीं लिखेंगे। गणेशजीने स्वीकार कर लिया। महाभारत-लेखन-कार्य प्रारम्भ हुआ। व्यासजी बड़ी कठिनाईमें पड़े क्योंकि गणेशजी समझते हुए व्यासजीका बोला हुआ तत्काल लिख डालते और व्यासजीको सोचने विचारनेका अवसर न मिलता। अतः व्यासजी प्रत्येक सौवाँ श्लोक कठिन बोलते जिसके समझनेमें गणेशजीको कुछ समय लगता तबतक व्यासजी आगेके

अंशको सोच लेत। महाभारतके रूपमें व्यासजीकी प्रतिभा तो जगत् विख्यात है ही परन्तु उसको पूर्णतया समझनेकी सामर्थ्य यदि किसीमें कही जा सकती है तो वह गणेशजीमें ही थी।

गणेशजीका मुँह हाथीका है। चाप थोथारा, गोलगोपना सुचिक्कण शरीर हाथीकी सूँड़के साथ मिलता हुआ एक दाँत। इसीलिए गणेशजी-को एकदन्त भी कहते हैं। इनके इस रूपके सम्बन्धमें पहली कथा प्रसिद्ध है। स्नानके पूर्व पार्वतीजीने उबटनके मैलसे एक बालककी मूर्ति बनायी और उसे जीवन प्रदान किया। स्नानके समय प्रवेश द्वारपर चौकीदारी में उसका सिर शंकर भगवान्‌ने काट लिया। बादमें शंकर पार्वतीके झगड़ेको शान्त करनेके लिए विष्णु भगवान्‌ने हाथीके बच्चेका सिर कटवाकर लगा दिया। इस प्रकार गणेशजीका रूप मानव शरीरपर हाथीके सिरवाला हो गया। गणेशजीके अद्भुत रूपकी यह पौराणिक व्याख्या है।

रायबहादुर बी० ए० गुप्तने अपने सुन्दर ग्रन्थ Hindu holi-days and ceremonials में गणेशजीके इस रूपके विकासकी अन्य कल्पना प्रस्तुत की है जो रोचक होनेके साथ-साथ विचारणीय भी है। व मानते हैं कि गणेशजी कृषि-देवता हैं। यह निष्कर्ष उन्होंने 'मूषक वाहन' शब्दसे निकाला है। उनका कथन है कि मूषक शब्द संस्कृतकी जिस धातुसे बना है उसका अर्थ है चोर। गणेशजीके लिए मूषक-वाहन नामका अर्थ है चोरोंपर सवारी करनेवाला। खेतोंके सबसे बड़े और खतरनाक चोर चूहे ही होते हैं। हाथीकी कल्पना उस किसानसे की गयी है जो अपने सिरपर पके हुए अनाजकी 'लाँक'को खेतसे काटकर ले जा रहा है। लम्बी-लम्बी बालियाँ सामने हाथीकी सूँड़की भाँति झूल रही हैं और बड़ा-सा गट्ठर बाँधे किसान झूमता हुआ चल रहा है। जिस प्रकार दिग्गज इस धरतीको सँभाले हुए हैं, उसी प्रकार यह किसान इस धरतीपर मनुष्यका संरक्षण कर रहा है। फिर भारतवर्षमें

बड़े आकार प्रकारके लिए प्रायः हाथीकी उपमा दी जाती है। अन्न अच्छी फसलकी बड़ी बड़ी बालें और उसकी राशियाँ कृषिदेवता गणेशजीका ऊपरी भाग, हँसिया या हलका फाल उनका एक दाँत (एकदन्ता), सूपकी आकृतिके कान (सूपकर्ण) और अनाजसे भरे हुए नाद या मटका सो उनकी तोंद और चूहोंसे रक्षा करनेवाला साँप उनकी मटके-जैसी तोंदपर है।

इस प्रकार गुप्तजीने गणेशजीकी पूरी आकृतिको कृषि पर्वका एक महान् प्रतीक बताया है। मूलाकृतिके विकासक्रमका मौलिक रूप भी उन्होंने प्रस्तुत किया है जिसकी अनुकृति यहाँपर दी जा रही है। इस कल्पनाको और अधिक विश्वसनीय बनानेके लिए उन्होंने लिखा है कि गणेशजीकी मूर्तिके विसर्जनके बाद किसानोंसे थोड़ी धान्य मांगी जाती है या बखार या गोदाममें जहाँ अनाज रखा जाता है वहाँपर अनाजके संरक्षणके लिए डाली जाती है। उन्होंने गणेशजीकी तुलना मैक्सिकोके टोंगा द्वीपकी अनाजकी देवी भसा भसा और यूनानके डिमीटरसे भी की है। यह कल्पना असम्भव नहीं है। कृषियुगकी यह प्रारम्भिक स्थिति हो सकती है और कृषि-सम्बन्धी विघ्नोंको दूर कर अच्छी फसलके दाता गणेशजी आगे चलकर सभी क्षेत्रोंके विघ्नविनाशक हो गये हैं।

पौराणिक दृष्टिसे भी गणेशजी हिन्दुओंके आदि देवता हैं और इनकी पाँच देवताओंमें सर्वाधिक सम्मानके साथ गणना होती है।

सदा भवानी दाहिने सन्मुख रहें गणेश।
पाँच देव रक्षा करें ब्रह्मा विष्णु महेश॥'

किसी भी शुभ कार्य या पवित्र अनुष्ठानके प्रारम्भमें गणेशजीका आह्वान सर्वप्रथम होता है। गणेशजीकी इसी प्रमुखताके कारण ही श्रीगणेश करनेका मुहावरा बन गया है। मन्दिरों तथा मकानोंमें गणेशजीकी मूर्ति प्रवेश-द्वारपर ही स्थापित रहती है। भारतवर्षमें

गणेशजीकी पूजा बहुत ही प्राचीन कालसे ही होती आ रही है। मोहन जोदड़ोके भग्नावशेषोंसे भी प्रतीत होता है कि आजसे पाँच हजार वर्ष पूर्व भी गणपतिकी पूजा होती थी। वेदों तथा उपनिषदोंमें भी गणपति के रूपमें गणेशजी पूज्य रहे हैं। गणेशजीका आह्वान करते हुए पूजा करानेवाले शास्त्री वेदकी निम्न पंक्तियाँ अनिवार्य रूपसे कहते हैं

ओ३म् गणानां त्वा गणपतिं हवामहे।
प्रियाणां त्वा प्रियपतिं हवामहे।
निधीनां त्वा निधिपतिं हवामहे।

इनको 'वक्रतुण्ड' और 'एकदन्त' भी कहा जाता है। इनके अतिरिक्त गणेशजीके और भी अनेक नाम हैं। यथा गणाधिप उमापुत्र अघ नाशन विनायक, ईशपुत्र सर्वसिद्धिप्रद, इभवक्त्र मूषकवाहन कुमार गुरु गणपति मनविनायक सिद्धिविनायक सत्यविनायक दूर्वागणपति, कपर्दिविनायक इत्यादि।

भविष्योत्तर पुराणमें एक कथा आती है जिसमें गणेशकी महिमाको सर्वोच्च करके बताया गया है। इस कथाके अनुसार स्वयं पार्वती और शंकर गणेशजीकी पूजा करते हैं और २१ दिनका व्रत रखते हैं। कथा निम्न प्रकार है :

एक बार शंकर और पार्वती कैलास छोड़कर नर्मदा तटपर पहुँचे। वहाँ पहुँचकर पार्वतीजीने शंकरसे कहा कि आज मेरी इच्छा आपके साथ पाँसा खेलनेकी है। शंकरजी खेलनेके लिए तैयार हो गये। दोनों पाँसे खेलनेके लिए बैठ गये। शंकरजीने कहा कि हमारी जय पराजयका निर्णय करनेवाला भी तो कोई होना चाहिए। पार्वतीजीने तुरन्त एरका नामक घाससे बालककी आकृति बनायी और जीवन प्रदान किया। बालकको उसका कर्तव्य समझा दिया गया। दोनों पाँसा खेलने लगे। पाँसा खेलनेमें हर बार शंकरजी हारते परन्तु जब बालकसे पूछा जाता तो वह कह देता कि जीत शंकरकी हुई। तीसरी बार खेलनेपर भी

जब पार्वतीको पराजित बताया तो वह नाराज हो गयीं और उन्होंने उस बालकको शाप दे दिया 'तूने सत्य भाषणमें प्रमाद किया है। अतः पाँवोंसे असमर्थ होकर तू इसी कीचड़में पड़ा रहेगा।' माँके इस शाप वचनोंको सुनकर बालकको होश आया। उसने माँसे क्षमा माँगी और कहा कि मैंने जान-बूझकर असत्य भाषण नहीं किया है -- बालक होनेके नाते प्रमादवश ऐसा हो गया है। पार्वतीजीका मातृहृदय पिघल गया, बोलीं, अब मैं तो कुछ नहीं कर सकती परन्तु जब नागकन्याएं इस नदीके तटपर गणेश-पूजनको आयें तब तू उनसे गणेश-पूजनकी विधि जानकर भक्तिसे गणेश-पूजन करना तभी तू अपने पाँवोंमें शक्ति पा सकेगा और तभी मुझे भी पा सकेगा।

इस प्रकार नर्मदाके तटपर कीचड़में बालकने कुछ दिन बिताये। एक दिन नागकन्याएं वहीं नर्मदा तटपर आयीं। उन्होंने विधिवत् गणेश-पूजन किया और व्रत रखा। उस बालकके पूछनेपर उन्होंने गणेश व्रतकी विधि बतायी। नागकन्याओंके चले जानेपर इस बालकने २१ दिन तक गणेश-व्रत किया। गणेशजी बालककी भक्तिसे बड़े प्रसन्न हुए और वर माँगनेको कहा। बालकने कहा, मैं केवल अपने पाँवोंमें शक्ति चाहता हूँ जिससे मैं कैलास अपने माता पिताके पास पहुँचकर उन्हें प्रसन्न कर सकूँ। 'एवमस्तु' कहकर गणेशजी अन्तर्धान हो गये। बालक कैलाश पहुँचा। शंकरजी उसे देखकर बहुत खुश हुए। शंकरजीने उससे पूछा कि तूने ऐसा कौन-सा व्रत किया जिससे यहाँतक पहुँच सका। मुझे भी वह व्रत बतलाओ जिसे करके मैं भी पार्वतीको प्राप्त कर सकूँ। पार्वती उस दिनसे रूठकर चली गयी थीं, तबसे आज तक मेरे पास नहीं आयीं। बालकने गणेश-व्रतकी विधिको विस्तारपूर्वक बताया। शंकरजीने २१ दिन तक गणपतीका व्रत किया जिससे पार्वतीजीके हृदयमें शंकरसे मिलनेकी प्रेरणा उत्पन्न हुई और वह शीघ्र ही शंकरजीके पास आ पहुँची। पार्वतीजीने शंकरजीसे पूछा कि आपने ऐसा

कौन-सा व्रत किया था जिससे मेरे मनमें आपसे मिलनेकी तीव्र अभिलाषा उत्पन्न हुई। तब शंकरजीने पार्वतीको गणेश-व्रतके बारेमें बतलाया। पार्वतीजीने २१ दिन तक, अपने पुत्र कार्तिकेयसे मिलनेकी अभिलाषासे, व्रत किया। २१वें दिन कार्तिकेय आ पहुँचे और पार्वतीजीसे बड़े प्रेमसे मिले। कार्तिकेयने जब इस व्रतका माहात्म्य सुना तो उन्होंने भी २१ दिनका गणेश-व्रत किया और थोड़े ही दिनोंमें व्रतकी कृपासे उन्होंने सेनानियोंकी प्रमुखता प्राप्त कर ली। यही व्रत-माहात्म्य जब विश्वामित्रको कार्तिकेयसे मालूम हुआ तो उन्होंने भी 'ब्रह्मर्षि' पदको प्राप्त करनेके लिए २१ दिनका व्रत किया। इस व्रतके फलस्वरूप त्रेता युगमें वशिष्ठ मुनिके द्वारा विश्वामित्रको ब्रह्मर्षि का पद मिला।

इस कथासे ऐसा प्रतीत होता है कि गणेशजी शंकर और पार्वतीके पुत्र नहीं बल्कि एक प्रभावशाली देवता थे जिनकी पूजा अर्चना एवं व्रत इत्यादि अपनी अभिलाषाओंकी पूर्तिके लिए उन्होंने भी किये। शंकर भगवान्‌से भी बड़े और सिद्धिदायक देवता गणेशजीकी महिमाको इस कथामें स्पष्टताके साथ स्थापित किया गया है। कपर्दिविनायक व्रत-सम्बन्धी कथामें भी इसी प्रकार गणेशजीकी महिमा गायी गयी है। स्कन्दपुराणमें उल्लिखित इस कथाके माध्यमसे पूजाको सरल और 'कौड़ी मोल' सस्ता बताया गया है। एक कौड़ी चढ़ानेसे कपर्दिविनायक प्रसन्न होकर अभिलाषाकी पूर्ति करते हैं। यह व्रत श्रावण शुक्ल चतुर्थीको प्रारम्भ किया जाता है। यथा — श्रावणस्य सिते पक्षे चतुर्थ्यामिकयुग्वती। व्रत कुर्याद् गणेशस्य मासमेकं व्रत चरेत्॥

कपर्दिविनायककी कथा भी द्यूतक्रीडासे प्रारम्भ होती है। शंकर भगवान् जुएके दाँवमें त्रिशूल डमरू, व्याघ्रचर्म इत्यादि सभी कुछ लगाते हैं और हार जाते हैं। अन्तमें वह पार्वतीजीसे व्याघ्रचर्म वापस माँगते हैं परन्तु पार्वतीजी देनेसे इनकार कर देती हैं। उनके इनकार करनेसे शंकरजी नाराज होते हैं और १२ दिन न बोलनेकी बात कहकर अन्तर्हित

अब पार्वतीको पराजित बताया तो वह नाराज हो गयीं और उन्होंने उस बालकको शाप दे दिया 'तूने सत्य भाषणमें प्रमाद किया है। अतः पाँवोंसे असमर्थ होकर तू इसी कीचड़में पड़ा रहेगा।' माँके इन शाप वचनोंको सुनकर बालकको होश आया। उसने माँसे क्षमा माँगी और कहा कि मैंने जान-बूझकर असत्य भाषण नहीं किया है – बालक होनेके नाते प्रमादवश ऐसा हो गया है। पार्वतीजीका मातृहृदय पिघल गया बोलीं अब मैं तो कुछ नहीं कर सकती परन्तु जब नागकन्याएं इस नदीके तटपर गणेश पूजनको आयें तब तू उनसे गणेश-पूजनकी विधि जानकर भक्तिसे गणेश पूजन करना तभी तू अपने पाँवोंमें शक्ति पा सकेगा और तभी मुझे भी पा सकेगा।

इस प्रकार नर्मदाके तटपर कीचड़में बालकने कुछ दिन बिताये। एक दिन नागकन्याएं वहीं नर्मदा तटपर आयीं। उन्होंने विधिवत् गणेश-पूजन किया और व्रत रखा। उस बालकके पूछनेपर उन्होंने गणेश व्रतकी विधि बतायी। नागकन्याओंके चले जानेपर इस बालकने २१ दिन तक गणेश-व्रत किया। गणेशजी बालककी भक्तिसे बड़े प्रसन्न हुए और वर माँगनेको कहा। बालकने कहा मैं केवल अपने पावोंमें शक्ति चाहता हूँ जिससे मैं कैलास अपने माता-पिताके पास पहुँचकर उन्हें प्रसन्न कर सकूँ। एवमस्तु कहकर गणेशजी अन्तर्धान हो गये। बालक कैलाश पहुँचा। शंकरजी उसे देखकर बहुत खुश हुए। शंकरजीने उससे पूछा कि तूने ऐसा कौन-सा व्रत किया जिससे यहाँतक पहुँच सका। मुझे भी वह व्रत बतलाओ जिसे करके मैं भी पार्वतीको प्राप्त कर सकूँ। पार्वती उस दिनसे रूठकर चली गयी थीं तबसे आज तक मेरे पास नहीं आयीं। बालकने गणेश-व्रतकी विधिको विस्तारपूर्वक बताया। शंकरजीने २१ दिन तक गणेशजीका व्रत किया जिससे पार्वती जीके हृदयमें शंकरसे मिलनेकी प्रेरणा उत्पन्न हुई और वह शीघ्र ही शंकरजीके पास आ पहुँची। पार्वतीजीने शंकरजीसे पूछा कि आपने ऐसा

कौन-सा व्रत किया था जिससे मेरे मनमें आपसे मिलनेकी तीव्र अभिलाषा उत्पन्न हुई। तब शंकरजीने पार्वतीको गणेश-व्रतके बारेमें बतलाया। पार्वतीजीने २१ दिन तक, अपने पुत्र कार्तिकेयसे मिलनेकी अभिलाषासे, व्रत किया। २१वें दिन कार्तिकेय आ पहुँचे और पार्वतीजीसे बड़े प्रेमसे मिले। कार्तिकेयने जब इस व्रतका माहात्म्य सुना तो उन्होंने भी २१ दिनका गणेश-व्रत किया और थोड़े ही दिनोंमें व्रतकी कृपासे उन्होंने सेनानियोंकी प्रमुखता प्राप्त कर ली। यही व्रत-माहात्म्य जब विश्वामित्रको कार्तिकेयसे मालूम हुआ तो उन्होंने भी 'ब्रह्मर्षि' पद-का प्राप्त करनेके लिए २१ दिनका व्रत किया। इस व्रतके फलस्वरूप त्रेता युगमें वशिष्ठ मुनिके द्वारा विश्वामित्रको 'ब्रह्मर्षि' का पद मिला।

इस कथासे ऐसा प्रतीत होता है कि गणेशजी शंकर और पार्वतीके पुत्र नहीं बल्कि एक प्रभावशाली देवता थे जिनकी पूजा-अर्चना एवं व्रत इत्यादि अपनी अभिलाषाओंकी पूर्तिके लिए, उन्होंने भी किये। शंकर भगवान्से भी बड़े और सिद्धिदायक देवता गणेशजीकी महिमाको इस कथामें स्पष्टताके साथ स्थापित किया गया है। कपर्दिविनायक व्रत-सम्बन्धी कथामें भी इसी प्रकार गणेशजीकी महिमा गायी गयी है। स्कन्दपुराणमें उल्लिखित इस कथाके माध्यमसे पूजाको सरल और 'कौड़ी मोल' सस्ता बताया गया है। एक कौड़ी चढ़ानेसे कपर्दि विनायक प्रसन्न होकर अभिलाषाकी पूर्ति करते हैं। यह व्रत श्रावण शुक्ल चतुर्थीको प्रारम्भ किया जाता है। यथा — श्रावणस्य सिते पक्षे चतुर्थ्यामिकमुग्व्रती। व्रतं कुर्याद् गणेशस्य मासमेकं व्रत चरेत्॥

कपर्दिविनायककी कथा भी द्यूतक्रीड़ासे प्रारम्भ होती है। शंकर भगवान् जुएके दाँवमें त्रिशूल डमरू व्याघ्रचम इत्यादि सभी कुछ लगाते हैं और हार जाते हैं। अन्तमें वह पार्वतीजीसे व्याघ्रचर्म वापस माँगते हैं परन्तु पार्वतीजी देनेसे इनकार कर देती हैं। उनके इनकार करनेसे शंकर जी नाराज होते हैं और १२ दिन न बोलनेकी बात कहकर अन्तर्हित

हो जाते हैं। पार्वतीजी इसपर बहुत दुःखी होती हैं और पुकारते और विलाप करते हुए वनमें पहुँचती हैं। वहाँ कुछ स्त्रियाँ पूजा कर रही हैं। पार्वतीजी व्रत और पूजनका उद्देश्य और महत्त्व पूछती हैं। स्त्रियाँ समस्त सिद्धिदायक कपर्दिविनायकका व्रत-माहात्म्य और विधि बतलाती हैं। यह व्रत श्रावण शुक्ल चतुर्थीसे शुरू करके माघ शुक्ल चतुर्थी तक एक महीनेका होता है। या जिस महीनेमें चार रविवार हों पाँच नहीं उस महीनेमें इस व्रतको करना चाहिए। प्रातःकाल विधिपूर्वक सफेद तिलोंसे स्नान करके फिर किसी नदी तालाबमें स्नान करना चाहिए। पूजन करनेके स्थानको गोबरसे लीपकर एक मण्डल बनाये और बीचमें आठदल कमल बनाकर उसमें गणेशजीकी मूर्तिको स्थापित करे। गां, गीं गूं, गैं गौं गः य छः गणेशजीके मन्त्रबीज हैं। इससे अगन्यास करे। अनेक विधि विधानोंके बाद एक मुट्ठी समूचे चावल और एक कौड़ी किसी पवित्र ब्रह्मचारीको दानमें दे दे। इस प्रकार भक्तिपूर्वक जो गणेशजीकी पूजा करता है उसकी समस्त कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

पार्वतीजी यह सुनकर व्रत करती हैं और विधिवत् गणेशपूजन करती हैं। तत्पश्चात् शंकर भगवान् प्रत्यक्ष हो जाते हैं। पार्वतीजीके प्रिय वचन सुनकर पूछते हैं कि तुमने कौन-सा व्रत किया कि मुझे आना ही पड़ा। तब पार्वतीजी कपर्दिगण विनायकका पवित्र व्रत बतलाती हैं। शंकर भगवान् विष्णुके दर्शनके लिए यह व्रत करते हैं। विष्णु भगवान् व्रतकी शक्ति जानकर ब्रह्माजीको बुलानेके लिए गणेशजीका व्रत करते हैं ब्रह्माजी आते हैं। ब्रह्माजी इन्द्र भगवान्को बुलानेके लिए व्रत करते हैं इन्द्र भगवान्ने राजा विक्रमादित्यको देखनेके लिए व्रत किया। राजा विक्रमादित्यने इस व्रतके माहात्म्यको रानियोंसे बताया। शत्रुओंको जीतनेकी इच्छासे रानीने व्रत करना चाहा। जब रानीने उस व्रतमें एक कौड़ीके दानकी बात सुनी तो बहुत अप्रसन्न हुई और व्रतकी निन्दा की। रानी शीघ्र ही कोढ़ग्रस्त हो गयी। राजाने अपनी प्रतिष्ठा और

सोकरजनमें सयाम्से रानीको राज्यसे हटा दिया। रानी ऋषियोंके आश्रममें पहुँची और उनकी बहुत सेवा की। ऋषियोंने रानीको बतलाया कि यह कपर्दिगणविनायकका व्रत करें और पूजन करें तो सब ठीक हो जायेगा। रानीने पश्चात्ताप और भक्ति-भावसे गणेशजीकी पूजा अर्चना करके फिरसे कंचन-सी सुन्दर काया पायी। उसी समय शंकर और पार्वती भ्रमणार्थ निकले थे। एक ब्राह्मणको रोता हुआ देखकर रुक गये। ब्राह्मण निर्धन था। उसे कपर्दिगणविनायकके व्रतका विधान बताया और कहा कि पूजाकी सामग्री विक्रमादित्यकी नगरीमें एक वैश्यसे मिल जायेगी। गणेशजीका पूजन-व्रत करके वह मन्त्री हो गया। वैश्यने गणेशजीका व्रत किया और उसकी लड़कीका विवाह विक्रमादित्यसे हो गया। व्रतके प्रभावसे शिकारके बाद उन ऋषियोंके आश्रममें पहुँचा जहाँ उसकी रानी रहती थी। उसने अपनी रानीको ऋषियोंसे वापस माँग लिया। घर आकर अपनी महिषीके साथ कपर्दिगणविनायककी विधिवत् पूजा की और व्रत किया। व्रतके प्रभावसे सभी शत्रुओंका विनाश हो गया और वह निष्कंटक राज्य करने लगा। घर मोती-मोतोंसे भर गया।

गणेशजीके प्रभावके सम्बन्धमें एक और भी महत्त्वपूर्ण कथा है। इस चतुर्थीको चन्द्रमा देखनेवालेको कलंक लगता है। इसीलिए आजके दिन लोग चन्द्रमा नहीं देखते। आजके ही दिन श्रीकृष्णने चन्द्रमा देख लिया था जिससे उन्हें स्यमन्तक मणिकी चोरी लगी थी। स्कन्दपुराणके स्यमन्तकोपाख्यानके नन्दिकेश्वर-सनत्कुमार संवादमें यह पूरी कथा आयी है। द्वारका नगरीमें उग्रसेन नामका एक यादव था जिसके दो पुत्र थे। एकका नाम था सत्राजित और दूसरेका नाम था प्रसेनजित। सत्राजितने समुद्रके किनारे सूर्यकी कठिन तपस्या की। सूर्यने प्रसन्न होकर सत्राजितके माँगनेपर स्यमन्तक मणि दी पर यह चेतावनी भी दी कि यह कोई साधारण मणि नहीं है। रोज प्रातःकाल अपनेसे अठगुना

न्नि नारद मुनि आये और उन्होंने उदासीका कारण पूछा। कृष्णने स्यमन्तक मणिकी सारी कहानी कह सुनायी। इसपर नारदने कहा कि मैं जानता हूँ कि आपपर इस प्रकार दोषारोपण क्यों किया गया है। उन्होंने कहा कि इस झूठे दोषारोपणका कारण भाद्रपदकी शुक्ल चतुर्थी को चन्द्रदर्शन है। गणेशजीने चन्द्रमाको शाप दिया था क्योंकि चन्द्रमाने गणेशजीका अपमान किया था। नारदजीने कृष्णको चन्द्र-अभिशापकी कथा सुनायी।

शिवने गणेशको अपने गणोंका अध्यक्ष बनाया और आठों ऋद्धियों को पत्नीके रूपमें अर्पित किया। ब्रह्माने गणेशकी प्रशंसा की और पूजा की। इसपर खुश होकर गणेशने ब्रह्मासे कहा कि वर माँगो। ब्रह्माने कहा कि महाराज ऐसा कुछ कीजिए जिससे मैं अपना सृष्टि-काय निर्विघ्न रूपसे कर सकूँ। गणेशने ब्रह्माको वरदान दिया और चन्द्रलोक होकर स्वर्गकी ओर चल दिये। चन्द्रलोकमें गणेशजी गिर पड़े। जिसपर चन्द्रमा खूब हँसा। इसपर गणेशजीको बहुत क्रोध आया और उन्होंने कहा "हे चन्द्र! तू अपनेको बहुत सुन्दर समझता है। तो ले मैं तुझे शाप देता हूँ कि आजसे जो तेरी ओर निहारेगा उसपर कलंक लगेगा।" चन्द्रमा इससे इतना लज्जित और भयभीत हुआ कि कमलके सम्पुटमें जाकर छिप गया। चन्द्रमाके अन्तर्धान रहनेपर सभी देवताओं और ऋषियोंमें चिन्ता व्याप्त हो गयी। वे ब्रह्मा, विष्णु महेशके पास भागने लये। उन्होंने समझाया कि तुम लोग स्वयं गणेशजीके पास जाओ। सभी देवता गणेशजीके पास गये और बहुत प्रार्थना की। देवताओंके गुरु बृहस्पतिने चन्द्रमासे गणेशकी पूजा करवायी और क्षमा-याचना करवायी परन्तु गणेशने शाप वापस न लिया तब सभी देवताओंने मिलकर गणेशजीकी पूजा की। इसपर तरस खाते हुए गणेशजीने अपने शापको केवल भाद्र शुक्ल चतुर्थीके लिए सीमित कर दिया। इसपर चन्द्रमाने पूछा कि उस दिन चन्द्रदर्शनके शापसे कैसे बचा जा सकता है।

तब गणेशजीने कहा कि जो प्रत्येक मासको कृष्ण चतुर्थीको मेरी पूजा करेगा और तुम्हारी और तुम्हारी पत्नीकी पूजा करेगा और जो ब्राह्मणोंको स्वर्णकी बनी मेरी मूर्तियाँ दानमें देगा उसपर मेरे शापका प्रभाव नहीं होगा। और तभीसे प्रत्येक मासकी कृष्ण चतुर्थी गणेश चतुर्थी कहलाती है और अपनी मनोकामनाओंको पूर्ण करनेके लिए गणेशजीकी पूजा की जाती है।

ब्रह्मानन्द पुराणमें सत्यविनायकके रूपमें गणेशजीके महत्त्वकी एक और लम्बी कथा आती है। ब्रह्माजी अपने पुत्र नारदसे कहते हैं कि गणेश ही एक ऐसे देवता हैं जो मनुष्यकी सभी अभिलाषाओंकी पूर्ति कर सकते हैं। वह ऐसे भगवान् हैं जो वेदोंके पूर्व भी थे और जिनसे वेद निःसृत हुए हैं। ओ३म् जिनसे वेदोंका उद्भव हुआ है वही सत्यविनायक है इनकी पूजा स्वयं मैं करता हूँ और विष्णु और शंकर भगवान् करते हैं। शंकर पार्वतीसंवादके द्वारा यह प्रकरण प्रस्तुत हुआ है। सुदामाको कृष्ण सत्यविनायककी पूजाकी बात बतलाते हैं जिनकी पूजासे सुदामा धन धान्यसे सुखी जीवन व्यतीत करने लगता है।

जब सृष्टि नहीं थी और सर्वत्र पानी ही-पानी था उस समय ब्रह्माने गणेशजीकी पूजा की थी और गणेशजीकी कृपासे ब्रह्माको शक्ति मिली कि वह अपना सृष्टि-कार्य निर्विघ्न चला सकें। विष्णुको संरक्षणकी शक्ति गणेश पूजनसे ही प्राप्त हुई है। गणेशकी प्राचीनताके सम्बन्धमें दी गयी ये कथाएँ उनकी विशिष्ट महिमा एवं शक्तिको ही प्रतिपादित करती हैं। उत्तर भारतमें फिर भी महाराष्ट्रकी अपेक्षा गणेशजीका महत्त्व कम है और पूजामें विस्तारोंका अभाव है। यहाँपर दी गयी लोक-कथाओंमें भी गणेशजीका माहात्म्य स्थापित किया गया है।

१

शंकर भगवान् कहीं गये हुए थे। बहुत दिन बीत गये और फिर भी नहीं लौटे। पार्वतीका मन किसी काममें नहीं लगता था। वे बड़ी

उदास रहने लगीं। उसको अनमना देखकर सहेलियाँ बोलीं "आओ तुम्हारा तेल उबटन कर दें।' पार्वतीने बहुत 'न' की पर सहेलियों न मानीं। उन्होंने बड़ी घसिस उबटन लगाया और जो मैल निकला उससे एक मूर्ति बनायी। मूर्ति एक सुन्दर बालककी बन गयी। सहेलियाँ बोलीं "गौरी अब तुम इसपर अपनी छिगुनियाका खून छिड़क दो तो यह सचमुचका बालक बन जाये। गौरी, तुम इसे जीवन दो।' पार्वतीने अपनी छिगुनिया काटकर उस मूर्तिपर खून छिड़क दिया। मैलके बालक में जीवन आ गया। उस बालकका नाम मनविनायक रखा।

भगवान् शंकरके वियोगमें पार्वती खाना पीना, नहाना सभी कुछ भूल गयी थीं। उबटनके बाद सोचा चलो नहा लिया जाये। वे मन विनायकसे बोलीं, 'बेटा! मैं नहा लूं, तुम बाहर घरकी देहरीपर बैठो और देखो कोई आने न पावे' – मनविनायक बोले, 'अच्छा माँ!' और देहरीपर आरामसे पैर फैलाकर बैठ गये। थोड़ी ही देर हुई होगी कि शिवजी आ गये। बहुत दिनोंके बाद आये थे। घर जानेकी उतावली थी पर देहरीपर मनविनायकको देखकर ठिठक गये और बोले "तुम कौन हो जो रास्ता रोके बैठे हो? बालकने ठसकके साथ जवाब दिया "मैं मनविनायक हूं। पहरा दे रहा हूं। अन्दर किसीको नहीं जाने दूंगा। शिवजीकी भौंहोंमें बल पड़ गये। कड़ककर बोले "राह छोड़ो। मुझे अन्दर जाना है। जानते हो मैं कौन हूं? मनविनायक बड़े शान्त भावसे बोले, आप कौन हैं – मुझे जाननेकी जरूरत नहीं। मैं तो केवल इतना जानता हूं कि मेरे रहते इस देहरीके भीतर कोई पाँव नहीं रख सकता। शिवजीने उनको समझाया, फुसलाया, धमकाया पर मनविनायक टससे मस न हुआ। तब क्रोधमें आकर शंकरजी ने उसका सिर धड़से अलग कर दिया और पातालपुरीमें फेंक दिया। और तब घरमें प्रवेश किया।

पार्वती नहा रही थी। शिवजीको देखते ही खुश भी हुई और

घबड़ा भी गयीं। और तुरन्त पूछा "क्या तुमको कोई बाहर नहीं मिला? किसीने रोका नहीं?" शिवजी बोले, "हाँ एक उद्दत बालक मिला था। वह मेरी राह रोक रहा था। मैंने बहुत समझाया-धमकाया। पर वह भी एक ज़िद्दी लड़का था। वह न माना तो मैंने उसका सिर काटकर पातालमें फेंक दिया।' इतना सुनते ही पार्वतीका चेहरा गुस्सेसे लाल हो गया। शिवजी पार्वतीके कठोर रूपको देखकर सहम गये। पार्वतीने ललकारते हुए कहा, 'तुमको मुझसे युद्ध करना होगा। बिना हारे-जीत निस्तार नहीं।' शिवजी इस परिस्थितिके लिए तैयार नहीं थे। पार्वतीके क्रोधको देखकर मन ही मन काँप गये। प्रलय होने लगा। सभी देवी-देवता दौड़े आये और पार्वतीको मनाने लगे। पर पार्वतीका क्रोध बराबर बढ़ता ही गया। अन्तम विष्णु भगवान् बोले 'देवी! तुम शान्त हो। मैं तुम्हारे पुत्रको जीवित करता हूँ।' अपने चरोंको उन्होंने आदेश दिया कि जाओ और सारे विश्वको छान डालो और जो माँ अपने पुत्रकी ओर पीठ किये हो उस बालकका सिर काट लाओ। थोड़ी देरमें चर वापस लौट आये और बड़े निराश स्वरमें बोले कि कोई भी माँ नहीं मिली जो अपने पुत्रकी ओर पीठ किये हो। सभी अपने पुत्रोंको छातीसे लगाये ही मिलीं। विष्णु भगवान् बड़े असमंजसमें पड़ गये। हारकर उन्होंने अपने चरोंसे फिर कहा कि जाओ और किसी भी पशु पक्षीके बच्चेका सिर ले आओ जो अपने बच्चेकी ओर पीठ किये हो। चर चल दिये। इस बार उन्हें सफलता मिली।

एक हथिनीने बच्चा हुआ था। वह एक ओर पड़ी थी और दूसरी ओर उसका बच्चा पड़ा था। चरोंने बच्चेका सिर काट लिया और विष्णु भगवान्की सेवामें उपस्थित कर दिया। विष्णु भगवान्ने उस सिरको गणविनायकके धड़से जोड़ दिया और जीवन दे दिया। हाथीके सिरवाले गणविनायक उठकर खड़े हो गये। पार्वतीका क्रोध तो शान्त हो गया परन्तु वे सन्तुष्ट नहीं थीं। उनका सुन्दर मुखवाला गणविनायक

गजानन हो गया था । पर अब हो ही क्या सकता था ? विष्णुजीने पार्वतीको समझाया देवी असन्तुष्ट मत हो । क्रोध त्याग दो । तुम्हारा पुत्र बड़ा तेजस्वी होगा । विघ्नविनाशकके रूपमें मर्त्यलोकमें इसकी पूजा होगी । किसी शुभ कार्यके प्रारम्भमें इसीका स्मरण किया जायगा । पूजापाठमें भी सर्वप्रथम इसीकी पूजा होगी । आजसे इसका नाम विघ्न-विनाशक गणेश होगा । पार्वती प्रसन्न होकर हँसने लगीं मानो वर्षा ऋतुमें धूप निकल आयी हो ।

२

किसी नगरमें एक बालक चुटकी भर चावल और कुड़ैया भर दूध लिये घर-घर, द्वार-द्वार घूम रहा था । हर एकसे वह कहता कि कोई खीर पका दे । पर सभी गृहस्थ उसका सामान देखकर हँस देते और आगेका रास्ता बता देते। घूमते-घूमते वह एक बुढ़ियाके द्वारपर पहुँचा और खीर पकानेके लिए कहा । बुढ़ियाको कुछ ऐसा लगा कि हो न-हो यह कोई देवता होगा और सबकी परीक्षा लेता फिर रहा है । बुढ़ियाने तुरन्त सामान ले लिया और एक बड़े हण्डेमें चढ़ा दिया । बालक बोला ' जब खीर पक जायेगी तब मैं आ जाऊँगा ।"

बुढ़ियाने खीर पकानेका काम अपनी बहूको सौंप दिया । उसको कहीं जाना था इसलिए वह चली गयी । थोड़ी देरमें खीर उबली और बाहर गिरने लगी तो बहूने एक दूसरे बरतनमें उस उबली हुई खीरको ले लिया और थोड़ी-सी खा भी ली । थोड़ी देरमें बुढ़िया लौट आयी । जब खीर पक गयी तो बालक भी आ गया । बुढ़ियाने चौका लगाकर पाटा-पानी रखकर उसे बुलाया "लो भाई, अपनी खीर खा लो ।" बालक बोला अब खीर क्या खाऊँ ? वह तो जूठी हो गयी है । अब वह मेरे कामकी नहीं रही । तुम सब खाओ और लोगोंको खिलाओ । सासने बहूसे पूछा कि क्या तुमने खीर जुठारी है ? बहूने स्वीकार कर

लिया कि हाँ उसने चखी थी। बुढ़िया बाहर आकर बालकसे बोली, "भगवान् आप कौन हैं?" बालक बोला 'मैं गणेश हूँ। सब लोगोंकी परीक्षा ले रहा था।' यह कहकर गणेशजी अन्तर्धान हो गये।

खीर छक छककर सबने खायी और खूब खिलायी पर वह खतम ही न होती थी। गणेशजीकी कृपासे बुढ़िया बड़े आरामसे रहने लगी।

३

एक माँ अपने बेटेको रोज तीन पैसे देती थी। बेटा उसमें-से एक पैसेके फूल लेकर गणेशजीकी मूर्तिपर चढ़ा देता था। बाकी दो पैसे माँको लौटा देता था। किसीने माँको बहका दिया कि अपने बेटेको पैसे मत दिया करो। यह बिगड़ा जा रहा है। माँ अपने बेटेकी यह शिका यत सुनकर डर गयी कि कहीं मेरा बेटा बिगड़ न जाय। इस भयके कारण उसने अपने बेटेको दूसरे दिन पैसे नहीं दिये। लड़केने माँको बहुत समझाया पर माँ नहीं मानी। उसे पैसे नहीं मिले।

लाचार होकर भूखे प्यासे बच्चेने गणेशजीके मन्दिरमें आकर अन्न जल त्याग कर दिया। मन्दिरमें जा बैठा और प्रतिज्ञा की कि जबतक गणेशजी-पर फूल नहीं चढ़ा लूँगा अन्न जल न ग्रहण करूँगा। गणेशजीके मनपर बड़ा संकट पड़ा। उन्हें प्रकट होना पड़ा। गणेशजी प्रकट होकर बोले 'बेटा क्या दुःख है? यहाँ क्यों पड़े हो? बच्चा बोला 'एक पैसेके फूल खरीदकर मैं रोज गणेशजीकी मूर्तिपर चढ़ाता था। पर आज माँने पैसे ही नहीं दिये। फूल कहाँसे लाऊँ?' गणेशजी बोले, बस इतनी-सी बात! देखो सामने कितने फूल लगे हैं। चाहे जितने चढ़ाओ और घर ले जाओ। इतना कहकर गणेशजी अन्तर्धान हो गये। उस बालकने मन्दिरके चारों तरफ फूल ही-फूल देखे।

उसने कुछ फूल तोड़े और गणेशजीकी मूर्तिपर चढ़ाये कुछ घर ले आया। उसने जैसे ही फूल रखे वे सोना हो गये। माँने देखा तो पूछा,

"अरे अभागे ! किसकी हत्या की, कहाँ डाका डाला ? यह सोना कहाँ से ले आया ?" बेटा बोला "मैं क्या जानूँ ? गणेशजीने मुझे फूल दिये थे वे सोना हो गये तो मैं क्या करूँ ?"

माँने बेटेको गलेसे लगा लिया और बड़े प्यारके साथ कहा "बेटा तू भगवान्‌का सच्चा भक्त है।

४

एक था राजा। वह अपना महल बनवा रहा था। जहाँ महल बन रहा था वहाँ एक बुढ़िया आयी। बुढ़िया राजसे बोली, "राज बेटा ! हमारे गणेशके लिए भी एक मढ़िया बना दे। तुम्हें बड़ा पुण्य होगा।"

राज बोला "माई ! हम तो राजाके चाकर हैं। जितनी देर मढ़िया बनायेंगे उतनी देर राजाका कामका हर्ज होगा। इसके लिए राजा हमें सजा देंगे।

बुढ़िया उदास मन घर लौटी। रातको न जाने क्या हुआ कि राजा का महल नींवसे भरभराकर गिर पड़ा। सबेरे राजाने जो यह हाल देखा तो उसे बड़ा अचरज हुआ। न बरसा न बूँदी सारा महल भरभरा पड़ा। राजाने सोचा हो न हो जरूर इसमें कोई भेद है ? उसने एक-एक नौकर एक-एक राजको बुलाया और पूछा "महल कैसे गिर गया ? नौकर चाकर, राज सभी सन्न ! किसीके मुँहसे बोल न फूटे। साहस बटोरकर उस राजने हाथ जोड़कर कहा "महाराज ! अपराध क्षमा हो ! कल एक बुढ़िया आयी थी। उसने मुझसे गणेशजीके लिए एक मढ़िया बनानेको कहा था परन्तु मैंने आपके डरसे इनकार कर दिया। कौन जाने उसीने शाप दे दिया हो। तुरन्त बुढ़ियाकी तलाश हुई। बुढ़िया आयी। राजाने पूछा, "बुढ़िया तूने हमें सरापा है — काहे ? हमारा महल गिर गया। बुढ़िया बोली "अन्नदाता ! शायद

गणेशजी नाराज हो गये हों। मैंने राजसे गणेशजीके लिए एक मड़िया बनानेको कहा था। इसने मड़िया बनानेसे इनकार कर दिया। इसीलिए आपका सारा महल गिर गया।'

यह सुनकर राजाने सबसे पहले गणेशजीका मन्दिर बनवाया। उसमें गणेशजीकी प्रतिष्ठा की और तब महल बनवाया।

बुढ़िया बराबर नियमसे मन्दिरमें आकर गणेशजीकी पूजा करने लगी। गणेशजी उसकी लगन और भक्तिसे बड़े प्रसन्न हुए। एक दिन गणेशजी बुढ़ियाके सामने प्रकट हुए और बोले, 'तेरी सेवा-टहलसे मैं बहुत खुश हूँ। वर माँग।'

बुढ़िया बोली भगवन्! मैं तो कुछ जानती नहीं, घरमें पूछ आऊँ। बुढ़िया घर आयी। उसने अपने बेटेसे कहा कि 'गणेशजी मुझपर प्रसन्न हुए हैं और वर देना चाहते हैं। बोल, क्या मागूँ?

बेटेने कहा 'अम्मा! देख, हम कितने गरीब हैं। तू गणेशजीसे खूब सारा धन माँग ले।"

बहूसे पूछा। उसने उत्तर दिया 'अम्मा धन क्या होगा जब कोई बपरनेवाला नहीं है? तुम तो गणेशजीसे पोतेकी माँग करो।'

बुढ़िया इन लोगोंकी स्वार्थ-भरी माँगोंको सुनकर बड़ी दुःखी हुई। वह सोचने लगी कि दुनिया बड़ी स्वार्थी है। सबने अपने-अपने मतलब की बातें तो सोच ली पर किसीने यह न सोचा कि अम्मा अन्धी हैं। गणेशजीसे अपनी आँखें माँग लें। किसीके फूटे मुँहसे यह न निकला अम्मा अपने लिए आँखें माँग लो ये मरे बहू-बेटे हैं। इसी तरह सोचती-विसूरती बड़बड़ाती गणेशजीके मन्दिरकी ओर चली।

रास्तेमें उसे बालरूपमें गणेशजी मिले। उन्होंने पूछा माताजी! तुम्हें क्या चाहिए? क्यों बड़बड़ा रही हो?

बुढ़ियाने बकते झकते सब कुछ बताया और कहा, 'पर तुम्हें क्या? जब मेरे बहू-बेटे मेरे न हुए तो तुम मेरे लिए क्या करोगे?'

गणेशजीने कहा जैसे मैं कहूँ वैसे ही वर माँगना। [सब ठीक हो जायेगा। 'अच्छा" कहकर बुढ़िया ध्यानसे सुनने लगी। बालरूप गणेशजीने कहा कि "गणेशजीसे वर माँगना कि, 'भर नैन, अपनी गोदीमें अपने पोतेको सोनेके कटोरेमें दूध पीते देखूं।

यह सुनकर बुढ़िया बड़ी खुश हुई और जल्दी-जल्दी मन्दिरमें पहुँची। पहुँचनेपर गणेशजीने पूछा 'क्यों पूछ आयी ?'

बुढ़ियाने कहा हाँ! भगवान्।'

"तो माँग" गणेशजी बोले।

बुढ़ियाने कहा भर नैन अपनी गोदीमें, अपने पोतेको सोनेके कटोरेमें दूध पीते देखूं।'

गणेशजी हँसकर बोले, बुढ़िया मू ता कुछ भी नहीं जानती थी और वर ऐसा माँगा कि माँगनेमें कुछ भी न छोड़ा। बड़ी चतुर है। अच्छा जाओ जो माँगा सो दिया।'

गणेशजीकी कृपासे बुढ़िया टकर-टकर देखने लगी। घर धन धान्य से भर गया। बहूके नौ महीने बाद एक सुन्दर-सा बेटा हुआ। गणेशजी-की कृपासे बुढ़ियाने सब सुख पाया। और सभी सुखसे रहने लगे।

■

पितृपक्ष

क्वाँर महीनेके कृष्ण पक्षको पितृपक्ष भी कहते हैं। इस पक्षमें पितरोंको पिण्डदान किया जाता है और श्राद्ध होता है। श्राद्धका अधिकार विशेषरूपसे ज्येष्ठ पुत्रको है। यदि पुत्र न हो तो नाती (पुत्रीका पुत्र) श्राद्ध कर सकता है। पितृपक्षमें क्षौरकर्म नहीं करवाते तेल नहीं लगाते और न किसी अन्य प्रकारका शृंगार करते हैं। जिसके अनेक पुत्र हों उनमें-से ज्येष्ठ पुत्र अपने छोटे भाइयोंको सम्मिलित करके श्राद्ध करता है। सभी भाई अलग-अलग श्राद्ध नहीं करते परन्तु लोक परम्परामें इस नियमका पालन नहीं होता। लगभग सभी भाई अलग होनेपर अपने अपने घरोंमें पितरोंका श्राद्ध करते हैं। यहाँपर जो कथा दी गयी है वह भी इसी स्थितिकी ओर संकेत करती है। जोगे भोगे दोनों भाई पुत्र हो गये हैं अत अलग रहते हैं और अलग श्राद्ध करते हैं। यहाँ श्राद्धमें पितरोंको जल और पिण्डदान देकर सन्तुष्ट करनेकी भावना होती है वहाँ अब सामाजिक महत्त्वकी बात भी शामिल हो गयी है। श्राद्धमें अधिक संख्यामें ब्राह्मणोंको भोजन कराना अधिक दक्षिणा देना इत्यादि सामाजिक महत्त्वको बढ़ाता है। विधिवत् और विशेष आयोजनके साथ श्राद्ध करनेसे समाजमें मान मिलता है।

श्राद्धका अर्थ है वह आयोजन जिसमें किसी यशस्वी, महत्त्वपूर्ण योग्य व्यक्ति (जीवित या मृत) के प्रति सम्मान और श्रद्धा प्रकट की जाती है। वैदिक कालमें महत्त्वपूर्ण एवं यशस्वी व्यक्तियोंका श्राद्ध उनके जीवन कालमें ही किया जाता था। उस समय कुलपतियों (परिवारके पुरखाओं) का विशेष अधिकार प्राप्त था और उनके प्रति उस परिवार

के सभी लोगोंमें श्रद्धा और सम्मानकी भावना होती थी। कुलकी भावना परिवारकी अपेक्षा अधिक व्यापक है जो एक वंश परम्पराको जन्म देती है। इन्हीं कुल परम्पराओंसे गोत्र-परम्पराका विकास हुआ। जीवित व्यक्तियोंका श्राद्ध करनेकी प्रथा कुछ दुर्घटनाओं और अपशकुनोंके कारण मन्द कर दी गयी होगी और कालान्तरमें केवल मृत पुरखाओंका श्राद्ध होने लगा। धर्मशास्त्रोंमें ऐसा कहा गया है कि पुत्रोंसे श्राद्धमें अन्न पाकर ही पितरोंकी सन्तप्त भूखी आत्माको तृप्ति मिलती है। इसीलिए हिन्दू समाजमें पुत्रोंकी धार्मिक आवश्यकता है। वस्तुतः पितृ ऋणसे उद्धार पानेके लिए पुत्र उत्पन्न करना एक महत्वपूर्ण धार्मिक कृत्य है जिसके अभावमें ऋणके बोझसे दबी पितृ आत्माको सन्तोष नहीं मिल सकता। पितृपक्षमें इस प्रकार श्राद्ध पाकर पितरोंको सन्तोष होता है कि उनका वंशवृक्ष पुष्पित एवं पल्लवित होकर उनके नामको उजागर कर रहा है और उस ऋणसे उन्हें मुक्ति प्रदान कर रहा है जिसका बोझ उनपर था।

पितरोंकी मरण तिथिको पितृपक्षमें उनका श्राद्ध किया जाता है। गयामें श्राद्ध करनेका माहात्म्य अनुपम है और इससे पितरोंको पूर्ण तृप्ति मिलती है। श्राद्धका विस्तृत कर्मकाण्ड है जिसे कोई कर्मकाण्डी पण्डित पूरा करता है। अन्य मांगलिक अवसरोंपर भी श्राद्ध कराया जाता है। अपने पूर्वजोंके प्रति सम्मान और श्रद्धा प्रकट करनेका यह हिन्दुओंका अपना ढंग है जिससे हम अपनी वंश-परम्परामें सम्मानके साथ निबद्ध रहते हैं। मरण तिथियोंके आधारपर पूर्वजोंका श्राद्ध तो होता ही है परन्तु तर्पण पितृपक्षमें प्रतिदिन होता है।

मामा तथा ससुरको भी जल दिया जाता है। जल देनेके समय काले तिलोंका उपयोग किया जाता है इसीलिए श्रद्धांजलि और तिलांजलिमें भेद कर दिया गया है। यद्यपि यह तिलांजलि भी श्रद्धांजलि ही है परन्तु तिलांजलिकी श्रद्धांजलि केवल मृतात्माओंको ही अर्पित की जाती है और श्रद्धांजलि सभी सम्माननीय व्यक्तियोंको अर्पित की जाती है। शामको परिवारकी स्त्रियाँ एक स्थानपर बैठकर कथाएँ कहती और सुनती हैं। प्रस्तुत कथाके माध्यमसे श्रद्धा भावपर बल दिया गया है। कोरा प्रदर्शन व्यर्थ है।

१

किसी नगरमें दो भाई रहते थे—नाम था जोगे भोगे। दोनों अपने अपने परिवारोंके साथ अलग-अलग रहते थे। पर फिर भी आपसमें बड़ा प्रम था। बड़े भाई जोगेके पास खूब धन था, भोगे निर्धन था। पण्डिताई करके कुछ लाता तो पेट-पूजा होती नहीं तो भूखे ही सोना पड़ता। जोगेकी स्त्री अपने धनके अहंकारमें रहती। सीधे मुँह किसीसे बात भी न करती थी। ग़रीबीकी मारी भोगेकी स्त्री बड़ी ही विनम्र और सीधी थी।

पितृपक्ष आया। जोगेकी स्त्रीने पतिसे पूछा श्राद्ध न करोगे?' जोग बोला कहो तो कर डालूँ पर बड़ा झंझट है। कौन बनायेगा चुनायेगा और कौन तमाम टहल करेगा? स्त्री बोली अरे इसकी क्या फिकर? भोगवाकी दुल्हिन तो है ही उसे बुलवा लूँगी। वही सब करेगी। जाओ तुम मेरे मायकेवालोंको न्योता दे आओ' जोगे 'अच्छा" कहकर चल दिया। श्राद्धके दिन मायकेका सारा दल आकर इकट्ठा हो गया। भोगवाकी दुल्हिनको कामके लिए बुलवा लिया गया था। यह बड़े तड़केसे ही काममें जुटी थी। दाल पीसी बड़े मुँगौड़े गाटी बड़ी भात बनाया। फिर पूरी कचौरी तरकारी चटनी

खटाई खीर वग़ैरह बनायी। तमाम तरहकी मिठाइयाँ भी उसने बनायीं। मायकेका दल आकर खाने बैठ गया। वह बेचारी दिन भर वहीं अपनी जिठानीकी टहलमें फँसी रही। भोजनके समय पितर लोग धरतीपर उतरे और अपने वंशजोंके घर भोजन पाने चल दिये। जोगे भोगेके पितर पहले जोगेके घर गये तो देखा कि जोगेकी स्त्रीके मायकेके लोग जुटे हुए हैं और उनके लिए एक कौरकी भी गुंजाइश नहीं है। उलटे पाँव वहाँसे लौटे और भोगेके घर आये। उस बेचारेके घर कुछ था ही नहीं। केवल पितरोंके नामपर अगियारी दे दी गयी थी। पितृदेवने उसीकी राख अपने होठोंसे लगा ली और भूखे नदी किनारे पहुँचे। थोड़ी ही देरमें अन्य पितर भी वहीं आ गये और सब अपने अपने यहाँके श्राद्धकी बड़ाई करने लगे हमको यह भोजन मिला – हमको वह व्यंजन मिला। जोगे भोगेके पिता चुप। वे क्या कहते भला। पितरोंने पूछा, 'क्यों जोग-भोगके पिताजी! आप क्यों चुप हैं? क्या जोगे भोगेने तुम्हारा श्राद्ध नहीं किया?' पितर बोले 'जोगेने तो बहुत बड़ा श्राद्ध किया परन्तु उसमें हमारे लिए कोई स्थान न था। और बेचारे भोगेके यहाँ तो कुछ था ही नहीं पर मेरे लिए श्रद्धा अवश्य प्रकट की गयी थी – अगियारी दी थी। उसीकी राख चाटकर चला आया। अन्य पितर बोले, 'तो अब क्या किया जाये?' जोगे भोगेके पितर बोले 'जोगेसे तो कुछ आशा नहीं है। भोग अच्छा लड़का है पर वह बहुत ग़रीब है। आओ हम सब लोग मनायें कि भोगेके पास धन हो जाये। इसपर वे पितर वहीं नदीके रेतपर ताल दे-दे नाचने लगे और मनाने लगे 'मेरे भोगवाके धन हो जाय मेरे भोगवाके धन हो जाय।

इधर तीसरा पहर भी बीत चला पर भोगके बाल-बच्चोंके मुँहमें अन्नका एक दाना भी न गया। सभी भूखसे बिलबिला रहे थे। और माँको जिठानीके घरसे फ़ुरसत ही न मिल पा रही थी। वे अपने घरसे चलकर चाचीके घर आये जहाँ उनकी माँ काम कर रही थी। माँको

आकर घेर लिया और मसि खाना माँगने लगे। भोगेकी स्त्री अपनी जिठानीके पास आयी और बोली, जीजी, माठा बहुत भरा है जीजी बोली, 'भरा रहने दो अभी बछियाको पिला दिया जायेगा।' बिचारी चुप हो गयी। थोड़ी देरमें बोली जीजी माँड बहुत निकला है बेकार जायेगा। जीजी बोली 'तुम चिन्ता मत करो। अपना काम करो जाकर। माँड बर्धोको पिला दिया जायेगा। रुआँसी बेचारी अपने लड़कोंके पास आयी और बोली आँगनमें होदी औंधी रखी है उसे जाकर खोलना। उसके नीचे सेठके यहाँसे आया परसा रखा है। जाओ और सब जन बाँटकर खा लो।' लड़के घर पहुँचे होदी उठायी, परसा निकाला पर पितरोंकी प्रार्थनासे वह खाना धनमें बदल गया था। तरकारी मोहरें हो गयीं दही चाँदी हो गया पूरियाँ सोनेकी हो गयीं। अबोध बालक उन्हें उठाकर नोचते चबाते। कुछ देरमें हारकर फिर माँके पास पहुँचे — माँ ये कैसी पूरियाँ हैं कटतीं ही नहीं। माँने कहा "चलो देखूँ। घर आकर जो देखा तो दंग रह गयी। अब तो भोगके भी दिन फिरे। भोगे भी धनी हो गया। भोगेका भाग्य तो बदल गया पर मन न बदला। भाग धन पाकर इतराया नहीं।

होते-करते दूसरे वर्ष फिर पितृपक्ष आया। अबकी बार भोगकी स्त्रीने कहा पितरोंका श्राद्ध करना चाहती हूँ। भोगे बोला 'बड़ी अच्छी बात है पर बनायेगा कौन? कहो तो भाभीको बुला लूँ?' भोगकी स्त्री बोली 'जिस दिन जीजीको बुलाकर काम करवाऊँगी उस दिन क्या डूबनेके लिए चुल्लू-भर पानी भी न मिलेगा? तुम आदरसे उन लोगोंको न्योता दे आना। मैं सब बना लूँगी।

श्राद्धके दिन भोगेकी स्त्रीने बड़ी चटकई और उत्साहके साथ छप्पनों प्रकारके व्यंजन बनाये। अच्छे-अच्छे ब्राह्मणोंको बुलाकर श्राद्ध किया। उन सबको अच्छी तरह खिलाया पिलाया और दक्षिणा दी। सेठ और जिठानीको आदरके साथ सोनेकी थाली और चन्दनकी चौकीपर बिठा-

कर भोजन कराया। सबने प्रसन्न होकर आशीर्वाद दिया। पितर लोग भी अपना भाग पाकर तृप्त हुए। रातको सेठ-सिठानी जब खा पीकर सोनेके लिए अपने घर जाने लगे तो सिठानी बोली, 'देखो लोगोंमें कैसा श्राद्ध किया है ?' सेठ बोला, 'श्राद्ध नहीं किया है तुम्हारे मुँहपर थूका है। सिठानी चुप हो गयी।

■

महाकाली-महालक्ष्मी

महाकाली-महालक्ष्मीका व्रत भाद्रपदकी शुक्ल अष्टमीसे प्रारम्भ किया जाता है और सोलहवें दिन आश्विन कृष्ण अष्टमीको पूरा किया जाता है। यह पूजा महालक्ष्मीके महाकाली रूपकी होती है। इस व्रतके सम्बन्धमें १६ की संख्या विशेष महत्त्वपूर्ण है। इस व्रतका अनुष्ठान करनेवाली स्त्री प्रतिवर्ष नियमपूर्वक १६ वर्षोंतक महालक्ष्मीका व्रत करती है और १६वें वर्ष उद्यापन करती है। व्रती प्रातःकाल उठकर सोलह दूर्वादलोंकी दो जूरियाँ लेकर नदी-तालाबमें जाकर प्रत्येक अंगका सोलह बार प्रक्षालन करता है। इस प्रक्षालन क्रियाको शुचि करना कहते हैं। नदी-तालाब न होनेपर स्त्रियाँ घरमें ही परातमें पानी लेकर अपने प्रत्येक अंगको शुचि करती हैं। शुचि करनेके उपरान्त कच्चे सूतके १६ तागोंके दो धागे बनाती हैं और प्रत्येकमें महालक्ष्मीका नाम लेकर सोलह गाँठ लगाती हैं। तत्पश्चात् धागोंकी पूजा करके अपनी बाँहोंपर सोलह बार फिराती हैं। किसी भी कारणसे अपवित्र होनेके भयसे इन धागोंको उतारकर शुद्ध स्थानमें रख दिया जाता है परन्तु प्रतिदिन उनको बाँहोंपर फिराया जाता है। अवधी क्षेत्रमें केवल शुचि हर रोज होती है पूजा पहले और आखिरी दिन ही की जाती है। इस प्रकार करते हुए १६ वर्षोंके बाद विस्तारके साथ पूजा की जाती है। अन्तिम दिन लक्ष्मीजीकी मूर्ति या अल्पनापर धागेको दूर्वादलके साथ रखा जाता है और पूजा की जाती है। इस दिन पूजा करके एक बार भोजन किया जाता है। भोजनमें भी पूरी-पुआके साथ १६ पिड़ियाँ या सोरहा-का होना अनिवार्य है।

पाटा या केलेके पत्तेपर महाकाली और महालक्ष्मीके लिए दो पुत लियाँ बनायी जाती हैं। अगल-बगल आम-वन और नीम-वनके लिए दो वृक्ष बनाये जाते हैं। आम-वन और नीम-वनकी रानी और दासी आम और नीम वृक्षोंके नीचे बनायी जाती हैं। हाथीपर सवार राजा बनाये जाते हैं। हाथीके आगे पण्डित बनाये जाते हैं। हाथीके नीचे सुअर बनाया जाता है। छोटी रानीकी बगलमें चार कहारोंके कन्धोंपर पालकी भी बनायी जाती है। महाकाली-महालक्ष्मीका अल्पना चित्र इस सम्बन्धमें ध्यान देने योग्य है। इस अल्पनाके सभी पात्र प्रथम कथा-के चरित्र हैं। इस कथाके पढ़नेसे अल्पनाकी सभी विशेषताएँ स्पष्ट हो जाती हैं। लगभग इसी प्रकारकी कथा श्रीरामप्रताप त्रिपाठीने भी अपनी पुस्तक 'हिन्दुओंके व्रत, पर्व और त्योहार' में दी है। महाराष्ट्र में भी कुछ ऐसी ही कथा कही जाती है। उसमें एक दैत्यके वधकी बातको विशेष महत्त्व दिया गया है। एक बुढ़ाका ग़रीब बेटा राजाकी सेनाके साथ *मन्दमथनस्वर नामके दानवको मारने जाता है। आधी* रातको नाग-कन्याएँ जंगलमें आती हैं और महालक्ष्मीकी पूजा करती हैं। वह नौजवान भी पूजा करता है। महालक्ष्मी उसे आशीर्वाद देती हैं *कि जिस उद्देश्यसे निकले हो वह होगा और राक्षस मारा जायेगा।* सुबह होते ही राजाने देखा कि महलके सामने राक्षस मरा पड़ा है। राजाको सूचना दी जाती है। राजा सेनाके साथ वापस आते हैं। पता लगानेपर सब मालूम होता है। बुढ़ाके पुत्रको आधा राजपाट मिल जाता है। महालक्ष्मीके व्रत और पूजनका महत्त्व मालूम होता है। राजाकी दो रानियोंमें से एक उस महत्त्व नहीं देती और अभिशप्त होकर मेढकी हो जाती है। बादमें ऋषियोंके आश्रममें ऋषियोंकी सेवा करके शापसे मुक्ति पाती है और शिकारके लिए भटकते हुए राजाकी सेवा करनेका अवसर पाकर अपने पतिको फिर प्राप्त करती है और महालक्ष्मीका व्रत-पूजन करती है।

इस सन्दर्भमें स्कन्दपुराणमें उल्लिखित महालक्ष्मीकी कथा बहुत ही महत्वपूर्ण है। इस पर्वके दिन महालक्ष्मीकी पूजा महाकालीके रूपमें होती है जिसका पूरा अभिप्राय स्कन्दपुराणकी इस कथासे सिद्ध हो जाता है। कथा इस प्रकार है—

स्कन्द मुनिके पूछनेपर शंकर भगवान् कहते हैं सौ वर्ष तक देवासुर संग्राम हुआ जिसमें देवताओंके अधिपति इन्द्र और असुरोंका राजा वृत्र था। देवताओंकी विजय हुई और अधिकांश असुर मारे गये, जो बच गये वे पाताल-तल चले गये। कुछ लंका चले गये कुछ वरुणालयमें प्रविष्ट हो गये। उनमें-से एक महाबली असुर जिसका नाम कोलासुर था गोमन्तके दुर्गम गिरिदुर्गमें आश्रय लेकर निर्भय हो गया। प्रजापर अनेक प्रकारके अत्याचार करने लगा। सुन्दर, युवा गुणवती कन्याओंको युगमें पकड़ मँगवाता और उनके साथ रमण करता। रमण करनेके बाद उन्हें जंगलमें फिकवा देता। इसी समय वेदोंके ज्ञाता दो ऋषि उधर विचरते हुए आ पहुँचे। इन्होंने वहाँकी प्रजासे कोलासुरके अत्याचार और भ्रष्टाचारकी बातें सुनी। वे दोनों पुलस्त्य और गौतम ऋषि थे। प्रजाको वे अगस्त्य महामुनिके पास ले गये जिन्होंने इल्वल और वातापी नामके दो राक्षसोंका वध किया था। अगस्त्यके पास पहुँचकर उन्होंने कोलासुरके सब कोल-कारनामे कहे। अगस्त्य मुनि बोले 'सृष्टि, संरक्षण और विनाशके कारण ब्रह्मा विष्णु, महेश रामपर्वतपर तपश्चर्या कर रहे हैं। तीनों सन्ध्याएँ शरीर धारण करके उनकी सेवा कर रही हैं। महालक्ष्मी उनमें प्रविष्ट होकर शक्ति रूपसे संस्थित हैं। सर्वशक्तिमान् लक्ष्मी लोककल्याणके लिए ही ऐसा कर रही हैं। इतना सुनकर व सब रामपर्वतपर पहुँच गये। तीनों देवताओंने उन्हें आश्वस्त किया और कहा कि कोलासुरका वध महालक्ष्मी करेंगी। और महालक्ष्मीसे कहा कि दण्ड शूलादिक तथा अन्य आयुधोंसे कोलासुरपर विजय प्राप्त करो। आपका क्रोध पहला भूतनाथ (भैरव) होकर कोलासुरको

आकर घेर लेगा।

प्रथम भूतनाथने आकर कोलासुरको घेर लिया। महालक्ष्मी बादलों की भाँति गरजने लगीं। कोलासुर इस आक्रमणसे क्रोधित होकर युद्धके लिए निकल पड़ा। घमासान युद्ध हुआ। देवताओंकी सेना हारने लगी तब भूतनाथने बाणोंकी वर्षासे असुरोंकी सनाका मदन कर दिया। यह देखकर कोलासुरने भयंकर गर्जना करके भूतनाथपर गदाका प्रहार किया। भूतनाथका सिर फूट गया और वह मूर्च्छित होकर गिर पड़ा। यह देखकर देवियाँ उद्यत कोलासुरपर झपटीं और त्रिशूलोंसे उसपर आघात किया। कोलासुर भी क्रोधम देवियोंपर गदाका भयंकर प्रहार कर रहा था। युद्ध-मदसे हँसती हुई देवियोंने उसकी गदा तोड़ डाली। उसने बाणोंसे देवियोंके ममको छेदना शुरू किया। इस भयंकर स्थितिसे बचनेके लिए देवियोंने उसकी टाँगें पकड़कर क्रोधसे आकाशमें घुमाकर फेंक दिया। कोलासुर जब उठनकी कोशिश करता तो महालक्ष्मी उसको पैरोंसे मारकर फिर गिरा देतीं। महालक्ष्मीके चरणोंकी चोट खाकर कोलासुर चिंघाड़ मारकर मर गया। सभी ओर खुशियाँ मनायी जान लगीं। सभी देवियाँ दिव्य विमानसे कोलापुर गयीं। वहाँके प्रजा जनने सबका बड़ा स्वागत किया और देवी महालक्ष्मीकी विधिवत् पूजा की। कोलासुरके गिरिदुर्गके बन्दीगृहमें बन्द स्त्रियोंको मुक्त किया गया। उस दिनसे महाकाली-महालक्ष्मीकी पूजा विशेष रूपसे स्त्रियाँ बड़ी श्रद्धा भक्तिसे करने लगीं।

इस सन्दर्भमें दी गयी दूसरी कथा तमिलकी दीपक लक्ष्मी करम की कथासे बहुत मिलती-जुलती है। ग़रीब ब्राह्मण पर रानीका मौक्तिक हार एक चील्ह डाल जाती है जिसे ब्राह्मणकी कन्या राजाको वापस दे आती है। इस ईमानदारीस लक्ष्मीजी प्रसन्न होती हैं और निर्धनका घर धन धान्यसे परिपूर्ण हो जाता है।

वस्तुतः धन धान्यके उद्देश्यसे लक्ष्मीजीकी पूजा दीवालीपर होती

है। महालक्ष्मीकी पूजा तो दुर्भाग्यकी दुर्गतिसे बचनेके लिए और स्त्रियाँ अपने सोहागके संरक्षण और पतिकी अनुकूलता प्राप्त करनेके लिए करती हैं।

१

एक था राजा। उसके दो रानियाँ थीं। छोटी रानीपर राजाका प्रेम अधिक था। राजाने उसके लिए आमोंका एक सुन्दर बाग लगवाया और बागके बीचमें एक विशाल महल बनवाकर उसीके साथ रहने लगा। बड़ी रानीका निरादर था। वह बेचारी नीम वनमें एक टूटे-फूटे घरमें रहती थी। राजा उसके पास कभी भी न जाता। एक दिन एक सुअर छोटी रानीके बागमें घुस गया और बागको तहस-नहस कर दिया। इसपर छोटी रानी बड़ी दुखी हुई। जब राजाको यह मालूम हुआ तो वह बहुत क्रुद्ध हुआ। उसने मन्त्रीसे कहा कि उस दुष्टका पता लगाया जाये और उसको मृत्युदण्ड दिया जाये। परन्तु सवाल तो यह था कि उस व्यक्तिका पता कैसे लगाया जाये। राजाने कहा कि सभा बुलायी जाये और सुअर दौड़ाया जाये। सुअर जिसकी टाँगोंके बीचसे निकल जाये उसीको अपराधी मानकर सजा दी जाये।

सभाकी डुग्गी पिटवा दी गयी। एक दिन सभा जुड़ी और सुअरको लाया गया। सुअरने सोचा कि जिसके नीचेसे हम निकलेंगे वह मरवा डाला जायेगा। परन्तु यदि राजाके नीचेसे हम निकलें तो कुछ न होगा क्योंकि राजाको कोई नहीं मार सकता। सुअर छोड़ा गया। वह भागता हुआ गया और तीरकी भाँति राजाके टाँगोंके नीचसे निकल गया। राजा यह देखकर बड़े शर्मिन्दा हुए। राजा अपनेको क्या मारते। चुप चाप एक पण्डितको लेकर जंगलकी ओर चल दिये। वहाँपर एक तालाब-में कुछ औरतें कोई पूजा कर रही थीं। औरतोंने जब पण्डितको देखा तो कहा कि हमारी पूजा विधिवत् करवा दो। पण्डितने पूजा करवायी।

पण्डितको प्रसाद और दक्षिणा दी। स्त्रियोंने महालक्ष्मीका धागा भी लिया जिसे पण्डितने राजाकी बाँहमें बाँध दिया। राजाने उस व्रतकी विधि पूछी और पण्डितको लेकर वापस लौट आये। लौटकर राजाने धागा रानीको दिया और पूजाकी विधि बतायी। सोलह डगोंकी सोलह बार शुचि करो। सोलहवें दिन सोलह सोरहा खाओ सोलह पताओ सोलह ही ब्राह्मणको दो। इसी तरह सोलह साल तक करो। राजाके कहनेसे छोटी रानीने व्रत शुरू किया परन्तु शरीरकी सुकुमार और मन की मौजी छोटी रानीने कहा कि "मुझसे नहीं होता यह व्रत उपास। कौन यह कटुर-भुस्सा खाये और छप्प-छप्प करे? दूबकी मलाई हजम नहीं होती और फूलोंकी सेजपर नींद नहीं आती तो यह सब मुसीबत कौन उठाय? यह कहकर छोटी रानीने दूबके औंड़ा और धागा उठाकर फेंक दिये। फेंकते ही उनके घरसे लक्ष्मीजी चली गयीं।

दासीने धागा लेकर बड़ी रानीको दिया और सारी विधि बतायी। रानीने १६ वर्षों तक बड़ी भक्तिसे व्रत रखा और विधिसे पूजा की। १६वें वर्ष व्रतके उद्यापनका समय आया। राजा तो बड़ी रानीके घर जाते न थे। बिना पतिके व्रतका उद्यापन कैसे हो? पर रानीने राजाके अँगोछेसे गाँठ बाँधकर उद्यापन शुरू किया। घण्टे घड़ियालकी ध्वनि सुनकर राजा जाग गये और पूछने लगे कि आज नीम-वनमें बड़ी रानी कौन-सा पूजा-पाठ कर रही हैं। कुछ न मालूम होनेपर स्वयं नीम-वन पहुँचे। रानीने राजाको आया देख अपना महाभाग्य माना। फिर उनसे गाँठ जोड़कर उद्यापन शुरू किया। उधर छोटी रानी जागी तो देखा राजा नहीं हैं। रानीने नौकरोंसे पूछा कि राजा कहाँ गये। नौकरोंने बतलाया कि राजा नीम-वन गये हैं। छोटी रानीने सोचा कि आज यह कैसे हो गया। राजाकी बड़ी रानीकी बात तक न भाती थी। वह आज नीम वन कैसे गये? नौकरोंने बतलाया कि आज बड़ी रानी महाकाली-महालक्ष्मीका उद्यापन कर रही हैं।। रानी बोली कि हम

भी आयेंगी। हमारा डाला तैयार करो।' डोला लेने गये तो कहारोंके कांध लगे थे। घोड़ा लाओ, पर घोड़ेकी पीठ लगी थी। रानीने अपनी चप्पलें माँगीं। उसमें साँप-बीछी मँडरा रहे थे। रानी विवश नंगे पाँवों चलकर नीम-वन पहुँची। महलके पास पहुँचते ही महलका फाटक बन्द हो गया। कोई रास्ता न देखकर छोटी रानी चमारेसे घुसने लगी। उसी समय रानीने माटी-माटी कर दिया (आगेका दीपक जो घरके लोगों के सिरपर घुमाकर फेंक दिया जाता है) उतारकर फेंका तो छोटी रानीके मुँहपर जाकर लगा। छोटी रानीका मुँह सुअरियाका हो गया। घुर-घुर करती इधर-उधर मारी-मारी फिरने लगी। फिरते भटकते एक तपाकी मड़ैयामें जा पहुँची। उस समय तपा भिक्षाके लिए गये थे। छोटा रानी मड़ैयामें घुसकर बैठ गयी। तपाने अनेक घरोंमें भीख माँगी पर कहीं भिक्षा न मिली। निराश होकर अपनी मड़या पहुंचे तो देखा कि मड़ैया भीतरसे बन्द है। उन्होंने कहा पुत्र-पुत्री ब्राह्मणी या जो कोई भी हो किवाड़ खोल दो। छोटी रानीने किवाड़ खोल दिये। खोलते ही तपाने देखा कि सुअरके मुखवाली एक स्त्री यहाँपर बैठी है। तपा समझ गये कि इसपर महाकाली-महालक्ष्मीका शाप है। ऐसी पापिन जो घरमें बैठी हो तो भिक्षा कैसे मिल सकती है ?

छोटी रानीने तपासे पूछा कि अब इस शापसे कैसे उद्धार हो ? तपाने बतलाया कि यहीं पासके तालाबमें स्त्रियाँ महाकाली-महालक्ष्मी की सुधि और पूजा करने आती हैं, तुम उनका चौका लीप-पोतकर साफ करके रखो और झाड़ीमें छिपकर बैठ जाओ। जब व कथा कहें तो ध्यानसे सुनना। इस तरह सोलह साल तक करनेसे ही इस शापसे मुक्ति मिलेगी। सोलहवें साल कथा सुनकर तुम तालाबमें कूद जाना तो सोलह वर्षकी कन्या हो जाओगी। छोटी रानीने सोलह वर्ष तक ऐसा ही किया। सोलहवें साल तालाबमें कूद जानेसे महाकाली-महालक्ष्मीकी कृपासे छोटी रानी सोलह सालकी कन्या हो गयी फिर तपाके पास

आयी। तपाने वहीं जंगलमें एक मूला डाल दिया और गेड़ुआमें पानी रख दिया। तपाके आश्रममें इसी प्रकार खेलते-खाते दिन बीत रहे थे।

एक दिन राजा शिकार खेलते-खेलते बहुत दूर निकल गया। भूख प्याससे परेशान होकर उसने अपने साथियोंसे कहा कि उधर देखो पेड़ों के पत्ते हिल रहे हैं वहाँ चिड़ियाँ बैठी हैं। जाकर देखो वहाँ पानी जरूर होगा। राजाके नौकर-चाकर साथी सब उसी दिशामें चल दिये और थोड़ी देरमें छोटी रानीके पास पहुँचे और रानीसे राजाके लिए पानी माँगा। रानीने कहा प्यासा कुएँके पास आता है कुआँ प्यासेके पास नहीं जाता। जाओ अगर तुम्हारा राजा प्यासा है तो उसे ही मेरे पास भेजो। सिपाही लौट गये और रानीकी बात कह सुनायी। राजा पानीकी आशासे तपाके आश्रमकी ओर चला। थोड़ी देरमें राजा रानीके पास पहुँचा और उसके सौन्दर्यको देखकर मोहित हो गया। पानी पीकर स्वस्थ होनेपर उसने उससे कहा मैं तुम्हें अपनी रानी बनाना चाहता हूँ। रानीने कहा मुझसे यदि विवाह करना चाहते हो तो तपासे कहो।'

राजा तपाकी प्रतीक्षा कर ही रहा था कि तपा आ गये। तपाने देखते ही पहचान लिया कि यही राजा इस अभागिनका पति है। राजाने तपासे लड़की माँगी तो तपाने कहा "राजन्! यह तुम्हारी ही है चाहे विवाह कर ले जाओ या ऐसे ही।' राजा अपनी छोटी रानी को लेकर चल दिया और उसने तपाकी ओर उलटकर देखा भी नहीं। तपाकी मड़ैया भी उसके साथ चलने लगी। तब तपाने कहा 'बिटिया जा तो रही ही हो। एक बार मुँह घुमाकर पीछे भी देख लो। नहीं तो मेरी मड़ैया भी तुम्हारे साथ चली जायेगी।' राजा रानीने लौटकर माफ़ी माँगी और वापस अपने महलमें आकर सुखसे रहने लगे।

किसी नगरमें एक ब्राह्मण रहता था। वह बहुत निर्धन था। खाने के भी लाले थे। उसके एक कन्या थी। कन्याकी लक्ष्मीजीसे दोस्ती थी। वह लक्ष्मीजीके घर रोज ही आया-जाया करती थी। लक्ष्मीजी भी उससे बहुत प्यार करती थीं। उसे खूब खिलाती-पिलाती थीं। कन्याको यह सब अच्छा न लगता। वह सोचती कि मैं तो रोज ही लक्ष्मीजीके यहाँ जाती हूँ और खा पी आती हूँ पर मैं कभी उन्हें अपने घर नहीं बुलाती और कुछ भी नहीं खिलाती। आखिर बुलाऊँ भी तो कैसे? घरमें कुछ है ही नहीं। सदा वह इसी सोचमें रहती।

एक दिन लक्ष्मीजीने उसका संकोच ताड़ लिया। पूछा, 'सखी तुम उदास क्यों रहती हो? क्या सोचा करती हो?' कन्याने दास-मदूल की ओर कहा 'कुछ भी तो नहीं सोचती न उदास ही रहती हूँ।" लक्ष्मी जीने बहुत हठ किया तब उसने बताया कि मैं तो इतनी बार तुम्हारे यहाँ आ गयी हूँ पर तुम्हें एक बार भी अपने घर न न्योत सकी। हमारे घरमें कुछ है ही नहीं। आखिर न्योता भी तो क्या खिलाऊँगी?" लक्ष्मी बोलीं मेरी प्यारी सखी तुम सोच मत करो। आज जब घर जाना तो राहमें जो सबसे पहले चीज दिखाई पड़े उसे उठा लेना और घर लेते आना।' कन्याको संयोग्य उसे रास्तेमें जो सबसे पहली चीज मिली वह था एक मरा हुआ साँप। लक्ष्मीके कथनानुसार उसने उसी को उठा लिया। और घर लाकर छप्परके ऊपर डाल दिया।

उस देशकी रानी नदीमें स्नान कर रही थी। उसने अपना नौलखा हार किनारे रख दिया था। एक चील उसकी चमकको देखकर उसकी ओर लपकी और एक ही झपट्टेमें पंजेमें उठा ले गयी। उड़ते उड़ते जब वह ब्राह्मणके घरके ऊपरसे गुजरी तो साँपको देखा। साँपके लालचमें वह नीचे उतरी और छप्परपर-से साँपको उठा ले गयी और नौलखा हारको छोड़ गयी। इधर रानी जब नहाकर बाहर आयीं तो हार न

पाकर बहुत विकल हुए। महलमें आकर राजासे कहा। राजाने सारे नगरमें डुग्गी पिटवा दी, कि जिसे हार मिला हो वह दे जाय उसे पाँच सौ रुपये इनाममें दिये जायेंगे।

नौलखाहारके हीरोंकी ज्योतिसे ब्राह्मणका घर जगर मगर कर रहा था। कन्याने डुग्गी सुनी थी। उसने ऊपर हार देखा सो उठा लायी। पिताको देकर बोली कि 'यही राजाका नौलखाहार है। इसे राजाको वापस कर आओ। और इनाम ले आओ। ब्राह्मण बोला मैं निर्धन हूँ। हार ले जाऊँ और कोई मुझपर चोरीका अपराध लगा दे तो? इसलिए बेटी तू ही ले जा और दे आ। तू कुमारी है। तुझ-पर कोई शक नहीं करेगा। कन्या हार लेकर राजमहलमें पहुँची और हार रानीको दे दिया। रानीने सब हाल पूछा कि हार कैसे मिला। कन्याने सब कुछ बताया। रानीने पूछा? तुम कुमारी हो कि ब्याही? कन्याने कहा 'कुमारी।' "तब तुम यह हार ले जाओ, रानीने कहा और पाँच सौ रुपये इनामके साथ तमाम चीजें देकर कन्याको विदा किया।

अब उस ब्राह्मणके घरमें भी बहुत कुछ हो गया। उसने लक्ष्मीजी को बुलानेकी सोची। चाँदीकी चौकी बनवायी सोनेके थाल कटोरे वगैरह। तरह तरहके व्यंजन बनाये और लक्ष्मीजीको न्योता। लक्ष्मी जी आयीं और खा-पीकर बड़ी खुश हुई। थोड़ी देर बाद बोलीं, "अब बहन जाऊँगी घर। कन्या बोली 'कहाँ? अब तो तुम्हें रहना होगा। मेरा निमन्त्रण जो स्वीकार किया है।' लक्ष्मीजीने हँसकर कहा अच्छा तुम तक रहूँगी।' कन्या बोली 'नहीं मेरी सात पुश्तों तक रहो तो बड़ी कृपा होगी। लक्ष्मीजी बोली "अच्छा। यही सही। मैं तुम्हारी प्रीतिसे हारी हूँ और भक्तिसे प्रसन्न हूँ। तुम्हारी सात पुश्तों तक तुम्हारे घरमें मेरा वास रहेगा।

लक्ष्मीजीकी कृपासे ब्राह्मणके दिन फिरे और वे लोग सुखपूर्वक रहने लगे। ■

करवा चौथ

पुराणोंमें इसे करक चतुर्थी कहा गया है। वामन पुराणमें इस व्रत का माहात्म्य कथाके साथ सविस्तार बतलाया गया है। करकका अर्थ करवा होता है जिसका इस व्रतमें विशेष महत्त्व होता है। इस व्रतके करनेका अधिकार सौभाग्यवती स्त्रियोंको ही है। इसमें करवा व्रती स्त्रीके मायकेसे आता है जिसे भाई लाता है। इस व्रतमें विशेष रूपसे गौरीकी पूजा की जाती है और चन्द्रोदयके बाद चन्द्रमाको अर्घ्य देकर व्रतका पारण किया जाता है। कार्तिककी शुक्ल पक्षकी चतुर्थीको यह व्रत किया जाता है। यह व्रत सौभाग्य और शुभ सन्तान देनेवाला है।

वामनपुराणमें इस व्रतकी विशेषता और कथा निम्न प्रकार दी गयी है मां माता कहने लगे— जब अर्जुन इन्द्रकील पर्वतपर चले गये उस समय द्रौपदीका चित्त व्याकुल हो गया और चिन्ता करने लगीं और श्रीकृष्णसे पूछा, हे प्रभो, कोई ऐसा व्रत बतलायें जिसके करनेसे सब विघ्न दूर हो जाये। श्रीकृष्ण बोले— हे महाभागे ! जैसा आपने मुझसे पूछा उसी प्रकार पार्वतीजीने महादेवजीसे पूछा था और महादेव जीने बतलाया था कि महाविघ्ननाशक व्रत करक चतुर्थीका है उसे सुनो। इन्द्रप्रस्थमें वेदशर्मा नामक एक ब्राह्मण निवास करता था। उसकी स्त्रीका नाम लीलावती था। उनके सात लड़के और एक सुलक्षणा वीरावती नामकी कन्या थी। अवस्था पानेपर उस ब्राह्मणने तेजस्वी कन्याका विवाह कर दिया। वीरावतीने अपनी भाभियोंके साथ मिल कर गौरीव्रत किया। बरगदके वृक्षको लिखकर उसके मूलमें महेश्वर,

गणेश कार्तिकेयके साथ गौरी मिलकर गन्ध पुष्प, अक्षतसे पूजा की और इस गौरी मन्त्रको नम शिवायै शर्वाण्यै सौभाग्यं सन्तति शुभाम्। प्रयच्छ भक्तियुक्तानां नारीणां हरवल्लभे ।। इत्यादिसे अपने मनोरथको कहा। परन्तु वह बालिका तो भी ही चन्द्रोदयकी प्रतीक्षामें विह्वल हो गयी। उसके भाई उसकी इस अकुलाहटको न देख सके और पेड़की ओटसे जलती मशालको दिखाकर चन्द्रमाका आभास दिया। वीरावतीने अर्घ्य देकर व्रतका पारण कर लिया। इसी दोषसे उसका पति मर गया। इस दुःखसे निस्तार पानेके लिए उस वीरावतीने साल-भर निराहार व्रत किया। उसकी भाभियोंने संवत्सरके बीत जानेपर व्रत किया, उस समय कन्याओंसे घिरी हुई शचीदेवी स्वर्गलोकसे वीरावतीके भाग्यसे चली आयीं। शचीदेवीने वीरावतीसे पूछा। वीरावतीने सब कुछ सच सताया और अपने पतिको जीवित करानेकी प्रार्थना की। इन्द्राणी बोली हे वीरावती! तुमने अपने पिताके घरपर करक चतुर्थीका व्रत किया था पर वास्तविक चन्द्रोदयके पूर्व अर्घ्य देकर भोजन कर लिया था। इस प्रकार अज्ञानसे व्रत भंग करनेपर तुम्हारा पति मर गया है इस लिए अपने पतिके पुनर्जीवनके लिए विधिपूर्वक उसी करक चतुर्थीका व्रत करो तो उसी व्रतके पुण्य प्रतापसे तुम्हारे पतिको जीवित करूँगी। श्रीकृष्ण बोले हे द्रौपदी! इन्द्राणीके वचन सुनकर उस वीरावतीने विधिपूर्वक करक चतुर्थीका व्रत किया। उसके व्रतके पूरा हो जानेपर इन्द्राणी भी अपनी प्रतिज्ञाके अनुसार प्रसन्नता प्रकट करती हुई एक चुल्लू जल लेकर वीरावतीके पतिकी मरण भूमिपर छिड़ककर उसके पतिको जीवित कर दिया। करक चतुर्थीके प्रतापसे और इन्द्राणी देवी की कृपासे वीरावतीको अपना पति मिला और घर धन-धान्यसे पूर्ण हो गया और सुन्दर सन्तान प्राप्त हुई। इस व्रतको सुनकर द्रौपदीने बड़ी भक्तिसे विधिवत् व्रत किया। उसके व्रतके प्रतापसे पाण्डवोंने कौरवोंको हराकर राज्य पाया और अतुल धन-सम्पत्ति पायी।

इस सन्दर्भमें दी गयी पहली कथा बिलकुल इसी प्रकारसे कही जाती है केवल नामोंका उल्लेख नहीं होता। इस व्रतमें चन्द्र दर्शनके पूर्व पानी भोजन कुछ भी नहीं ग्रहण किया जाता। दूसरी कथामें भाई के करवा लानेके महत्त्वको स्थापित किया गया है। छोटी बहूके घरमें गरीबी है और उसके भाई नहीं है। इसी दुःखको समझकर नाग देवता उसे अपने घर लिवा जाते हैं जहाँ वह भूलसे कुछ साँपोंको घायल कर देती है परन्तु अपने प्यारके कारण उन्हीं साँपोंका मन जीत लेती है और बच्चा भैया (साँप) प्रति वर्ष करवा लेकर आता है। चौथी कथा में भी भाई अपनी पत्नीसे छिपाकर अपनी बहनके लिए करवा लेकर जाता है जिसके साथ बहुत-सा माल-असबाब ले जाता है। यह जानकर उसकी पत्नी पीट-पीटकर अपने बेटेसे कहती 'फूफूके कस गये और पीटते-पीटते उसे मार डाला और उसके मर जानेपर उसने अपना सिर पटक-पटककर जान दे दी। मरकर वह पेंडुकी (फाख्ता) हुई परन्तु चिड़िया होनेपर भी वह 'फूफूके कस गये' कहती रहती है। तीसरी कथामें विनोदपूर्ण स्थिति प्रस्तुत की गयी है जिसमें एक स्त्री व्रत करने का ढोंग करती है और अन्तमें उसका पति उसकी अच्छी मरम्मत करता है।

आज भी जब मँहुगा-टुट्टा नथनी वगैरहका रिवाज उठ-सा गया है पूजाके समय स्त्रियाँ अपना पुराना पहरावा निकालती हैं और नाकों में बड़े बड़े नथ लटकाकर पूजा करती हैं तो बड़ा ही नयनाभिराम दृश्य उपस्थित हो जाता है। करवा चौथकी अल्पना दो बार रात्र पहलेसे बनाती हैं और उसकी पूजा करती हैं। पूजा करनेके बाद चन्द्रमाका अर्घ्य देती हैं और तब भोजन करती हैं। एक करवामें पुआ पिट्ठोका नैवेद्य रखा जाता है। दूसरेमें पानी रहता है जिससे अर्घ्य दिया जाता है। करवा चौथके बाद दीवाली आती है। 'करवा करवारी अहिके बारा दिन बाद दिवारी।' दीवालीको बहुत सुबह बालकोंको जगाकर

इसी करवाके पानीसे नहलाया जाता है। और [1]आटी बाटा उतारी जाती है। यह स्त्रियोंका व्रत है जो पुत्र और पतिकी मंगलकामनासे प्रत्येक सुहागिन द्वारा किया जाता है।

करवा चौथकी अल्पनामें करवाका ही चित्र अंकित किया जाता है। उस चित्रमें गणेश हनुमान, शंकर पार्वती, कार्तिकेय इत्यादि अनेक देवी-देवताओंके चित्र अंकित किये जाते हैं। इस चित्रकी रचनामें गहरे लाल हरे नील-पीले रंगोंका उपयोग किया जाता है। प्रायः दीवालमें ही इस चित्रको अंकित किया जाता है परन्तु अब शहरोंमें दीवालोंको बचानेके लिए कागजमें बनाकर उसकी पूजा कर ली जाती है।

१

सात भाइयोंकी बहन-बड़ी दुलारी, बड़ी पियारी। अकेली बहन सातों भाइयोंकी आँखकी पुतली थी। करवा चौथका दिन आया। सातों भाइयोंकी पत्नियोंने व्रत रखा। बहनने भी व्रत किया। शाम होते-होते भाइयोंने देखा कि बहनका मुँह मुरझा गया है, ओठ सूख गये हैं। भाइयोंने अपनी बहनके सन्तोषके लिए कहा कि चन्द्रमा निकल आया है। अब सब लोग पूजा करके पानी पिया। स्त्रियोंने कहा कि जबतक चन्द्रदेवके दर्शन नहीं हो जाते हम पानी नहीं पी सकतीं। तुम चाहो तो अपनी बहनको पानी पिला दो।

इसपर सब भाइयोंने सलाह की। उन्होंने मिलकर एक योजना बनायी और उसीके अनुसार एक भाई जलता हुआ दिया और चलनी लेकर सामनेकी नीमपर चढ़ गया। दियेको चलनीकी ओटमें कर लिया। चलनीसे छनकर गोलाकार रोशनी नीमकी पत्तियोंपर पड़ने लगी।

---

[1] आटेके दीपक बनाकर बालकोंके सिरपर घुमाकर फेंक दिया जाता है जिसका उद्देश्य बालकोंकी बलाको दूर करना होता है और भविष्यमें नावरोंसे दूर रखनेकी भावना होती है।

फिर पत्तियों और डालियोंसे छनकर रोशनी जमीनपर पड़ने लगी। भाभी भाइयोंने कहा, "वह देखो! चन्द्रमा नीमकी ओटमें है। धीरे धीरे निकल रहा है। लो तुम लोग पानी पियो। औरोंने तो विश्वास नहीं किया पर बहनने विश्वास कर लिया। बहनने जल्दी-जल्दी पूजा की और मुँह उठाकर पानी पी लिया। पानी पीनेसे बहनका पति मर गया क्योंकि वह सचमुच चन्द्रमा न था।

बड़ा रोना धोना मच गया। जब सबको मालूम हुआ कि भाइयोंने झूठा चन्द्रमा दिखाया था तो बहनसे कहा कि अपने पतिके शरीरको सुरक्षित रखो और अगले वर्ष जब करवा चौथ फिर आये तब विधिके साथ व्रत करना। करवा चौथकी कृपासे तुम्हें अपना पति अवश्य मिलेगा। भाइयोंको बड़ा पछतावा हुआ। पर अब क्या हो सकता था।

दूसरे वर्ष हमेशाकी तरह फिर करवा चौथ आयी। इस बार बहनने नियमपूर्वक व्रत किया और जब चन्द्रदेव निकलकर डूबने जा रहे थे तब उसने पूजा की और पानी पिया। व्रतके प्रतापसे बहनको अपना पति फिरसे मिल गया और वह सुखसे रहने लगी।

२

सात देवरानी जिठानी थीं। सबके मायके भरे-पूरे थे। केवल सबसे छोटी देवरानीके मायकेमें कोई न था। इसलिए बेचारीका घरमें बड़ा निरादर होता था। घर भरका सब काम करती थी, सेवा टहल करती पर फिर भी कोई उसका प्यार न करता न उसपर ध्यान देता। उसके मायकेसे कभी एक चिड़ियाका पूत भी नहीं आया। वह बड़ी दुःखी रहती।

करवा चौथका पर्व आया। सबके मायकेसे करवा आये पर छोटीके यहाँसे कौन लाता? उसके पास करवा चौथका करवा भी नहीं। सास भी ऊपरसे बक झक रही थी। बेचारी ऊबकर घरसे निकल पड़ी

३

एक पति-पत्नी थे। पत्नी एक दिन पतिसे बोली 'आज करवाचौथ है मेरे लिए लहँगा ले आओ। बिना लहँगके करवाचौथकी पूजा नहीं होती।' पति अपनी पत्नीके चोंचले जानता था। बोला 'अभी जल्दी क्या है? अभी तो सुबह ही हुई है। पूजा तो तुम रातमें चन्द्रमाको देखकर करोगी। तबतक ला दूँगा।'

वैसे तो और दिनों वह कामपर बाहर भी जाता था पर उस दिन गया तो कामके बहाने बाहर, पर छिपकर घरमें ही बैठा रहा। उसने सोचा कि देखूँ मेरी पत्नी कैसे व्रत रखती है। वह चुपचाप छिपकर सब देखता रहा।

स्त्रीने पहले चने तले और तरकर खा लिये। खिचड़ी पकायी, मछली पकायी और दहीके साथ पहले खुद खायी फिर बच्चोंको खिलायी। ऊखें आयीं। उनमें से चार ऊँखें चूस डालीं। पूजाके लिए पिन्नी बनायीं और चार पिन्नियाँ खा डालीं। पूजाके लिए पुआ और पूरियाँ बनायीं उनमें-से चार पुए खा डाले। ओखलीमें पानी भरा और गायकी तरह पेट भर पानी पिया। इसी तरह दिन भर उसका करवा चौथके व्रतमें मुँह चलता रहा। पति यह सब चुपचाप बैठे देखता रहा। शामको रोजके वक्त वह चुपचाप निकला और अपनी पत्नीके पास आया। स्त्रीने देखते ही टोका, 'लहँगा नहीं लाये?' पतिने कहा 'अरे भाई मैंने बहुत ढूँढ़ा पर अच्छा तुम्हारे लायक लहँगा नहीं मिला। खैर कोई बात नहीं अगली करवाचौथपर जरूर ला दूँगा।' स्त्री बड़ी भन्नायी बड़ी बकी झकी—'मैं तो आज दिन भरकी उपासी इस समय लहँगा पहनकर पूजा करती सो अब आये हैं वह भी हाथ हिलाते चल आये। मैं तो तुम्हारे लिए जरूँ मरूँ तुम्हें कोई परवाह ही नहीं। सालभरका पव एक मामूली-सा लहँगा भी न लाते बना। जाओ। पण्डितको बुला लाओ पूजा करूँ—दिन भरकी भूखी-प्यासी बैठी हूँ।'

पति बोला "पण्डित-वण्डितका क्या होगा ? पूजा तो मुझे भी आती है। चलो मैं ही करा दूँ।' स्त्री बोली 'नहीं नहीं ! तुमसे नहीं होगा। पति बोला 'अरे देखती जाओ। मैं बड़ी बढ़िया पूजा करवाऊँगा। पूजाका सामान एकत्र किया गया। पति पूजा कराने बैठा। मन्त्र बोला,

'परई भर मूँजा, लेओ गौर देई पूजा।'

यह मन्त्र सुनकर स्त्री चौंकी और बोली, 'हैं ! यह कैसी पूजा है ? ठीक-ठीक कराओ।' पति बोला

परई भरि खिचड़ी, ऊपर धरी मछरी
लेओ गौर देई पूजा।

स्त्री तमक कर बोली मैं जानती थी कि तुम्हें पूजा नहीं आती। अभी भी जाओ पण्डितको बुला लाओ।' पति बोला नहीं नहीं। जरा देखती जाओ मैं कितनी अच्छी पूजा करवाता हूँ।' उसने फिर शुरू की

'चार ऊख परवाना सोहारी ऐसे फाना।
लेओ गौर देई पूजा।

इतना सुनना था कि स्त्री झमककर खड़ी हो गयी और बड़े तैशमें बोली मैं दिन भरकी भूखी-प्यासी और तुम्हें खिलवाड़ सूझ रहा है। मैं नहीं करवाती तुमसे पूजा। जाओ फ़ौरन पण्डितको बुला लाओ।" पति अभीतक किसी तरह यह सब कुछ बरदाश्त करता रहा पर अब और न सह सका। उठकर खड़ा हो गया— 'अच्छा लाता हूँ पण्डित तभी पूजा करना। वह बरोठे तक गया और वहाँसे अपना डण्डा लेकर लौटा और बोला 'दिन भर छीलती रही और अब मुझे ही तिरिया चरित्तर दिखाने चली है ? डौंगिन कहींकी। यह कहकर उसने मारे डण्डोंके उसकी देह फोड़ दी। स्त्री रो-धो कर रह गयी।

एक थे राजा। एक थी रानी। उनके एक लड़का था। एक दिन रानीकी ननद आयी। लड़केने माँसे कहा, 'अम्मा बुआ आयीं बुआ आयीं।' रानीने जो सुना कि ननद आयी है दौड़कर उसने चूल्हेमें लात मारी। और फिरसे चूल्हा ठीक किया। नयी मिट्टी लगायी और पोता लगाया। और कहने लगी— 'आज हमारी ननद आयी—आते हम चूल्हे माटी लगायी। चूल्हा आज भुराई काल्ह भुराई परसोंका ननदी घरे जाई। ननदने जब बाहरसे यह सुना तो सन रह गयी। तीन दिनका उपास करके अपने भाईके घर करवाचौथ करने आयी थी और यहाँ भौजाईने चूल्हेमें अभी मिट्टी लगायी है। तीन दिन यहाँ भी खानेको नहीं मिलेगा। छह उपासोंमें मैं मर जाऊँगी। उसने सोचा अब लौट चलना ही ठीक होगा। यह सोचकर वह अपने बच्चोंको लेकर बाहरसे ही लौट पड़ी। तीन दिनकी भूखी-प्यासी एक खेतके पास पहुँची। वहाँ सिंचाईके लिए 'पुराही' चल रही थी। उन्होंने वहीं खेतसे चनेका साग तोड़ा। उसने पेट भरकर चनेका साग खाया और पानी पिया। पानी पीकर डकारी और बोली, सगवा पतवा भरिगा पेटवा, बाढ़ै मोर भैया का खेतवा।' भाई पुराही चला रहा था। जब उसने यह सुना तो चौंका कि यह किसकी बहन है जो आशीष दे रही है। भैयाने पूछा, "कौन हो तुम? मोसिन हो क्या?" वह बोली 'हाँ।' भैयाने कहा, "तो क्या घर नहीं गयी?" ननदने कहा, "गयी थी पर भौजाईने आज ही चूल्हेमें मिट्टी लगायी है। वह कह रही थी— 'आज मोरी ननदी आयी—आते चूल्हे माटी लगायी। चूल्ह आज भुराई काल्हि भुराई परसों ननदी घरे जाई।' यह सुनकर मैं चुपचाप लौट आयी। किसीको क्यों दुःख दूँ।' भाईने कहा 'अच्छी बात है। तुम अपने घर चलो मैं करवा लेकर आऊँगा। तुम जरा भी चिन्ता मत करो। मोसिन थी घरकी गरीब। उसने सोचा था कि

अपने भाईके यहाँ ही करवा चौथ करेगी। उसका भाई था काफ़ी धनी पर भौजाई उसको नहीं चाहती थी। वह अपने बच्चोंको लेकर घर गयी।

इधर भाई सिपाई करके घर पहुँचा। बलोंको बिना बाँधे बाहर छोड़ा, माची फेंकी मरोठेमें और आँगनमें आकर खटियापर लेट गया। रानी दौड़ी-दौड़ी आयी और पूछा 'क्यों इस तरह आकर लेटे हो? क्या तकलीफ़ है।' राजाने कहा 'कुछ मत पूछो। बड़ी भयानक बात हो गयी है।' रानीने पूछा 'आख़िर क्या हो गया है?' राजाने कहा 'मेरे मुँहसे नहीं निकलता। भारी दुख न होता तो मैं इस प्रकार लेटता?' इसी प्रकार थोड़ी देर हीला हवाला करते हुए उसने बताया 'तुम्हारे मायकेमें आग लग गयी है। सब कुछ जल-भुनकर भस्म हो गया है। कुछ आदमी भी जल गये हैं। आगसे कुछ भी नहीं बचा।' रानीने सिर पीट लिया। बैठकर रोने लगी। राजाने कहा 'रोने धोनेसे क्या होगा? अरे कुछ मदद करो। कुछ दे दो तो जाऊँ दे आऊँ।' अब क्या था रानी तैयारीमें जुट गयी। रातों रात भूटन पीसने लगी। दही जमाया उसमें रुपये भर दिये। उनकी गठरी बनायी उसमें भी रुपये भर दिये। इस प्रकार कपड़ा-लत्ता रस्सी इत्यादि छोटीसे छोटी और बड़ीसे बड़ी चीज भर दी। राजाने सारा सामान गाड़ीमें लादा और गाड़ी हाँकी। रानी खड़े-खड़े देख रही थी। जब उसने देखा कि गाड़ी जिस ओर उसका मायका था उसकी उलटी ओर जाने लगी तो बोली 'मोर मायक ऐसी लड़वा वैसी का जाय।' राजाने समझाया कि 'इस तरफ़से रास्ता अच्छा नहीं है फिर क्या एक ही रास्ता है?' पर रानीको भरोसा न हुआ वह भीतरसे अपने लड़केको लेकर आयी और उसको गाड़ीमें बिठाते हुए बोली 'बच्चा जाओ मामीको देख आओ मामीको देख आओ मामाको देख आओ।' राजा गाड़ी लेकर चल दिया। चलते-चलते करवा चौथके दिन अपनी

बहनके घर पहुँचा। दरवाजेपर लड़कोंने देखा कि मामा आये हैं। दौड़े-दौड़े गये और अम्मासे बोले अम्मा मामा आये हैं, अम्मा मामा आये हैं।' उन्होंने सब सामान उतरवाकर बहनके घरमें भरवा दिया। और सामान भरवाकर घर चलने लगे तो बहन बोली "भैया ठहर जाओ कलवा करते जाओ। भाईने कहा, "नहीं! मैं अब घरमें ही कलवा करूंगा तुम्हारी भौजाई राह देखती होंगी।' राजा घर लौटे। तो रानीने पूछा 'दे आये।" राजाने कहा हाँ। रानीने पूछा, "क्या-क्या बचा?' राजाने बताया 'आदमियोंके सिवा सब कुछ जल गया। फिर लड़केसे पूछा, बच्चा मामीको देखा?' लड़कने कहा "वहाँ मामी कहाँ!' उसने फिर पूछा बच्चा मामीको देखा?" लड़केने कहा वहाँ मामी कहाँ? वहाँ तो बुआ थीं। जब रानीने यह सुना तो समझ गयीं कि उसके पतिने धोखा किया। उसने पतिसे पूछा लड़का तो कहता है कि बप्पा तो बुआके घर गये थे मामीके घर गये ही नहीं। तो राजाने कहा लड़का तो है उल्लू उसे क्या पता?' रानीने फिर लौटकर अपने लड़केसे पूछा, 'बच्चा दहीकी हाँड़ी मामीका ही दी थी न? सबरी गठरी मामीको ही दी थी न? लड़केने कहा अम्मा वहाँ मामी मामी कहाँ! वहाँ तो बुआ थीं फूफा थे और थे उनके लड़के। वहींपर बप्पाने सब सामान दिया है। अब रानीको सब्र न रहा। गुस्सेसे भरी हुई राजाके पास फिर पहुँची और बोली, तो तुम सब सामान अपनी मौसिया बहनको दे आये और हमसे कहा कि हमारे मायकेमें आग लग गयी है। राजाको भी आ गया गुस्सा, उसने कहा हाँ दे तो आया बहनको। मेरा है दे आया। यह घर आयी तुमने पानीको भी न पूछा तो क्या करता? अब रानीके पश्चात्तापका ठिकाना न रहा। उसने भीतर आकर अपने लड़केको खूब मारा। लड़केको मारती जाती और कहती, 'माइ मायके साव मरि गये और फूफूके कस भये।' लड़का मर गया। लड़केके मर जाने

पर उसने भी अपना सिर पटक-पटककर प्राण दे दिये। मर जानेपर वह चिड़िया हो गयी। और चिड़िया होनेपर भी वह कहती रहती 'फूफूके कस गये, फूफूके कस गये। (फाख्ताकी बोलीसे यही ध्वनि निकलती प्रतीत होती है। इन सभी कथाओंके बाद निम्नांकित पंक्तियाँ दोहरायी जाती हैं)

'उठो उठो कुलवन्तिन नारि,
बारे चन्दा अघ देओ
मन मानिक दियना बारि,
साईं जियें हजार बरिस
बीरन जियें कोटि बरिस
अरघ चन्द्रमा का
सोहाग (देनेवाले का नाम) का।

■

अवही आठें (अशोक अष्टमी)

कुछ आर्यसमाजी प्रभावके कारण इस त्योहारको कुछ लोगोंने मुसलमानी त्योहार कहकर उठा दिया। ऐसा समझनेका कारण इस पर्वपर कही जानेवाली कथा है जो यहाँपर पहले स्थानपर प्रस्तुत की गयी है। मुसलमान पड़ोसियोंके यहाँ किसी पूजाकी तैयारी देखकर पुत्र न होनेवाली स्त्री पूछती है कि आज कौन-सी पूजा होने जा रही है। मुसलमान स्त्रियाँ उसे बतलाती हैं कि आज अवही आठें है। आज आठ घड़ी बाद जब चन्द्रमा निकलता है तो उसको अर्घ्य देकर फरा चढ़ाया जाता है। इस फरामें खानेसे बाँझ स्त्रीके भी लड़का होता है। यह सुनकर वह रातमें चुराकर पका हुआ फरा खाती है। नौ महीने बाद उसके लड़का होता है परन्तु उसके मुँहमें फरा लगा रहता है जिसे देखकर सभी लोग आश्चर्यचकित होते हैं। कारण पूछनेपर पुत्र प्राप्तिके प्रसन्नतामें वह सभी कुछ सही-सही बता देती है। तब अगले साल इस पूजाका करनेकी प्रतिज्ञा करती है। अगले साल अवही आठेंके आनेपर सभी मुसलमान पड़ोसिनोंसे विधि पूछकर व्रत किया और पूजा की। तबसे पुत्रकी इच्छावाली और पुत्रवती स्त्रियाँ अवही आठेंका व्रत रखने लगी और चन्द्रमाकी पूजा करने लगीं। यह कथा काफी भ्रममें डाल देनेवाली है। इसलिए कोई आश्चर्य नहीं यदि कुछ लोग इसे मुसलमानोंका त्योहार मानने लगे।

परन्तु ध्यानसे विचार करनेपर समस्याका हल मिल जायगा। इस्लाममें चन्द्रमाका महत्व तो अवश्य है परन्तु केवल द्वितीयाके चाँदका और चौदहवींके चाँदका परन्तु चाँदकी पूजाका कोई विधान नहीं है।

हिन्दुधर्ममें यह व्रत और पूजा काफी पहलेसे अशोक-अष्टमीके नामसे प्रचलित है जिसका पुराणोंमें उल्लेख है। उत्तरप्रदेशके पश्चिमी क्षेत्रमें यह बहुत प्रचलित त्योहार है। उस क्षेत्रके हिन्दुओंसे बने हुए मुसलमान प्रारम्भमें हिन्दुओंके रीति रिवाजोंको मुसलमान होनेपर भी मानते रहे होंगे। और वे ही मुसलमान जब पूर्वी क्षेत्रमें आये होंगे जहाँ यह पर्व प्रचलित न रहा होगा वहाँके हिन्दुओंने इनके प्रभावसे अपने ही एक त्योहारका वापस पाया होगा। यह तो मेरी कल्पना है। हो सकता है कि ऐसा केवल उसी स्थानमें हुआ हो जहाँसे इस कहानीको लिया गया है। परन्तु इस सम्बन्धमें दिया गया अवही आठेंका अल्पना चित्र द्रष्टव्य है। मध्यचित्रमें एक पुरुष और एक स्त्री कुरसियोंमें बैठे हुए हुक्का पी रहे हैं। यह हुक्का पीनेकी बात अवश्य मुसलमानी प्रभावको निर्दिशित करती है। राजनीतिक उथल पुथलके समयमें इस प्रकारके सांस्कृतिक आदान प्रदानमें कोई आश्चर्यकी बात नहीं। पर मूलतः यह पर्व हिन्दू है जिसमें कुछ मुसलमानी प्रभाव आ गये हैं। 'सर्वं खल्विदं ब्रह्म' का विश्वासी हिन्दू यदि पीर औलिया, सैयद व्रत्र मज़ारा इत्यादि पूजने लग जाये तो कोई आश्चर्य नहीं।

अवधी क्षेत्रमें इस अवसरपर यही एक कथा कही जाती है जो पश्चिमी क्षेत्रमें पंजाब तक कही नहीं कही जाती। वहाँ स्याहू माता-वाली कथा कही जाती है। परन्तु हमारे यहाँ यह स्याहू माता वाली कथा नहीं कही जाती। इससे यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि हमारे क्षेत्रमें इस त्योहारका प्रचलन किसी मुसलमान परिवारसे हुआ होगा क्योंकि पहली कथा हमारे यहाँ जरूर कही जाती है। हमारे यहाँ स्त्रियाँ भी इसे मुसलमानी त्योहार मानती हैं परन्तु पुत्रकी आकांक्षाकी पूर्तिके लिए इसे स्वीकार कर लिया गया है। इस व्रतमें पुत्रकी मंगल-कामना भी सम्मिलित है। यह व्रत राजस्थान, गुजरात, पंजाब और पश्चिमी उत्तर प्रदेशमें बड़ी भक्तिसे मनाया जाता है। इस दिन सारे

दिनका व्रत किया जाता है। सबई सबही या सहोईका चित्र खींचा जाता है। उसमें आठ कोष्ठककी दो पुतलियाँ बनायी जाती हैं। कहीं-कहींपर दीवालीकी कल्पनाके भीतर ही इन पुतलियोंको शामिल कर लिया जाता है। आठ वर्गाकार कोष्ठकोंसे इस पुतलीकी रचना होती है। इस दिन कच्चा भोजन बनता है और फरा जरूर बनाये जाते हैं। सबई आठोंकी कल्पना जहाँ दीवारपर बनायी जाती है वहीं नीचे कलशकी स्थापना होती है और पूजा की जाती है। कहींपर दोनों कथाएँ कहींपर केवल पहली और कहींपर केवल दूसरी कथा कही जाती है। दूसरी कथा स्याहू मातासे सम्बन्ध रखती है। ननद भौजाई दीवालीके लिए मिट्टी लाने जाती हैं। खोदनेमें स्याहू माताके अण्ड-बच्चे कट जाते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि भौजाईके सातों लड़के एक-एक करके मर जाते हैं। उसके पश्चात्ताप और अगली सबई आठेंके व्रतसे उसको अपने बच्चे फिर मिल जाते हैं। डॉ॰ सत्येन्द्रने अपने ग्रन्थ 'ब्रज लोक-साहित्यका अध्ययन' में स्याहूको सांप माना है और भाषा विज्ञानकी व्युत्पत्ति सम्बन्धी अटकलसे सिद्ध किया है कि स्याहू माता सांप ही होना चाहिए। परन्तु यह उपपत्ति ठीक नहीं प्रतीत होती क्योंकि अवधी क्षेत्रकी सबई आठोंकी कल्पनामें तथा अन्य कल्पनाओंमें जो आकृतियाँ बनायी जाती हैं वे सांपकी आकृतिकी नहीं होती। देवोंकी भाँति स्याहू माताकी पूजा शीतला-अष्टमी इत्यादि पर्वोंपर भी होती है। यदि डॉ॰ सत्येन्द्रकी भाँति भाषा विज्ञानी अटकल लगायी जाय तो स्याहू स्याऊ सेनेवाली—पालन-पोषण करनेवाली अधिक अच्छी व्याख्या प्रतीत होगी। साही एक जानवर भी होता है जिसके शरीरपर बड़े-बड़े और मजबूत कांटे होते हैं जिनसे वह अपनी रक्षा करती है। जबतक चोट सिर या मुंहपर न पड़े तबतक साहीको नहीं मारा जा सकता। वह अपने कांटोंको फुला लेती है जिससे चोट उसके शरीरपर नहीं आती। हो सकता है साहीके इस रक्षा-क्षमताके लिए

स्याहू माताकी पूजा होती हो जिससे हमारे बच्चे सुरक्षित रह सकें। यदि स्याहू साँपिन होती तो अपने अण्डों-बच्चोंकी मौतका बदला लेती जैसा कि नागपंचमीकी कथामें दिखाया गया है।

इसी अवई या अवही या अहोईको होई भी कहते हैं। होईकी एक कथा श्रीमती सीता देवीने अपने ग्रन्थ 'भारतकी लोक-कथाएँ' में दी है जिसको संक्षेपमें इस प्रकार कहा जा सकता है—"विवाहके पाँच साल बाद भी चम्पाके सन्तान न हुई। उसे एक बूढ़ी तपस्विनने होईका निर्जला व्रत रहनेकी और देवीकी पूजा करनेकी सलाह दी। वह नित्य नियमसे ऐसा करने लगी। उसकी पड़ोसिन चमेलीके भी कोई सन्तान न थी। वह भी चम्पाकी देखादेखी पूजा-पाठ करने लगी और होईका व्रत रखने लगी। चम्पामें सच्ची भक्ति थी और वह शालीन थी। चमेली स्वार्थहित भक्ति करती थी और वह वाचाल थी। एक दिन देवी प्रसन्न हुई पूछा 'तुम्हें क्या चाहिए ?

चमेलीने कहा एक पुत्र। परन्तु चम्पाने कहा, 'क्या आपको बताना पड़ेगा ?

देवीने कहा यहाँसे उत्तर दिशाकी ओर एक बहुत बड़ा बाग है। वहाँपर बहुत-से बच्चे रहते हैं। जो भी बच्चा तुम लोगोंको अच्छा लगे ले आना। अगर बच्चा न ला सकीं तो तुम्हें बच्चा नहीं मिलेगा।' दोनोंने उस बागमें जाकर बच्चोंको पकड़नेकी कोशिश की पर बच्चे चिल्ला चिल्लाकर रोने लगे और भागने लगे। उन्हें रोता देखकर चम्पाको तरस आ गया और उसने बच्चा नहीं पकड़ा। चमेलीने लपक कर एक बच्चेको पकड़ा। मुट्ठीमें कसकर उसके बाल पकड़ लिये। दोनों देवीके पास उपस्थित हुए। देवी माँने चम्पाके स्वभावकी प्रशंसा की और लड़केका आशीर्वाद दिया और चमेलीको माँ बननेके अयोग्य मानकर आशीर्वाद नहीं दिया। इस प्रकार चम्पाको देवीके आशीर्वादसे नौ महीने बाद पुत्र प्राप्तिका वर मिलता है और चमेली असफल वापस

लौटती है।

इस कथासे भी पुत्रेच्छाका पता चलता है।

१

एक सास-बहू थीं। बहूके लड़का न होता था। घर तथा पड़ोसमें उसका बड़ा निरादर था। सभी उसको कोसते और बुरा भला कहते। बेचारी बड़ी दुखी रहती। उसका एक-एक दिन युगोंकी तरह बीतता।

उसके पड़ोसमें मुसलमानोंके घर थे। एक दिन बहूने उससे झाँक कर देखा तो पाया कि वे लोग किसी व्रत या पूजाकी तैयारी कर रही हैं। बहूने पूछा 'बहन तुम क्या कर रही हो। आज किसकी पूजा है?' उन्होंने बताया कि आज अबई आठ है। आजके दिन पुत्रवती स्त्रियाँ व्रत करती हैं। आठ घड़ीके बाद जब चन्द्रमा निकलता है तो उसकी पूजा होती है। उस दिन फरा बनाये जाते हैं और चन्द्रमाको अर्घ्य देकर फरा चढ़ाया जाता है। इस फराके खानेसे बाँझ स्त्रीके भी पुत्र हो सकता है।

बहूने सोचा कि अगर फरा खानेसे पुत्र हो सकता है तो मैं चुराकर फरा खाऊँगी। और जो मेरे पुत्र होगा तो मैं भी उनके साथ अबई आठँका व्रत करूँगी। रातमें मुसलमान स्त्रियोंने चाँदके निकलनेपर पूजा की और फरा फेंका तो उसने चुपकेसे उठाकर फरा खा लिया। नौ महीने बाद उसके पुत्र हुआ। पैदा होते समय उस बच्चेके मुँहमें वही फरा था जो उसकी माँने चुराकर खाया था। सबको बड़ा अचरज हुआ। सबने उसकी माँसे पूछा उसने पुत्र होनेकी खुशीमें सब कुछ सच-सच बता दिया। पुत्र प्राप्तिसे सभी प्रसन्न थीं इसलिए सबने निश्चय किया कि अबकी बारसे अबई आठँका व्रत वे भी करेंगी। थोड़े दिनोंमें अबई आठँ आयी तो उन्होंने अपने मुसलमान पड़ोसियोंसे पूछकर विधिके साथ पूजा की और व्रत किया। तबसे पुत्रवती स्त्रियाँ

अचई आर्ठेकी पूजा करने लगीं और व्रत रखने लगीं।

२

ननद भौजाई एक दिन मिट्टी खादने गयीं। ननद मिट्टी खोद रही थी। गलतीसे उसने स्याऊ माताका घर खोद डाला। उनके अण्डे-बच्चे सब फट-फूट गये। इतनेमें स्याऊ माता आ गयीं। जब उन्होंने अपने बच्चोंकी यह दुदशा देखी तो गुस्सेमे लाल-पीली होती हुई ननदसे बोलीं तुमने मेरे बच्चे खाये हैं। मैं तुम्हारे पति और बच्चों-बच्चों—सबको खा जाऊँगी। ननद तो स्याऊ माताके गुस्सेको देखकर सन्न रह गयी पर भौजाई बोली माता ऐसा न करो। ननदको सजा मत दो। एक तो ऐसे ही घरमें मेरी हालत बुरी है और अगर तुमने ननदको सजा दी तो मेरा जीना भी दूभर हो जायेगा। अत मैं तुम्हारे पाँव पड़ती हूँ— ननदको क्षमा कर दो। जो कुछ सजा देनी हो मुझे दो। बड़ी चिरौरी बिनतीके बाद स्याऊ माता भौजाईको सजा देनेपर राजी हुई। उन्होंने कहा "मैं तुम्हारी कोख और माँग दोनों हरूँगी।' भौजाई बिलखकर रो पड़ी— माता जब मेरा इतना कहना माना है तो एक बात और मानो, मेरी माँग न हरो कोख हर लो।" माताने कहा 'अच्छा जब तेरे बच्चा होगा तब मैं लेने आऊँगी।

इस प्रकार समझौता कर ननद भौजाई घर आयीं। होते-करते भौजाईके बच्चा पदा हुआ। स्याऊ माता आयीं और वायदेके अनुसार भौजाईको अपना बच्चा दे देना पड़ा। स्याऊ माता बच्चेको लेकर चल दीं। एकके बाद एक भौजाईके छह-बच्चे हुए और स्याऊ माता छहोंको ले गयीं। एक भी बच्चा उसके पास न रहने पाया। भौजाई इस प्रकार बच्चोंके चले जानपर बड़ी दुखी रहा करती थी पर छुटकारा पानका कोई उपाय न सूझता था। यह सजा तो उसने स्वय माँगी थी। सातवाँ बच्चा जब होनेको हुआ तो पड़ोसिनने एक सलाह दी। उसने बताया

"अबकी बार जब स्याऊ माता आयें तो बच्चेको आँचलमें डालकर स्याऊ माताके पैर छू लेना। उनसे बातें भी करती जाना और बच्चेको चुटकियाँ काटना। जब स्याऊ माता पूछें कि बच्चा क्यों रो रहा है तो कह देना कि तुम्हारे कानोंके सुरकन माँग रहा है। जब सुरकन दे दें और जाने लगें तो फिर पैर छूना और यदि वे पुत्रवतीका आशीर्वाद दें तो बच्चा मत देना। कह देना कि पुत्रके बिना पुत्रवती कैसे!"

सातवाँ पुत्र पैदा हुआ। स्याऊ माता आयीं। अपने नियमके अनुसार भौजाईने बालकको आँचलमें डाल लिया। तब भौजाईने स्याऊ माताको प्रणाम किया और उनके जुएँ बीनने लगी। पर बीच-बीचमें बच्चेको चुटकी भी काट लेती थी जिससे बालक रोने लगता था। स्याऊ माता प्रसन्न तो हुईं पर बच्चेके रोनेपर चिन्तित हो जातीं। उन्होंने पूछा "बच्चा क्यों रोता है?' भौजाईने कहा 'तुम्हारे कानोंके सुरकन माँगता है। माताने सुरकन दे दिये। वह चलनेको तैयार हुईं तो भौजाईने फिर पैर छुए। स्याऊ माताने आशीर्वाद दिया, "सुहाग बढ़े, पुत्रवती हो। चलते समय माताने बच्चेको माँगा। भौजाईने कहा 'बच्चा दे दूँगी तो पुत्रवती कैसे होऊँगी? स्याऊ माता हार मानती हुई बोलीं, "जाओ जैसे मैंने तुम्हें छला वैसे ही तुमने भी मुझे छला। पर और मुझे तुम्हारे पुत्रोंकी जरूरत नहीं है। यह लो अपने छहों पुत्रों को। यह कहते हुए स्याऊ माताने अपनी लट फटकारी और छहों पुत्र धरतीपर आ गिरे। माताने अपने पुत्र पाये। स्याऊ माता भी प्रसन्न मुख अपने घर चली गयीं।

□

इच्छा नवमी

अक्षय नवमी अवधी क्षेत्रमें इच्छा नवमी हो गयी। लोक-मानसके लिए अक्षयकी तुलनामें इच्छा सरल है और इच्छाओंकी पूर्ति करनेवाला व्रत इच्छाके नामसे अधिक साधक प्रतीत हुआ होगा।

यह व्रत कार्तिक शुक्ल नवमीको किया जाता है। आजके दिन द्वापरका प्रारम्भ माना जाता है। आज ही के दिन विष्णु भगवान्ने कूष्माण्ड राक्षसका वध किया था। उसके बालोंसे कूष्माण्डकी बेल हुई। इसीलिए आजके दिन कूष्माण्डके दानका विधान है। आज के दिन तुलसीके विवाहका भी विधान है और पीपल तथा आँवला वृक्षोंके आपसमें विवाहका भी विशेष माहात्म्य है। आँवलावृक्षके नीचे ब्राह्मणोंको भोजन कराये और स्वयं वहीं भोजन करे। आँवलेके वृक्षको कच्चे धागेसे लपेटे।

सनत्कुमार संहितामें अक्षय नवमीके माहात्म्यको प्रतिपादित करने वाली एक कथा प्रसिद्ध है जो इस क्षेत्रमें नहीं कही जाती परन्तु उसके स्थानपर दो अन्य कथाएँ कही जाती हैं। कथा इस प्रकार है

विष्णुकाँचीमें एक कनक नामका क्षत्रिय व्यापारी था। जिसका राज्यमें बड़ा सम्मान था। उसके एक कन्या हुई जो बड़ी होकर सब गुणसम्पन्न हुई और वह बड़ी सुन्दर थी। उसका नाम किशोरी था। एक ज्योतिषीने उसके लिए बताया था कि जिसके साथ इसका विवाह होगा उसकी विवाह-मण्डपमें ही बिजली गिरनेसे अकाल मृत्यु हो जायेगी। ऐसा जानकर उसके पिताने उसको इस दुर्भाग्यसे बचानेके लिए उसका विवाह ही न किया। किशोरीको एक दूसरे घरमें रख

दिया जहाँ वह ब्राह्मणोंकी अतिथि सेवा करती थी। एक दिन शंकर नामका एक श्रेष्ठ ब्राह्मण वहाँ आया जिसका आतिथ्य किशोरीने बड़े मनोयोगसे किया। शंकर ब्राह्मणने किशोरीके पिता जनकको बतलाया कि किशोरी विष्णु भगवानूका तीन वर्ष तक जाप करे और प्रातःकाल स्नान करके तुलसीके बिरवा सींचे। कार्तिक शुक्ल नवमीके दिन विष्णु भगवानूके साथ तुलसीका विवाह कराये। इस व्रतके प्रभावसे वह विधवा नहीं होगी। किशोरी विधिवत् तीन वर्ष तक इसी प्रकार व्रत दिवस करती रही। इसी बीचमें मली विलेपी किशोरीके सौन्दर्यपर मोहित होकर उसे पानेकी कोशिश करने लगा। उसने अनेक यत्न किये पर सफलता न मिली। उसने किशोरीकी मालिनको फाड़ा पर वह भी कुछ न कर सकी। तुलसीके विवाहके लिए किशोरीने फूलमालाएँ मंग वायीं। विलेपीने निश्चय किया कि वह मालिनकी लड़कीका रूप धारण करके किशोरीके पास आयेगा। बिन्दुवालीमें उस समय जयसन राजा था जिसका पुत्र मुकुन्द सूर्यकी भक्तिमें तत्पर था। उसने प्रण कर लिया था कि किशोरीको स्त्री रूपमें पानेपर ही भोजन करूँगा नहीं तो निराहार रहकर प्राण दे दूँगा। मास दिन तक निराहार रहनेपर सूर्य भगवान्ने सपना दिया कि किशोरीके साथ विवाह करते ही तुम्हारी मृत्यु हो जायगी। उसने सूर्य भगवान्से कहा कि आप विश्वकी रचना करते हैं आप उसके विधवापनको नष्ट कर दीजिए। सूर्य भगवान्ने अपने भक्तकी प्रार्थना स्वीकार कर ली। उधर किशोरीको सपना दिया कि तुलसी विवाह और व्रतके माहात्म्यसे तेरा वैधव्य नष्ट हो जायेगा।

विवाहकी धूम-धामसे तैयारियाँ होने लगीं। विवाहकी तिथि आयी और भाँवरें पड़ने लगी। अचानक घोर घटाएँ छा गयीं बिजली चमकने लगी। भाँवरोंके पूरे होते ही भयंकर जोरके साथ बिजली टूट पड़ी। सबकी आँखें बन्द हो गयी। सबने सोचा भविष्यवाणी सत्य हुई। मुकुन्द मारा गया। परन्तु जब देखा गया तो पता लगा कि

मालिनिकन्याके वेशमें विलेपी मरा पड़ा है। मुकुन्द और किशोरी प्रेमसे दाम्पत्य जीवन व्यतीत करने लगे।

'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' के जाप तुलसी विवाह और आँवला का पीपलसे विवाह और कूष्माण्ड दानसे अक्षय पुण्य सञ्चित होता है जिसके प्रतापसे मनोकामनाएं पूरी होती है। हमारे क्षेत्रमें आजके दिन आँवलेका विशेष महत्त्व है। आजके दिन प्राय सभी लोग आँवला वृक्षके नीचे भोजन करते हैं। प्रातःकाल स्त्रियाँ आँवला वृक्षकी पूजा करती हैं और धागा लपेटती हैं। पूजाके उपरान्त वहीं आँवलेके नीचे स्त्रियाँ भोजन बनाती हैं और ब्राह्मणोंको भोजन कराकर परिवारके लोग भोजन करते हैं। एक प्रकारसे पूरी पिकनिक मनायी जाती है। यह व्रत विशेषरूपसे स्त्रियाँ अपने सौभाग्यके लिए करती हैं और आँवलेपर सिन्दूर चढ़ाकर सोहाग लेती हैं। हमारे क्षेत्रमें जिन स्त्रियोंको कूष्माण्ड (कुम्हड़ा) छोड़ना होता है वे ब्राह्मणको कूष्माण्डका दान देकर या नदीमें बहाकर छोड़ देती हैं।

हमारे क्षेत्रमें तुलसीका विवाह अक्षय नवमीको न करके कार्तिक पूर्णमासीको किया जाता है। वैसे तो पूरे कार्तिक महीनेमें तुलसीकी पूजा होती है। उन्हें नियमसे सींचा जाता है। भामको गेहूँके आटेसे तुलसीकी गोड़िया[1] डाली जाती है और दिया जलाया जाता है।

पहली कथामें दानके माहात्म्यको बताया गया है। बूढ़ी माँका दान लड़कों और बहुओंको फिजूलखर्ची मालूम होती है और वे धीरे धीरे दान बन्द करवा देते हैं तो बूढ़ी अपने पतिके साथ जंगलमें चली जाती है। रातमें स्वप्नसे मालूम होता है कि आँवलेकी जड़के पास खोदनेसे खूब सोना चाँदी जो उन्होंने दानमें दिया था मिलता है।

---

१ तुलसीके चौकेके चारहनेके पास सूखे आटसे कुछ पुतले-पुतलियाँ तथा भगवान्‌के चरण बनाये जाते हैं। गोड़िया विष्णुके चरणोंको कहते हैं।

इधर इनके लड़के एकदम निर्धन हो जाते हैं और बुढ़ी माँका जो महल बन रहा है उसमें आकर मजदूरी करते हैं। माँको जब पता चलता है तो अपने सातों बेटे-बहुओंको बुला लेती है। इस कथामें बुढ़ीको आँवले-भर सोना चाँदी इत्यादि दानमें देते हुए बताया गया है। दूसरी कथामें निःसन्तान राजाके आश्वासनके लिए दासी कन्या जन्मकी झूठी खबर प्रचारित करती है और उसके स्थानमें एक बिल्ली पाली जाती है। उसका विवाह भी कर दिया जाता है जो अक्षय नवमीके दिन तुलसीकी कृपासे मानव देह पाती है। इस कथामें आँवलापूजन और तुलसीका उल्लेख हुआ है।

१

एक राजा रानी थे। उनके सात पुत्र थे। रानीका यह नियम था कि जबतक आँवला भर सोना दान न दे लेती थीं तबतक अन्न जल न ग्रहण करती थीं। यह नियम रोजका था। इसमें कभी नागा नहीं हो सकता था। बड़े पुत्रका विवाह हुआ। उसकी स्त्री आयी। उसने अपनी सासका यह नियम देखा। उसने सोचा कि आँवले-भर सोना रोज़ घरसे निकल जाता है। इस तरह तो एक दिन सब सोना चुक जायेगा और उनके लिए कुछ भी न रह जायगा। ऐसा सोचकर उसने एक दिन अपनी साससे कहा "माँ! एक आँवला सोना तो बहुत होता है। अबसे तुम सोनेकी जगह चाँदी दान किया करो।" सास सीधी थी मान गयी।

दूसरे लड़केका विवाह हुआ। उसकी भी स्त्री आयी। उसके विचार भी अपनी जिठानी-जैसे ही थे। उसने भी अपनी साससे कहा कि एक आँवला चाँदी तो बहुत होती है। इसलिए चाँदीके स्थानपर पीतल दिया करो। सासने उसकी भी बात मान ली। और अब पीतल का एक आँवला देने लगी। तीसरीके बाद चौथी, चौथीके बाद पाँचवीं

और इसी प्रकार बहुएँ आती गयीं और उनके सुझावोंके अनुसार रानी-के दानकी क़ीमत भी घटती गयी—पीतलसे काँसा, काँसेसे ताँबा इत्यादि। अब छठी आयी तो उसने धातुका ही दान बन्द कर दिया। उसने कहा, "अम्मा! दान तो दान। तुम आँवले-भर आटा किया करो।" सासने मान लिया। अब वह हर सुबह आँवले-भर आटा दान करती। अब सातवीं बहू आयी तो उसको यह भी न भाया। उसने कहा यह सब फ़िजूलखर्ची है। तुमको क्या अधिकार है कि अपने बेटोंका धन बरबाद करो। भगवान् तो भक्तिसे प्रसन्न होते हैं। इसलिए पूजा पाठ करो। भक्ति करो। इस सब परिवर्तनको तो सास चुपचाप देखती आयी। अब उसकी सहन शक्तिके बाहर बातें होने लगीं। उससे न रहा गया। उसने राजासे कहा कि 'अब पुत्रोंके राज्यमें नहीं निभ सकती। अबतक चक्कीका कारन आँवला-भर दान करती थी अब वह भी बन्द कर दिया गया। अब यहाँसे चलो चलें। रातमें राजा रानी नगर छोड़ कर चले गये।

चलते चलते एक जंगलमें पहुँचे। थके थे ही एक आँवलेके पेड़के नीचे सो गये। रातमें स्वप्न देखा कि आजतक तुमने जितना दान दिया है वह सब इस आँवलेके पेड़को खोदनेसे मिल जायेगा। सुबह हुई। पेड़के नीचे खोदा गया। सोना चाँदी जवाहरात सभी कुछ वहाँ भरा मिला। राजा रानीने वहीं रहनेका विचार किया। महल तैयार होने लगा। जैसी नियत वैसी बरकत। सातों भाइयोंका धन राजपाट सब हर-बहुर गया। दाने दानेको मुहताज हो गये। सातों भाई अपनी स्त्रियोंके साथ मजदूरी करने चले। मजदूरी भी कहीं न मिली।

भाग्यवश उनको भी उसी जंगलमें ले आया जहाँ राजा रानीका महल बन रहा था। सभी लड़के ईंट-गारा ढोनेका काम करने लगे। रानीको एक दासीकी जरूरत हुई—नहलाने-धुलानेके लिए। सो एक भाईकी स्त्री वहाँ बाँदी होकर गयी। उबटन लगाते समय उसने

रानीकी पीठमें मसा देखा। उसको अपनी सासकी याद आ गयी। अपनी सासकी सिधाईकी याद करके उसकी आँखोंसे आँसू रानीकी पीठपर टपक पड़ा। गरम गरम आँसूका रानीकी पीठपर गिरना था कि रानी चौंक उठी। मुँह फेरकर उन्होंने दासीकी ओर देखा। उसकी भरी हुई आँखें देखकर पूछा 'क्यों रोती हो ?" उसने आँसू पोंछ डाले और छिपानेके विचारसे बोली कहाँ ? नहीं तो। रानी बोली "छिपाओ नहीं। सच-सच बताओ क्यों रोती हो ?'

यह बोली, एक हमारे भी सास थी। उसकी पीठपर भी ठीक इसी प्रकारका मसा था। जैसा आपकी पीठपर है। हम लोगोंकी मूर्खताके कारण सास ससुर हम लोगोंको छोड़कर चले गये। उनका पता नहीं और हम लोगोंकी यह दशा है।' रानीने और सब बातें पूछीं तो पक्का हो गया कि ये उन्हींके बेटे और बहुएँ हैं। उसने तुरन्त सारा किस्सा राजासे कहा। सातों बेटे और बहुएँ बुलायी गयीं। सबको शुद्ध किया गया। बेटोंके काम बनवाय गये। वे सब इस प्रकार आनन्दपूर्वक रहने लगे।

२

एक राजा रानी थे। वे निःसन्तान थे। बहुत प्रयत्न किये पर सब बेकार। सन्तान न हुई तो न हुई। राजा दुखी रानी दुखी सारा महल और सारा नगर दुखी। पर भगवान्‌से कोई बस नहीं। एक दासी बड़ी चतुर थी। रानीको खुश करनेके लिए उसने उन्हें एक सलाह दी कि प्रचार कर दो कि तुम्हारे सन्तान हुई है। इससे कम राजाका तो बड़ी खुशी होगी और इस तरह महल और नगरमें छायी हुई उदासी दूर हो जायेगी। रानीने उसके इस झूठे प्रचारके प्रस्तावको स्वीकार नहीं किया। रानीने बहुत मना किया पर दासी न मानी। उसने एक बिल्ली पाली और राजासे कह दिया, "राजाजी आपके

पुत्री हुई है। राजाने कहा, "हुई है तो दिखाओ। दासी बोली "अभी नहीं। पिताके ग्रह उसके लिए खराब हैं छठीमें देखना।" छठी आयी। राजाने कहा, 'दिखाओ। दासी बोली 'अभी नहीं पसनीमें देखना।'

बिल्लीको परदेमें रखा जाता। उसके पाँवोंमें घुंघरू बांध दिये थे। बिल्ली जब चलती तो घुंघरू बजते। पसनी भी आयी। रानीने पूछा, दासी अब क्या होगा ?" दासीने कहा 'रानी तुम चिन्ता मत करो। भगवान् सब पार लगायेंगे।' और जब राजाने पुत्रीको देखनेकी इच्छा प्रकट की तो कह दिया मुण्डनमें देखना। इसी तरह करते-करते दासी विवाह तक खींच लायी। विवाहके दिन राजा बोला, 'अरे अब तो दिखा दो। मेरी बेटी अब ससुराल जा रही है। दासी बोली नहीं राजा तुम्हारी पुत्रीकी ही भलाईके लिए मैं कहती हूँ नहीं तो मेरा क्या है। बेटी आपकी है। आपके देखते ही उसपर बड़ा भारी अमगल टूट पड़ेगा। इसलिए उसे राजी खुशी ससुरालसे लौट आने दो तभी देखना। राजा मन मारकर रह गया। बड़ी धूम धामसे विवाह हुआ। दूल्हाको अकेलेमें बुलाकर रानी दासीने बड़ी चिरौरी विनती की। उसके पैरोंमें सिर रख दिया और सब हाल बताया और कहा 'अब हमारी लाज तुम्हारे हाथ है। राजकुमारने आश्वासन दिया कि इस रहस्यको कोई नहीं जानेगा। बन्द पालकीमें बिल्ली बिठायी गयी और राजकुमार उसे लेकर घर आया।

राजकुमारने उसे परदे ही परदेमें रखा। किसीसे एक क्षणके लिए भी मिलने नहीं दिया। उसको कमरेमें बन्द करके रखता। कोई उस कमरेके पास भी न फटक पाता। सब लोग बड़े चिंतित हुए कि आखिर ऐसा क्या है कि दुलहिनको कोई न देखे। ऐसी कौन-सी इन्द्रकी अप्सरा है कि हमारे देखनेसे नजर लग जायेगी। तरह तरहकी चर्चायें होने लगीं। इच्छा नवमीका दिन आया। सब आँवला पूजने जाने

लगीं। सासने बड़े निराश स्वरसे कहा कि कितना अच्छा होता जो वह भी चलती पर यह तो उसको हवा भी नहीं लगने देता। सदा कमरेमें ही पड़ी रहती है। राजकुमार जब बाहर जाता था तो कमरेको अच्छी तरह बन्द करके ताला लगा देता था। उस दिन गया तो ताला लगाना भूल गया। बिल्ली बाहर निकली। उसने अपनी पूँछसे सारा घर लीपा-पोता और सफ़ाई की। तुलसीके अरहनेके पास नवमीकी दाल फूल रही थी। उसकी छाया उसमें जो पड़ा तो वह बारह वर्षकी कन्या हो गयी। पर निशानीके लिए थोड़ी-सी पूँछ पीठमें लगी रही। कन्या कमरेमें आकर बैठ गयी। राजकुमार आया और बिल्लीकी जगह जब उसने कन्या देखी तो तलवार निकाल ली। कन्या बोली, 'तुम मुझे जरूर मारो पर पहले मेरी पीठ देख लो।' पीठ देखकर राजकुमारको विश्वास हो गया यह कन्या उसकी ब्याहता बिल्ली ही है। तुरन्त उसने अपनी माँ बहिनों तथा भाभियोंको बुलाया और अपनी पत्नी दिखायी। सबने बहूके सौन्दर्यकी बड़ी प्रशंसा की और राजकुमारके भाग्यकी खूब सराहना की। उसने अपनी ससुरालको समाचार भेजा कि बिदा करा ले जाओ। रानीने जब यह समाचार सुना तो जहरका प्याला तैयार किया और बोली, 'अब सब भेद खुल जायेगा। दासी अब मैं जहर पीकर जान देती हूँ। दासी बोली ठहरो! मैं जरा पालकी देख आऊँ तब।' दासीने पालकीका परदा उठाया तो देखा कि भीतर एक अद्वितीय सुन्दरी कन्या बैठी है। रानीको बताया। रानी दौड़ी आयी और उसे देखकर निहाल हो गयी। राजाको बुलाया गया। राजा भी देखकर दंग रह गया। राजा दासीसे बोला इतनी सुन्दर कन्या थी इसीलिए छिपा रखा था। दासी दूसरी ओर मुँह किये मुसकरा रही थी।

■

दीवाली

दीवाली हिन्दुओंके चार प्रमुख त्योहारोंमें-से एक है जो वैश्योंका प्रधान त्योहार माना जाता है। यह लक्ष्मी पूजनका पर्व है। ऐसी मान्यता है कि कार्तिककी अमावस्याकी रातको लक्ष्मीजी विचरण करती हैं और अपने निवास योग्य स्वच्छ और निर्मल स्थान पाकर वहीं पर बस जाती हैं। इसीलिए दीवालीके पूर्व घरोंकी सफ़ाई, रँगाई पुताई पुताई शुरू हो जाती है। लक्ष्मीजीके निवास योग्य बनानेके पूरे प्रयत्न किये जाते हैं। और मार्गदर्शन और स्वच्छता एवं शोभाको उजागर करनेके लिए सारे घरको छोटे-छोटे दीपकोंसे प्रकाशित किया जाता है। लक्ष्मीजी उस घरमें कभी प्रवेश नहीं करतीं जो अँधेरा और अँधेरेकी ही भाँति गन्दा दिखाई देता है। वह केवल बाह्य स्वच्छता ही नहीं देखतीं प्रत्युत परिवारके लोगोंके अन्तःकरणकी पवित्रता एवं शुचिता-पर भी ध्यान देती हैं। लक्ष्मीजीके जरिये यह सन्देश पुराणकारोंने निम्न प्रकार दिया है

'वसामि नित्य सुभगे प्रगल्भे दक्षे नरे कर्मणि वर्तमाने।
अक्रोधने देवपरे कृतज्ञे जितेन्द्रिये नित्यमुदीर्णसत्त्वे॥
स्वधर्मशीलेषु च धर्मवित्सु वृद्धोपसेवानिरते च दान्ते।
कृतात्मनि क्षान्तिपरे समर्थे क्षान्तासु दान्तासु तथाऽबलासु॥
वसामि नारीषु पतिव्रतासु कल्याणशीलासु विभूषितासु।"

अर्थात् मैं शीलवान् सच्चरित्र आत्मश्लाघाहीन कर्तव्यतत्पर लोगों के घरमें वास करती हूँ। जो क्रोधी नहीं होते देवताओंमें भक्ति रखते हैं और जितेन्द्रिय होते हैं जो धर्माचरण एवं कर्तव्यरत होते हैं गुरु-

जनोंको सम्मान करते हैं, जो आत्मविश्वासी एवं क्षमाशील होते हैं उनके यहाँ वास करती हूँ। मैं सौभाग्यवती पतिव्रता, गुणवती स्त्रियोंके घरमें निवास करती हूँ। अकर्मण्य आलसी, कृतघ्न, विश्वासघाती ईर्ष्यालु क्रूर, निदय लोगोंके घरमें मैं वास नहीं करती ऐसा अन्य पंक्तियोंमें कहा गया है। और स्त्रियोंके सम्बन्धमें भी कहा है कि मैं उन स्त्रियोंके घरमें निवास नहीं कर सकती जो अपनी गृहस्थीकी उचित व्यवस्था नहीं रखतीं, निर्लज्ज और कुल्टाओं इत्यादिके घर भी मैं नहीं जाती। अतः सभी इस बातका पूरा ध्यान रखते हैं जिससे उनका घर लक्ष्मीजी के योग्य बन सके और लक्ष्मीजी बिना किसी हिचक या सोच-विचारके आकर सदाके लिए वास कर सकें। दीवालीका त्योहार इसलिए व्यापक रूप धारण कर लेता है क्योंकि धनकी आवश्यकता केवल बनियों को ही नहीं होती बल्कि सभीको होती है।

सनत्कुमार संहितामें बालखिल्य कहते हैं कि प्रातःकाल स्नान करके, देव-पितरोंकी पूजा करके ब्राह्मणोंको भोजन कराके मन, कम, वचनसे अपनको शुद्ध करे। लक्ष्मी तथा अन्य देवताओंका पूजन करे और भक्तिभावसे लक्ष्मीजीके पाँव दाबे। इस दिन विष्णु भगवान् बलिके जेलखानेसे सब देवताओं और लक्ष्मीजीको छुड़ाकर क्षीरसागर लाये। लक्ष्मीजी कमलकी सैयामें सुखसे सोयीं। जो आज लक्ष्मीजीके लिए कमलकी सैया बिछाता है उसके यहाँ लक्ष्मी सदाके लिए निवास करती हैं। महाराष्ट्रमें स्त्रियाँ चौरीठ या गोबरसे राजा बलिकी मूर्ति बनाती हैं, पूजा करती हैं और राजा बलिको फिरसे राज्य दिलानेकी मगल कामना करती है। सनत्कुमार संहितामें भी बलि राज्यमें महोत्सव मनानेकी विस्तृत योजना दी गयी है। आज बलिका राज्य है हे मनुष्यो! हे बालको, खूब खेलो यह राजा बलिने आज्ञा दी है। बलिके राज्यमें जीवहिंसा सुरापान अगम्यागमन, चौर्य एवं विश्वास घातके अतिरिक्त कोई काम वर्जित नहीं है।

प्रश्न उठता है कि यदि राजा बलिने लक्ष्मी तथा अन्य देवताओंको बन्दी बनाया था और विष्णु भगवान्ने वामनरूप धारण करके उन्हें छुड़ाया था तो राजा बलि तो खलनायक हुआ। उसकी श्रीवृद्धिकी मंगलकामना क्यों की जाती है उसके शासनकी माँग क्यों की जाती है और उसके राज्यमें महोत्सव मनानेकी बात क्यों कही जाती है? वास्तवमें बलि प्रह्लादके पौत्र और विरोचनके पुत्र थे और इन्होंने अपनी कठोर तपस्याके बलपर तीनों लोकोंको जीत लिया था। अश्वमेध यज्ञकी योजना करके दान देना शुरू किया तो उसकी कीर्ति इतनी बढ़ी कि इन्द्रको इन्द्रासनका डर होने लगा। इन्द्रने विष्णुसे प्रार्थना की तब विष्णुने वामनरूप धारण करके बलिसे तीन पद भूमिकी याचना की। दान देनेपर विष्णुने अपना विराट रूप धारण कर एक पदसे भूमण्डल और दूसरेसे स्वर्गको नाप लिया। तीसरे पदकी बारी आयी तो बलिने अपना माथा सामने कर दिया। इस प्रकार छलसे विष्णु भगवान्ने राजा बलिको पातालपुरीमें भेज दिया है। भविष्योत्तर पुराणमें वामन जयन्तीके सम्बन्धमें एक कथा दी गयी है। उसमें भी देवतागण प्रार्थना करते हैं कि किसी प्रकार राजा बलिके बन्धनसे छुटकारा दिलाओ तब श्री विष्णु भी कहते हैं 'राजा बलिने तपसे (बलसे नहीं) तीनों लोकोंको जीता है। वह परम तपस्वी शान्त दान्त जितेन्द्रिय दृढ़प्रतिज्ञ महाबली प्रजापालक तथा भूमण्में प्राणोंको धारण किये हुए है। जो तपस्वी होता है उसे तपका फल मिलता है। तप क्षीण होनेके पूर्व तक उसके विरुद्ध कुछ भी करना सम्भव नहीं। जब विष्णु भगवान्की राजा बलिके सम्बन्ध में ये भावनाएँ हैं तो साधारण जनता निश्चित ही उसके प्रति बहुत श्रद्धालु रही होगी। दीवालीके दिन ही राजा बलिको विष्णु भगवान्ने छलसे राज्यच्युत किया था। अत उसी दिन राजा बलिके प्रति न्याय की माँगके रूपमें उसके राज्यकी पुनःस्थापनाकी कामना की जाती है और उसकी पूजा की जाती है।

दूसरी ओर धन-सम्पत्तिकी कामनासे देवी-देवताओंके साथ राजा बलिके बन्दीगृहसे मुक्ति पानेके कारण लक्ष्मीजीकी विशेष पूजा भी होने लगी। समस्त देवी-देवताओं तथा लक्ष्मीजीके शयनका सुन्दर प्रबन्ध करके अपने घरमें इनके निवासकी आकांक्षा की जाती है।

ऐसा भी माना जाता है कि आजके दिन विष्णु भगवान्‌ने नरकासुर राक्षसका वध किया था और तभीसे उसकी खुशी दीवालीके पर्वके रूपमें मनायी जाती है। करवाके पानीसे ब्राह्ममुहूर्तमें सबको स्नान कराया जाता है और माटी बाटी उतारी जाती है। नरकासुरका सम्बन्ध श्री बी० ए० गुप्तेने वर्षा ऋतु और धान एवं ज्वारकी फ़सलके कट जानेपर एकत्र हो जानेवाली गन्दगीसे जोड़ा है। गन्दगीका यह राक्षस जो वर्षा और फ़सल कटनेपर एकत्र हो जाता है और गेहूँकी फ़सलके लिए जो खादकी तैयारी की जाती है वह सब नरकासुरके रूपमें ही है। इस प्रकार गन्दगीके नरकासुरका अन्त करके और फ़सल-के रूपमें आयी धन सम्पत्तिके उपलक्ष्यमें खुशियाँ मनायी जाती हैं और दिये जलाकर 'कोम-अंधेरे' की वायुको शुद्ध किया जाता है। कृषि प्रधान देशमें फ़सलके बाद विशेष रूपसे वैश्योंके घरोंमें लक्ष्मीका आगमन होता है। इस प्रकार न केवल ग्रीष्म और वर्षा ऋतुओंका अन्त होकर सुखदाई शरद हेमन्त, शिशिर और बसन्तका आगमन होता है बल्कि घरमें धन भी आ जाता है। अतः अपने परिश्रमका सुफल अपनी आँखोंसे देखकर खुशियाँ मनाना बिल्कुल स्वाभाविक ही है।

ग्रहों एवं उपग्रहोंकी गतिके आधारपर भी इस पर्वका निर्णय किया गया मालूम होता है। इस समय सूर्य तुला राशिसे गमन कर रहा होता है जिसका अर्थ होता है कि आधा वर्ष समाप्त हो गया है और सूर्य उत्तरायण न होकर मकर राशि तक पहुँचनेके लिए दक्षिणकी ओर जा रहा है। उत्तरी गोलार्धमें सर्दी होने लगती है बर्फ़ पड़ने लगती है, दिन छोटे और रातें लम्बी होने लगती हैं। शरद्‌के बादका मौसम

जितना सुखकर धनियों अर्थात् वनियोंके लिए होता है उतना किसानों के लिए नहीं होता। तुलाका वनियोंसे सीधा सम्बन्ध है। तुलामें धान्य तुलकर ही बनियोंके घरमें धनके रूपमें संचित होता है। इसीलिए दीवालीसे ही वनियोंका हिसाब किताब शुरू होता है। अस्तु, ज्योतिष शास्त्रके आधारपर भी दीवालीका वनियोंका त्योहार माना जा सकता है।

यह भी माना जाता है कि आजके ही दिन राम लंकासे रावणको मारकर लौटे थे। उनके स्वागतके लिए और उनके आगमनसे प्रसन्न होकर दीपक जलाये जाते हैं और अनेक प्रकारकी खुशियाँ मनायी जाती हैं। कोई आश्चर्य नहीं यदि दीवालीमें दीपकोंके जलानेकी परम्परा इसी शुभागमनसे शुरू हुई हो।

एक ऐतिहासिक कारण भी इस पर्वमें सलग्न हो सकता है। उज्जैनके सम्राट विक्रमादित्यका आजके ही दिन राजतिलक हुआ था। उसीसे विक्रमी संवत्का प्रारम्भ हुआ माना जाता है। अत: यह नव वर्षका प्रथम दिन भी है। विशेष रूपसे वैश्य आज ही अपने बही-खाते बदलते हैं। पुराने वर्षका हिसाब पूरा कर देते हैं। नफ़ा-नुकसानका सारा हिसाब लगाकर नये बही-खातोंमें नये वर्षके हिसाबकी शुरूआत करते हैं।

कुछ स्थानोंमें दीवालीकी रातमें आकाशदीप जलाते हैं। ऐसी मान्यता है कि दीवालीकी अमावस्यासे पितरोंकी रात शुरू होती है। अत उनके मार्गदर्शनके लिए ऊँचे ऊँचे बाँसोंमें आकाशदीप जलाय जाते हैं। पथभ्रष्ट न हो जायें इसके लिए सर्वत्र दीपक जलाकर प्रकाश कर दिया जाता है। बंगालमें विशेष रूपसे यह प्रथा प्रचलित है। आजके दिन पितरोंका अन्तिम श्राद्ध करके उनके मार्गदर्शनके लिए प्रकाश किया जाता है। पितरोंकी रात छह महीनेकी होती है इसीलिए प्रकाशका भी आयोजन विस्तृत एवं दीर्घकालीन होता है क्योंकि सम्पूर्ण

कार्तिक मासमें आकाशदीप जलाये जाते हैं। अस्तु।

दीवालीके उद्‌भवका भले ही कोई एक कारण रहा हो परन्तु इस पर्वके विकासमें अनेक परम्पराएँ सम्मिश्रित हो गयी हैं और यह पर्व धार्मिक कम परन्तु सामाजिक अधिक हो गया है।

दीवालीकी प्रस्तुत कथाओंमें-से प्रथम कथा तमिलकी दीपम् लक्ष्मीकरम् की कथासे बहुत मिलती-जुलती है। शुक्रवार व्रत-कथाके साथ तुलनाके लिए यहाँपर तमिल कथाको प्रस्तुत किया गया है। इस कथामें जिस प्रकार भाट राजासे आज्ञा प्राप्त कर लेते हैं कि दीवालीकी रातको केवल उनके और राजाके घरमें ही दीपक जलाये जायेंगे उसी प्रकार तमिल कथाकी नायिका भी करती है, और फिर दोनों कथाओंमें लक्ष्मीके आगमनका वर्णन किया गया है।

दीवालीपर जुआ खेलनेका भी रिवाज है जिसका उद्देश्य केवल भाग्य परीक्षा है कि वर्ष पर्यन्त अन्य कार्योंमें उन्हें सफलता मिलेगी या नहीं। अपफल जाननेके लिए ही राजा प्रातःकाल सभी बालकोंको बुलाकर कहता है कि हमारे गाँवके बालक आज अनेक प्रकारके खेल खेलें। बालक किस प्रकारके खेल खेलते हैं उनके आधारपर वर्षफलकी कल्पना की जाती है। यदि बालक 'लुकुआ' खेलें तो समझना चाहिए कि राज्यमें अकाल पड़ेगा, यदि बालक रोने-पीटनेका खेल खेलें तो समझना चाहिए कि राजापर कोई मुसीबत आनेवाली है। बालक लड़ने वाला खेल खेलें तो समझना चाहिए कि राज्यमें युद्ध होगा। यदि लकड़ीका घोड़ा बनाकर उसपर सवारी करें तो समझना चाहिए कि अपने राज्यकी जीत होगी। यदि बालक लिंगको लेकर हाथमें खेलें तो प्रसिद्ध कुलकी स्त्रियोंके साथ व्यभिचार होगा। इसी प्रकार प्रत्येक व्यक्ति जुआमें उस दिनकी हार-जीतके आधारपर अपने सम्पूर्ण वर्षकी हार-जीतका पूर्वानुमान लगा लेता है। जिन घरोंमें जुआ खेलनेकी सख्त मनाही है वहाँ भी खोरही (सोलह टँगा कौड़ियाँ) को पूजकर

तीन बार फेंका जाता है जिसके आधारपर वर्षफलका अनुमान किया जाता है। इस सम्बन्धमें शंकर-पार्वतीकी द्यूतक्रीड़ाकी कथा कही जाती है। शंकर भगवान् पार्वतीजीसे जुआमें सब कुछ हार गये। शंकर भगवान् अपनी हारसे बड़े दुःखी हुए और गंगा किनारे एकान्तवासके लिए चले गये। जब उनके पुत्र कार्तिकेयको मालूम हुआ तो वह अपनी माँके पास गया और उसने जुआ खेलकर अपने पिताकी सभी चीजें जीत लीं। तब माँ बड़ी दुःखी हुई और गणेशजीने अपनी माँसे धूस-कौड़ा लेली और कार्तिकेयको हरा दिया। तब शंकर भगवान्‌ने गणेश को भेजा कि पार्वतीजीको मनाकर ले आये। रास्तेमें जाते हुए देखकर नारदने विष्णु भगवान्‌को सूचना दी। विष्णु पाँसा बनकर शंकरके पास पहुँचे और उधर रावणने बिल्ली बनकर गणेशकी सवारी, चूहेको डराकर भगा दिया। शंकर भगवान्‌ने पार्वतीजीके पास फिरसे जुआ खेलनेको कहा। पार्वतीजीने कहा कि तुम्हारे पास है ही क्या जो दाँव पर लगाओगे। इसपर नारदने अपनी वीणा दे दी। थोड़ी ही देरमें इस बार शंकर भगवान्‌ने अपनी और कार्तिकेयकी सभी चीजें वापस जीत लीं। गणेशजीने विष्णुकी माया समझ ली और पार्वतीजीको बताया। पार्वती बहुत क्रुद्ध हुईं और शाप दे दिया कि तुम सदा गंगाके तीरे रहोगे। रावणने बहुत समझाना चाहा पर वह न मानीं। नारदको शाप दिया कि अपनी धूर्तताके कारण जीवन पर्यन्त भटकते रहोगे। भगवान् विष्णुको शाप दिया कि यही रावण तुम्हारा सबसे बड़ा शत्रु होगा। रावणको शाप दिया कि यही विष्णु तुम्हारा वध करेंगे। और स्वामी कार्तिकेयको शाप दिया कि तुम कभी जवान नहीं होगे। इन शापोंसे सभी बड़े चिन्तित हुए। नारद मुनिने नाच-गाकर पार्वतीजीका मनोरंजन कर, उन्हें खुश कर लिया और सबको वरदान भी दिलवा दिया। शंकरने माँगा कि आजके दिन जुआमें विजयी होनेवाला वर्ष भर विजयी हो। इसी वरदानको पूरा करनेके लिए आज तक दीवाली-

पर जुआ खेलनेका रिवाज चला आ रहा है। नारदने देवर्षि होनेका, विष्णुने सभी कामोंमें सफल होनेका, कार्तिकेयने विषयवासनासे मुक्तिका गणेशजीने सर्वप्रथम पूजा प्राप्त करनेके वरदान माँगे। पार्वतीजीने सबको वरदान दिया।

द्यूतक्रीड़ा हमारा राष्ट्रीय दुर्गुण है जो बहुत प्राचीनकालसे चला आ रहा है। अब तो इसपर काफ़ी रोक-थाम लगी हुई है और इसको क़ानूनी अपराध माना जाता है। परन्तु आदतोंकी भाँति बुरी रिवाजें भी जल्दी नहीं जातीं।

दीवालीको लक्ष्मी-पूजनके लिए विस्तृत आयोजन किये जाते हैं। सभी देवी-देवताओंसे पूर्ण दीवालीकी अल्पना बनायी जाती है। खील-बताशे तथा अन्य प्रकारकी मिठाइयोंसे पूजा होती है। सोना-चाँदी जगायी जाती है जिससे लक्ष्मीको हमेशा अपने घरमें रखनेका उपक्रम किया जाता है। दीवालीकी पूजामें लक्ष्मीपूजनकी प्रमुखता है और इस पर्वके मनानेमें दीपकों और आतिशबाजीको विशेष महत्त्व प्राप्त है। धनतेरससे ही दीपकोंको जलाकर रखा जाता है और गोवर्धन-पूजाके दिन तक दिये जलाये जाते हैं। दीवाली नाम दीपावलीका ही भ्रष्ट रूप है। आजका दिन तान्त्रिकोंके लिए विशेष महत्त्वका है। अनेक प्रकारके जादू-टोने आजकी रात जगाये जाते हैं और उन्हें सच्चा किया जाता है। दीवाली एक त्योहार या पर्व है। आजके दिन व्रत बहुत ही कम लोग रखते हैं। वस्तुतः आजका पर्व तो खाने-पीने और खुशियाँ मनानेका दिन समझा जाता है।

आज पार्वण श्राद्धका विशेष माहात्म्य है परन्तु बहुत ही कम लोग इसे करते हैं। अवधी क्षेत्रमें पितृपक्षमें श्राद्धका सारा क्रम पूरा हो जाता है। वस्तुतः यह त्योहार तो दीपकोंका त्योहार है। आजकी रात नाबदान, घूर, खेत-खलिहानोंमें भी दिये जलाये जाते हैं।

१

एक राजा था। उसके राज्यमें एक भाट रहता था। भाट सात भाई थे। सभी बड़े गरीब मानो गरीबी टाँग तोड़कर उनके घर बैठ गयी थी। भाट परिवार राजाका बड़ा भक्त था। राजा भी उनको बहुत मानता था। सातों भाइयोंमें सबसे बड़े भाईका विवाह हो गया था। उसकी पत्नी बड़ी चतुर थी। दिवालीके दिन देवरोंसे बोली, "आओ अपनी दरिद्रता भगा दें।' देवरोंने पूछा कैसे! स्त्रीने कहा, 'राजासे जाकर आज्ञा ले लो कि आज दिवालीके दिये केवल राजाके यहाँ जलेंगे और भाटके घर और सारे नगरमें अँधेरा रहेगा।

भाइयोंने राजासे कहा। राजा सुनकर बड़ा चकित हुआ पर अपने कुतूहलको सन्तोष देनेके लिए उसने आज्ञा दे दी। सारे नगरमें राजाज्ञा फिर गयी कि दिये या तो राजाके घर जलेंगे या फिर भाटके यहाँ। और कहीं नहीं। नगरकी जनता इस आज्ञाको सुनकर बड़ी नाराज हुई। पर राजाज्ञाके सामने बोलनेकी किसीमें हिम्मत न थी। रात हुई। जहाँ हर दिवालीमें नगर रोशनीसे जगमगा उठता आज अँधेरेमें सो रहा था। केवल राजाका महल और भाटकी झोपड़ी आलोकित थे। स्त्रीने सातों भाइयोंको समझाया कि जब लक्ष्मीजी आयें तो तुम लोग डरना नहीं। चुपचाप उनका आगमन देखना। रातके बारह बजे लक्ष्मीजी झंकारके साथ नगरमें प्रविष्ट हुईं तो चारों ओर अन्धकार पाया। केवल राजाका महल और भाटकी झोपड़ी आलोकित थी। उन्होंने सोचा राजाके महलमें क्या चलूं वहाँ तो रहती ही हूँ। देखूँ यह झोपड़ी किसकी है। झनक-मनक करती हुई लक्ष्मीजी भाटके घरमें घुसीं। सातों भाई चुपचाप देखते रहे। कोई बोला नहीं। सुबह हुई तो सबने देखा कि झोपड़ीमें कंचन बरस रहा है। सबने कहा कि लक्ष्मी जीने कृपा की। भाट परिवारके दरिद्रताके दिन दूर हुए और वे लोग भी लक्ष्मीजीकी कृपासे सुखपूर्वक रहने लगे।

देवता नहीं खाता उसके लिए अन्नकूट बनाये जा रहे हैं और प्रत्यक्ष देवताकी किसीको फिकर नहीं। गोपियोंने बताया कि वृत्रहन्ता इन्द्रकी पूजा है और बहुत प्राचीनकालसे होती आ रही है। इन्द्रकी कृपासे देशमें अकाल नहीं पड़ता। तब कृष्णने बताया कि देखो यह साक्षात् देवता गोवर्धन हैं हम मथुरावासियोंके यही देवता हैं। गोवर्धन-जैसे देवताको छोड़कर इन्द्रकी पूजा करते हो। हमारी समृद्धि और सौमित्र्य का कारण गोवर्धन ही हैं। एक-दो विरोधी स्वरोंके साथ गोवर्धनपूजा शुरू हो गयी। नारद मुनिने इन्द्रदेवको सूचित किया। ऐसी सूचना पाकर उन्होंने आवर्त संवर्त द्रोण नील पुष्कर इत्यादि बादलोंको आज्ञा दी कि वर्षा और ओलोंसे गोकुलको डुबो दो। मूसलाधार पानी बरसने लगा। गोकुलमें भगदड़ मच गयी। घर-द्वार मीपण वर्षामें बह गए। त्राहि त्राहि मच गयी। लोग कृष्णके पास दौड़े आये। कृष्णने सबको आश्वस्त किया और गोवर्धन पर्वतको छतरीकी तरह अपनी छिगुनियामें उठाकर सबकी रक्षा की। नारदने इन्द्रके कोपकी सूचना ब्रह्माको दी। ब्रह्माजी इसपर चढ़कर इन्द्रके पास गये और इन्द्रको समझाया। इन्द्रने वर्षा रोक ली और कृष्णसे क्षमा माँगी 'मुझसे अपराध हुआ मुझे दण्ड दीजिए। भगवान् कृष्ण बोले हे इन्द्र आपको तात्त्वको जाने बिना इन लोगोंने आपकी पूजा की। इनको जो आपने दण्ड दिया वह ठीक ही किया। पर मैं आपकी आज्ञा माननेवाला आपका छोटा भाई हूँ। मैंने शरण आये कुलोंकी रक्षा की है। यदि आप प्रसन्न हैं तो इस गिरिगोवर्धनको अपना उत्सव दे दें जिससे मैंने गाकुलकी रक्षा की है। इन्द्र, 'एवमस्तु' कहकर चले गये। तबसे गोवर्धनकी पूजा और अधिक उत्साहसे होने लगी।

एक स्थानपर लिखा है कि कृष्णको जब इन्द्र-पूजाकी विधि मालूम हुई तो उन्होंने इस पूजाको बन्द करके गोवर्धन-पूजा चलायी। इन्द्रपूजा विधिमें यज्ञों और पशुबलिकी विशेषता थी। कृष्णको मूक पशुओंकी

असह्य यातना बहुत क्रूरतापूर्ण प्रतीत हुई इसलिए उन्होंने इन्द्र-पूजाका विरोध किया।

इस कथासे कुछ महत्त्वपूर्ण निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं। एक तो वेदोंकी देवत्रयी (इन्द्र वरुण अग्नि) का प्रचलन कम होता जा रहा था और उनके स्थानपर पूर्व देवताओंकी त्रयी (ब्रह्मा, विष्णु और महेश) लोकप्रिय होती जा रही थी। प्रारम्भमें प्राकृतिक शक्तियोंको देवताओंका रूप और सम्मान दिया गया था। इन्द्रके रूपमें सूर्य वरुणके रूपमें जल और अग्निके रूपमें अग्निकी उपासना होती थी। आगे चलकर इन्हीं प्राकृतिक शक्तियोंके अर्द्धदवो रूपोंको पूर्ण दैवीरूप प्रदान करनेके लिए भिन्न संज्ञाओंका प्रयोग किया गया और इन्द्र (सूर्य) वरुण और अग्निके स्थानपर ब्रह्मा विष्णु, महेश हिन्दुओंके प्रमुख देवता हो गये। ऐसा प्रतीत होता है कि प्राचीन कालमें सर्वप्रथम सूर्यके महत्त्वको स्वीकार किया गया था। इसके बाद जल और उससे बादमें अग्निकी सहारक शक्तिमें संरक्षक शक्तिके दर्शन हुए होंगे। इसीलिए सूर्यको तो ऐसी संज्ञा प्राप्त हो गयी जिससे महत्त्वको तो माना गया और प्रकृतिके स्पष्टरूपको छिपाया गया। इस प्रकार सूर्य इन्द्र होकर देवता बन गया परन्तु वरुण भिन्न संज्ञा पाकर भी अपने प्राकृतिक रूपमें इतना स्पष्ट और स्वस्थ रहा कि देवता बनकर भी पूर्ण देवता न बन पाया। अग्नि तो अपने आदि रूपमें ही रही और अत्यधिक पूजा पानेपर भी अपने प्रकट रूपको न छिपा सकी और अग्नि रूपमें ही प्रचलित रही। अग्निको देवरूप मिलकर भी न मिल सका और वह देवता न बन पायी।

इन्द्रको पूर्ण देवरूप प्राप्त हो चुका था अतः परिवर्तन कालमें भी उसके महत्त्वको कम करके भी उसे समाप्त न किया जा सका। देवाधि देव देवताओंका राजा तो वह रहा परन्तु उसकी चलती एक न थी। वह ब्रह्मा विष्णु और महेशके मातहत हो गया। उसकी प्रधानता समाप्त हो गयी। सूर्यके स्थानपर सृष्टिकर्त्ताके रूपमें ब्रह्मा, जलके देवता परम

के स्थानपर संरक्षणका कार्य करनेवाले शेषशायी विष्णु और अग्निके स्थानपर संहारकर्ताके रूपमें महेशकी कल्पना की गयी। सृष्टिका देव इन्द्रसे निकल गया और कालान्तरमें इनपर शासन ब्रह्मा, विष्णु, महेशका होने लगा। इन्द्रको 'रिटायर' कर दिया गया और पेंशन देकर स्वर्गलोकमें वृद्ध देवताओंकी देखभाल करनेके लिए विशेष शासनाधिकारी (एडमिनिस्ट्रेटर) के रूपमें भेज दिया गया। यही कारण है कि प्रायः उनके सिंहासनको हिला देनेवाले लोग पैदा हो जाते हैं और तब वह कभी ब्रह्माके पास तो कभी विष्णुके पास तो कभी शंकरके पास सलाह और सहायताके लिए भागते दिखाई देते हैं।

दूसरी बात यहाँपर जो ध्यान देने योग्य है वह है वैदिक यज्ञोंपर पशुबलियोंको समाप्त करके अहिंसक वैष्णव वृत्तिका उद्भव जिसका सूत्रपात वासुदेव सुधारके साथ आजसे लगभग ढाई हजार वर्ष पहले प्रारम्भ हो गया था। किस प्रकार वैदिक परम्पराएँ परिवर्तित होकर एक प्रकारकी नवीन धर्म-व्यवस्थाको जन्म दे रही थीं इस कथासे विदित होता है। इन्द्रके रहे-सहे महत्त्वको भी किस चतुराईसे समाप्त करके वैष्णव धर्मके प्रमुखको स्थापित किया गया है कि इन्द्रको भी गोवर्धनको अपना सारा महत्त्व प्रदान करनेके लिए उद्यत होना पड़ा। बौद्ध और जैनोंके प्रभाव स्वरूप जहाँ अहिंसाका उद्भव हो चुका था वहीं विरोध भी उत्पन्न हो गया था जो आगे चलकर काफ़ी हिंसाका कारण बना। इन्हीं विरोधी स्थितियोंको समन्वयात्मक दृष्टिसे साथ ले चलनेके लिए वैष्णव भावका उदय हुआ। पुराणकालमें इस प्रवृत्तिको विशेष प्रश्रय मिला।

वैदिककालमें क्वांर अथवा कार्तिक महीनेकी अमावस्या या पूर्णमासीको नये चावलोंसे आग्रयणेष्टि यज्ञ किया जाता था और तब अन्न खाया जाता था। धर्मसिन्धुमें लिखा है—'आग्रयणमकृत्वा नित्यमिमं नवान्नं चरुं न भक्षणीयम्।' इस यज्ञके प्रमुख देवता इन्द्र थे। कालान्

न्तरमें यह यज्ञ केवल इन्द्र यज्ञरूपमें परिणत हो गया था और कृष्णके आगमनपर वही गोवर्धन पूजाके रूपमें परिणत हो गया। गौओंका पालन करनेवाला पर्वत गोवर्धनके रूपमें पूज्य हुआ और तभीसे उत्तरमें सर्वत्र गोबरके गोवर्धन बनाये जाते हैं और उनका पूजन होता है। कृषि प्रधान देशमें गाय और बैलोंके महत्वको कौन अस्वीकार कर सकता है? आजके दिन इसीलिए गाय और बैलोंकी पूजा होती है। अवधी क्षेत्रमें प्रातःकाल स्त्रियां गायके गोबरसे घरके आंगनमें गोवर्धन बनाती हैं। गोवर्धनकी रचना बड़ी विस्तृत और पूर्ण होती है। गोबरसे पहले एक घरौंदा बनाया जाता है जिसके दरवाजेपर एक चौकीदार और एक कुत्ता बनाया जाता है। उस घरौंदेके भीतर अनेक प्रकारके घरेलू काम धन्धे करते हुए स्त्री और पुरुषोंकी मूर्तियां बनायी जाती हैं। कहीं स्त्रियां चक्की चला रही हैं कहीं रोटियां पका रही हैं दुधांड़ीमें दूध भरा जा रहा है तो कहीं बिल्ली दूध पिये जा रही है। बीचमें स्त्री और पुरुषकी दो बड़ी आकृतियां बनायी जाती हैं और बीचमें एक छोटी आकृति बालककी होती है। इसकी आंखें कौड़ियोंको चिपका कर बनायी जाती हैं। उनकी तोंदियां गहरी करके उनमें दूध भर दिया जाता है। 'राईकी बिनिया' बनायी जाती है जिसकी कथा बिरधा गोर की अन्य कथाओंके साथ कही जाती है। इसके बन जानेपर स्त्रियां सेन्दुर चावल अनेक प्रकारकी दालोंसे पूजा करती हैं। आज बिरधागोर-की पूजा करती हैं और चावलके आटेकी चिड़िया बनाकर सुहागिन स्त्रियां मौन होकर खाती हैं। शामको गोबरसे बनी इन आकृतियोंको मिटाकर गोबरको समेट लिया जाता है और उस गोबरसे एक 'चापक भैया' मनुष्यकी मूर्ति बनायी जाती है। इस मूर्तिको घरके बाहर दरवाजे के पास रख दिया जाता है और उसके पेटमें दियासी खोंसकर जला दी जाती है। उस मनुष्यके सिरपर बहुत-सी सींकें खोंस दी जाती हैं। अनुमान है कि यही गोवर्धन पर्वत है जो सबकी रक्षा करता है। उसके

पेटमें चलता हुआ दीपक उसके रूपको और भी उजागर कर देता है। सिरमें खुँसी हुई सींकें पर्वतके झाड़ झंखाड़की ओर संकेत करती हैं।

कथा

(चिरैया गौरकी कथाओंके साथ कही जाती है)

एक था राजा और एक थी रानी। रानी थी बड़ी पापिन, बड़ी दुष्टा। वह एक साँपसे फँसी थी। वह अपने राजाको चूनी चोकरकी रोटियाँ खिलाती और साँपको चिकनी-चुपड़ी घीकी चमोरी। वह साँप नहीं आदमी था। साँपके वेशमें रानीके पास रहता था। रानी उसको बहुत प्यार करती थी।

एक दिन राजाने रानीसे कहा 'रानी! घरमें इतना भरा है, कोई कमी नहीं फिर चोकरकी रोटी क्यों खिलाती हो?' रानीने कहा, "तुम्हारी बहन अस्सी कोसपर रहती है, वह याद देती है तो दाना उड़ जाता है और चोकर बच रहता है। उसीकी रोटी खिलाती हूँ।" राजा थे बड़े सीधे सादे भोले। रानीकी उलटी बातको भी मान लेते। फिर अपनी बहनकी इस बातको लेकर बड़े संकोचमें पड़ जाते और कुछ न बोलते।

एक दिन रानीने साँपसे कहा 'इस तरह कबतक चलेगा? अगर पता चल गया तो हम दोनों मरवा डाले जायँगे। एक दिन तुम इनकी धोतीमें बैठ जाओ और जब नहाकर नदीसे निकलें तो काट लेना। रोज रोजकी लुकाचोरीसे फुरसत मिल जाये।" साँपने कहा, 'ठीक है।'

दूसरे दिन राजा धोती-अँगोछा लेकर नदीपर नहानेके लिए गये। धोती अँगोछा किनारेपर रखकर नहाने लगे। नहाकर निकले और अँगोछेसे देह पोंछी और पहननेके लिए ज्यों धोती उठायी तो फनफना कर साँप काटने दौड़ा। वहीं पासमें पड़ा था एक बबूलका डण्डा।

राजाने डण्डा उठाकर साँपको एक ही वारमें मार डाला। और उसको पासके बबूलके पेड़में लटका दिया। राजा घर आये। घर आकर उन्होंने कहा, "रानी! जल्दी पानी लाओ। गला सूख रहा है।" रानीने कहा, "ऐसी भी क्या मुसीबत है कि नहाकर आनेपर भी प्यासे!" राजाने कहा, 'कुछ न पूछो रानी! आज तो अस्स टल गयी नहीं तो मर ही जाता।' रानीने बड़ी उत्सुकतासे पूछा "आखिर ऐसी क्या बात हो गयी?' राजाने कहा मेरी धोतीमें एक साँप बैठा था। वह मुझे काट ही लेता परन्तु मुझे एक डण्डा मिल गया। मैंने उसे मार डाला। जरा सा चूकता तो वह काट ही लेता।" यह सुनकर रानी बड़ी व्यग्र हो उठी। पानी देना तो गयी भूल और पूछा कि साँपका क्या किया। राजाने बता दिया कि उसे मारकर बबूलके पेड़पर टाँग दिया है। इतना सुनना था कि रानी भागी घर छोड़कर, और हाँफते-हाँफते पहुँची नदी किनारे। बबूलसे उसने मरे साँपको उतारा और विलाप करने लगी। पर अब क्या हो सकता था। उसे लेकर चमारके यहाँ गयी। उससे साँपकी खाल निकलवायी। उसीकी खालकी उसने अँगिया बनवायी और पहनी। थोड़ी खाल उसने अपनी कमरमें बाँध ली, थोड़ी चूड़ेमें बाँध ली कुछ फुलवारीमें डाल दी और कुछ नियेमें बसायी। और जो कुछ बची उसे सेजपर बिछा ली।

अब अपने पतिके प्रति विद्वेष वैरमें बदल गया। उसको मारकर बदला लेनेकी एक तरकीब सोची। उसने अपने पतिसे कहा मैं एक पहेली पूछती हूँ बताओ। यदि तुम बता ले गये तो मुझे भाड़में डालकर भून डालना और न बता पाये तो मैं तुम्हें भाड़में डालकर भून डालूँगी। राजाने कहा 'पूछो कोशिश करूँगा। उसने पहेली बुझायी,

'पिउ खटिया, पिउ मचिया, पिउ का हार मूँगे मोरी छतिया।
सोई पिया की संग, फुलवाई, सो पिया की पहिने बिहयारी।

राजाने बड़ा दिमाग लगाया, बड़ी कोशिश की, पर पहेलीका ठीक जवाब न निकाल पाया। अन्तमें उसने हार स्वीकार कर ली। तब रानीने कहा, "अब तुम शर्त हार गये। अब शर्त पूरी होनी चाहिए। राजाने कहा 'ठीक है। मैं तयार हूँ। पर थोड़ी मोहलत दो। मैं अपनी बहनको देख आऊँ तब तुम मुझे भाड़में झोंक देना।" रानीने राजासे तीन तिरवाड़ करवायी और राजाको मोहलत दे दी।

राजा उदासमन बहनके घर गये। राजाकी बहन उस समय गोवर्धन की पूजा कर रही थी। राजाकी ओर देखा तक नहीं। राजाने सोचा, ठीक है। दुःखमें कौन किसको पूछता है? अपने भी पराये हो जाते हैं। निराश होकर वह अपनी बहनके घरसे लौटने लगा कि बहनकी पूजा समाप्त हो गयी। उसने घूमकर देखा तो उसके भाई लौटे जा रहे थे। बहनने दौड़कर अपने भाईको लौटाया। भाईसे मिली भेंटी। भाईको उदास देखकर उसने पूछा, 'भैया इतने उदास क्यों हो? और घर आकर भी लौटे जा रहे थे। कोई ऐसा भी करता है?' राजाने अपना सारा दुःख बताया और कहा "तुम्हारी भौजाई एक पहेली बुझाती है। मैं बूझ नहीं पाता। शर्तके अनुसार अब वह मुझे भाड़में झोंक देगी। अब मैं क्या करूँ यही दुःख है?' बहनने कहा, 'भैया तुम बिलकुल मत घबड़ाओ। मेरे रहते भौजाई तुम्हारा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकती। मैं चलती हूँ तुम्हारे साथ। और दोनों उलटे पाँव चल पड़े। रास्तेमें एक कुएँपर विश्रामके लिए ठहरे। राजा थका हारा तो था ही लटते ही सो गया। पर बहन उधेड़ बुनमें लगी रही। उसे नींद नहीं आ रही थी। उस कुएँमें रहती थी दियेंगी माँ। वह अपने पड़ोसिनोंसे बात कर रही थी कि मेरा बेटा तो बड़ी दुर्गन्धमें पड़ा है। दुष्टा रानी साँपकी लाश जलाती है। मारे दुर्गन्धके वह खाना भी नहीं खाता। वहे दुष्टा रानी अपने पतिको पहेली बुझाती है,

पिउ खटिया, पिउ मचिया, पिउ का हार मुझे मोरी खटिया ।
कोई पिया की लंक, फुलबाई सो पिया की पहने पितसारी ॥

राजा बूझ नहीं पाता । अब रानी उसे भाड़में झोंकवा देगी । अभी तो बेचारा बहनके घर गया है लौटते ही मरवा डाला जायेगा । यह दुष्टा रानी साँपकी खाल कमरमें खोंसे रहती है चूड़ेमें बाँधती है बिस्तरमें रखती है गलेमें लपेटती है और अपने पतिको मारनेपर तुली है ।' बहनने जब यह सुना तो सब क़िस्सा समझ गयी कि यह मेरी भौजाईकी ही कथा है । उसने फ़ौरन भाईको जगाया । "भैया जल्दी चलो । राजाने बड़े दुःखी मनसे कहा, 'जल्दी क्या करूँ बहन । जाते ही तुम्हारी भौजाई मुझे भाड़में झोंकवा देगी । बहनने धीरज बँधाते हुए कहा भैया ! मेरे रहते वह दुष्टा तुम्हारी कुछ भी नहीं कर सकती । तुम जल्दी चलो तो । राजा अपनी बहनके साथ चल दिया और घर आया । रानीने ननदको आया देखकर कहा 'खुद न जीत पाये तो बहनको लिवा लाये हो ? देखें बहन क्या करती है ।' बहनने कहा "भौजाई ! एक बार मुझे भी बुझाओ वही पहेली ।' रानीने कहा 'तुम्हारा भाई तो बूझ न पाया तुम क्या बूझोगी !" बहनने कहा, "कोई बात नहीं।तुम एक बार बुझाओ तो सही ।" रानीने पहेली दोहरा दी।

बहन उठी और उसने रानीको उठाकर पटक दिया । उसकी छाती पर चढ़ बैठी और अँगिया फाड़कर खींच ली । उसे नंगा कर डाला और कमरसे साँपकी खाल निकाल ली । गले और चूड़ेसे भी खाल निकाल ली । पहेलीका सारा भेद खुल गया । बहनने कहा 'मिल गया न जवाब तुम्हारी पहेलीका । अब तयार हो जाओ भाड़में जलनेके लिए ।" बहनने चोटी-घिसकाटी रानीको घसीटकर भाड़में झोंक दिया । रानी जलकर भस्म हो गयी । बहनने अपने भाईका अच्छा-सा विवाह किया । वह राजा हुए वह रानी हुई । दोनों सुखसे रहने लगे । बहन खुशी-खुशी अपने घर गयी ।

■

चिरैया गौर

जिस दिन गोवर्धन पूजा की जाती है और अन्नकूट होता है उसी दिन दीवालीकी ओर चिरैया गौरका पर्व होता है। यह पर्व केवल सौभाग्यवती स्त्रियाँ ही मनाती हैं। आजके दिन सौभाग्यवती स्त्रियाँ चावलके आटेकी चिड़िया पकाकर खाती हैं। शरद पूर्णिमाको चावल धोकर चाँदनीमें फैला देती हैं जिससे चन्द्रमाका अमृत चावलोंमें उतरता है। शरद पूर्णिमाको कोजागरका त्योहार मनाया जाता है। ऐसी लोकमान्यता है कि उस रातको चन्द्रमासे अमृतकी वर्षा होती है। अमृत बसे हुए चावलोंको दीवालीकी रातमें जगाया जाता है और उसी रातको चार-पाँच बजे रातको सौभाग्यवती स्त्रियाँ स्वयं मौन होकर वही चावल पीसती हैं। नहा धोकर इस चावलके आटेको सानकर चिड़िया बनाती हैं, साथ ही उसी आटेकी टिपरिया और फरा बनाती हैं पायी-पना और खड़ाऊँ भी बनाती हैं। इन सबको पानीमें उबाला जाता है। पक जानेपर स्त्रियाँ चिड़ियाँ दीवालीकी जगायी शक्करकी मिठाई और घीके साथ खाती हैं। लड़कियोंको टिपरिया खानेको दी जाती है और लड़कों तथा पुरुषवर्गको खड़ाऊँ तथा पोथी-पना खाना पड़ता है। पाँच-पाँच फरा सभीको निसाये जाते हैं। चिड़ियाँ खानेके समय स्त्रियाँ इस बातका ध्यान रखती हैं कि सिर न खायँ और न चिड़ियोंकी बगलमें चिपके हुए अण्डोंको। चिड़िया खाते समय स्त्रियाँ लहँगा-दुपट्टा ओर बड़े-बड़े नथ लटकाकर नयी-नवेली दुलहिन बन जाती हैं और मौन होकर चिड़ियाँ खाती हैं। पूजाके बाद और चिड़िया खानेके पहले वे कथाएँ कहती हैं।

चिरैया गौरपर कही जानेवाली चार कथाएँ यहाँ प्रस्तुत हैं। पहली कथामें इस पर्वके सम्बन्धमें कोई संकेत नहीं है। पति प्रेम पानेके लिए एक भोली स्त्री अपनेको जला लेती है। उत्सर्ग और भोलेपनके कारण वह अपने प्रियका प्रेम प्राप्त करती है। दूसरी कथामें चिरया गौरको कैसे व्रत रहा जाता है इसकी विधि बतायी गयी है। नयी ब्याहता नहीं जानती कि चिरैया गौरका व्रत कैसे किया जाता है। सभी अनुभवी गाँवकी स्त्रियाँ उल्टा ढंग बतलाती हैं। उलटे ढगसे व्रत करने पर उसका पति पागल हो गया परन्तु दूसरे सालकी चिरैया गौर वह ठीकसे रहती है जिससे उसका पति ठीक हो जाता है। तीसरी कथामें सास ही बहूके साथ छल करती है और उसे आटामें लपेटकर सचमुच की चिड़िया खिलाती है परन्तु ससुरको शक हो जाता है। ससुर पता लगाकर अपनी पत्नीको पीटता है। चौथी कथा यमराजसे सम्बन्धित है। एक बुढ़िया चोरी करके अपनी पोतीका पालन-पोषण करती है। पोती उसे बतलाती है कि दोष आजीको ही लगेगा परन्तु वह समझती है कि वह ठीक कर रही है। पोतीका विवाह यमराजसे हो जाता है और इधर आजी अकेली रहकर दुःख पाती है। कुछ दिनोंमें मर जाती है और नरकमें भेजी जाती है वहाँ अनेक प्रकारकी यातनाएँ भोगती है। उसकी पोती यमराजसे सिफ़ारिश करके उसकी यातनाएँ कम करवाती है और अन्तमें यमराज दयार्द्र होकर उसे तार देते हैं। इस कथाका उद्देश्य बड़ा अच्छा है। इससे ईमानदारीका जीवन व्यतीत करनेकी प्रेरणा मिलती है। परन्तु इस कथाका भी चिरया गौरसे कोई सीधा सम्बन्ध नहीं दिखाई देता। ये कथाएँ इस सन्दर्भमें इसीलिए प्रस्तुत हैं कि इसी अवसरपर कही जाती हैं।

यह अवधी क्षेत्रकी स्त्रियोंका अपना विशिष्ट व्रत है जिसका पौरा णिक रूप स्पष्टतः समझमें नहीं आता। चिड़िया क्यों खायी जाती है इसका कारण अज्ञात है। इस दिन जिस अल्पनाकी पूजा होती है उसमें

सो शंकर-पार्वतीका अंकन होता है जिसे स्त्रियाँ प्राय: चौकाचौकी अल्पनाके भीतर ही बनाती हैं। गौरी अथवा पार्वतीजीकी पूजा ही विशेष मालूम देती है क्योंकि यह पूजा पति प्रेम और पतिकल्याणकी भावनासे की जाती है। हो सकता है चावलके आटेकी चिड़िया खानेकी प्रथा सचमुचकी चिड़िया खानेके निषेधसे शुरू हुई हो। कोई स्त्री मांस खाती रही होगी और उसके पतिका कुछ अहित हुआ होगा। तबसे उसने असली चिड़िया छोड़कर नक़ली चिड़िया खानी शुरू की होगी परन्तु कल्पना सन्तोषप्रद नहीं प्रतीत होती।

१

एक जिठानी-देवरानी थीं। जिठानीका पति अपनी स्त्रीको बहुत प्यार करता था। पर देवरानीका पति अपनी स्त्रीसे बात भी न करता था। बेचारी बड़ी परेशान रहती। एक दिन उसने अपनी जिठानीसे सलाह की कि क्या किया जाये कि मेरा पति भी मुझे प्यार करने लगे। दुष्टा जिठानी बोली 'पालकका साग लेकर उबाल डालो और उसके गरम-गरम पानीमें नहा डालो। बस दूसरे दिनसे ही देवरजी तुम्हें प्यार करने लगेंगे। भकुई (भोली) देवरानीने खूब सारे पानीमें पालक उबाला और उसके गरम पानीको सिरपर डाल लिया। सारा शरीर जल गया। बड़े-बड़े फफोले पड़ गये। बेचारी बड़ी बेचैन हो गयी और कटी मछलीकी तरह तड़फड़ाने लगी। अब न यह पाती तो रोने लगती। ऊपरसे पति निकला तो उसको पनियाकी हुवा उसके जलते हुए शरीरमें लगी तो उसे बड़ी ठण्डक मिली। और मक्खियाँ उड़ गयीं। यह बोली

"पालक सिसेय बनाया,
पिय माखी हाँकत आया।"

अब उसका पति जब इधरसे उधर जाता तो उसको बड़ी ठण्डक

मिलती और मक्खियाँ उड़ जातीं। वह बड़ी खुश थी। और खुशीमें दोहराती रहती—"पालक बिसेस अमावा पिय माखी हाँकत आवा।" उसने जब अपनी पत्नीको यही बकते सुना तो माँसे पूछा "माँ यह क्या बक रही है?" माँ बोली, बेटा, इसकी जिठानीने सुझाया था कि पालकके उबलते पानीमें नहानेसे पति प्यार करने लगता है। सो इस बेचारीने पालक उबालकर उबलते पानीमें नहा लिया और बुरी तरह जल गयी। तुम जब इधरसे उधर जाते हो तो मक्खियाँ उड़ जाती हैं और उसके घावोंमें हवा लगती है, जिससे उसे ठण्डक मिलती है। वह खुश होकर कहती है "पालक बिसेस बनावा पिय माखी हाँकत आवा।

यह सुनकर उसकी आँखें खुल गयीं। उसी दिनसे वह अपनी पत्नीसे प्यार करने लगा। उसने अपनी पत्नीकी दवा की और अच्छा कर लिया। उसे अपने पतिका प्यार मिला और खूब मिला। बुरा जिठानी का घातक उपाय उसके लिए सचमुच वरदान बन गया। उसका भाग्य जाग उठा।

२

एक स्त्रीके विवाहका पहला साल था। पहली बार चिरैया गौर पड़ी। वह नहीं जानती थी कि चिरैया गौर कैसे रही जाती है। उसने पास-पड़ोसकी स्त्रियोंसे पूछा कि चिरैया गौर कैसे रही जाती है। स्त्रियोंने सही तरीका न बताकर गलत बता दिया। बोलीं अरे! चिरैया गौरमें क्या है? "भरर भरर पीस डालो छरर-छरर छान डालो और चिरैया बना लो। जब चिरैया तैयार हो जाये तो सिरसे शुरू करके पूँछ तक खा डालो।" उस बेचारीको क्या मालूम कि ये भट मुखियाँ उसे उलटी सीख दे रही हैं। जैसा बताया गया था उसने वैसा ही किया। जैसे ही उसने सिरसे चिरैया खाना शुरू किया उसके पतिका

दिमाग खराब होने लगा। वह पागल-सा हो गया। वह मूँड़ मार आवे और मूँड मार आवे। (अपना सिर पीटकर आवे और फिर अपनी पत्नीका सिर पीटे) वह बेचारी बड़ी परेसान हुई कि ऐसा क्या हो गया कि वे इस तरह कर रहे हैं?

वह गाँव भरमें पूछती फिरी कि उन्हें क्या हो गया है कि वे मूँड़ मार आते हैं और मूँड़ मार जाते हैं। जिन स्त्रियोंने उलटा पाठ पढ़ाया था वे छिप छिपकर हँसती थीं, और कुछ न बताती थीं। एक भली स्त्रीको उसपर दया आ गयी। उसने पूछा, 'अरी बावली तूने कहीं चिरैया सिरके बल तो नहीं खायी?' उसने कहा "हाँ खायी तो है।" उस भलीमानस स्त्रीने कहा तब फिर क्यों रोती है। चिरैया पूँछकी तरफ़से खायी जाती है। वह ऐसा सुनकर बड़ी पछतायी पर करती भी क्या?

होते-करते फिर दूसरे वर्ष चिरैया गौर आयी। अबकी बार वह बड़ी होशियारीसे काम कर रही थी। अब वह सब कुछ जान गयी थी। उसने बड़ी विधिसे चिरैया बनायी और बनाकर पूँछकी तरफ़से खाना शुरू किया। जैसे-जैसे वह पूँछकी तरफ़से चिरैया खाती जाती थी उसके पतिका दिमाग़ ठीक होता जाता था। उसने पूरी चिरैया खा डाली। और उधर उसका पति बिलकुल ठीक हो गया। अब वह न मूँड मार आता था और न मूँड मार जाता था। वह अब पूर्ण स्वस्थ था।

२

एक सीधी-सादी बहूकी सास बड़ी दुष्ट थी। वह बहूको तरह तरहकी यातनाएँ देती थी। दीवाली आनेवाली थी। घरकी सफ़ाई लिपाई-पुताईका सभी काम होना था पर कौन करे? सासने बहूको सामान देकर फुरसत लिया। उस बेचारीसे अकेले सारे घरकी टहल

करवायी। सारे घरकी सफ़ाई, दिवालोंकी पुताई और घर-बाहरकी लिपाई-सब बेचारीने की। उसको बड़े प्यारसे मीठे बोलमें बताया कि दीवालीके भोर वह उसे चिरैया बनाकर खिलायेगी। बहूने इसी प्रकारके प्रलोभनोंसे काम किया था। और चिरैया खानेकी साध तो बहुत ही तीव्र थी। दिवालीके भोर सासने चिरैंया बनायी अपने लिए तो आटेकी और उसके लिए सचमुचकी चिरैया मारकर आटेमें लपेटकर पकायी। अपने आगे आटेकी और उसके सामने आटेमें लिपटी सचमुचकी चिरैया परस दी। दोनों खाने बैठीं और बहूने अपनी चिरैया को देखी तो बोली 'नाक नकारी पूँछ पुछारी अम्मा का यहै चिरैया आय?' सास बोली हाँ। यही है। खा चुपचाप। बक-बक क्या करती है? बहू दोनों चिरैयोंमें फ़र्क़ देख रही थी। उससे अपनी चिरैया खायी नहीं जा रही थी। उससे रहा न गया। उसने फिर पूछा, "नाक नकारी पूछ पुछारी अम्माका यहै चिरैया आय?

सास बोली 'अरी तू बड़ी दुष्टा है। तुमसे एक बार कह दिया। क्यों नहीं चुपचाप खाती? ससुर यह सब सुन रहा था। उसे भी कुछ शक हुआ। वह अपनी पत्नीका स्वभाव जानता था। वह भीतर आकर बोला क्या बात है?' सास चिढ़कर बोली "कुछ भी तो नहीं। जाओ अपना काम करो।' ससुर न माना। उसने बहूकी चिरैया देखी तो सब समझ गया। बोला 'हूँ। तो उसको सचमुचकी चिरैया खिलायी जा रही है। ठहर अभी तेरी बदमाशी निकालता हूँ।" भीतर जाकर वह एक अच्छा मजबूत डण्डा उठा लाया और अच्छी तरहसे अपनी पत्नीको फोड़ दिया। उसी दिनसे सास सारी बदमाशी भूल गयी। और बहू सुख-शान्तिसे रहने लगी।

४

(राईकी दिनिया)

एक आजी-नातिन थे। आजी जिस-तिसका पिसना पीसकर गुज़ारा

करती थी। उस पिसनासे चुरा चुराकर मालिनको चना-मटर खिलाती रहती। मालिन कहती, "नतिनियै पाप नाहीं आजिनियै पाप। होते करते मालिन बड़ी हुई। आजीने उसका विवाह यमराजसे कर दिया। मालिन जबसे ब्याह कर ससुराल गयी तबसे आजी बड़ा दुःख पाने लगी। बुढ़िया तो थी ही पर अब तो उसके जीनेका सहारा भी चला गया था। अब शक्ति क्षीण हो गयी थी। अब वह कठिन काम न कर पाती थी। उसे बहुत कष्ट मिलने लगे। एक दिन दुःख भोगते भोगते आजी मर गयी। मर गयी तो यमदूतोंने उसे लाकर नरकमें बिलबिलाते कीड़ों-वाले कुण्डमें डाल दिया।

शामको यमराज घर आये। उन्होंने अपनी पत्नीसे कहा, "तुम्हारी आजी मर गयी। नरकमें कीड़ोंके कुण्डमें पड़ी है।' यह सुनकर मालिन आजीको देखने गयी। आजीको बड़े कष्ट मिल रहे थे। आजीकी यातना को देखकर मालिन खूब रोयी। मेरी आजीकी यह दुर्दशा? जल्दी-जल्दी आकर अपने पति यमराजसे बोली मेरी आजीको बहुत कष्ट है। उन्हें कोई ऐसा काम दो जो उन्हें कीड़ोंके कुण्डसे छुटकारा दिला दे।' यमराजने अपने दूतोंको आज्ञा दी कि बुढ़ीसे कह दो कि आजसे हमारे बिस्तर बिछाया करे।

आजीने काम शुरू तो किया पर कर न पाती। यमराजके बिस्तर बेड़ मन भारी थे। बुढ़ियाके उठाये ही न उठते। मालिनने देखा कि उसकी आजी तो और भी कष्टमें है। उसने यमराजसे फिर कहा 'आजीको कोई दूसरा काम दो। तुम्हारे बेड़ मनके बिछौने उससे नहीं उठते।" यमराजने उसे काली कमली धोकर एकदम सफ़ेद कर लानेका काम सौंपा। यह काम तो और भी असम्भव था। मालिनने यह देखा तो यमराजसे फिर बोली कि आजीको कोई दूसरा काम दो। काली कमली उनसे सफ़ेद नहीं हो सकती। यमराजने आजीको दूसरा काम सौंप दिया। इस बार उन्होंने राई-लिनियाका काम सौंपा कि बैठे-बैठे

राई बिना करे। राई बिनते बिनते आजी बहुत उकता गयी। आँखें तो बुढ़ापेके मारे कमजोर थीं ही और भी कम दिखाई देने लगा। आजीने उकताकर नातिनसे कहा 'हमको तार दें अब काम नहीं होता।" नातिनने अपने पतिसे कहा, 'स्वामी! अब हमारी आजीको तार दो। उनसे कोई काम नहीं होता। जिन कर्मोंकी सजा उन्हें मिल रही है वे मेरे ही लिए किये गये थे।" यमराजने कहा, 'कर्म चाहे जिसके लिए किये गये हों कर्मोंका फल तो भोगना ही पड़ेगा। फिर तुम अनजान थीं पर वह तो सब जानती बुझती थी। नातिनने अपने पतिसे चिरौरी बिनती की। यमराज पिघल गये और उन्होंने अपने दूतोंको आज्ञा दी कि बुढ़ियाको शिवलोक पहुँचा दो उसे हमने तार दिया। नातिन अजियाके पास गयी और बोली "अजिया यमराजने तुमको तार दिया। अजिया बोली 'नातिन! तुम ठीक कहती थीं— नातिनियै पाप नाहीं अजिनियै पाप।' आजी अपने कर्मोंका फल भोगकर शिवलोक पहुँची।

■

भैयादूज (यम द्वितीया)

कार्तिक मासके शुक्लपक्षकी द्वितीयाको भैयादूजका लोकप्रिय पर्व मनाया जाता है। दीपावलीके बाद प्रतिपदाको गोवर्धन पूजा और द्वितीयाको भैया-दूज होती है। सावन, भादों क्वांर और कार्तिक मास की द्वितीयाओंके नाम क्रमश: कलुषा, निमला, प्रेतसंचारा एवं यम द्वितीया है। कलुषामें प्रायश्चित्त निमलामें सरस्वती पूजन, प्रेतसंचारा को श्राद्ध तथा यम द्वितीयाको यमपूजा की जाती है। भविष्य पुराणमें लिखा है कि जिस तिथिको प्रेममें डूबी हुई यमुनाजीने अपने हाथसे अपने भाई यमराजको भोजन कराया था उस दिन जो मनुष्य अपनी बहनके हाथसे भोजन करता है वह अपूर्व रत्न एवं धन-धान्य प्राप्त करता है एवं बहनके आशीर्वादसे दीर्घायु प्राप्त करता है।

सनत्कुमार संहितामें यम द्वितीयाकी कथा निम्न प्रकार है—

प्रतिदिन यमुना यमराजसे कहतीं कि अपने इष्ट मित्रों-सहित आकर मेरे घरमें भोजन करो। यमराज भी कामकी अधिकताके कारण आज-कल करते रहते। एक दिन यमुनाजी जबरदस्ती इसी द्वितीयाके लिए भोजनका निमन्त्रण दे आयीं। जाते समय रविसुत यमराजने प्रसन्न होकर अपने पाशसे छोड़ दिया। यमुना बहनके घर पहुँचकर इष्टमित्रोंके साथ बड़े प्रेमसे भोजन किया। यमुना बहनने भी अनेक प्रकारके व्यंजन तथा पकवान्न बनाकर बहुत प्रेमसे खिलाया।

यमराजके आनेपर यमुनाजीने पहले सुगन्धित तेलोंसे यमका अभ्यंग किया, फिर उबटन करके स्वच्छ जलसे स्नान कराया। तदनन्तर वस्त्र अलंकार, माला इत्यादिसे सुसज्जित किया और तब सोनेके थालोंमें

नाना प्रकारके पक्वान्न परोसकर खायी। प्रसन्नमन बहुविध भोजन कराया। तब यमराजने भी अनेक भाँति वस्त्रालंकारोंसे बहनकी पूजा करके बहनसे कहा कि ऐ बहन! आपकी जो इच्छा हो सो माँगो। यमुनाजीने प्रसन्न होकर कहा कि आप प्रतिवर्ष आजके दिन भोजनके लिए आया करें। जिन लोगोंने आपकी तरह अपनी बहनके हाथोंसे भोजन किया है उन्हें अपने पाशसे मुक्त कर दिया करें और सुख पहुँचाया करें। यमराजने अपनी बहन यमुनाकी माँगको स्वीकारते हुए कहा कि जो यमुनामें आज स्नान-तर्पण करके बहनकी पूजा करके बहनके ही हाथसे भोजन करेंगे वे मनुष्य कभी भी मेरा दरवाजा नहीं देखेंगे। तभीसे यम द्वितीयाका यमुनास्नान और यमपूजाका माहात्म्य विशेष हो गया। तभीसे आजके दिन चित्रगुप्त, यमदूतों तथा यमुना और यमराजकी पूजा की जाती है और भाईके लिए 'मार्कण्डेय आयुर्बल' की कामना प्रत्येक बहन द्वारा की जाती है। बहन भाईको स्नान कराके टीका काढ़ती हैं और अनेक प्रकारकी मिठाइयाँ खिलाती हैं। टीकाके पूर्व तक बहन भाई दोनों व्रती रहते हैं।

यहाँपर भैयादूज-सम्बन्धी पाँच लोक कथाएँ प्रस्तुत की गयी हैं। पाँचवीं कथा तो सनत्कुमार संहितासे उद्धृत उपर्युक्त कथासे बिलकुल मिलती-जुलती है। अन्तर केवल इतना है कि अवधी क्षेत्रमें यमुना की सहेलीके रूपमें गंगाको भी सम्मिलित कर लिया गया है। यम राजको आमन्त्रित करके लिवा लानेका कठिन कार्य गंगा ही करती हैं। इस कथामें गंगाको शामिल करके उनके स्वभावके अनुरूप ही उन्हें काम सौंपा गया है।

आज प्रातः घर लीप-पोतकर आँगनमें गीले चौरीठसे भैयादूज रखी जाती है। इस अल्पनामें भी यमराज और यमुनाको ही प्रमुखता प्रदान की जाती है। इनके अतिरिक्त अन्य देवी-देवता बनाये जाते हैं और गाय बैल साँप शेर, बिच्छू सगुन चिरया इत्यादि बनाये जाते

भैयादूज (यम द्वितीया)

कार्तिक मासके शुक्लपक्षकी द्वितीयाको भैयादूजका लोकप्रिय पर्व मनाया जाता है। दीपावलीके और प्रतिपदाको गोवर्धन पूजा और द्वितीयाको भैया-दूज होती है। सावन, भादों क्वांर और कार्तिक मास की द्वितीयाओंके नाम क्रमशः कलुषा निर्मला, प्रेतसंचारा एवं यम द्वितीया है। कलुषामें प्रायश्चित्त निर्मलामें सरस्वती पूजन प्रेतसंचारा को श्राद्ध तथा यम द्वितीयाको यमपूजा की जाती है। भविष्य पुराणमें लिखा है कि जिस तिथिको प्रेममें डूबी हुई यमुनाजीने अपने हाथसे अपने भाई यमराजको भोजन कराया था उस दिन जो मनुष्य अपनी बहनके हाथसे भोजन करता है वह अपूर्व रत्न एवं धन-धान्य प्राप्त करता है एवं बहनके आशीर्वादसे आयु प्राप्त करता है।

सनत्कुमार संहितामें यम द्वितीयाकी कथा निम्न प्रकार है—

प्रतिदिन यमुना यमराजसे कहतीं कि अपने इष्ट मित्रों-सहित आकर मेरे घरमें भोजन करो। यमराज भी कामकी अधिकताके कारण टाल-मटूल करते रहते। एक दिन यमुनाजी जबरदस्ती इसी द्वितीयाके लिए भोजनका निमन्त्रण दे आयीं। जाते समय रविसुत यमराजने प्रसन्न होकर अपने पाशसे छोड़ दिया। यमुना बहनके घर पहुँचकर इष्टमित्रोंके साथ बड़े प्रेमसे भोजन किया। यमुना बहनने भी अनेक प्रकारके व्यंजन तथा पक्वान्न बनाकर बहुत प्रेमसे खिलाया।

यमराजके आनेपर यमुनाजीने पहले सुगन्धित तेलोंसे यमका अभ्यंग किया, फिर उबटन करके स्वच्छ जलसे स्नान कराया। तदनन्तर वस्त्र अलंकार, माला इत्यादिसे सुसज्जित किया और तब सोनेके थालोंमें

नाना प्रकारके पक्वान्न परोसकर खायी। प्रसन्नमन बहुविध भोजन कराया। तब यमराजने भी, अनेक भाँति वस्त्रालंकारोंसे बहनकी पूजा करके बहनसे कहा कि ऐ बहन! आपकी जो इच्छा हो सो माँगो। यमुनाजीने प्रसन्न होकर कहा कि आप प्रतिवर्ष आजके दिन भोजनके लिए आया करें। जिन लोगोंने आपकी तरह अपनी बहनके हाथोंसे भोजन किया है उन्हें अपने पाससे मुक्त कर दिया करें और सुख पहुँचाया करें। यमराजने अपनी बहन यमुनाकी माँगको स्वीकारते हुए कहा कि जो यमुनामें आज स्नान-तर्पण करके बहनकी पूजा करके बहनके ही हाथसे भोजन करेंगे वे मनुष्य कभी भी मेरा दरवाजा नहीं देखेंगे। तभीसे यम द्वितीयाको यमुनास्नान और यमपूजाका माहात्म्य विशेष हो गया। तभीसे आजके दिन चित्रगुप्त यमदूतों तथा यमुना और यमराजकी पूजा की जाती है और भाईके लिए 'मार्कण्डेय आयुर्बल' की कामना प्रत्येक बहन द्वारा की जाती है। बहन भाईको स्नान कराके टीका काढ़ती हैं और अनेक प्रकारकी मिठाइयाँ खिलाती हैं। टीकाके पूर्व तक बहन भाई दोनों व्रती रहते हैं।

यहाँपर भैयादूज-सम्बन्धी पाँच लोक कथाएँ प्रस्तुत की गयी हैं। पाँचवीं कथा तो सनत्कुमार संहितासे उद्धृत उपयुक्त कथासे बिलकुल मिलती जुलती है। अन्तर केवल इतना है कि अवधी क्षेत्रमें यमुना की सहेलीके रूपमें गंगाको भी सम्मिलित कर लिया गया है। यम राजको आमन्त्रित करके लिवा लानेका कठिन कार्य गंगा ही करती हैं। इस कथामें गंगाको शामिल करके उनके स्वभावके अनुरूप ही उन्हें काम सौंपा गया है।

आज प्रातः घर लीप-पोतकर आँगनमें गोबरसे चौरीठसे भैयादूज रखी जाती है। इस अल्पनामें भी यमराज और यमुनाको ही प्रमुखता प्रदान की जाती है। इनके अतिरिक्त अन्य देवी-देवता बनाये जाते हैं और गाय बैल, साँप मोर, बिच्छू समुन चिरया इत्यादि बनाये जाते

हैं। अल्पनाके शीषपर मार्कण्डेय ऋषि और सात पुतले बनाये जाते हैं। इस अल्पनाको बना लेनेके बाद घरकी सब स्त्रियाँ पूजा करती हैं और मूसलसे गिट्टियाँ कूटती हैं और भटकटैया तथा बेरी (बेर) की डारको कुचला जाता है। होलीके बाद चैत्र कृष्ण द्वितीयाको होने वाली भैया दूजमें दीवालीकी दीपावलियोंके स्थानपर ईंटको मूसलसे फोड़ती हैं। भटकटैया और बेरीको कुचलते समय स्त्रियाँ गाती हैं, भया गेहूँ घर लाय कँटवो न लागै भया गेहूँ कलम चलावै कंटवो न लागै। इस अवसरपर अवधी क्षेत्रमें गाली-गलौज नहीं की जाती। जहाँ-कहींपर ऐसा होता भी है तो उसका उद्देश्य भाईकी सुरक्षा और दीर्घायुकी कामना ही होता है। हमारी तीसरी लोककथामें 'कोसिया निकोसिया' की बहनें भयादूजके दिन ही अपने भाईको कोसती-सरापती है— 'भया मरे भौजिया राँड़'। सब लोग समझते हैं कि यह पागल हो गयी है और उसे कोठरीमें बन्द कर देते हैं। परन्तु उसके कोसने-सरापनेका उद्देश्य अपने भाईकी रक्षा ही है। बात इस प्रकार है कि यमराजके दूतोंके लिए यमदूत बिना खेदकी सास ढूँढते फिर रहे हैं। ढूँढते-ढूँढते यमदूतोंको पता चल जाता है कि कोसिया-निकोसियाके बेटेकी ही सास अनछिदी है क्योंकि उसको आजतक किसीने फूलकी छड़ीसे न छुआ है और न गाली दी है। यह बात उसकी बहन को मालूम हो जाती है और यह अपने भाईको यमदूतोंसे बचानेके लिए गालियाँ देने लगती है।

चौथी कथासे मिलती-जुलती कथा श्रीरामप्रताप त्रिपाठीने अपनी पुस्तक 'हिन्दुओंके व्रत पर्व और त्यौहार' में दी है। विशेष अन्तर कथाके अन्तिम भागमें है। कथामें बहनकी भूलसे भाईकी मृत्यु हो जाती है, परन्तु बहनके प्रेमके प्रभावसे शंकर पार्वती उसे फिरसे जीवित कर देते हैं। त्रिपाठीजीकी कथामें भाई विषमिली पूरियाँ नहीं खाता और बहन उसकी रक्षाके लिए साहीके काँटे ले आती है। साहीके काँटेसे

यह अपने भाईको अनेक घातक आपत्तियोंसे बचा लेती है।

भाई बहनके प्यारका यह अनोखा पर्व है। जिसके कोई भाई नहीं उसको इस पर्वपर कितना दुःख होता है उसकी कल्पना बिना भाईकी बहन बने नहीं किया जा सकता। वह पानीके मटकेमें या मकानकी चौखटपर या कलशपर तिलक लगाकर सन्तोष कर लेती है। और भाईके लिए सूर्य भगवान्ने तो यहाँ तक कहा है कि जो भाई आजके दिन अपनी बहनके हाथका भोजन नहीं करता वह अपने जन्मभरके समस्त सुकृतोंको नष्ट करता है। जो बहन आज अपने हाथसे अपने भाईको खिलाती है वह कभी विधवा नहीं होती। इसीलिए परदेसमें होनेपर भी बहन लिफाफ़ेमें रोली रखकर रोचना भजती है जिससे उसका भाई टीका काढ़ ले। यदि किसीके भाई या बहन नहीं होते तो व किसी सपिण्डीको धमभाई या बहन मान लेते हैं और भैयादूजका पर्व मनाते हैं। इस पर्वका बड़ी बहनका तो सम्मान होता ही है, परन्तु छोटी बहनका प्यार विशेष लक्षित होता है।

दीवालीके भोर पड़िवा (प्रतिपदा) को लिखने-पढ़नेका कोई काम नहीं होता। भयादूजको चित्रगुप्तकी पूजा होती है और उनके साथ कलम दावात किताब बही-बसनाकी भी पूजा होती है। लिखने-पढ़ने का काम शुरू हो जाता है। "लेखनी पट्टिकाहस्तं चित्रगुप्तं नमाम्यहम्" कहकर यमराजके आलेखक चित्रगुप्तकी पूजा की जाती है। प्रार्थनेयं गृह्यणेमां नमस्ते राजमुद्रिके से राजमुद्राकी प्रार्थना करके सफ़ेद काग़ज पर श्रीरामजी श्रीरामो जयति गणपतिजयति शारदाय नमः आदि लिखकर लिखनेका काम नये वर्षमें शुरू किया जाता है। इस पूजा का विशेष महत्त्व वैश्योंके यहाँ है।

१

एक साले-बहनोई थे। दोनोंमें कट्टर दुश्मनी थी। दोनों एक दूसरे-को फूटी आँखों नहीं भाते थे। बहन अपनी ससुरालमें अपने पतिके

साथ थी। भैयादूज आनेवाली थी। बहनोईने अपने सालेसे कहा, "अगर तुम सच्चे भाई होग तो भैयादूजके दिन अपनी बहनसे टीका लगवाने आओगे। मैं गँड़ासा लिये द्वारपर तुम्हारी राह देखूँगा कि तुम कैसे टीका लगवाते हो और तुम्हारा सिर सलामत रहता है।"

भैयादूज आयी। भाई बड़े सोचमें पड़ा कि क्या करें। बहनसे टीका भी लगवाना है और बहनोईकी ललकारका भी जवाब देना है। वह बहनोईके घरकी ओर चला तो दूरसे ही देखा कि द्वारपर बहनोई गँड़ासा लिये खड़ा है। इधर घरमें बहन ऐपन पीसती जाती थी और रोती जाती थी आज भाई-बहनका इतना बड़ा त्योहार है पर भाईसे वह मिल भी नहीं सकती और भाई भी नहीं आ सकता ये द्वारपर गँड़ासा लिये खड़े हैं। यह भी कोई दुश्मनी है? उधर भाई घूमकर घरके पिछवाड़े गया। और कुत्तेका रूप रखकर पनारेके रास्तेसे अन्दर घुसा। बहनने कुत्तेको जो अन्दर घुसते देखा तो लोढ़ा फेंककर मारा। लोढ़ेसे वह ऐपन पीस ही रही थी उसमें रोली भी लग गयी थी। इस प्रकार लोढ़ेमें लगा ऐपन और रोरी भाईके मुँहमें लग गया। बाहर आकर भाईने और सब तो पोंछ डाला केवल टीका भर रहने दिया। द्वारपर आकर बहनोईके पैर छुए। बहनोईने सालेके माथे पर जो टीका देखा तो चौंक गया। गुस्सेमें आकर पूछा, 'मैं तो सुबह चार बजेसे द्वारपर पहरा दे रहा हूँ। तुम टीका कैसे लगवा आये? उसने सब हाल बताया कि वह किस प्रकार कुत्ता बनकर पनारेके मार्गसे भीतर गया और बहनने लोढ़ा फेंककर मारा जिसमें लग हुए ऐपन रोरीसे टीका काढ़ लिया। यह सुनकर बहनोईने अपने सालेको छातीसे लगा लिया। पुरानी दुश्मनी आँसुओंसे धुलकर साफ हो गयी। वह बोला। धन्य हैं भाई-बहन! भैयादूज की महिमा न्यारी है।

२

एक थी बहन—सात भाइयोंके ऊपर हुई थी। बड़ी दुलारी बड़ी

पिआरी। वह जो भी कुछ चाहती वह फ़ौरन कर दिया जाता। होते-करते बहनका विवाह हो गया। जिसके साथ उसका विवाह हुआ था वह अपनी माँका एकलौता बेटा था। वह भी बड़ा दुलारा पियारा था। माँने अपने एकलौते पुत्रके लिए बड़ी मानताएँ मान रखी थीं पर पूरी एक भी न की थी। इसपर सब देवी-देवता अप्रसन्न थे। उन्होंने सोचा कि इस बूढ़ेके पुत्र और पुत्रवधूको मार डाला जाय। बहनको किसी प्रकार पता चल गया कि देवता अप्रसन्न हैं। बहनने भाइयोंसे कहा कि मैं ससुराल जाऊँगी। भाइयोंने कहा "बिना बुलाये कैसे जाओगी बहन? वे लोग जब बिदा कराने आयें तो हम फ़ौरन भेज देंगे।" सात भाइयोंकी दुलारी-पियारी बहन बिगड़ गयी। लाचार होकर भाइयोंने डोला तैयार करवाया। बहन जानती थी कि मुसीबतें रास्तेसे ही शुरू हो जायेंगी इसलिए उसने दूध माँस, चुनरी पियरी इत्यादि चीजें रख ली थीं। डोला चला।

डोला थोड़ी ही दूर गया होगा कि फुफकारते हुए नाग और नागिन मिले। वे उसको काटने दौड़े। उसने तुरन्त दूधका कटोरा सामने रख दिया और नाग-नागिनकी पूजा की। नाग-नागिन प्रसन्न हुए और दूध पीने लगे। डोला आगे बढ़ गया। कुछ ही दूर डोला गया होगा कि दहाड़ते हुए बाघ-बाघिन मिले। बहनको देखकर डोले की ओर झपटे। बहनने तुरन्त ही माँस फेंक दिया। दोनों भकर भकर माँस खाने लगे। डोला आगे बढ़ा। थोड़ी ही दूरपर हहराती हुई गंगा-जमुना मिलीं जो बहनको अपनी लहरोंसे लीलनेको तैयार थीं। बहनने तुरन्त चुनरी और पियरी चढ़ायी और पूजा की। गंगा-जमुना प्रसन्न हो गयी और राह दे दीं। डोला आगे बढ़ा और थोड़ी ही देरमें उस नगरमें जा पहुँचा जहाँ उसकी ससुराल थी।

घर समाचार भेजा गया कि बहू आयी है। ससुरालवालोंने बड़ा आश्चर्य किया कि बहू बिना बुलाये कैसे आ गयी? फिर सोचा कि

सात भाइयोंकी दुलारी पियारी बहन मन हुआ तभी आयी। स्वागत करने आदमी आय तो उसने कहा कि "मैं सदर दरवाजसे नहीं आऊंगी। मेरे लिए घरके पीछे फूलोंका द्वार बनवाओ। ससुरालवाले बोले 'बाव (बाहरी) बहुरियाके ठनगन।' पर सात भाइयोंकी लाड़ली बहन, उसका निरादर कैसे करें? फूलोंका द्वार तैयार करवाया गया। जैसे ही बहनने द्वारपर पैर रखा कि दरवाजा टूटकर उसके सिरपर आ गिरा। पर फूलोंका होनेके कारण उसे कोई चोट नहीं आयी। खाना तैयार हुआ तो बहनने कहा 'पहले मैं खाऊंगी बादमें और कोई।' सासने कहा, 'बाव बहुरियाके ठनगन।' देखो इसकी बातें। बड़े-छोटेका कोई विचार ही नहीं।' पर सात भाइयोंकी लाड़ली बहन, कोई कुछ न बोला। खाना परोस दिया गया। खानेमें उसको घुम्चा[1] (सहगुन) काँटा मिला। बहनने काँटा निकाल लिया और डिबियामें रख लिया और बोली, 'मैं खाना खा चुकी।

शामके समय सब घूमने चले। बहन बोली, "पहले मैं जूते पहन लूँ फिर और सब कोई पहनें।' सबने फिर आश्चर्य किया। पर कोई कुछ न बोला। वह जूतोंके पास गयी और अपने पतिके जूतोंको उलटा तो जूतेमें भयंकर काला बिच्छू गिर पड़ा। उसने उसको भी डिबियामें रख लिया। सब लोग जूते पहन-पहनकर घूमने चल दिये। रातको सोनेके समय बहन सास बोली 'पहले मैं सेजपर सोऊंगी बादमें तुम्हारा बेटा।' सास मुंभाकर रह गयी पर कुछ न बोली। मनमें सोचा कि इस बार इसे मनमानी कर लेने दो। सात भाइयोंकी दुलारी पियारी कहीं रूठ न जाये।

बहन सोनेके कमरेमें गयी। वहाँ उसने देखा कि एक नागिन प्रतीक्षा कर रही थी। किसी प्रकार उसे भी पकड़ा और चली आयी,

---

१ देखेर सुम्बा कॉटाकी आकृति।

और पतिसे बोला 'अब तुम सोओ आकर।" सुबह हुई। बहन सासके पास आयी और डिबिया खोलकर सब कुछ दिखाया और बोली 'मैंने तुम्हें पुत्रवती किया और अपना अहिवात रखा। अब कभी भी देवी देवताओंकी मनौती मानकर पूजा करनेमें भूल न करना वरना धोखा खाओगी। अब मैं अपने घर जाती हूँ। इतना कहकर उसने डोला तैयार करवाया अपने भाइयोंकी दुलारी पियारी बहन अपने भाइयोंके घरके लिए चल दी। सासने सब देवी-देवताओंकी बड़ी विधिसे पूजा की और अपनी गुणवती बहूकी सराहना की।

३

एक था राजा। नाम था कोसिया निकोसिया। उसके एक लड़का और एक लड़की थी। बहन अपने भाईको बहुत प्यार करती थी। कोई एक भी कड़ी बात उसके भाईको नहीं कह सकता था।

यमराजको पूतोंकी दरकार हुई। वे आदमीकी खालके पूते पहनते थे और खाल भी वह जिसमें एक छेद न हो। ऐसे आदमीकी खाल जिसको कभी किसीने एक भी गाली न दी हो। गालीसे छिदी खाल यमराजके पूतोंके कामकी नहीं हो सकती। खोज आरम्भ हुई तो पता लगा कि कोसिया निकोसियाका लड़का अलबत्ता ऐसा है जिसे गाली कौन कहे किसीने एक भी कड़ी बात नहीं कही थी। यमराजने अपने दूतोंको आज्ञा दी कि जाओ, खाल ले आओ।

यमदूत चले। नगरके पास पहुँचे कि बहनको पता चल गया कि यमदूत उसके भाईकी खाल लेनेके लिए आ रहे हैं। जिस समय यम दूतोंने नगरमें प्रवेश किया उस समय वह कुएँपर पानी भर रही थी। यमदूत कुएँके पास पहुँचे। वह उन्हें पहचान गयी। डोल-रस्सी कुएँमें छोड़ चिल्लाती हुई भागी, "भैया मरै मौजिया रौंड़। भैया मरै, मौजिया

१ सोहाग।

रोई। लोगोंने देखा, कि कोसिया निकोसियाकी लड़की अपने भाईको भैयादूजके दिन कोस रही है और गालियाँ दे रही है। लोगोंने समझा कि यह पागल हो गयी है नहीं तो यह अपने भाईको गालियाँ न देती। उसीकी बहुअसे तो आजतक किसीने उसे एक भी कड़ी बात न कही थी और आज वह खुद अपने भाईको गाली दे रही है। लोगोंने उसे पकड़कर एक कमरेमें बन्द कर दिया। पर उसने गाली देना बन्द नहीं किया। यमदूतोंने जब भाईकी लाश देखी तो पाया कि वह तो गालियों-से छिदी पड़ी है—चलनी हो रही है। शायद ही इतनी किसीकी लाश छिदी हो। निराश होकर यमदूत लौट गये। जब यमदूत चले गये तो बहनने कहा दरवाजा खोलो। लोग बड़े अचम्भेमें पड़े। उन्होंने पूछा 'तुम तो पागल हो गयी थी।' बहनने कहा ऐसी बात नहीं है।' उसने सब किस्सा सुनाया। सबने उसकी चतुराईकी प्रशंसा की और भाई-बहनके सच्चे प्यारकी तारीफ़ की।

४

वह सात भाइयोंकी अकेली बहन थी। उसका विवाह बड़ी दूर हुआ था। भैयादूजका दिन आया। भाई बोला, 'माँ सब तैयारी कर दो। जाऊं बहनके यहाँसे भैयादूजका रोचना लगवा आऊं। नहीं तो बहन रो रोकर प्राण दे देगी। माँ कभी पूजा-पाठ नहीं करती थी। इसी-लिए भाई जब सामान बाँधकर चलने लगा दरवाजा बड़े जोरसे अर राया। भाई बोला 'अभी मत गिरो। मैं बहनके यहाँसे लौट आऊं फिर चाहे जो करना।" राहमें नाग नागिन काटनेको दौड़े। भाईने उनसे भी प्रार्थना की कि बहनके यहाँसे लौटनेपर काटना। जंगलमें बाघ बाघिन उसे खानेको लपके।

मुसीबतोंको टालता हुआ अपनी बहनके घर पहुँचा। बहन घरमें बैठे असवाहस[1] बट रही थी। वह पूरी ही न होती थी और बार-बार टूट जाती थी। भाईने आकर बन्द दरवाजा खटखटाया। पर बहन उठे कैसे जब तक असवाइत पूरी न हो जाय। भाईने सोचा देखो जिसके लिए गंगा-जमुना पैरी प्राणोंको जोखिममें डाला वही दरवाजा तक नहीं खोलती। उसने सब सामान तो बाहरसे भीतर फेंक दिया और खुद उलटे पाँव लौट पड़ा। उसके लौटते ही टूटी असवाइत जुड़ गयी। बहनने दौड़कर दरवाजा खोला और जाते हुए भाईको बुलाया – "भैया! मैं तो तुम्हारी उम्रकी असवाहत जोड़ रही थी। जुड़ ही नहीं रही थी। अब जाकर जुड़ी तो दरवाजा खोला। भाई समझ गया कि मृत्यु पास थी इसीलिए असवाहत नहीं जुड़ रही थी।

बहन दौड़ी दौड़ी पड़ोसिनोंके यहाँ गयी और बोली बहुत दिनोंमें मेरा भाई आया है उसके लिए क्या बनाऊँ? पड़ोसिनोंने बताया 'खीर-पूरी बनाओ। घीमें चावल डाल दो दूधमें पूरी तल लो और भाईको प्रेमसे खिलाओ। उसने वैसा ही किया। पर न खीर ही बनी और न पूरी ही तैयार हुई। वह फिर पड़ोसिनोंके यहाँ गयी। उन्होंने कहा 'पगली दूधमें चावल डाल और घीमें पूरी तल।'

रोचना लगाकर भाईको पूरी खीर खिलायी। भाई खा-पीकर लौट चला। एक पूरी बच गयी थी। वह उसने कुत्तेके आगे डाल दी। कुत्ता खाते ही ऐंठ गया। बहनने डरकर कहा 'हे भगवान्! यह क्या हुआ? मेरे भाईका भी कहीं ऐसा ही हाल न हो! मैंने भाजके पीसे आटेकी पूरी कैसे खिला दी? वाल बिखेरे नंगे पाँव वैसे ही भागी। थोड़ी ही दूरपर उसने पेड़के नीचे देखा कि उसका भाई कुत्तेकी तरह ऐंठा पड़ा है। बहन वहीं बैठकर विलाप करके रोने लगा। ऊपरसे

---

१ रूईके तार खींचकर बीच-बीचमें रोली लगाकर ऐंठन दे दी जाती है।

शिव पार्वती आ रहे थे। पार्वतीने पूछा, "क्या हो गया बेटी ?" बहनने कहा, "क्या बताऊँ मैया! मैयादूजका पीसा आटा अपने भाईको खिला दिया वह मर गया! अब क्या करूँ? माँको मुँह कैसे दिखा ऊँगी ?" पार्वतीने शिवजीसे कहा कि इसे जिला दो। शिवजीने कहा, 'स्त्रियोंकी यही बात सबसे बुरी है। ये बड़ी जल्दी पिघल जाती हैं। 'अच्छा लो' कह कर शिवजीने अपनी चिगुनियाँ काटकर उसके भाई पर खून छिड़क दिया।

भाई आँख मलता हुआ उठ बैठा और बोला 'आज मैं बहुत सोया। बहनने बताया कि मेरी भूलसे तुम तो सदाके लिए सो गये थे। पर शंकर-पार्वतीकी कृपासे तुम बच गये। भाईने कहा 'यहाँ तो तुमने बचा लिया पर यहाँसे घरतक कौन बचायेगा ?' तब बहनने रास्तेका सारा हाल सुना तो भाईसे बोली 'घर लौट चलो। मैं तुम्हारे साथ चलूँगी। घर आकर उसने सब सामान तैयार किया। नाग-नागिनके लिए दूध बाघ-बाघिनके लिए मांस गंगा-जमुनाके लिए चुनरी और पियरी आदि सब सामान लेकर भाईके साथ चली। राहमें जो-जो मिला उसकी पूजा की और उनको भोजन दिया। सभी बड़े प्रसन्न हुए। इस तरह वह अपने भाईको बचाकर घर आयी और माँ से बोली, 'माँ तुम्हारे पूजा-पाठ न करनेसे आज भाईकी न जाने कितनी आफ़तें आयीं पर भगवान्की कृपासे बहनके प्यारसे टल गयीं। माँने लड़कीकी बड़ी सराहना की। और तभीसे सभी देवी-देवताओंकी पूजा करने लगी।

५

गंगा और जमुनामें बड़ी पक्की दोस्ती थी। दोनों एक-दूसरेपर जान देतीं। एक दिन गंगा जमुनाके घर गयीं। जमुना बैठी रो रही थीं। गंगाने पूछा बहन! इतनी दुःखी क्यों हो ? क्या हुआ ?" जमुनाने कहा, "क्या बताएँ बहन ? बारह बरससे हमारा भाई नहीं

आया और आज भैयादूज है। बारह सालसे भाईके रोचना नहीं लगा सकी।"

गगाने कहा, 'बहन! अब तुम मत रोओ। भैयादूजकी सब तैयारी करो। मैं अभी तुम्हारे भाईको बुलाये लाती हूँ।' गंगा हहराती-घहराती जमुनाके भाई यमराजके दरवाजेपर पहुँचीं। यमराज कचहरीमें बैठे कुछ लिखा-पढ़ी कर रहे थे। द्वारपालने भकराकर सन्देश दिया, 'महाराज! गंगा मैया आयी हैं। सुनते ही यमराज बाहर आये और बड़े आदर भावसे गगाका स्वागत किया। प्रेमसे अन्दर लाये। "क्यों भागीरथी बहन! आज कैसे कष्ट किया?' गगाने कहा, "आज बारह बरस हो गये। तुम एक बार भी अपनी बहनके यहाँ नहीं गये। जमुना बहन रोया करती हैं। आज भैयादूज है। मेरे साथ अभी चलो। यमराजने कहा "मेरे पास बहुत काम है। बिलकुल फ़ुरसत नहीं मिलती। कैसे जाऊं! जमुना बहनसे मेरे लिए क्षमा माँग लेना। गंगाने कहा 'यह सब कुछ न होगा। तुम्हें मेरे साथ चलना पड़ेगा।'

यमराज समझ गये कि अब बिना जाये काम नहीं बनेगा। जानेकी तैयारी की। कपड़-लत्ते गहने बरतन गाड़ियोंमें लादकर चले। घर पहुँचकर गंगाने कहा, "आओ जमुना बहन! तुम्हारे भाई आये हैं। लगाओ रोचना।" जमुना अपने भाई यमराजको बड़े प्यारसे भीतर ले गयीं रोचना लगाया। यमराजने गाड़ियोंमें लदीं सभी चीजें अपनी बहनको दीं। फिर जमुनासे बोले, 'कुछ और माँगो बहन।' जमुनाने माँगा 'सब बहनोंको तुम-जैसा चीरजीवी भाई मिले। और जो भाई-बहन आजके दिन जमुना स्नान करें और रोचना लगवायें उन्हें तुम कभी मत सताना।

तभीसे यमद्वितीयाको मथुरामें भाई-बहनके यमुना स्नानका बड़ा माहात्म्य है।

■

मनचीता रानीकी पूजा

भैयादूजके बाद पड़नेवाली तीजको मनचीता रानीकी पूजा स्त्रियाँ करती हैं। स्त्रियाँ सौभाग्य और निर्धनताको दूर करनेके लिए यह व्रत करती हैं। कथाके अनुसार मनचीताकी भाँति सभी अपने अटल सौभाग्यकी कामना करती हैं। इस पूजा और कथाका पुराणोंमें कोई उल्लेख प्राप्त नहीं होता। यह व्रत अधिक प्रचलित नहीं है। अवधी क्षेत्रके फतेहपुर जिलेमें गंगा किनारेके कुछ गाँवोंमें होता है। फिर भी कथा अत्यधिक रोचक है।

कथा

एक गरीब ब्राह्मण था। उसे भोजनके भी लाले पड़े रहते। उसने यह सोचकर एक बकरी पाली कि पातों-फूली खायगी और दूध देगी। कुछ तो सहारा हो ही जायेगा। उस बकरीको वह बड़े प्यारसे रखता। हमेशा अपने साथ रखता। गंगा नहाने जाता तो उस बकरीको भी ले जाता। वह भी नहाती। एक दिन बकरी गंगामें डूब गयी। ब्राह्मणको बहुत दुःख हुआ। गंगा किनारे बैठकर वह विलाप करने लगा। उधरसे विचरण करते हुए शंकर-पार्वतीजी निकले। उन्होंने उसे रोते हुए देखकर पूछा। ब्राह्मणने सारा किस्सा बतला दिया। शंकर भग वानने उस बकरीको कन्या बना दिया। आधी रातको उस कन्याके मुँहम सदा मन सोनैका फूल फूलता। ब्राह्मण बहुत जल्दी धनवान् हो गया।

एक दिन ब्राह्मण कथा बाँचने कहीं चले गये थे। इधर उनके यहाँ

एक भिखारी भीख माँगने आया। वैसे तो हमेशा ही आया करता था लेकिन आज ब्राह्मण नहीं था सो ब्राह्मणीने पूछा, "महाराज छोटी लोगे या बड़ी।' भिखारीने कहा 'मैया छोटी अति भली, बड़ी भी अति भली।' ब्राह्मणीने छोटी लड़कीका हाथ पकड़ा दिया। भिखारी उसे लेकर चला गया। बादमें जब ब्राह्मण आया तो उसे मालूम हुआ कि उसकी सवा मन सोनेका फूल फूलनेवाली कन्या चली गयी है। ब्राह्मण भिखारीकी खोजमें निकल पड़ा। ढूँढ़ते-ढूँढ़ते बड़ी मुश्किलसे आखिर वह भिखारी मिल गया। उसने अपनी कन्या माँगी पर भिखारीने देनेसे इनकार किया। और लोगोंने भी ब्राह्मणको समझाया कि भला कोई दानमें दी हुई चीज वापस लेता है। अब तो यह भिखारीकी हो गयी। ब्राह्मण हताश होकर लौट आया और वह कन्या भिखारीके पास रहने लगी। भिखारीने उस कन्याके साथ अपना विवाह कर लिया।

परन्तु ब्राह्मण भी हार माननेवाला नहीं था। वह आधी रातमें ब्राह्मणीको उस भिखारीके घर भेजता। वह रोज आकर सवा मन सोने का फूल अपनी कन्यासे ले आती। काफ़ी दिनों तक यही क्रम चालू रहा। एक दिन भिखारीने पूछा 'तुम्हारी माँ रोज रातमें बारह बजे क्यों आती है?' कन्याने भिखारीको सारा भेद बतला दिया। रातको भिखारीने सब दरवाजे बन्द कर दिये और आधी रात होनेकी राह देखने लगा। होते-करते आधी रात हुई और कन्याके मुँहमें सवा मन सोनेका फूल फूला जिसे भिखारीने तोड़ लिया। उधर ब्राह्मणी भटक-भटककर बड़बड़ाती हुई लौट गयी। परन्तु वह बहुत नाराज हुई और तुरन्त सुबह ही उसने कुछ आदमियोंको भेजकर उस भिखारीको मरवा डाला। लाशको भी इधर-उधर करवा दिया। परन्तु कन्याने लाशको ढूँढ़ निकाला। लाश लेकर वह विलाप करने लगी। रोते रोते सुबहसे शाम हो गयी। उधरसे विचरण करते हुए शंकर-पार्वती निकले और उन्होंने देखा कि उनकी दी हुई कन्या फूट-फूटकर रो रही थी। शंकर-पार्वतीने

आकर रोनेका कारण पूछा। कन्याने सारी कहानी कह सुनायी। पार्वतीजीको बहुत दया आयी और उन्होंने अपनी छिगुनियाँ चीरकर लाशपर छिड़क दी। भिखारी उठकर बैठ गया।

फिर रात हुई। भिखारीने फिर दरवाजे बन्द कर दिये और आधी रातको सदा मन लानेका फूल तोड़ लिया। ब्राह्मणी आज भी निराश लौट गयी। उसे पता हो गया कि भिखारी जिन्दा हो गया है। दूसरे दिन उसने भिखारीको फिर मरवा डाला और उसका सिर अपने पास मँगवा लिया। भिखारी अब कैसे जिलाया जायेगा। कन्या बिना सिर की लाश लिये फिर विलाप करने लगी। कलकी तरह आज भी शंकर पार्वती विचरण करते हुए उधरसे निकले और कन्याको फिर रोते देखा परन्तु लाशका सिर नदारद देखकर सब समझ गये। अन्तर्यामी भगवान् सब कुछ समझकर हँसे। कन्याको धीरज बँधाया। खुद भिखारी का रूप धारण किया और पार्वतीजीने बिल्लीका रूप बनाया और दोनों ब्राह्मणके घर पहुँचे। भिखारीके रूपमें शंकर भगवान् ब्राह्मणके दरवाजेपर भीख माँगने लगे। परन्तु ब्राह्मणी अपनी आँचर नीचे कटे सिरको दबाये चरखा कातती रही और भीख देनेके लिए नहीं उठी। इसी तरह शाम हो गयी। परन्तु भिखारीके रूपमें शंकर भगवान् डटे रहे और भीख माँगते रहे। ब्राह्मणी ऊबकर उठी और सिरको कठौता के नीचे ढाँक दिया और गाली देती हुई हाथमें डण्डा लेकर बाहरकी भी ओर दौड़ी ठाड़ रहु मासिकाटे दहिजार।" इतनेम मौका पाकर पार्वतीजी पमारेकी राह भीतर घुस गयीं और कठौता उठाकर सिर निकाला और पमारेके ही रास्ते ले भागीं। कठौतेकी आवाज सुनकर ब्राह्मणी भीतर भोड़ा और शंकर भगवान् यह कहते हुए भागे— तुम्हारे यहाँ की भीख कौन लेगा—तुम्हारे यहाँ तो मुरदा मिलता।' और पार्वती और शंकर भगवान् दोनों सिरको लेकर अन्तर्धान हो गए। कन्या के पास पहुँचकर उन्होंने भिखारीको फिरसे जिला दिया। कन्याने बहा

अब इसको यहाँ मत रखो। कहीं अन्यत्र भेज दो। कहीं लेकर चली जाओ। समझाकर शंकर-पार्वती अन्तर्धान हो गये।

इसी कन्याका नाम मनचीता रानी था। उसने अपना कगन पिटारी देकर अपने पतिसे कहा, उस पार चले जाओ। उस पार मेरी बहन है वहीं रहना नहीं तो फिर कोई खतरा हो जायेगा। उसका पति नावमें बठकर अपनी पत्नीकी बहनके घरके लिए चला। परन्तु गंगाजीमें वह पिटारी गिर गयी। उसके बचानेमें भिखारी भी डूब गया और उसको एक मछली निगल गयी। उस पार उसकी बहन पूजा कर रही थी। पिटारी बहते-बहते उस पार लगी और उसकी बहनने पिटारी खोली तो कंगन इत्यादि मिले। उसने उन्हें पहचान लिया कि ये तो मेरी बहनके हैं। उसमें एक पत्र भी मिला जिससे उसे सारी बातें मालूम हो गयीं। उसने जाल डलवाया उसमें वह मछली भी मिली जिसने उसकी बहनके पतिको निगल लिया था। मछलीके पेटसे भिखारी निकला। उसे वह घर ले गयी और अपनी बहनकी धरोहर समझकर बड़ी हिफ़ाजतसे रखने लगी। कुछ दिनों बाद मनचीता रानी भी अपने पतिसे आ मिली और सभी लोग आनन्दसे रहने लगे। ब्राह्मण फिर उसी तरह ग़रीबीमें दिन काटने लगा। तभीसे स्त्रियाँ मनचीता रानी की पूजा करने लगीं।

■

देवोत्थानी एकादशी

देवोत्थानी एकादशीको प्रबोधिनी एकादशी भी कहते हैं। अवधी *क्षेत्रके गाँवोंमें देवोत्थानी शब्दके बिगड़े हुए रूप डिठवनका प्रयोग होता* है। आषाढ़ मासकी शुक्ल हरिशयनी एकादशी को भगवान् विष्णु वर्षा के चार महीनोंके लिए क्षीरसागरमें जाकर शेष-शैयापर शयन करते हैं और कार्तिक शुक्ल प्रबोधिनी एकादशीको उठते हैं। इस बीचमें अर्थात् भगवान् विष्णुके शयनकालमें विवाहादि-जैसे मांगलिक कार्य नहीं किये जाते। तुलसी-पूजाकी दृष्टिसे आजका पर्व अत्यधिक महत्त्वका है क्योंकि आजके दिन सन्ध्याको तुलसीका विवाह विष्णु भगवान्से किया जाता है। *खेतोंसे आज पहले-पहल ईख काटी और चखी जाती है।* अन्य फलोंके साथ ईख भी पूजामें चढ़ायी जाती है। हेमाद्रि और सनत्कुमार संहितामें आजके दिन भीष्मपंचक व्रतपर अधिक बल दिया है। इसी एकादशीके दिन शर शैयापर सोते हुए भीष्म महाराजने दानधर्म, राजधर्म और मोक्षधर्म कहा अर्जुनसे पानी माँगा और अर्जुनके बाणसे निकले हुए गंगाजलको ग्रहणकर परमधामको सिधारे। बालब्रह्मचारी परमपवित्र सत्यव्रत महात्मा गांगेय-जैसे पितामहका पूजा अर्घ्य देकर पुत्रहीन पुरुष भी अपनी मनोकामनाएँ प्राप्त कर सकता है। आजके दिनसे 'भीष्मपंचक' पाँच दिनका व्रत शुरू होता है।

गाँवोंमें इस एकादशीका विशेष माहात्म्य है। स्त्रियाँ प्रातःकाल उठकर स्नानादिसे निवृत्त होकर ऐपन चौरीठ मिलाकर आँगनमें विष्णु भगवान्के चरणोंको एक विस्तृत एवं सुन्दर अल्पनामें अंकित करती हैं और प्रत्येक कक्षमें उपयोगके अनुसार भिन्न भिन्न प्रकारके चित्र

कारी बनाती हैं। इस चित्रकारीको कार्तिक पूरणमासीको ही लीपती हैं। विष्णु भगवान्‌के चरणोंको दिनके समय ढाँक देती हैं जिससे धूप न लगे। रातमें आधी रात बीतनेपर स्त्रियाँ ईखके अगौढ़ेसे सूप बजाती हैं जिसका उद्देश्य भगवान् विष्णुको जगाना है। जहाँ शास्त्रीय विधिसे पूजन होता है वहाँ रात्रिमें भगवान् विष्णुका स्तोत्रपाठ और भगवत्कथा-के अनन्तर शंख घण्टा-घड़ियाल बजाकर भगवान्‌को जगाया जाता है। जगानेका मन्त्र—

उत्तिष्ठोत्तिष्ठ गोविन्द ! त्यज निद्रां जगत्पते ।
त्वयि सुप्ते जगन्नाथ ! जगत्सुप्तमिदं भवेत् ।
उत्तिष्ठोत्तिष्ठ ! वाराहदंष्ट्रोद्धृतवसुन्धर ।
हिरण्याक्षप्राणघातिन् ! त्रैलोक्ये मङ्गलं कुरु ॥

इस प्रकार जगाकर मन्दिरमें या सिंहासनमें स्थापित करते हैं। कुछ लोग इस समय भगवान् विष्णुका तुलसीके साथ विवाह कराते हैं और बड़े उत्साहसे दहेज इत्यादि देते हैं और तमाम लोगोंको भोजन कराते हैं। विष्णु भगवान्‌को रथमें बिठाकर सारे नगरमें उनकी सवारी निकालते हैं। अनेक स्थानोंपर उनका 'डोल' सजाते हैं और कन्धोंमें लेकर बस्तीमें घूमते हैं।

यहाँपर एकादशी व्रत सम्बन्धी दो कथाएँ दी गयी हैं जिनमें व्रतके माहात्म्यको प्रतिष्ठित किया गया है। पहली कथामें यह बतानेका प्रयत्न किया गया है कि दान-दक्षिणा तथा बड़े-बड़े प्रदर्शनोंसे भगवान्‌के दर्शन नहीं होते। भगवान्‌के दर्शनोंके लिए हृदयकी निर्मलता और अटल विश्वास चाहिए। दूसरी महत्त्वपूर्ण बात यह है कि भगवान् ऊँच-नीच-का भेद भाव नहीं रखते। धनी-गरीब शिक्षित और अशिक्षितमें भेद भाव नहीं करते। वह तो केवल भावके भूखे हैं जो अटल विश्वाससे उत्पन्न होता है। इस कथामें अहीरके माध्यमसे व्रती एवं धर्मभीरु राजा को भगवान्‌के दर्शन होते हैं। अहीरको भगवान् स्वयं विमानपर बिठा

कर ले जाते हैं और व्रत-उपवास, पूजा-पाठका विस्तृत आयोजन करने वाला राजा भगवान्को नहीं पाता। दूसरी कथामें राजाकी परीक्षा विष्णु भगवान्-द्वारा ली जाती है जिसमें राजा अपनी पत्नीकी सहायता एवं प्रेरणासे सफल उतरता है। इस कथामें पुत्रकी तुलनामें धर्मको विशेष महत्त्व प्रदान किया गया है। कहानीका दूसरा पक्ष है रानीका महान् त्याग एवं उत्सर्ग अपने ऐसे पतिके प्रति जो रानीपर सौत बिठाता है। वह छोटी रानीकी इच्छा पूरी करनेके उद्देश्यसे अपने बेटेका बलि-दान कर देनेके लिए तैयार है परन्तु एकादशीके व्रतमें किसी प्रकारका खण्डन नहीं आने देती।

कथा

एक राजा था। उस राजाके राज्यमें एकादशीको कोई खाना नहीं खाता था। नौकर-चाकर, जानवर तक किसीको भी अन्न नहीं दिया जाता। एक दिन किसी दूसरे राज्यसे एक अहीर आया और राजासे कहने लगा कि मुझे नौकर रख लो। राजाने एक शर्तपर उसे रखना मंजूर किया। शर्त यह थी कि हर दिन सब-कुछ मिलेगा पर एकादशीके दिन अन्न नहीं मिलेगा। उसने नौकरीके लालचमें बात मान ली। उसको हर रोज उसकी खुराकके हिसाबसे आटा दाल, चावल दे दिया जाता। वह सब सामान लेकर नदी किनारे खाना बनाता और खाता था। जब पन्द्रहवें दिन एकादशी पड़ी तो राजाने उसे फला-हारका सामान दिलवा दिया। उसने राजासे कहा 'इससे तो मेरा पेट नहीं भरेगा महाराज! मैं तो भूखों मर जाऊँगा। मुझे अन्न दिया जाये। मैं एकादशीका व्रत नहीं रखता।' राजाने कहा कि आज हमारे राज्यमें खानेको अन्न नहीं मिलता। फिर तुमने हमारी शर्त मानी है। पर वह न माना और भूखों मर जानेकी बात दोहराता रहा। राजाने अपना पीछा छोड़ानेके लिए आटा, दाल-चावल दिया

दिया। हमेशाकी तरह वह नदीपर पहुँचा और खाना बनाया। जब बना चुका तो भगवान्‌को बुलाने लगा, "आओ भगवान्! भोजन तैयार है।' भगवान् पाँवोंमें चन्दनकी खड़ाऊँ पहने और पीताम्बरी धोती पहने, चतुर्भुज रूप धारण किये आ पहुँचे और उन्होंने किसानके साथ प्रेमसे भोजन किया। खा-पीकर भगवान् अन्तर्धान हो गये और वह अपने कामपर लगा।

पन्द्रहवें दिन फिर एकादशी पड़ी। अहीरने राजासे कहा, "राजा साहेब उस दिनसे मुझे दुगुना सीधा-सामान देना। उस रोज तो मैं भूखा ही रह गया।' राजाने पूछा, तुम भूखे क्यों रह गये? क्या सीधा तुम्हारे लिए काफी नहीं था।" अहीर बोला "नहीं महाराज! बात ऐसी है कि हम खाते हैं और हमारे साथ भगवान् भी खाते हैं।' राजाने कहा 'मैं नहीं मान सकता कि तेरे साथ भगवान् खाते हैं। मैं इतने व्रत करता हूँ – दान देता हूँ – पर भगवान्‌ने कभी दर्शन तक नहीं दिये और तू व्रत-उपवास भी नहीं करता फिर भी भगवान् तेरे साथ भोजन करते हैं।" अहीरने कहा 'अगर आपको मेरे कहेका विश्वास नहीं है तो चलकर खुद देख लीजिए।' एकादशीको राजा अहीरके साथ नदीपर गये। अहीरने वहीं नदी किनारे सीधा रख दिया और कण्डा बिनने लगा। कण्डे रखकर स्नान किया और भोजन बनाया। राजा वहीं एक पेड़की आड़में बैठकर अहीर रामके सब कृत्य देखने लगा। अहीर जब खाना बना चुका तो बोला आओ भगवान्, भोजन पाओ।" पर भगवान् नहीं आये। वह सारा दिन बोलता रहा पर भगवान् नहीं आये। शाम हो गयी। अहीर मनमें बड़ा दुःखी हुआ। उसने फिर बुलाया, 'आओ भगवान्! मेरी लाज रखो। नहीं तो मैं नदीमें डूबकर जान दे दूँगा।' भगवान् फिर भी न आये। तब अहीर उठकर नदीकी ओर चला और डूबनेके लिए जैसे ही नदीमें छलाँग मारनेवाला था कि भगवान्‌ने लपककर उसे रोक लिया। उसके

साथ बैठकर भोजन किया। राजाने भी देखा कि सचमुच ही भगवान् उसके साथ भोजन करते हैं। भगवान् अहीरको विमानमें बिठाकर दूसरे लोक चले गये। उस अहीरकी निश्छल भक्तिसे राजाको भी भगवान्‌के दर्शन मिले। राजाने सोचा कि व्रत-उपवाससे क्या होता है जबतक मन साफ़ न हो। अहीरने कोई व्रत उपवास नहीं किया पर भगवान्‌पर उसका सच्चा प्रेम और अटल विश्वास था। राजाको अहीरकी बदौलत ज्ञान प्राप्त हुआ और अन्तमें स्वर्ग मिला।

२

एक राजा थे। उनके राज्यमें प्रजा बड़ी सुखी थी। एकादशीके दिन सभी राजा रानी, नौकर चाकर यावत् प्रजा व्रत रखती। एकादशी के दिन कोई अन्न न बेचता। परदेशीको भी अन्न न मिलता। सब लोग फलाहार करते। और जब इस प्रकार उस सारे राज्यको व्रत करते हुए बहुत दिन हो गये तो एक दिन विष्णु भगवान्‌ने परीक्षा लेनी चाही। उन्होंने एक बहुत ही सुन्दरी औरतका रूप धर लिया और नगरके एक कोनेमें बैठ गये। संयोगसे उस दिन राजा स्नानके लिए गये थे। नहाकर लौट रहे थे तो देखा कि सुन्दरी सुनसान स्थानमें गुमसुम बैठी हुई है। राजाने उस परम सुन्दरीका रूप देखा तो भौंचक्का-सा देखता ही रह गया। राजा उसपर मोहित हो गया। राजाने पूछा "सुन्दरी! यहाँ अकेले क्यों बैठी हो?" सुन्दरीने जवाब दिया 'मैं बहुत ग़रीब हूँ। मेरे कोई नहीं है न माँ बाप और न भाई-बहन। इसीसे यहाँ बैठी हूँ कि चलूँ नगरमें किसीसे सहायता माँगू।" राजा तो उसपर मोहित ही था बोला 'और कहीं क्या जाओगी? मेरे साथ महलमें चलो। मैं तुम्हें अपनी रानी बनाऊँगा।' सुन्दरीने कहा "चलनेके लिए तो मैं तैयार हूँ मगर आप मेरी तीन शर्तें मानें तो।" राजा उसपर अपना दिल निछावर कर चुके थे। अब उसके बिना उनका जीना दूभर हो

जायेगा। इसलिए राजाने लड़कीकी तीनों शर्तोंको मंजूर कर लिया। उसकी पहली शर्त थी कि जो मैं कहूँगी वही राजा करेगा, दूसरी शर्त थी कि राजापर मेरा ही पूरा अधिकार होगा और तीसरी शर्त थी कि मैं जो कुछ बनाऊँगी वही राजाको खाना पड़ेगा। यदि एक भी शर्तका पालन न हो सका तो मैं पहले बेटेका सिर लूँगी। राजा तो उसके सौन्दर्यपर इतना बेवस हो गया था कि बिना चीं चपड़ किये उसने सब-कुछ मान लिया।

जब दूसरी एकादशी पड़ी तो रानीने हुक्म फिरवा दिया कि नगर-की बाजारोंमें और दिनोंकी तरह अन्न बेचा जाये। घरमें उसने माँस मछली मूली-बैंगनका साग मूँगकी दाल बनायी। जब राजा स्नान ध्यान, पूजा-पाठ करके आये तो रानीने कहा 'चलो राजा भोजन कर लो"—और थाल परोसकर राजाके सामने ले आयी। राजा बोला 'रानी! आज तो मैं एकादशी उपासा हूँ। आज मैं यह सब खाना नहीं खाऊँगा। केवल फलाहार करूँगा। रानीने कहा राजा! आप वचन हार चुके हैं। आपको मेरी शर्त पूरी करनी होगी। अगर शर्त पूरी नहीं कर सकते तो अपने बड़े बेटेका सिर हाजिर कीजिए।' राजा बड़े असमंजसमें पड़ा। दुःखी मन बड़ी रानीके महलमें पहुँचा। रानीके सामने पहुँचकर रोने लगा और बोला, 'रानी! आज एकादशी है और छोटी रानीने माँस-मछलीका भोजन बनाया है। मुझसे आग्रह करती है कि मैं यह सब खाऊँ नहीं तो शर्तके अनुसार बड़े लड़केका सिर उसके सामने पेश करूँ? जो खाना खाता हूँ तो धर्म जाता है और नहीं खाता तो पुत्रसे हाथ धोना पड़ेगा। क्या करूँ? मेरा तो दिमाग़ काम नहीं करता।" रानीने कहा "राजा! धर्म मत छोड़ो। लड़केका सिर दे दो। धर्म गया तो सब कुछ गया पुत्र तो फिर भी मिल जायेगा। धर्म जाकर फिर नहीं आयेगा। इतनेमें बड़ा लड़का, जो खेलने गया था, आ गया और माँका दूध पीने लगा। माँकी आँखोंमें आँसू भर

आये। दो बूँद आँसू लड़केके मुँहपर गिरे। लड़का उठकर खड़ा हो गया और बोला, "तुम क्यों रोती हो माँ ? मुझे सब सच-सच बताओ, नहीं तो मैं दूध नहीं पिऊँगा।" माताने कहा, "बेटा! मैं इसलिए रोती हूँ कि तुम्हारे पिता बड़े धर्म-संकटमें पड़ गये हैं। छोटी रानीको अगर तुम्हारा सिर नहीं देंगे तो आज एकादशीके दिन उन्हें माँस-मछली खाना पड़ेगा। उनका धर्म जायेगा।' लड़केने कहा, 'मैं सिर देनेके लिए तैयार हूँ। पिताजीका धर्म नहीं जाने दूँगा।' रानी रोती जाती थी और लड़केका सिर हाथमें थामे खड़ी थी। राजाने तलवार निकाली और सिर काटनेके लिए उठायी त्यों ही रानी रूपधारी विष्णु भगवान्ने हाथ पकड़ लिया। अपना असली रूप प्रकट कर राजासे कहा 'हे राजन्! मैं तुम्हारी परीक्षा ले रहा था। तुम परीक्षामें पक्के उतरे। मैं तुमसे बहुत प्रसन्न हुआ। वरदान माँगो।" राजा रानी भगवान्के पैरोंपर गिर पड़े। बोले 'नाथ, आपका दिया सब कुछ है। हमारा उद्धार करो। उसी समय एक विमान आया। अपने पुत्रको राजपाट सौंपकर विमानमें चढ़ गये और एकादशीके प्रभावसे स्वर्गलोक पहुँचे। पुत्र धर्मपूर्वक राज्य करने लगा।

■

तुलसी पूजा

अवधी क्षेत्रके गाँवोंमें शायद ही कोई ऐसा घर मिले जहाँ तुलसीका बिरवा न हो। घरके आँगनमें बीचोबीच ऊँचा-सा अरहूना होता है जिसमें तुलसी लहलहाया करती है। तुलसीका माहात्म्य हमारे सारे देशमें है। पूजामें तुलसीकी पत्ती अनिवार्य उपकरणोंमें होती है। स्वास्थ्यकी दृष्टिसे भी तुलसी अत्यधिक उपयोगी है। घरकी वायु तुलसी से शुद्ध रहती है। शालिग्रामकी अथवा ठाकुरजीकी पूजा तुलसीकी पत्तीके बिना नहीं हो सकती। वैसे तो बारहो महीने तुलसीकी पूजा होती है और स्नानके बाद घरकी प्रत्येक स्त्री पानी चढ़ाती हैं परन्तु कार्तिक महीनेमें तुलसीका माहात्म्य विशेष होता है। नित्यप्रति साम काल सूखे आटेसे गोड़िया (विष्णु भगवान्के चरण जो देवोत्थानी एका दशीकी अल्पनाके मध्यमें बनते हैं) तथा सूर्य, चन्द्रमा इत्यादि अन्य देवता बनाये जाते हैं और घीका दिया जलाया जाता है। क्वाँरकी शुक्ल एकादशीसे देवोत्थानी एकादशी तक पूरे एक महीने तक गोड़िया डाली जाती है। गोड़िया सूर्यास्त होनेपर डाली जाती है और सूर्योदयके पूर्व लीप डाली जाती है। देवोत्थानी एकादशीसे कार्तिक पूर्णिमाको तुलसीके पास आटेकी गोड़िया नहीं डाली जाती क्योंकि आँगनमें ऐपनसे बनायी जाती है। इस अल्पनाको कार्तिक पूर्णिमा तक नहीं लीपा जाता परन्तु गोड़ियाको (विष्णु भगवान्के चरणोंको) धूपसे बचानेके लिए दिनमें ढँक दिया जाता है। कार्तिक पूर्णमासीको तुलसीकी पूजा बड़ी धूमधामसे की जाती है। बहुत जगह विशेष रूपसे वश्योंके यहाँ तुलसी का विवाह शालिग्रामके साथ धूमधामसे मनाया जाता है और हजारों

रुपये खर्च किये जाते हैं। यह विवाह कहीं कार्तिक शुक्ल नवमीको कहीं एकादशीको किया जाता है।

कार्तिक पूर्णिमाके नामसे यहाँपर जो कथा दी गयी है उसमें बुढ़ियाको तुलसीकी कृपासे ही बिना पापका लड़का प्राप्त होता है और सभी प्रकारके अन्य सांसारिक सुख भी मिलते हैं। पीपल, बरगद, आँवला, नीम इत्यादिकी पूजा तो नित्यप्रति होती है और सर्दी-बुखार तथा अन्य साधारण बीमारियोंमें तुलसीकी पत्तीके साथ बनाया काढ़ा दिया जाता है।

कथा

(कार्तिक पूर्णिमा)

एक बुढ़िया थी। बुढ़िया बड़ी भक्तिन थी। एक दिन आँधी आयी। उसकी पूजाके सामानवाली डलिया उड़ गयी। वह गयी उठाने तो उसके हाथमें काँटा लग गया। काँटा लगनेसे उसके हाथमें फफोला पड़ गया। नौ महीने तक वह फफोला न फूटा न बहा। नौ महीने बाद जब वह फफोला फूटा तो उससे एक मेंढक पैदा हुआ। बुढ़िया उसे पालने-पोसने लगी। बड़ा होनेपर बुढ़ियाने उसका विवाह किया। विवाह होनेपर बहू आयी। बहू बुढ़ियाकी सामेकी बेटी थी-भूसी और अपने पतिको अच्छा-अच्छा खिलाती।

यह था तो मेंढक पर रातमें सोलह बरसका सुन्दर कुँअर कन्हैया बन जाता और दिनमें मेंढकके खोलमें प्रवेश कर फिर मेंढक बन जाता और घर भरमें फुदकता फिरता। बेचारी बुढ़ियाको इसका कुछ भी पता नहीं था। रातमें जब बहू सो जाती तब बुढ़िया सोचती बिसूरती और बरबराती "न तुलसीकी पूजा करती न बयरिया डोलती, न डलेया

उड़ती न काँटा लगता, न भिकुड़ा पैदा होता, न बहुरिया आवति और न चूनी भूसी खायका मिलति।

लड़केने अपनी पत्नीसे पूछा कि अम्मा रातमें क्या बरबराया करती हैं? बहूने कहा, "अरे बुड्ढी है कुछ बरबराती होगी दुनिया-भरका प्रपंच।" लड़का इसी प्रकार रोज पूछता और बहू इसी प्रकार उसे समझा देती। एक दिन उससे न रहा गया और उसी रूपमें माँके सामने जाकर खड़ा हो गया। उत्तेजनामें वह खोल पहनना भूल गया। देखा कि अम्मा अभी भी बरबरा रही हैं। उसने पूछा, 'अम्मा! तुम रोज रातमें क्या बरबराया करती हो?' बुढ़ियाने देखा तो दंग रह गयी। उसका मेंढक बेटा सोलह बरस सुन्दर कुँवर कन्हैया बना खड़ा है। प्रेमसे बुढ़िया गद्गद हो गयी। उसकी आँखोंसे आँसू बहने लगे। थोड़ी देरमें अपनेको सँभालकर बोली, 'बेटा! बड़ा छल किया। मुझे यह रूप कभी न दिखाया। मेंढककी खोलमें ही मैंने तुम्हें देखा पर फिर भी सन्तोष किया।' अब तो भेद खुल ही गया था। लड़केने छिपने या भागनेकी कोशिश नहीं की। माँको धीरज बँधाते हुए बोला 'अम्मा! हमारा तुम्हारा ऐसा ही भाग्य था। इसलिए मैं तुम्हारे लिए मेंढक ही रहा। पर तुम बताओ कि तुम्हें क्या दुख है? तुम रोज रातमें कुछ कहती रहती हो।

माँने सारा क़िस्सा बताया। 'मैं तुलसीकी पूजा करती थी। एक दिन जोरसे हवा चली तो पूजाकी सामग्रीवाली डलिया उड़ गयी। उसे उठाने गयी तो हाथमें काँटा चुभ गया। हाथमें फफोला पड़ गया। नौ महीनेके बाद उसमें-से एक मेंढक पैदा हुआ। उसको मैंने अपने बेटे की तरह पाला-पोसा। बड़ा होनेपर विवाह किया। जबसे बहू घर आयी मेरे दुखके दिन आ गये। उस दिनसे मुझे खानको चूनी भूसी मिलने लगी। तुलसीकी पूजाका मुझे यही फल मिला।

यह सुनकर लड़केको बड़ा दुख हुआ। उसको अपनी पत्नीपर

बड़ा गुस्सा आया। गुस्सेमें उसने अपनी पत्नीको बहुत मारा। दूसरे दिनसे वह अपनी माँको अपने साथ बिठाकर खिलाता। एक थाली अपनी परसवाता और उसके साथ ही दूसरी थाली अपनी माँके लिए। अब वह अपनी माँका बड़ा ख्याल रखता और किसी प्रकारका कष्ट न होने देता।

तुलसीकी कृपासे बुढ़ियाको बिना पापका लड़का मिला और सब प्रकारका सुख।

■

कार्तिक माहात्म्य

कार्तिक माहात्म्यमें यमुना स्नानकी प्रधानता है। आश्विन मासकी पूर्णिमासे प्रारम्भ करके कार्तिककी पूर्णमासी तक यह स्नान चलता है। वैसे तो यह स्नान स्त्रियों और पुरुषों दोनोंके लिए है, परन्तु अवधी क्षेत्रमें अधिकतर स्त्रियाँ ही स्नान करती हैं। कुमारी कन्याएँ तो और भी अधिक उत्साह और चावसे स्नान करती हैं। पुण्यके परिणाम स्वरूप सुन्दर पति मिलनेकी सम्भावना बढ़ जाती है। अतः सुन्दर पति पानेकी कामनासे १२ १३ वर्षकी उम्रसे लड़कियाँ कार्तिक स्नानका अनुष्ठान प्रारम्भ कर देती हैं। इस अवस्थामें लड़कियोंपर बन्धन बढ़ जाते हैं और शासन कठोर हो जाता है। परन्तु कार्तिक स्नानके लिए उन्हें एक ऐसा अवसर मिलता है कि वे मुक्त होकर नदी किनारे जाकर स्नान कर सकती हैं। ब्राह्ममुहूर्तमें पौ फटनेके पहले ही स्नान किया जाता है। जिस क्षेत्रमें यमुना नहीं हैं, वहीं महत्त्व गंगाको प्राप्त है। जिनको गंगा-यमुना या अन्य कोई नदी नहीं मिलती तो वे घरोंमें ही कुएँ या नलके पानीसे पौ फटनेके पहले नहाती हैं। गंगा-यमुनामें स्नानका विशेष माहात्म्य है इसीलिए प्रायः लोग काशी, प्रयाग, मथुरा जैसे स्थानोंमें जाकर एक महीने तक रहते हैं। गंगा यमुना तक न पहुँच सकनेपर तालाब और नहरसे भी काम चला लिया जाता है। कार्तिक महीनेमें वैसे भी अनेक त्योहार होते हैं और यह प्रातःकालीन स्नान इस मासके धार्मिक महत्त्वको और भी बढ़ा देता है।

जिस प्रकार धर्मका ठेका एक प्रकारसे स्त्रियोंने ले लिया है उसी प्रकार इस क्षेत्रमें कार्तिक स्नानका दायित्व कुमारी कन्याओं तथा नव

विवाहितोंने ले लिया है। वयस्क और बुढ़ाएं बहुत ही कम संख्यामें कार्तिक स्नानके अनुष्ठानको करती हैं। वह शायद समझती हैं कि उन्हें अच्छा-बुरा जो भी पति मिल गया है वह ठीक है अब अब कुछ हो नहीं सकता तो कार्तिक स्नानसे कोई विशेष लाभ नहीं है। इस मनोभावनाके कारण पुरुष वर्ग तो नहीं ही नहाते। कुछ लोग शास्त्रीय विधानोंमें विश्वास करनेवाले कार्तिक स्नान करते हैं क्योंकि पुराणोंमें कार्तिक स्नानका बड़ा माहात्म्य बताया गया है। स्त्रियाँ पूरे महीने-भर मुँह-अँधेरे गंगा या यमुनाके किनारे जाकर स्नान करती हैं और वहीं किनारेपर बालूमें अनेक देवी-देवता बनाती हैं जिनमें महादेव-पार्वती मुख्य हैं। इनके अतिरिक्त गणेश, कार्तिकेय पीपलका पेड़, तुलसीका बिरवा पाँच 'बुढ़किया' (गौरा) इत्यादि अनेक चीजें बनाती हैं और उनकी पूजा करती हैं। पूजा करनेके बाद उन्हें विसर्जित कर दिया जाता है। विसर्जित करनेके समय स्त्रियाँ कहती हैं "तुम्हारी 'बुढ़किया' तुम्हारे साथ हमारी बुढ़किया हमारे साथ। शंकरकी आरती उतारते समय आरतियाँ गाती हैं तथा भजन गाती हुई घर लौटती हैं।

१

एक बूढ़ी थीं। कार्तिकके महीनेमें वे गंगा किनारे रहतीं और पूरे महीने भर बड़े 'भोरहरे' (सबेरे) गंगा-स्नान करतीं। स्नान करके बड़ी विधिसे राधा-कृष्णकी पूजा करतीं। पूजाके बाद वे हमेशा यही प्रार्थना करतीं जब मैं मरूँ तब तुलसीदल मेरे मुँहमें हो, गंगाजीका किनारा हो, कार्तिकका महीना हो और अन्तमें भगवान् कृष्णका कन्धा लगे।

धीरे धीरे भगवान् कृष्णकी कृपासे बुढ़ीका परिवार बढ़ने लगा। बेटे-बेटी पोता-पोती नाती पनाती और धन-धान्यसे घर भर गया। सभी बुढ़ीका बड़ा खयाल रखते और उसे बहुत प्यार करते। बूढ़ी अब

बहुत शिथिल हो चुकी थीं। कार्तिक महीना आया। सबने मना किया कि इस बार गंगा किनारे मत जाओ। घर ही में नहा लिया करो। पर बूढ़ा न मानीं। लड़केको लेकर गंगा किनारे पहुँचीं। पर दो चार दिनसे ज्यादा न चल सकीं और एक दिन प्राण पखेरू उड़ गये। लड़केने तुलसीदल मुँहमें रख दिया था। तुलसीदल मुँहमें, गंगाका किनारा कार्तिकका महीना। बूढ़ीका सभी मनचाहा हुआ। पूरा परिवार गंगा किनारे आ गया। बूढ़ीकी अर्थी बनायी गयी। उसपर बूढ़ीको लिटाया गया। सभी अर्थी उठाने लगे पर अर्थी जैसे धरतीसे चिपक गयी उठती ही न थी। तमाम भीड़ इकट्ठी हो गयी। सभीने कोशिश की पर अर्थी टससे मस न हुई। भगवान् कृष्ण बालरूपमें आये। पूछा कि क्या बात है? लोगोंने बताया कि एक बूढ़ीकी अर्थी नहीं उठती। अब एक-एक अंग काटकर उठायी जायेगी। बालरूप कृष्णने कहा लाओ मैं उठाऊँ। लोग हँसकर बोले, 'बड़े-बड़े बहिये गड़रेऊ थाह माँगें'। परन्तु वे अर्थी तक पहुँचे और बोले— लो उठाओ। उन्होंने एक कोना पकड़कर अर्थीको उठा दिया। लोगोंने बड़े आश्चर्यसे देखा कि अब बूढ़ीकी अर्थी चार कन्धोंपर है। और एक कन्धा उसी बालकका है।

इस तरह बूढ़ीकी लगनसे उसकी मनोकामना पूरी हुई। बूढ़ीके मुँहमें तुलसीदल गंगाका किनारा, कार्तिकका महीना और भगवान् कृष्णके कन्धोंपर अर्थी उठी।

२

एक माँ-बेटे थे। और एक बेटेकी स्त्री थी। बेटा बड़ा मातृभक्त था। अपनी माँके लिए जान निछावर करनेके लिए भी तैयार। बहू अपनी सासको देखकर उतना ही जलती थी। सास उसे फूटी आँखों न भाती थी। कार्तिकका महीना आया। माँने कहा बेटा, मैं कार्तिक नहाऊँगी। मुझे गंगा किनारे छोड़ आ। कार्तिक-भर मैं वहीं रहूँगी।'

आज्ञाकारी बेटेने कहा "बहुत अच्छा।" वह बाजार जाकर माँके लिए घी मेवा आदि सामान ले आया और अपनी स्त्रीसे बोला, "अम्मा गंगा वास करेंगी। उनके लिए कुछ ज्यादा लड्डू बना दो। बहूने सब सामान तो चुराकर रख लिया और थोकरके लड्डू बनाये, वह भी गिनतीमें तीस। महीनेमें तीस दिन और तीस लड्डू—एक लड्डू रोजका हिसाब। एक डिब्बेमें लड्डू रखकर ताला लगा दिया और ताली सासके गलेमें बाँध दी और बड़े प्यारसे बोली, 'अम्मा, कलेऊके लिए लड्डू हैं रोज खा लिया करना। उसकी चालबाजीका किसीको पता न चला।'

लड़का माँको कन्धेपर बिठाकर गंगा किनारे ले आया। एक फूस-की झोपड़ी बनायी और सब इन्तजाम करके लौट आया। बुढ़िया रोज सवेरे बहुत तड़के उठती। गंगा नहाती पूजा करती और भगवान्‌का भोग लगाती। भोग लगाते ही भगवान् प्रकट हो जाते और कहते 'ला मेरे भोगका लड्डू।' बुढ़िया बड़ी खुशीसे एक लड्डू डिब्बेसे निकालकर दे देती। अब चूँकि लड्डू तीस ही थे इसलिए वह उन्हें खा भी नहीं सकती थी। भगवान्‌के लिए कम पड़ जाते। इसलिए बालूका एक लड्डू बनाती और आँख मूँदकर, भगवान्‌का नाम लेकर बालूका लड्डू खा लेती। और इसी प्रकार गंगाजल पीकर सारा दिन बिता देती। इसी तरह पूरा महीना बीत गया। तीसवें दिन भगवान् आये और बोले "बूढ़ी मैं तुमसे प्रसन्न हूँ—वर माँगो।' बुढ़ियाने कहा, 'मैं वर क्या माँगूँ? ऐसा करो कि मेरी भक्ति तुममें बनी रहे और मुझे कुछ न चाहिए।' भगवान् एवमस्तु' कहकर चले गये। उसी समय झोपड़ी की जगह महल हो गया। दास-दासियाँ, रथ, हाथी सभी कुछ हो गया।

इधर बेटा अपनी माँके लिए चिन्तित होता। और कहता कि जाऊँ, अम्माको ले आऊँ। कार्तिक महीना अब पूरा होनेवाला है। उसकी पत्नी बिनग उठती। कहती, लिवा लाना अभी जल्दी क्या है? बड़े 'अम्मासे बने रहते हो। वह रुक जाता। परन्तु जब कार्तिक

समाप्त हुआ तो बेटा गंगा किनारे पहुँच गया। वहाँ पहुँचकर वह हैरान हुआ क्योंकि झोपड़ीका कहीं पता न था। वह इधर-उधर झोपड़ी ढूँढ़ता और रोता जाता। तब एक पण्डेने बताया—तुम्हारी माँपर तो भगवान् प्रसन्न हुए हैं। यह महल तुम्हारी माँका ही तो है। बेटा झपट कर महलमें घुस गया और लपककर माँसे मिला। और बड़े आदरके साथ माँको घर लिवा लाया। माँने कहा 'ब्रह्मभोज करूँगी।' बेटेने कहा "अवश्य। बहूने बड़ो बाधाएँ डालीं पर ब्रह्मभोज हो ही गया। बुढ़िया बड़ी भक्तिसे भगवान्का भजन करने लगी।

दूसरे साल कार्तिकका महीना आया भी न था कि बहू रट लगाने लगी, "मेरी माँको भी गंगा नहला दो मेरी माँको कार्तिक नहला दो।' वह बोला 'अरे माई कार्तिक तो आने दो! तुम्हारी माँको भी कार्तिक नहला दूँगा।' कार्तिक आया। बेटा जैसे अपनी माँके लिए बाजारसे सामान लाया था वैसे ही फिर ले आया। उसकी स्त्रीने अपनी माँके लिए बड़ी विधिसे घी और मेवेके लड्डू बनाये। डिब्बेमें रखकर ताला लगा दिया और चलते समय माँके गलेमें ताली लटका दी। दामाद अपनी सासको भी अपने कन्धेपर बिठाकर गंगा किनारे एक झोपड़ीमें छोड़ आया।

सास रोज सबेरे उठती और बिना हाथ-मुँह धोये दो-चार लड्डुओं-से कलेवा करती और तब दूसरे कामोंमें हाथ लगाती। भगवान लड्डू माँगने आते तो वह दुतकार देती, भाग दाढ़ीजार कहींका! बिटियाने लड्डू मेरे लिए बनाये हैं तेरे लिए नहीं।' तीस दिनके बाद भगवान् आये, और बोले, 'बूढ़ी वर माँगो। बूढ़ीने कहा 'जैसा मेरी समधिनको दिया वैसा ही मुझे दो। भगवान्ने कहा, 'तेरे कर्म भी वैसे हैं?" भगवान्ने उसकी नाक काटकर उसे सुअरिया बना दिया। अब सोँ-सोँ करती वह गंगा किनारे घूमा करती।

इधर कार्तिक महीनेके पूरे होनेके पहले ही पत्नीने कहना शुरू कर

दिया था कि "अम्माको लिवा लाओ।" आदमी कहता "अभी क्या है- कार्तिक पूरा तो होने दो।" होते-करते कार्तिक भी पूरा हुआ। वह गंगा किनारे पहुँचा और सासको ढूँढ़ने लगा। उसे सास कहीं न दिखाई दी। हारकर उसने पण्डोंसे पूछा। एक पण्डेने उधरसे आती हुई एक सुअरिया-की ओर इशारा कर दिया और कहा, 'यह है तुम्हारी सास। जैसे कर्म किये वैसा ही पाया।' दामाद अपनी सुअरिया-सासको लेकर घर लौटा। और जब उसने सारा हाल अपनी पत्नीसे कहा तो वह छाती पीट-पीट कर रोने लगी। बेटेने कहा 'तुम्हारी माँ बिना भक्तिके गयी थीं और उन्होंने भगवान्का अपमान किया उसीका फल है।'

पण्डित बुलाये गये। उनसे विचार किया गया कि इनका इस शरीरसे कैसे छुटकारा मिलेगा ? पण्डितोंने बताया कि यह इसी तरह बारह वर्ष गंगा किनारे घूमती रहे। और हर गंगास्नान करनेवाला अपनी गीली धोती इसके सिरपर निचोड़े तो यह पुनः मानवी हो जायेगी।

बारह वर्ष तक उसने सुअरियाके रूपमें भगवान्के अपमानका दण्ड भोगा और अन्तमें उसे फिर मानव शरीर प्राप्त हुआ।

■

सकठ

(संकट चतुर्थी)

माघ मासके कृष्णपक्षमें चतुर्थीके दिन सकठका त्योहार मनाया जाता है। वर्षके प्रत्येक मासकी कृष्ण चतुर्थीको गणेश चतुर्थी मानी जाती है। माघ कृष्ण चतुर्थीको संकटहर गणपतिकी पूजा होती है जिसका नारद पुराणमें विस्तृत वर्णन किया गया है। यह व्रत सकटोंका विनाश करनेवाला और सभी अभिलाषाओंको पूर्ण करनेवाला है।

परन्तु अवधी क्षेत्रमें इसका लौकिक रूप एकदम भिन्न है क्योंकि यहाँ गणपति पूजनका कोई आयोजन नहीं होता। हमारे यहाँ आजके दिन सकठ माताकी पूजा होती है। अनेक प्रकारके पकवान बनते हैं। भुने हुए अनाजके गुड़की चाशनीमें डालकर लड्डू बनाये जाते हैं। आज के दिन बच्चोंको खानेके लिए अनेक प्रकारकी चीजें मिलती हैं जिससे वे बहुत प्रसन्न रहते हैं। खुश होकर गाते हैं—'आज मोरे सकठ, कलि कयन हुटक बिटीयन पटक औ' देहरी बैठे गटक। स्त्रियाँ पूरे दिनका निर्जला व्रत करती हैं। शामको पूजा करके फलाहार करती हैं और दूसरे दिन सबेरे सकठमातापर चढ़ाये गये पूरी-पुओं तथा अन्य पकवानों का प्रसाद खाती हैं। चार कच्ची चार पक्की सकरकन्दें, चार तिलके लड्डू चार आमें, सुपारी, दूब इत्यादि पूजा-सामग्रीका काम देती हैं। तिलको भूनकर गुड़के साथ कूट लिया जाता है और तिलकुट या तिल का पहाड़ बनाया जाता है। इस क्षेत्रमें इसी तिलकुटको बकरेकी आकृति दी जाती है। पाटेपर चार पुतले बनाये जाते हैं और इन्हीं पुतलोंकी

पूजा होती है। पूजाके बाद नैवेद्यके लिए इस तिलकुटसे बने बकरेकी बलि दी जाती है और घरका कोई बालक दूबसे तिलकुटसे बने बकरे की गरदन काट देता है। सबको इसीका प्रसाद दिया जाता है। इससे यह प्रतीत होता है कि सकठ कोई देवी हैं जिनपर बकरेकी बलि दी जाती है परन्तु क्योंकि अब बलिके लिए जीवित बकरेको नहीं मारा जाता इसलिए प्रतीक रूपमें परम्परा पालनके लिए तिलका बकरा काट कर ही पूजाविधिको पूर्ण किया जाता है। पूजाके बाद स्त्रियाँ कथाएँ कहती हैं।

पहली कथा पितृपक्षकी कहानीसे बिलकुल मिलती-जुलती है। पितृ-पक्षकी कथामें गर्वीली जिठानीको दण्ड नहीं मिलता परन्तु इस कथामें सकठ माता सोनेके साथ टट्टी-ही-टट्टी कर जाती हैं। दूसरी कथामें सकठके महत्त्वको स्थापित किया गया है। कुम्हारका आँवा पकता नहीं था जिसके लिए पण्डितोंने बालकोंके बलिदानका विधान किया। बहुत से बालकोंकी बलि दी गयी परन्तु कुछ न हुआ लेकिन एक बुढ़ियाका एकलौता बालक सकठकी सुपारी और दूबका जोड़ा लेकर आँवामें बैठता है और माँ सकठ मातासे अपने बेटेके जीवनकी प्रार्थना करती है। सकठ माताकी कृपासे बालक बच जाता है और आँवा पक जाता है। तीसरी कथामें सकठकी सुपारी और दूबके जोड़ाका महत्त्व तो दिखाया ही गया है साथ ही एकरसिया बालककी सामर्थ्यको भी प्रदर्शित किया गया है। एक बनिया अपनी नयी बहूके साथ एक रात रहकर व्यापार के लिए चला गया। वह गर्भवती हो गयी परन्तु उसकी सासने समझा कि पापका गर्भ है अत घरसे निकाल दिया। कुम्हारके घर जाकर वह रही और पुत्रको जन्म दिया। बनिया व्यापार करके अपने जहाजमें उधरसे आ रहा था कि उसका जहाज बीच धारामें फँस गया। यह एकरसिया बालक सकठकी सुपारी और दूबका जोड़ा लेकर जाता है और जहाजको चला देता है। सेठ आधा धन देनेके लिए दो बेर बजाता

है, परन्तु दोनों देर बार बार एकमें मिल जाते हैं। और इस प्रकार बाप-बेटे मिलते हैं।

चौथी कथा दरिद्रता और ईमानदारीका चौंका देनवाली कथा है। कपड़े न होनेके कारण ब्राह्मण-ब्राह्मणी घरसे बाहर नहीं निकलते। पत्नीके सुझावपर ब्राह्मण रातमें पत्नीकी धोती पहनकर राजाके महल-में चोरी करने जाता है और पकड़ा जाता है क्योंकि चुरानेके समय वह जोर-जोरसे बोलता जाता है 'गुड़ चुराऊँ तो पाप, तिल चुराऊँ तो पाप, फिर चुराऊँ तो क्या चुराऊँ ?' ऐसा कहते-कहते सवेरा हो जाता है। वह पकड़ा जाता है और राजाके सम्मुख उपस्थित किया जाता है। उसकी ग़रीबीकी हालतको जानकर राजा उसे दान देता है। वह प्रसन्न होकर घर लौटता है। अस्तु—इस व्रतसे संकट हरण और अभिलषित वस्तुकी प्राप्ति होती है।

१

एक देवरानी जिठानी थीं। जिठानी बहुत अमीर थी। उसका परिवार भी बहुत बड़ा था – खूब भरा-पुरा। बेटे बहुएँ बेटी, दामाद, नाती पोते इत्यादि। देवरानी ग़रीब थी – इतनी ग़रीब कि अपनी जिठानीकी सेवा और टहल करके गुज़ारा करती थी। जो चूनी चोकर मिल जाता उसे अपनी झोपड़ीमें आकर पकाती और फूटे घड़ेसे पानी पीती और टूटी चारपाईपर सो रहती। सुबह पौ फटते ही फिर जिठानीकी सेवा।

साल भरका त्योहार सकठ आया। देवरानी भूखी प्यासी उदासी दिन भर जिठानीकी टहल करती रही। रातको जब जाने लगी तो और दिनोंकी तरह चूनी चोकर भी न मिला। बिचारी खाली हाथ अपनी झोपड़ीमें आयी। खेतसे बथुआ तोड़ लायी ढूँढ़-ढाँढ़कर थोड़े-से कन इकट्ठे कर लिये। कनके पींड़ा (लड्डू) और बथुआके धुँआ बनाकर

रख लिये। रातको सकठ माता आयीं। टटियाकी आड़में खड़ी होकर बोलीं "ब्राह्मणी! किवाड़ खोलो।" देवरानी जाग पड़ी बोली "चली आओ! किवाड़ कहाँ है? टटिया खोलकर भीतर आ जाओ।"

भीतर आते ही सकठ माताने कहा, 'बड़ी भूख लगी है।' देवरानी बोली माता जो कुछ दिया है – खाओ!' और कनके पीड़ा और बथुआके भूँसा आगे रख दिये।

जब सकठ माता पेट भरकर खा चुकीं तो बोलीं, "पानी तो पिला।" देवरानीने फूटी गगरी आगे उठाकर रख दी। पानी पीकर सकठ माताने सोनेकी इच्छा प्रकट की। देवरानीने टूटी खाट बता दी। थोड़ी देर सोनेके बाद सकठ माताको टट्टी लगी। उन्होंने देवरानी से पूछा, 'टट्टी कहाँ जाऊँ?' देवरानीने कहा "सारा घर लिपा-पुता पड़ा है जिस कोनेमें जहाँ चाहो वहाँ बैठ जाओ सारा घर पड़ा है।" सारे घरमें उन्होंने टट्टी-ही-टट्टी कर दी पर फिर भी अभी पूरी तरह निबट नहीं पायी थीं। अतएव पूछा, 'अब कहाँ करूँ? देवरानी खीझकर बोली, 'अब मेरे सिरपर करो।" उन्होंने देवरानीको सिरसे पाँव तक टट्टीसे नहला दिया। और चली गयीं। सुबह जब देवरानी उठी तो देखा कि सारी झोपड़ी कंचनमय हो गयी है। चारों ओर सोना-ही सोना बिखरा पड़ा है। जल्दी-जल्दी बटोर-बटोरकर रखने लगी। पर सोना चुकता ही न था। और वह बटोरते-बटोरते थकी जा रही थी।

इधर जब समयपर जिठानीके घर वह न पहुँची तो वह बहुत बिगड़ने लगी बड़ी कामचोर हो गयी है, कल भर भर सकट उपासा था इसलिए तो इसे और भी जल्दी आना था पर रानी साहिबाका अभी तक पता हो नहीं। इसी तरह वह गुनगनाती रहीं। उसने अपने लड़केको भेजा कि जाकर देख क्या बात है – और फ़ौरन बुला ला। लड़केने जो खबर दी उससे तो जिठानीका जी बैठ गया। दौड़ी-दौड़ी देवरानीके घर पहुँची। देखा चारों ओर सोना ही-सोना बिखरा पड़ा है। देवरानी

बटोरते-बटोरते थक गयी है। जिठानीने पूछा, "किसको भूँसा किसको मूसा ? कहाँसे इतना सोना पाया ? ' देवरानी सहज भावसे बोली,"जीजी न किसीको भूँसा न किसीको मूसा ? सकठ माताने कृपा की है। जिठानीने पूछा "ऐसी क्या सेवा की थी तूने कि सकठ माता खुश हो गयीं।" देवरानी बोली, "मैंने तो कुछ भी नहीं किया। केवल कनके पींड़ा और बथुआके भूँसा खानेको दिये थे बस। और उसने सब कुछ विस्तारसे बतला दिया। जिठानी घर आयी और ग़रीबोंकी तरह रहने लगी। साल भर बाद जब सकठ आयी तो देवरानीकी तरह कनके पींड़ा और बथुआके भूँसा बनाये। फूटी गगरी और टूटी चारपाई रख दी। और बड़ी उत्सुकतासे सकठ माताकी राह देखने लगी। रातमें सकठ माताने दरवाज़ा खटखटाया। जिठानीने कहा "माता किवाड़ कहाँ है ? टटिया खोलकर आ जाओ।' सकठ माताने जो पिछले साल देवरानीके साथ किया था वही सब किया। जिठानीने कहा, 'माता जो कुछ दिया है पाओ तुमसे कुछ छिपाव तो है नहीं। सकठ महारानीने खाया पिया और टाँग फैलाकर सोयीं और आधीरातमें घरको तथा जिठानीकी टट्टीसे महकाकर चली गयीं। सुबह हुई लड़के बच्चे बाहर आये देखा चारों ओर गन्दगी-ही-गन्दगी। जिठानी भी गन्दगीसे नहायी हुई निकली, चलना कठिन। सारा घर बदबूसे भरा हुआ था। ज्यों ही निकले खट-खट कर गिरे। उन्होंने कहा माता ! तुमने यह क्या किया ? जिठानीने खिसियाकर देवरानीको बुलवाया। देवरानी आयीं। जिठानीने बड़े तानेके भावमें कहा 'तूने जो कुछ कहा था वह तो कुछ न हुआ।' देवरानीने कहा तुमने तो वहन चोंचले किये थे ग़रीबीका नाटक रचा था। तुम्हारे पास तो सब कुछ भरा हुआ है। इसीलिए सकठ माता अप्रसन्न हो गयीं। मैं तो ग़रीब थी। मेरी ग़रीबी पर उन्हें दया आ गयी। तुमने तो मेरी नक़ल की थी इसीलिए ऐसा हुआ।'

२

किसी नगरमें एक कुम्हार रहता था। वह बरतन बनाकर जब आँवा लगाता तो आँवा पकता ही न था। हारकर राजाके पास गया। राजाने पण्डितोंको बुलवाया और उनके सामने इस सवालको रखा। पण्डितोंने विचारकर कहा "हर बार जब आँवा लगाया जाये तो बच्चेका बलिदान किया जाये। तब आँवा जरूर पकेगा।

राजाका हुक्म बरतनोंकी जरूरत – बच्चोंका बलिदान शुरू हो गया। जब जिसकी बारी आती वह परिवार अपने यहाँसे एक बच्चा दे देता और इस प्रकार तमाम बच्चोंकी बलि चढ़ गयी और क्रम जारी रहा। एक बार सकठका दिन आया और उसी दिन कुम्हारका आँवा तैयार हुआ। इस बार अन्य लड़कोंके साथ एक बुढ़ियाके लड़केकी बारी आयी। वह बुढ़ियाका अकेला बेटा था। वह दुःखके मारे व्याकुल होकर सोच रही थी—ऐसे देके एक तो बेटा वह भी आज सकठके दिन मुझसे बिछुड़ जाये और मैं दिन भरकी सकठकी उपासी यह कष्ट पाऊँ? पर राजाका हुक्म उससे तो किसी प्रकार भी नहीं बचा जा सकता था। मन मारकर बुढ़ियाने अपने लड़केको बुलाया, सकठकी सुपारी और दूबका बीड़ा दिया और बोली सो बेटा! इन्हें लेकर आँवामें बैठ जाना और भगवानका नाम लेते जाना। सकठ माता चाहेंगी तो तुम्हारा कुछ भी नहीं होगा। लड़का लेकर चला गया। कुम्हारने अन्य लड़कोंकी भाँति उसे भी आँवामें बैठा दिया। फिर आँवामें आग लगा दी। इधर बुढ़िया सकठके सामने बैठी प्रार्थना करती रही,

तिल तिल सकठ मनाऊँ और सकठ कै रात,
महतारी पूत बिछुड़न कबहूँ न होय।

जिस आँवाके पकनेमें कई दिन लगते थे सकठ माताकी कृपासे एक ही रातमें पक गया। सुबह कुम्हारने देखा तो आश्चर्यका ठिकाना न रहा—आँवा पक गया था और बुढ़ियाका लड़का सकठकी सुपारी और

दूधका कौंडा लिये बैठा था और दूसरे बालक भी जीवित थे। नगर-वासियोंने सफठकी महिमा स्वीकार की और लड़केको धन्य धन्य कहा। इस प्रकार सफठकी कृपासे नगरके सभी बच्चे बच गये।

३

एक था बनिया। वह एक नगरमें अपनी माँ और पत्नीके साथ रहता था। जब वह व्यापारके लिए दूर देश जाने लगा तो उसकी स्त्री बोली 'तुम तो व्यापारके लिए परदेश जा रहे हो और मेरे पेटमें जो लड़का है उसके बारेमें माँको कैसे विश्वास दिलाऊँगी कि यह तुम्हारा ही पुत्र है। माँ मुझे कलंकिनी समझेगी।

बनियेने कहा तुम चिन्ता मत करो। मैं पानकी पीक थूक देता हूँ और दिया जलाये देता हूँ। माँको शक हो तो दोनों चिह्न दिखा देना। पानकी पीक ताजी रहेगी और दिया जलता रहेगा। बनियेकी स्त्रीने कहा, 'अगर फिर भी न मानी?' बनियेने धीरज बँधाते हुए कहा 'नहीं! मानगी जरूर मानेगी।'

इस तरह अपनी पत्नीको समझा-बुझाकर बनिया चला गया परदेश। और इधर बेचारी स्त्रीके बढ़ते पेटको देखकर सासके मनमें चोर पैठ गया। उसको धीरे धीरे विश्वास सा होने लगा कि मेरी बहू दुष्टा है। वह अपनी बहूको सताने लगी। उसकी यातना इतनी बढ़ी कि बहू का मन हार गया। विश्वास करानेके लिए उसने ताजी पीक और जलता हुआ दिया दिखाया पर सासने विश्वास न किया और बहूको घरसे निकाल बाहर किया।

रोती बिलखती वह बात नगरमें इधर उधर भटकने लगी—आखिर जाती भी तो कहाँ? भटकते भटकते उसने एक कुम्हारके घरमें आश्रय लिया। पूरे दिन होनेपर उसके लड़का हुआ। वहीं कुम्हारके घरमें रहकर वह अपने बालकका पालन-पोषण करने लगी। इसी तरह

बहुत दिन बीत गये। एक दिन एक बनिया व्यापार करता हुआ उस नगरकी ओर आ निकला। नगरके सामने पहुँचनेपर बीच धारमें उसका जहाज अटक गया। बहुत कोशिशोंपर भी जहाज टससे मस न हुआ। मल्लाहोंने अपनी सारी चातुरी लगा दी पर जहाज न हिला तो न हिला। सभी लोग हैरान। अब क्या हो? पण्डित और ज्योतिषी बुलाये गये। उन्होंने विचार करके बतलाया, "यदि कोई एकरतिया बालक सकठकी सुपारी और दूबका बीड़ा लेकर जहाजके चारों कोनोंमें खटखटा दे तो जहाज चल पड़ेगा।'

बनियेने सारे नगरमें डुग्गी पिटवा दी कि जो एकरतिया बालक सकठकी सुपारी और दूबका बीड़ा लेकर जहाजको खटखटाकर चला देगा तो उसको जहाजका आधा धन दे दूँगा।

कुम्हारके यहाँ रहनेवाला बनियेका लड़का अपनी माँके पास पहुँचा और बताया कि एक सेठका जहाज फँस गया है, उसने डुग्गी पिटवायी है कि जो एकरतिया लड़का सकठकी सुपारी और दूबका बीड़ा लेकर मेरे जहाजको चला देगा उसे जहाजका आधा धन दे दूँगा। माँ, मैं भी देखूँ जाकर।'

माँने कहा 'जरूर जाओ बेटा! तुम हो तो एकरतिया ही। सकठ-की सुपारी और दूबका बीड़ा लेकर चले जाओ। सेठको सकटसे छुड़ाओ तमाम लड़के अपनेको एकरतिया मानकर धनके लालचमें सुपारी खट खटा रहे थे पर जहाज तनिक भी न खिसका। इस लड़केने जाकर जैसे ही जहाज खटखटाया, जहाज चलकर किनारे आ लगा। सबको बड़ा आश्चर्य हुआ।

सेठने वादेके अनुसार जहाजका धन दो भागोंमें बाँटना शुरू किया। दो ढूरे (ढेर) लगाये जाते पर पल-भरमें वे मिलकर एक हो जाते। कई बार अलग-अलग दो ढूरे लगानेकी कोशिश की गयी पर सब बेकार। दोनों ढूरे एक हो जाते।

बनियेको शक हुआ। यह बालक कहीं मेरा ही पुत्र न हो। बाप बेटेमें बँटवारा नहीं होता। दौड़कर वह अपने घर आया। माँ मिली पर उसको अपनी पत्नी कहीं न दिखाई दी। उसने माँसे पूछा। माँने कहा, "अरे बेटा! उसकी कुछ न पूछ। वह तो बड़ी कुलटा निकली कुलमें दाग़ लगा दिया। तेरे जानेके बाद वह लड़कोरी हो गयी थी। मैंने उसे घरसे निकाल दिया।" बनिया अधीरतासे बोला 'माँ तुमने यह क्या किया? वह तो मेरा ही बेटा था। तुमने उसका विश्वास न किया न मेरे चिह्नोंपर ही ध्यान दिया। अपनी पतिव्रता बहूको घरसे निकाल दिया। अब कहाँ है?' माँने उसे कुम्हारका घर बता दिया।

दोनों माँ-बेटे कुम्हारके घर गये। कुम्हारको खूब धन-दौलत देकर खुश किया और अपनी स्त्री और पुत्रको लेकर घर आया। सभी लोग फिर आनन्दसे रहने लगे।

'जैसे उनके दिन फिरे वैसे सबके फिरें।

४

एक ब्राह्मण था। वह बहुत ग़रीब था। किसी तरह अपने परिवार के साथ गुजर-बसर करता था पर ठीकसे दोनों वक़्तका भोजन भी नहीं मिल पाता था। हमेशा खाने-पीनेके लाले पड़े रहते। माघका महीना आया। लड़केका नौमा लेना था और लड़कीका नौमा देना था। दोनों ही खर्चेकी बातें और ब्राह्मणके पास पैसेके नामपर टका भी न था। ब्राह्मण और ब्राह्मणी बड़े चक्करमें थे कि क्या किया जाये। ब्राह्मणीने सोचा—माँगनेसे तो कोई देगा नहीं इसलिए ब्राह्मणसे कहा 'जाओ, राजाके यहाँसे जरूरत भरके लिए चोरी कर लाओ।'

'चोरी' का नाम सुनकर ब्राह्मण काँप गया। उसने सोचा चोरीसे बढ़कर कोई खराब काम नहीं, यह तो पाप है और मैं ब्राह्मण होकर चोरी करूँ! और वह भी राजाके यहाँ? भगवान् इसका क्या दण्ड

देंगे ?" हालत इतनी खराब थी कि वह और कोई उपाय भी नहीं सोच पाता था। मगर चोरी नहीं करता तो बेटी बेटेका गौना कैसे करेगा ? ऐसे ही विचारोंमें उलझा हुआ ब्राह्मण राजाके महलकी ओर चल दिया। गरीबीसे बढ़कर कोई पाप नहीं।

चलते-चलते रात हो गयी। काफ़ी रात बीतनेपर वह राजाके महलमें पहुँच गया। भाग्यवश उसको किसीने देखा नहीं। और ब्राह्मण चुपके चुपके छिपते छिपाते राजाके भण्डारेमें पहुँच गया। उसने दरवाज़ा भीतरसे बन्द कर लिया और भण्डारेमें रखी चीज़ें टटोलने लगा। वहाँ सभी सामान मौजूद था जिसकी उसे ज़रूरत थी पर ब्राह्मणको चोरी की आदत तो थी नहीं इसलिए वह सोच रहा था कि "चोरी करूँ तो कैसे करूँ ? गुड़ चुराऊँ तो पाप तिल चुराऊँ तो पाप फिर चुराऊँ तो क्या चुराऊँ ? माघका महीना और चोरी-जैसा भयंकर पाप।" इसी सोच विचारमें सुबह हो गयी। फिर भी वह तै न कर पाया कि वह क्या चुराये। वह उसी तरह बरबरा रहा था— 'तिल चुराऊँ तो पाप गुड़ चुराऊँ तो पाप। माघका महीना चुराऊँ तो क्या चुराऊँ ?'

पहरेदारोंके कानोंमें उसकी आवाज़ पड़ी। पहरेदारोंने राजाको बुलाया। राजाने सुना। दरवाज़ा खटखटाया और पूछा 'तुम कौन हो ? ब्राह्मणने कहा आपके ही नगरका एक ब्राह्मण हूँ। माघ का महीना है। बेटी-बेटेका गौना करना है पर ठिकाना खानेका भी नहीं है। गरीबीने आज यह दिन दिखाया कि आपके यहाँ चोरीके लिए आना पड़ा। पर समझमें नहीं आता था कि चुराऊँ तो क्या चुराऊँ ? कुछ भी चुराता हूँ तो पाप लगता है।

राजाने कहा, मैं विश्वास कैसे करूँ कि तुम जो कुछ कह रहे हो वह सच है ?'

ब्राह्मणने कहा, अपना आदमी मेरे घर भेजकर पता लगा लीजिए।"

राजाने फ़ौरन अपने आदमी ब्राह्मणके घर भेजे। आदमियोंने

जाकर ब्राह्मणको पुकारा। ब्राह्मणीने भीतरसे जवाब दिया कि वे नहीं हैं। आदमियोंने कहा, 'तुम्हीं ज़रा देरके लिए बाहर आ जाओ।' ब्राह्मणीने कहा, मैं भला बाहर कैसे आ सकती हूँ? मेरी धोती तो ब्राह्मण देवता पहन गये हैं। और मैं तो नंगी हूँ।

आदमी लौट आये और उन्होंने सब हाल राजासे कहा। ब्राह्मण की इस गरीबीपर राजाको बहुत दया आयी। बोला, 'ब्राह्मण देवता! बाहर निकल आओ। गाड़ियोंमें जितना चाहो उतना माल रुपया लो। सब तुम्हारा है। घर जाकर आरामसे गौना करो और सुखसे जीवन बिताओ। बेटीका गौना दो और बेटेका लो। तुमको अब चोरी करने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी।

ब्राह्मण बाहर आया। राजाकी जयजयकार की। सामानसे लद-फदकर घर पहुँचा। सुखपूर्वक बेटीका गौना दिया और बेटेका गौना लिया। फिर बड़े आरामसे दिन बीतने लगे।

■

महाशिवरात्रि

फागुन मासकी कृष्ण चतुर्दशीको महाशिवरात्रिका निर्जला व्रत रखा जाता है। बहुत-से लोग जो निर्जला व्रत नहीं कर सकते फलाहार करते हैं। आजके दिन शिवभक्त शिव मन्दिरोंमें बड़ा उत्सव मनाते हैं। आक धतूरे और कनेरके पुष्पोंसे शिवलिंगोंको सजाते हैं और बिल्व पत्रोंसे आच्छादित करते हैं। जिन स्थानोंपर ज्योतिर्लिंग और स्वयंभू-लिंग हैं वहाँ मेला लगता है और काशी, वैद्यनाथ उज्जैन त्र्यम्बकनाथ इत्यादि स्थानोंपर लाखोंकी संख्यामें भक्त लोग आकर एकत्रित होते हैं। बड़े धूम धामसे विस्तारपूर्वक पूजन होता है और मन्दिरमें ही रात भर जागरण करते हैं और भजन-कीर्तन करते हैं।

त्रयोदशीको एक बार भोजन करके चतुर्दशीको निर्जला व्रतका विधान है। विस्तृत पूजाविधान और महाशिवरात्रिका माहात्म्य शिव पुराण स्कन्दपुराण, लिंगपुराण, नारदसंहिता ईशानसंहिता, हेमाद्रि इत्यादिसे प्राप्त हो सकता है। शंकर भगवान्पर चढ़ा हुआ नैवेद्य, जिसे निर्माल्य कहते हैं, नहीं खाया जाता। शास्त्रोंमें इसका निषेध है। प्रस्तुत लोककथामें भी इस बातपर विशेष ध्यान दिया गया है। पाँच दिनका भूखा चन्द्रसेन जब शंकर भगवान्पर चढ़ा नैवेद्य चुराकर भागता है तो एक भक्त उस चोर समझकर मारता है और चन्द्रसेन नैवेद्य खा सकनेके पूर्व ही मर जाता है। इस प्रकार नैवेद्य खाकर नरक जानेके अभिशापसे बच जाता है। [1]धर्मसिन्धुमें लिखा है कि यदि शालिग्राम साथ हों तो

---

[1] 'अग्राह्यं शिवनैवेद्यं पत्रं पुष्पं फलं जलम्।
शालग्रामशिलासंगात् सर्वं याति पवित्रताम्॥"

शंकरका निर्माल्य ग्रहण किया जा सकता है। इसीलिए हमारे घरोंमें जहाँ शंकरजीकी मूर्ति होती है वहाँ शालिग्रामकी मूर्ति अवश्य होती है। वस्तुतः घरोंमें ठाकुरजीके नामसे शालिग्रामकी ही विशेष पूजा होती है।

भगवान् शंकर शिवके रूपमें तो सर्वविदित हैं ही पर रुद्र नामसे भी प्रख्यात हैं। विनाशमें ही सृष्टिके विकासके बीज हैं। शंकर रुद्र रूपसे दमित-गलित प्रकृति रूपोंका विनाश करके शिव रूपसे नवीन रूपोंको जन्म देकर उनका संरक्षण एवं कल्याण करते हैं। इसीसे शंकर एक साथ संहारक एवं संरक्षक भी हैं परन्तु संरक्षक एवं कल्याणकर्ताके रूपमें विशेष पूज्य हैं। पं० पुरुषोत्तम शर्मा चतुर्वेदीने इस महोत्सवको शिशिर ऋतुमें मनानेका कारण पतझड़ भी माना है। उनका ऐसा अनुमान है कि शिशिरमें पतझड़ होता है जो शंकरका रुद्र रूप है और उसीके बाद नयी कोपलें आने लगती हैं, जिसमें उनके शिव रूपको देखा जा सकता है। प्रत्येक हिन्दू घरमें आजके दिन शिवजीकी विधिवत् पूजा अवश्य होती है और लोग रातमें जागरण भी करते हैं।

शिवरात्रिसे सम्बन्ध रखनेवाली लुब्धक व्याधकी कथा प्रख्यात है, जो शिवरात्रि माहात्म्य कथा है। संक्षेपमें वह इस प्रकार है।

'प्रत्यन्त प्रान्तमें एक व्याध (शिकारी) रहता था। शिकार करके वह अपना और अपने परिवारका भरण-पोषण करता था। एक बार वह चतुर्दशीके दिन धनुष-बाण लेकर शिकार करने निकला। सारा जंगल छान मारा परन्तु कोई शिकार न मिला। शिकारके पीछे भागते-भागते सूर्यास्त हो गया। वह बहुत निराश हुआ। पासमें एक तालाबके किनारे बिल्ववृक्ष था उसीपर जाकर बैठ गया। उसने तै कर लिया था कि बिना शिकार किये घर नहीं लौटेगा। उस बेलके पेड़के नीचे शिवजीका एक विशाल लिंग था। ठीकसे लक्ष्यसन्धान करनेके लिए उसने बेलकी पत्तियाँ तोड़कर नीचे डाली जो शिवलिंगपर गिरीं। वह

वहीं बैठा भूखा शिकारकी प्रतीक्षा करता रहा। थोड़ी देरमें एक गर्भवती हिरणी उस तालाबमें पानी पीने आयी। शिकारीने उसे देखा और धनुषपर बाण चढ़ाया। हिरणीने शिकारीको देख लिया। अपनी जानको खतरेमें पड़ा देखकर वह शिकारीसे बोली "तुम मुझे क्यों मार रहे हो ? शिकारीने कहा, "मेरा परिवार भूखा है और उसका पालन करना मेरा कर्तव्य है इसलिए मैं तुम्हें मार रहा हूँ। फिर यह तो मेरा नित्य कर्म है।' हिरणी बोली, 'मैं गर्भवती हूँ। बच्चे पैदा करके उन्हें उसके पिताको सौंपकर मैं तुम्हारे पास लौट आऊँगी। तुम मुझे अभी छोड़ दो। बेलपत्र चढ़ानेसे व्याधका मन कोमल हो चुका था अतः उसने हिरनीको छोड़ दिया। आधी रात बीत जानेपर एक दूसरी हिरनी आयी जिसे देखकर बहेलियेने फिर धनुषपर बाण चढ़ाया। हिरनीने कहा आप मुझे क्यों मारते हैं। मैं कामातुर एवं विरहपीड़िता हूँ। मुझमें न मांस है न मज्जा। पति-संयोग और अभिलाषाकी निवृत्तिके बाद मुझे मार डालना।' बहेलियाके मनमें भगवान् शंकरकी कृपासे करुणा उत्पन्न हो गयी थी अतः उसने उस कामातुर हिरनीको भी नहीं मारा। रात बीत रही थी। दिन भरका भूखा प्यासा व्याध सरदीसे काँप रहा था और शिव शिवका जाप कर रहा था। तीसरे पहर एक हिरनी तीन-चार बच्चोंको लेकर उधर निकली। व्याधने फिर धनुष-बाण उठाया। हिरनीने कहा 'ओ व्याध ! जब तुमने हमसे पहले दो प्राणियोंको नहीं मारा तो मुझे ही मारकर क्यों पापके भागी बनते हो।' शिव भक्तिका प्रभाव शिकारीपर हो गया था अतः यह सोचकर, कि इन बच्चोंको अनाथ क्यों बनाया जाये उसने उसे भी छोड़ दिया।

सूर्योदयके पूर्व एक हृष्ट-पुष्ट हिरन उस तालाबके किनारे आया। व्याधने उसे मारनेकी तैयारी की परन्तु उस हिरनने कहा कि मेरी तीनों हिरनियाँ मुझे ढूँढ़ती फिरेंगी और न मिलनेपर बहुत दुखी होंगी और आपसे जो प्रतिज्ञा करके गयी हैं उसके पूरा न होनेसे वे आपके पास

नहीं आ सकूँगी अतः मुझे भी छोड़ दो। व्याधका चित्त शिवजीकी कृपासे निर्मल हो गया था। उसने उस हिरनको भी छोड़ दिया। प्रातः काल होनेपर वह नीचे उतरा। उतरनेमें कुछ और पत्ते टूटकर शिव लिंगपर गिरे जिससे शिवजीने प्रसन्न होकर उसके मनको एकदम निर्मल कर दिया और वह हिंसा कार्यसे बिलकुल विरक्त हो गया। वह वहीं पश्चात्ताप करके कहने लगा कि अब वे हिरन आयें तो भी मैं नहीं मारूँगा। सभी हिरन हिरनियाँ अपना वादा निभाने आ पहुँचीं परन्तु व्याधने उन्हें मारनेसे इनकार कर दिया। निर्मल एवं कोमल चित्तवाले व्याधको शंकर भगवान्ने अपनी शरणमें ले लिया। इस प्रकार अनजानमें भी शिव-पूजा हो जानेपर शंकर भगवान् प्रसन्न हो जाते हैं तो पवित्र मन और निष्ठासे व्रत-पूजा करनेवालेपर क्यों न प्रसन्न होंगे।

प्रस्तुत लोक-कथामें भी इसी प्रकार चन्द्रसेनसे अनजानेमें ही परि स्थितियोंके कारण उपवास और जागरण हो जाता है और उसे भी शिवजीकी कृपा प्राप्त होती है। शिवजी अवढरदानी भोलानाथ माने जाते हैं। ऐसा विश्वास है कि शिवजी यदि बहुत जल्दी गुस्सा हो जाते हैं तो उतनी ही जल्दी प्रसन्न भी हो जाते हैं। लोगोंको शिवजीकी कृपापर अटूट श्रद्धा एवं आस्था है और पूर्ण निष्ठा एवं विश्वासके साथ शंकरजीकी पूजा की जाती है। वे भगवान् 'आशुतोष' हैं।

शंकर भगवान् भंगके प्रेमी हैं और धतूरे-जैसी नशीली चीजोंका सेवन करते हैं ऐसा माना जाता है। कुछ लोग इसी आधारपर महा शिवरात्रिपर भगको शंकरका प्रसाद मानकर ग्रहण करते हैं। परन्तु अधिक लोग निराला व्रतको ही श्रेष्ठ मानते हैं अतएव यह भंग पीनेकी बात बहुत जोर नहीं पकड़ सकी है जो अच्छा ही है। महाशिवरात्रि शिव-सम्बन्धी सबसे बड़ा पर्व है जिसे वैष्णव भी पूर्ण आस्थाके साथ मनाते हैं।

कथा

एक गाँवमें पण्डित-पण्डिताइन रहते थे। उनके एक लड़का था जिसका नाम था चन्द्रसेन। लड़का बचपनसे ही शैतान था और पण्डिताइनके लाड़-प्यारने उसे और भी बिगाड़ रखा था। जब वह पढ़ने लायक हुआ तो पण्डितजीने उसे पाठशाला भेजना शुरू किया। लड़का पाठशाला न जाकर इधर उधर घूमा करता। माँको अपने बेटेके सब गुण मालूम थे पर जब पण्डितजी घर आनेपर पूछते, 'चन्द्रसेन कहाँ है तो माँ कहती कि पाठशाला गया है। इस तरह पण्डिताइन अपने बेटेके अवगुणोंपर परदा डाले रहीं। और लड़केकी आदतें बिगड़ती गयीं। जुआ खेलने और चोरी करनेकी उसको आदत पड़ गयी। वह रुपये पैसे, गहना-गुरिया जो भी मिलता चुरा ले जाता और दाँव पर लगा देता।

एक दिन पण्डितजी राजाके यहाँसे पूजा कराके लौट रहे थे तो रास्तेमें दो आदमियोंको लड़ते देखा। एक कहता कि यह अँगूठी मैंने जीती है और दूसरा कहता मैंने जीती। पण्डितजीने पूछा कि "तुम दोनों क्यों लड़ते हो?' दोनोंने चिल्लाकर कहा 'यह अँगूठी जुएमें चन्द्रसेनसे मैंने जीती है।' उन दोनोंको समझाकर पण्डितजीने अँगूठी ले ली। गुस्सेमें भरे हुए पण्डितजी घर आये और पण्डिताइनसे पूछा "चन्द्रसेन कहाँ गया है?' पण्डिताइनने कहा अभी-अभी तो यहीं था। कहीं खेलने चला गया होगा।" पण्डिताइन झूठ बोली थीं, लड़का तीन रोज से घर आया ही नहीं था। पण्डितने कहा कि "हमारा सामान निकाल दो अब मैं यहाँ नहीं रहूँगा। जहाँ तुम्हारा जुआरी, चोर बेटा रहेगा वहाँ मेरा निबाह नहीं हो सकता। या फिर वह इस घरमें नहीं आ सकता। तीन दिनका भूखा-प्यासा चन्द्रसेन घर आ रहा था। रास्तेमें कुछ दोस्तोंने उसे बताया कि तुम्हारे पिताजी बहुत नाराज हैं। तुम्हारी सब करतूतोंका पता चल गया है। यह सुनकर चन्द्रसेन वापस लौट

गया। भूखा-प्यासा चन्द्रसेन एक मन्दिरके पास गया। वहाँपर भजन-कीर्तन चल रहा था। वह भी वहीं बैठकर भजन सुनने लगा। थोड़ी-देरमें भक्तोंने शंकर भगवानपर तरह-तरहका भोग चढ़ाया। चन्द्रसेन को मालूम हुआ कि आज शिवरात्रि है और सभी भक्त लोग आज जागरण करेंगे तो बड़ा निराश हुआ। फिर भी चुपचाप बैठे सब देखता रहा और भूखके मारे भोगकी ओर ललचाई निगाहोंसे देखता जाता। भक्त लोग रात भर भजन गाते रहे। परन्तु सुबहकी तरह थककर धीरे-धीरे सब सो गये। जब सभी भक्तगण सो गये तो चन्द्रसेनने चुपके-से मन्दिरमें प्रवेश किया और मूर्तिपर चढ़ाये गये सामानको उठा लिया। चुपके-चुपके मन्दिरके बाहर जाने लगा कि भूलसे किसी एक भक्तकी टाँगसे टकरा गया। भक्त जल्दीसे उठकर 'चोर चोर' चिल्लाने लगा। चन्द्रसेनने भागनेकी कोशिश तो बहुत की पर भाग न सका। पाँच दिन का भूखा-प्यासा चन्द्रसेन कमजोरीके मारे बहुत दूर न जा पाया था कि एक भक्तने डण्डा फेंककर मारा। चन्द्रसेन डण्डा लगनेसे गिर गया और मर गया।

एक ओरसे यमके दूत उसको लेने आये और दूसरी ओरसे शंकरके गण भी आ पहुँचे। यमदूतोंने शंकरके गणोंको देखकर कहा, "चन्द्रसेन नरक जायेगा इसने दुनियामें बड़े पाप किये हैं। शंकरके गणोंने कहा, 'नहीं यह शंकरका भक्त है। उसने जो पाप पहले किये थे उनको शंकरजीने नष्ट कर दिया है। इसने पाँच दिनका व्रत किया है, शिवरात्रि-को जागरण किया है। अगर शंकरपर चढ़ा भोग खा लेता तो नरक जाता पर वह तो भोग खानेके पहले ही मर गया। अगर शंकरपर चढ़ा भोग खाता तो अगले जनममें कुत्ता होता। इसीलिए शंकरजीने भोग खानेके पहले ही इसे अपने एक भक्तके द्वारा मरवा दिया। इसको अब मोक्ष मिल गया है यमके दूत अपना-सा मुँह लेकर लौट गये। शिव रात्रिके उपवास और जागरण करनेसे उसके दोनों लोक सुधर गये।

■

वार व्रत

वैसे तो नवग्रह माने जाते हैं परन्तु राहु और केतु दुष्ट ग्रह हैं इसलिए इनको अलग कर सप्तग्रहोंके आधारपर सात दिनका सप्ताह माना गया है। सूर्य चन्द्र भौम बुध गुरु, भृगु और शनि – ग्रहोंके नामसे सात वार होते हैं, जो यथाक्रम आते हैं। आकाशमें इन ग्रहोंके दर्शन होते हैं। राहु और केतु असुर राहुके क्रमशः सिर और धड़ हैं। अमृत मन्थनके समय जो अमृत निकला था उसे राहुने देवताओंमें शामिल होकर पी लिया था और अमर हो गया था। सूर्य और चन्द्रमाने राहुको देख लिया था और विष्णु भगवान्से कह दिया था जिसपर विष्णु भगवान्ने सुदर्शनचक्रसे राहुका सिर धड़से अलग कर दिया। परन्तु अमृत पी लेनेके कारण वह राहु और केतु होकर दो भागोंमें जीवित रहा। सूर्य चन्द्रसे उसकी शत्रुता हो गयी और वह अक्सर छिपा हुआ अपने आठ अश्वोंके धूमिल रथपर चढ़कर सूर्य और चन्द्रपर आक्रमण करता है। यही सूर्य और चन्द्र ग्रहणका कारण है। नक्षत्र और तिथियाँ घटती बढ़ती हैं परन्तु ये सात ग्रह ग्रहणके अतिरिक्त निश्चित रहते हैं।

इन सातों ग्रहोंकी प्रसन्नताके लिए सातों दिनका पृथक्-पृथक् व्रत विधान किया गया है। भविष्यपुराण, भविष्योत्तरपुराण, स्कन्दपुराण, पद्मपुराण, व्रतरत्नाकर इत्यादि ग्रन्थोंमें इनकी विस्तृत व्याख्या की गयी है। स्त्री-पुरुष सभी इन वारके व्रतोंको करते हैं। ज्योतिषशास्त्रके अनुसार ऐसा सामान्य विश्वास है कि इन ग्रहोंका हमारे जीवनसे निकटका सम्बन्ध है और उनकी गतिका हमारे जीवनपर निश्चित प्रभाव पड़ता

है। जिस ग्रहकी गति हमारे जीवनके प्रतिकूल दिशामें सचालित कर रही हो, उसकी प्रसन्नताके लिए पूजा-व्रतका विधान किया जाता है। सामान्य रीतिसे ग्रहोंकी गतिको अनुकूल बनाये रखनेके लिए इन वारों को व्रत किया जाता है। अवधी क्षेत्रमें भी सातों वारोंके व्रत प्रचलित हैं। मगलका व्रत हनुमानसे सम्बन्धित हो गया है अत इसे स्त्रियाँ कम करती हैं बाकी सभी व्रत स्त्रियाँ अधिक संख्यामे करती हैं। इन ग्रहोंमें सूर्य प्रमुख है तथा अन्य ग्रह इसके चतुर्दिक घूमते रहते हैं।

■

रविवार

रविवारका व्रत स्वस्थ और दीर्घायुके लिए विशेषरूपसे किया जाता है। कुष्ठ रोगसे मुक्ति पानेके लिए रविवारका व्रत विशेषकर हितकर माना जाता है। कृष्णके बेटे साम्बको धृष्टताके लिए दुर्वासा ऋषिने शाप दे दिया था कि तुम्हें कुष्ठ हो जायेगा। इसपर श्रीकृष्ण बड़े चिन्तित हुए। उन्होंने दुर्वासाजीको प्रसन्न किया और शापको दूर करनेका उपाय पूछा। दुर्वासाने प्रसन्न होकर रविवारका व्रत करनेका आदेश दिया। साम्बने नियमसे विधिवत् रविवारका व्रत किया जिससे उसका कुष्ठ दूर हो गया। उड़ीसामें ऐसा माना जाता है कि राजा नरसिंहदेवने कोणार्क (सूर्य मन्दिर) का निर्माण करवाया था और अपना समस्त जीवन उन्हींके चरणोंमें अर्पित करके कुष्ठ रोगसे मुक्ति पायी थी।

सूर्यदेवकी पूजा उचित ही है क्योंकि उन्हींकी कृपासे इस पृथ्वीपर जीवन है। अन्य छह ग्रह उन्हींके प्रकाशसे उद्भासित हैं। हमारी पृथ्वी भी इन्हींका चक्कर लगाती है। सूर्य ज्योतिस्वरूप साक्षात् परमात्मा हैं जिन्हें हम नित्यप्रति देखते हैं। रविवारका व्रत वैशाख, पूस या माघ महीनेके पहले रविवारसे शुरू करके वर्ष पर्यन्त किया जाता है। कुछ लोग आज निराहार व्रत भी करते हैं परन्तु अधिकांश लोग एक बार अलोना भोजन भी करते हैं। सूर्यास्तके बाद पानी भी नहीं पिया जाता। सोने या चाँदी या ताँबेकी मूर्ति बनवाकर धूप-दीप, पुष्प-गन्ध इत्यादिसे मध्याह्नमें पूजा की जाती है। सूर्यपुराण या सूर्यकी स्तुति सुनें और करें। अवधी क्षेत्रमें कुछ कथाएँ कही जाती हैं जिनमें-स

तो यहाँपर प्रस्तुत हैं। व्रती सूर्यपूजा करके कथा सुनता है और तब प्रसाद रूपमें भोजन ग्रहण करता है। हमारे यहाँ स्त्रियाँ फूलकी थालीमें लाल चन्दनसे सूर्यकी आकृति बनाती हैं और पूजाके पूर्व अर्घ्य देती हैं। सूर्यको खड़ा होकर काफ़ी देर तक दिया दिखाया जाता है। सूर्य ऊपर आकाशमें चमकता है और सूर्य नीचे थालीमें बना भी होता है और प्रतिबिम्बित भी होता रहता है। यदि कोई किसी कारणसे पूरे वर्ष व्रत नहीं कर सकता तो पूस और माघ महीनेके पाँच रविवारको व्रत तो अवश्य करते हैं। भादोंके महीनेमें हरतालिकाके बाद जो रविवार आता है उसका माहात्म्य सबसे अधिक है क्योंकि यही सूर्य भगवान्‌की जन्मतिथि है। यदि कोई वर्ष भर रविवार व्रत नहीं करता तो भादोंका यह एक रविवार तो अवश्य करता है।

बारह महीनेके सूर्योंके अलग-अलग बारह नाम हैं जिनके लिए अलग-अलग अर्घ्य नैवेद्य तथा भोजनकी विधि भविष्यपुराणमें दी गयी है

मास,	सूर्यके नाम	अर्घ्य	नवेद्य	प्राशन (भोजन)
चैत्र,	भानु	अनार,	मालपुआ,	तीन छटाँक दूध।
वैशाख,	तपन	दाख	घी चउर,	गायका गोबर।
ज्येष्ठ	इन्द्र	आम	दही भात	३ अँजुली जल।
आषाढ़	रवि,	खीरा	खीरा	३ मिर्च (काली)
श्रावण	गभस्ति	चिउड़ा	सत्तू पूड़ी,	३ मुट्ठी सत्तू।
भाद्रपद	यम	कुम्हड़ा	घी चावल	गोमूत्र।
आश्विन	हिरण्यरेता,	अनार	शक्कर,	३ मुट्ठी शक्कर।
कार्तिक	दिवाकर	केला	खीर	खीर।
मार्गशीर्ष,	मित्र	नारियल	घी-गुड़ चावल	तुलसीदल।
पौष	विष्णु	बिजौरा	तिल चावल	पाव भर घी।
माघ	वरुण	केला	केला,	तिल गुड़।
फाल्गुन,	सूर्य	जम्भीरीनीबू	दही	३ छटाँक दही।

यह विस्तृत विधान है सूर्यव्रत, पूजन नैवेद्य, अर्घ्य और प्राशनके सम्बन्धमें। इस व्रतका नियमित रूपसे करनेपर दुःख दारिद्र्य, चर्मरोग नेत्रपीड़ा इत्यादि रोगोंसे छुटकारा मिलता है। सामान्य रूपसे किये जानेवाले उपर्युक्त रविवार व्रतके अतिरिक्त रविवारसे सम्बन्ध रखनेवाले कुछ और व्रत हैं जो निम्नलिखित हैं—मासादित्य व्रत—इस व्रतके सम्बन्धमें स्कन्दपुराणमें लिखा है कि आश्विन मासके पहले रविवारसे प्रारम्भ किया जाता है। इसी सन्दर्भमें साम्बको दुर्वासा ऋषिके शाप की कथा आती है। रोगोंके नाश और दीर्घायुकी कामनासे यह व्रत किया जाता है। भास्करको प्रणाम करके सर्वांगको पूजना चाहिए। शारीरिक रोग भी पाप ही हैं इससे मुक्ति पानेके लिए पूजा और व्रतोंकी बड़ी उपादेयता है। स्कन्दपुराणमें दान फल व्रतका वर्णन किया है। यह व्रत आश्विन शुक्ल पक्षके अन्तिम रविवारसे प्रारम्भ होता है और माघ शुक्ल सप्तमी तक होता है। और इस प्रकार पाँच वर्ष तक किया जाता है। आश्विनमें हिरण्यरेता' नामसे सूर्य भगवान्का आवाहन करते हैं और विधिवत् पूजा करते हैं। इस व्रतमें दानका विशेष माहात्म्य है। पहले वर्ष पाँच सेर चावल, दूसरे वर्ष गेहूँ, तीसरे वर्ष पाँच सेर चने, चौथेमें पाँच सेर तिल और पाँचवें वर्ष पाँच सेर उड़द दानमें दे और ब्राह्मणोंको भोजन करावे। इस व्रतसे और दानके प्रभावसे धन-सम्पत्ति, पुत्र इत्यादिकी प्राप्ति होती है।

यदि सूर्य-संक्रान्तिके दिन रविवार हो तो उस रविवारका सूर्यव्रत बहुत फलदायी होता है। इस रविवारको विधिवत् व्रत और पूजन करनेसे सभी काम सिद्ध होते हैं।

सूर्यव्रत-सम्बन्धी दो कथाएँ यहाँपर प्रस्तुत की गयी हैं। पहली कथा अवधीमें प्रस्तुत की गयी है जिसमें सभी कथाएँ प्रस्तुत होनी चाहिए थीं। परन्तु सभी क्षेत्रोंमें सरलतासे न समझे जानेकी आशंकासे अन्य कथाओंको खड़ी बोलीमें ही रखा गया है। क्षेत्रीय अवधी भाषाका नमूना

पेश करनेके लिए यह एक कथा अपने मूल रूपमें प्रस्तुत है। अवधी का यह बैसवाड़ी रूप है जो जिला रायबरेली और उन्नावमें प्रचलित है। कानपुर, फ़तेहपुर लखनऊमें भी लगभग यही भाषा रूप है। यह कथा सूर्य-परिवारको लेकर कही गयी है जिसमें सूर्यकी स्त्री और उनकी बूढ़ी माँका चित्रण हुआ है। दूसरी कथा एक सूर्यभक्त ब्राह्मण परिवार-की कथा है जो बहुत निर्धन है। सूर्यव्रत और पूजासे धनप्राप्ति होती है। परन्तु बड़ी लड़की सूर्य भगवान्‌का तिरस्कार करती है जिससे वह फिरसे बिलकुल निधन हो जाती है। ब्राह्मण फिर सूर्यकी पूजा करता है और व्रत रखता है और सूर्य भगवान्‌की कथा सुनाता है जिसकी कृपासे उसकी बड़ी लड़कीको पहलेजैसी सम्पदा तो नहीं मिलती परन्तु खाने-पीनेकी कमी दूर हो जाती है। इस कथामें सूर्य भगवान्‌के माहात्म्यको दिखाया गया है। पहली कथामें भी माहात्म्य प्रस्तुत किया गया है।

१

सुरिजनाथ रहैं तीर्थनके नाथ। आधी माया मतारिका देयँ तौ सारा समार सुख-सन्तोख करै। आधी माया महतारी मेहरियाका देयँ तौ भूखन पेट करायँ भूखन कलछैं। एकु दिन बहुरिया सासु ते कहेसि 'अम्मा! अपएँ बेटवाके लग जातिउ तौ कुछ काम बनत।' सासु बोली ''बाव बहुरिया! म कुछ पहिरै का न ओढ़ै का! मौ का कहिवे जाय कै? बहुरिया बोली, ''महतारी! टूक पहिन ऐओ टूक ओढ़ि लओ। जाय कै कहा कि आधी माया संसारीका देत हो तौ सब सुख सन्तोख करति हैं आधी माया हमका देति हो तो मो हम भूखन मरित है।

एक बनु नाँघिन, दूसर बन नाँघिन, तीसर बनु नँघतै माँचो पामी हाहाकार-सोनेकी खड़ोईं पहिने पीताम्बरी पहिने सोनेका मुकुटु लगाये

सुरिज भगवान आयके ठाढ़ होइगे। बोले, 'महतारी! तुम हियाँ कहाँ?" महतारी बोली, बहुरिया भेजिस है।' भगवान् पूछेनि, 'कौन काम है?" महतारी बोली, "आधी माया संसारका देति हो तौनु सारी ससारी सुख-सन्तोस करति है और आधी माया हमका देति हो तहूँ हम भूखन मरित है।' सुरिज भगवान पूछेनि, 'महतारी का करती हो?' महतारी बोली, बच्चा! कुछो नहीं करित। जौन हीरा मोती, रतन, जवाहर दीन्हो है उनका ऊपरी माँ डारिकै भूँजि लेइत है और वहै फाँकि लेइत है। सुरिजनाथ बोले महतारी! तुम तो महासूधी, महा भलानी! हीरा मोती कहूँ खपरी माँ डारिकै भूँजि खाये जाति हैं?' महतारी पूछेसि 'तो फिर बच्चा का कौन काव है। तुम ही बताव फिर कैस करी?' सुरिजनाथ बोले महतारी! चारि हीरा भँजा डारो – रुपया पैसा मोहर असर्फी करो। गेहूँ लेओ, चाउर लेओ, ग्याँड़ भरि पीसो ओखरी भरि कूटो। गाईका अगराशन निकारो और कूकुरका कौर देओ भिखिमारीका भीख बरक्कत होय लागी। एतना कहिके सुरिजनाथ अन्तरधान होइगे।

महतारी घरे आई। बहुरिया ते कहेसि, 'औनु लरिका कहेसि है वह करिहौ?' बहुरिया बोली, काहे न करिबे? करेका न होत तो तुमका काहे पठइत? महतारी बताइस कि बेटवा कहेसि है कि चार हीरा भँजा डारो और जौन मनु होय तौनु समान लेओ। बहुरिया चार हीरा भँजाय कै चार रुपैयाके गेहूँ चारके चाउर और चार चार रुपैया क अरहर मूँग उरद बेसह कै धरेसि। कुछ दिनन माँ भीमासु लागि गा और गेहूँमन माँ घुन लागि गा और चौउरन माँ पाँवा। अब पिसै कुटावै माँ सब दिनु बीतै लाग। कमावै खाय कै फुरसतै न मिलै। सासु-बहुरिया फिर भूखन मरै लागीं। बहुरिया फिर सासु ते कहेसि कि अम्मा अपएँ लरिकाके पास एकु दाँई फिर जाओ। सासु पूछेसि, बहुरिया! कैसे जाई?' बहुरिया बताइस, 'महर पटोर पहिन लेओ झंझनपटोर ओढ़ि

लेबो। कहारनका बोलवा लेओ और डोली माँ चढ़ि कै चली आओ।'
सासु बोली, "मुदा कहिबे का? बहुरिया समझाइस 'इता जाय कै कह्यो कि जेतना तुम हमका दीन्ह्यो है हमका न चही। न रोटिन उठै न सोंचिन उठै। अपन से लेओ हमका जाय मरेका देओ।

एकु बनु नाँघिन दूसर नाँघिन तीसर बनु नाँघतै आँधी-पानी हाहा कार – सुरिजनाथ भगवान हरहराय कै आय पहुँचे। बोले 'कस महतारी? तुम हियाँ अब काहे?' महतारी बोली बेटा! बहुरिया भेजिसि है। कहति है कि एतनी सम्पदा हमका न चही। काहे माँ खर्ची? न रोटिन उठ न सोंचिन उठै माम्हु न धार। अपन सब लै लेओ हमका खाली जाय मरेका देओ। सुरिजनाथ बोले 'महतारी! तुम महासूधी महा बेमानी। कुँआ खोदाओ ताल बँधाओ कुआँरिनके बिआह कराओ लगूरनके जनेओ कराओ। एतनोपर न घटै तो बड़ा भारी भोजु कराओ।' एतना कहिकै सुरिज भगवान अन्तरधान होइगे। महतारी घरै लौटी और बहुरिया से बोली "जौनु लरिका कहेसि तौनु करिहो? बहुरिया बोली करिबे काहे न? न करेका होत तुमका पठैबे काहे करित? सासु बोली 'लरिका कहेसि है कि कुआँरिनके बिआह कराओ लगूरनका जनेओ देवाओ ताल बँधाओ कुआ खोदाओ औरु जो एतयो माँ न चुकै तो भोज करो।

चार दलान ऊपरसे पोतिन नीचेसे लीपेनि। खाजा सुरमा पपची मठोलिया मेवा मिठाई छप्पनों परकारके भोजन बनै लाग। बड़े भारी भोजके तैयारी होय लागि। बाम्हन भिखारी, टोला-परोसी हेती ब्योहारी गाँव-गोतिन माँ बोलौवा पठवा गा। लेकिन सुरिज भगवान का खबरिउ न पठई गै। सुरिज भगवान सोचेनि कि हमारि महतारी एतनी बड़ी जग्य रचेसि है। कौनिउ ऊँच-नीच होइगै तो बदनामी हमारिनि होई। यह सोचि कै एकु बाम्हनका रूप धरि कै अपने घरे पहुँच औरु महतारी ते बोले, महतारी! चारि पूरी बताशा हमहूँका

देदीम्ह्यौ—तुम्हारे काम माँ हाथ बेंटा लेबै।" महतारी बोली, "भले आयो बाम्हन देउता! हम तौ चाहितै रहे कि कोऊ हमारि मदद करा लेत।" सबका बवाय पियाय कै एक-एक मोहर दछिना द दैं बिदा कीम गा। जब सब मेवनाहरी चले गै तौ सासु बहुरिया खाय बठीं। बहुरिया पैसे हे कौर धुरेसि कि थारी माँ बार निकरि आवा। बहुरिया सासु ते कहेसि, अम्मा अबै कोऊ भूखा है। हमारी थारी माँ बार निकरा है।' सासुका एकदम होसु होय आवा कि बाम्हन देउता दुआरे भूखे बैठ हैं। बहुरिया कहेसि "तौ अम्मा पहिले चार पूरी और चार बतासा बाम्हन देउताका द आओ।" सासु चार पूरी और चार बतासा लैके दुआरे पहुँची— 'लेओ बाम्हन देउता तुमहूँ चार पूरी चार बतासा खा लेओ।' बाम्हनके भेस माँ सुरिज भगवान बोले, 'बुढ़िया! हम चार पूरी चार बतासा खायवाले मनई न आहिन। सुरजम कै चौकी होय सुरबन कै पीताम्बरी होय तौ नहाई खाई।" बुढ़िया बोली "खाओ चाहे न खाओ। हम अपने हरिकाके चौकी कपड़ा ने देबे। बहुरिया बोली कि' अम्मा द देओ। का उई देसैं बदहैं। बार पौंछि कै धरि दबे।" बाम्हन देउता नहाइन-धोइन पूजापाठ किहिन। सासु फिर कहेसि, 'ऐसो बाम्हन देउता। खा लेओ चार पूरी चार बतासा?" उई कहेनि, "हम चार पूरी चार बतासा खामेवाले माँ न आहिन जब सुरबनका थार होय सोनेका गेडुआ होय, उइ मेहरियाकी तरह परसैं तुम महतारीकी तरह अँचराकै हवा करो तौ हम खाब। बुढ़िया कहेसि 'खाओ चाहे न खाओ। हम अपऍ लरिकाकी ऐसी मवारी मवारी न करिबे।' बहुरिया बोली '"दै देओ अम्मा। बाम्हन आय तनिनेके खातिर जाय बिम्बंधि जाई। हम मौजि धायके धरि देव। तौ उइ मेहरियाकी तरह परसिन और उइ महतारीकी तरह अचरैके हवा डाराइन और बाम्हन देउता खाय लागि। थोरी ही देर माँ आँधी-पानी हाहाकार होनै लाग। बुढ़िया बोली लेओ देख कमरी ओढ़ि कै सो जाओ

नाहीं तो चारि मूँदी परिहैं तौ मरि मरा जैहो। बाम्हन देवता कहेनि कि हम खेस कमरी ओढ़िके घराठे माँ सोवेवालेन माँ न आहिन। जब पुरजन घीरहरा होय तोसक-तकिया होय पान-इलायची खाय का होय पंखासारी झेलैका होय तब हम सोइबे। बुढ़िया एतना सुनिके झभाय उठी, 'न सोब तो अपने कपारे माँ जाओ हम अपने बेटवाके चितसारी तुमका न देब।'' बहुरिया बोली होई अम्मा ! ई देओ। बाम्हन जाति चारि कांकड़-पाथर गिरे औव मरि-मरा गा तौ जग्य विध्वंस होइ जाई।'

अब का रहै ! अब तो बाम्हन देवता सुखते सुरिज भगवान्‌की चित॰ सारी माँ पहुंचे जाय। थोड़ी देरमें बाम्हन देवता कहुरे-कहुरे लागि। बुढ़िया पूछेसि कि, 'महाराज काहे कराह रहे हो। बाम्हन देवता कहेनि कि 'पेटु पिरात है।'' महतारी भरभराय झरझराय लागि। "एता काहे सीसि भिहो रहै। हमरे घर माँ दुइ दाना अजवाइनिऔंके नहिन कि तुमका द देइत।' बाम्हन देवता बोले, 'महतारी ! खाया तुम्हरे हाथ की दीन्ही चारि पूरी ही तो। देओ चाहे न देओ अजवाइन दुइ मौदके बीच कोरे करवा माँ धरी है।' एता सुन तै बुढ़िया छाती-मूड़ कूटै लागि। 'बहुरिया यह मनई बाम्हन न होय। यह कोनो देवता आय हमरे घरका हाल जानत है। बुढ़िया अजवाइन देगी तो कहेसि कि तुम्हरे हाथ ते न लेबे अपनी बहुरियाके हाथे भेजो। बुढ़िया कहेसि 'चाहे लेआ चाहे न लेओ बहुरिया न भेजिबे।' बहुरिया बोली एहिमाँ का हरकत है। जाओ द जाई कोनो बताशा तो आहिन न कि घोरि कै पी जाई।' बहुरिया एकु सीढ़ी चढ़ी दुई चढ़ी तीसरे माँ बाम्हन हाथ पकरि कै लै गा। छह महीना कै राति करेसि बरसु दिनका दिनु करेसि। बहु रियाके साथ हँससि-खेलिस भोगु बिलास किहिसि। जब चलै लाग तो दुसहिन बोलिस अपनी महतारीका पठाये जाओ नाहीं तो हमका घरहु न रहे देहैं।' सूरज भगवान् बोले कि 'यह हीरन केरि मुंदरी देखाय

दी ह्यो। कह्यो तुम्हार बेटया आवा रहै। छह महीना तुम्हरे पास लागि छह महीना महतारीके पास लगिहैं। मउएँ गूँ लाती होइहैं सुरजमुखी पियासन मरत होइहैं। हम जाइत है।" बहुरिया सूरजनाथके पीताम्बर पकड़ि लिहिस। 'अम्मा न मनिहैं। बताये जाओ।' पर सुरजनाथ अन्तरधान होइगे। सुरजनाथ कै दुलहिन मौरहारेसे उतरी तौ सासु पाटा-बेलना लके दौड़ी। "हरामजादी! छिनार!! बाम्हन अपने खातिर राखिस रहै। अब गगरी-करवा न छुये। निकर यहीं लागै।" बहुरिया बाहर निकरि आयी और दरवाजू पकरे रोव लागि। जो कैती है कुम्हारिन पानी भरे निकली। इनका रोवत दिखिसि तो पूछेसि 'दुलहिन काहे रोउती हो।' सूरजनाथ कै दुलहिन बोली 'सासुका लरिका आवा रहै। अम्मा ते बिन बताये चला गा। अब सासु नहीं मनतीं। हमका घरते निकारि दिहिन। अब तुमही रखि लेओ। कुम्हारिन बोली "चलो बहुरिया! मनईका मनई नहीं अखरत।" तब ते यह कुम्हारिनके घर रहै लागि। होत करत नौ महीना बाद उनके लरिका भा। लरिका रोवै तो मोती झरैं और हँसे तो फूल झरैं। एक दिन सुरजनाथ सोचिन कि जब हमरे सन्नाम न रहै तब मेहरिया महतारी एकै माँ रहती रहैं अब जब सन्तान होइगै तो दुन्हौं अलग-अलग। घोड़ा कुदाय सुरज भगवान् चलि भे घरका। लरिका आय कै बुढ़ियासे कहेनि, 'बूढ़ा अजिया तुम्हार लरिका आवत हैं। "बुढ़िया बोली 'बोली ठोली न मारो। लरिका आई तौ हमरे ही पास आई। और जब लरिकाका आवत देखिन तो छपरा तूरै लागीं। न अपनि कुछ कहेनि और न लरिकाकै सुनेनि। लरिका कहेसि, अम्मा तुम न अपनि कुछ कह्यो न हमारि सुन्यो। लागी छपरा तूरै मा लागि हो। घरके मनई कहाँ मै? महतारी बोली, 'बच्चा! रोटी बनाइत है। खा-पी लेओ तौ बताई।' सुरजनाथ बोले 'पहिले बताओ तौ खाब। महतारी बोली 'बेटा का बताई? भोज कौन रहै तौन एक बाम्हन आवा रहै। तुम्हार मेहरिया बारह सालका

सम्बड़ लेहे कुम्हारके आँका माँ परी है।" सूरजनाथ बोले, "महतारी तुम तो महासुखी महा बैसानी। यह संसारी माँ हमारि चीज भोगैवाला को होइ सकत है। महतारी बोली, 'बच्चा आये रही तो सूपे-सूपे अत देखो। बदन छिपायक काहे आयो। हम मनई जाति, आँधर खोपरी का जानी समभी ?' सूरजनाथ महतारीसे कहेनि कि जाओ लेवाय लाओ। महतारी कहेसि, बच्चा हम कौन मुंह लैके यहिका बुलावे जाई। अब तुमही जायके लेवाय लाओ। सूरज भगवान् कुम्हारिनके घरे मे और कहेनि "हमरे घरके मनइनका भेज देओ। कुम्हारिन कहेसि "मनई एक दिनका जात है तो साइत-सगुन बिचारत है और ई तो हमरे घर बारह बरस रहिके जाईं। पहिले पण्डितका बोल्वायके साइत बिचरवाओ तब हम बिटियाकी तरह बिदा करिबे। सूरज भगवान् पण्डित बोलाय कै अपनी दुलहिनका विदा कराइन। अपनी दुलहिनका जब लैकै थोड़ी दूर पहुँचेहे रहैं कि कुम्हारिन दौरी-दौरी आयी और बोली तुम्हार हीरा-मोती रहे जाति है तौन लेत जाओ। सुरज भगवान कहेनि कि तुम खाओ पिओ सुख-सन्तोख करौ। तुम हमरे लरिका-मेहरियाका बारह साल तक पाल्यो-पोस्यो है। बहुरिया घरे आयक सासुके पाँयन परी। सासु बहुरिया का उठाय कै छातीसे लगाय लिहिसि और आसीरवाद दिहिस। सासु-बहुरिया अपने नातीके साथ सुखसे रहै लाग। बस उनके दिन बहुरे तस सबके।

२

एक ब्राह्मण और ब्राह्मणी बड़ी गरीबीमें अपने दिन जैसे-तैसे काट रहे थे। उनके चार लड़कियाँ थीं। चारोंकी चारों ब्याहने योग्य हो गयी थीं। पर ब्राह्मणके घर दो वक्त भोजनका भी जुगाड़ नहीं था। बेचारे बड़े असमंजसमें थे—क्या करें क्या न करें ? ब्राह्मणी हर रविवारको सूर्य-देवताकी पूजा करती थी। रविवार आया। ब्राह्मणीने व्रत

किया और अपनी लड़कियोंसे कहा कि, जाकर अपने बापसे कहो कि सूर्य देवताके यहाँसे प्रसाद ले आयें। ग़रीबीका मारा ब्राह्मण अकुला-कर बोला क्या जाऊँ वहाँ? सबको तो सब कुछ देते हैं, पर मुझको तो हमेशा मिट्टीके ढेले ही देते हैं। तुम लोग नहीं मानती तो जाता हूँ।

ब्राह्मण गया। सूर्य-देवता प्रसाद बाँट रहे थे। सबको धन-धान्य दे रहे थे। जब ब्राह्मणको देखा तो मिट्टीका एक ढेला उठाकर उसे दे दिया। जल-भुनकर ब्राह्मण बोला, 'महाराज! यह आप क्या देते हैं? यह तो मेरे यहाँ भी बहुत है।' भगवान् हँसकर बोले 'अच्छा राहमें तुम्हें जो कुछ मिले ले लेना। और यह ढेला फेंक देना।" ब्राह्मण खिसियाकर घरकी ओर चल दिया। राहमें उसे ताजी निकाली हुई खाल पड़ी मिली। ब्राह्मणने उसे उठाकर मिट्टीका ढेला फेंक दिया। खालको लाठीमें टाँगकर घरकी ओर चलने लगा। छप्पर-से लड़कियोंने अपने बापको खाल लाते देखा तो ठठाकर हँस पड़ीं। ब्राह्मणने खाल लाकर घरमें पटक दी और गुस्सेमें बोला 'एक तो जातप कुदाव किया और ऊपरसे हँस रही हो।' ब्राह्मणीने सूर्य-देवताकी पूजा की और भजन छोड़कर यह खाली पानी पीकर उठ आयी। खाल छप्परके ऊपर डाल दी गयी।

समुद्रके किनारे इन्द्राणी और ब्रह्माणी नहा रही थीं। इन्द्राणीने अपना नौलखा हार उतारकर रख दिया था। चमकती हुई चीज देखकर चील उसे एक ही झपट्टेमें उठा ले गयी। उड़ते उड़ते वह ब्राह्मणके घरके ऊपर जा पहुँची। खाल देखकर वह नीचे उतर आयी और हार तो वहीं छोड़ दिया और खालको उठा ले गयी। ब्राह्मण-परिवारमें जब उस हारको देखा तो खुशीकी खुशीका ठिकाना न रहा। इन्द्राणीके सिपाही हार ढूँढते-ढूँढते ब्राह्मणके घर आ पहुँचे। ब्राह्मणने बड़ी खुशी से हार लौटा दिया। बदलेमें बहुत-सा धन पाया। सूर्य-देवताकी कृपा

हुई। ब्राह्मण मालामाल हो गया। अब तो ब्राह्मण भी सूर्यका बड़ा भक्त हो गया। हर रविवारको व्रत करके सूर्यकी पूजा करता। सूर्य भगवान्ने उसके सब काम सँवार दिये।

अब ब्राह्मणने अपनी कन्याओंके विवाहकी सोची और वर ढूँढने निकला। घर अच्छा मिलता तो वर अच्छा न मिलता। अन्तमें एक घर मिल ही गया। घर वर सब अच्छा था। परिवारमें चार लड़के थे। ब्राह्मणने अपनी चारों लड़कियोंका विवाह उन्हीं चारों लड़कोंसे कर दिया। ब्राह्मणने दिल खोलकर खूब खर्चा किया और हाथ खोल कर बाँटा। जब बिदाका समय आया तो उसने अपनी बेटियोंको सीख दी कि भले ही चार गालियाँ तुम मुझे या अपनी माँको देना किन्तु देवी-देवताओंको कभी न हुड़काना[1]। उन्हींका दिया हम खा रहे हैं।

चारों लड़कियाँ ससुराल आयीं। ससुरालमें कोई कमी तो थी नहीं चारों बड़े मौज मजेसे रहने लगीं। बड़ीके कुछ दिनों बाद एक लड़का हुआ। पूस महीनेका इतवार आया। छोटीने सब घर लीप-पोतकर पूजाकी तैयारी की और बड़ीसे आकर बोली दीदी चलो, सूर्य भगवान्की पूजा कर लो।' बड़ी बोली, 'मुझे पूजा करनेकी क्या जरूरत ? मेरे क्या नहीं है ? धन-दौलत पति पुत्र घर-द्वार सभी कुछ तो है। जाओ तुम लोग पूजा कर लो।" इतना कहते ही उसका सब वैभव विलीन हो गया। त्राहि त्राहि मच गयी। रोटियोंके लाले पड़ गये। जो कभी रानीकी तरह राज्य करती थी अब भूखसे तड़पने लगी। लड़का गाय भैंसें चराने लगा। जब तीन-तीन चार चार उपवास हो जाते तो सोचती कि ऐसे कुसमयमें हमारे माता पिता भी हमारी सुधि नहीं लेते।

एक दिन ब्राह्मणीने सपना देखा कि उसकी लड़कियाँ भूखों मर

---

१ तिरस्कार करना।

रही हैं। भोर होते ही बाह्मणीने ब्राह्मणसे कहा, "जाओ लड़कियोंको देख आओ। मालूम होता है कि वे किसी भयंकर कष्टमें हैं।' ब्राह्मण बोला "जाता हूँ पर समझमें नहीं आता कि वे कष्टमें कैसे पड़ गयीं? मैंने तो उन्हें खूब दिया था और ईश्वरकी कृपासे उनके घरमें भी कोई कमी न थी। पर प्रभुकी माया अपार है। तैयारी कर दो कल भोर होते ही जाऊँगा।

ब्राह्मण लड़कियोंकी ससुराल पहुँचा। लड़कियाँ दौड़कर बापसे मिलीं भेंटीं। बापने पूछा, "बेटी, किसीको बुरा भला कहा? किसी देवी-देवताको बुलाया। बड़ी बाली किसीको तो नहीं। हमारे भाग्य ही खोटे हैं?' छोटी बोली, 'मैं बताऊँ पिताजी? ब्राह्मण बोला, "हाँ बेटा! सब कुछ सच-सच बतलाओ। छोटीने कहा पूसके रवि बारको मैंने दीदीसे कहा कि सूर्य भगवान्‌की पूजा कर लो पर दीदीने पूजा न की और ऊपरसे भला-बुरा कहा। ब्राह्मण बोला तुमने मेरी बात नहीं मानी उसीका फल है। जाओ थोड़े-से अक्षत ले आओ। आज रविवार है—सूय भगवान्‌की पूजा कर लूँ।' किन्तु घरमें चार अक्षत भी न थे। इधर ब्राह्मण पूजापर बैठा था। लड़कियाँ बड़े धर्म संकटमें पड़ीं। अन्तमें बड़ीने अपने लड़केको एक बनियेके यहाँ गिरवी रख दिया और पूजाका सामान लाकर पिताको दिया।

बनियेकी स्त्री बड़ी लोभिन थी। उसने लड़केको गिरवी रखकर सब सामान दे दिया। बनिया घरमें था नहीं। जब लौटकर आया तो उसने एक लड़केको घरमें बँधा पाया। अपनी स्त्रीसे उसने सब हाल पूछा। स्त्रीने सब ठीक-ठीक बता दिया। बनिया बड़ा चमेभित हुआ और बोला, 'पूजाके लिए तो यों ही सामान दिया जाता है। तूने कितना बड़ा पाप किया है। बस अभी लड़केको खोल।" लड़का जब बन्धन मुक्त हुआ तो सीधा घर पहुँचा। नाना पूजा कर रहे थे और उन्हें घेरकर चारों लड़कियाँ बैठी थीं। बड़ीने जो अपने बेटेको आते

देखा, तो गुस्सेसे उसकी आँखें लाल हो उठीं। लड़केने अपनी माँको समझाया कि यह भागकर यहाँ आया है – उन्होंने स्वयं उसे छोड़ दिया है। ब्राह्मण समझ नहीं पाया कि लड़का क्या कह रहा है पर लड़का बार-बार यही दोहरा रहा था। ब्राह्मनने पूछा क्या बात है?" छोटीने बताया तो पिताका हृदय द्रवित हो गया – इतनी भयंकर निर्धनता? उसने पूजा की और अक्षत छोड़े। अक्षतोंके छोड़ते ही घरमें कंचन ही-कंचन बरस पड़ा। बड़ी लड़कीके सिवाय सभी फिरसे रानीकी भाँति रहने लगीं। ब्राह्मण दु:खी होकर पहाड़ोंपर तपस्याके लिए चला गया। वहाँ एक टाँगपर खड़े होकर तपस्या करने लगा। बारह वर्ष तक वह उसी तरह एक टाँगपर खड़ा रहा। तो एक दिन द्रवित होकर सूर्य भगवान्ने ब्राह्मणसे पूछा, 'अरे ब्राह्मण! अब तुझे क्या चाहिए? ब्राह्मण सूर्य भगवान्के चरणोंमें गिर पड़ा और गिड़गिड़ाकर बोला, प्रभुवर! मैं कृतार्थ हो गया! मुझे तो आपकी कृपासे सब कुछ मिला पर मेरी बड़ी लड़कीकी रक्षा कीजिए। सूर्य भगवान् बोले उसने मेरा निरादर किया इसीलिए मैंने उसकी धन-सम्पत्ति छीन ली।' ब्राह्मनने हाथ जोड़कर कहा महाराज! वह नादान है! उसे क्षमा कीजिए।' सूर्य-देवताने कहा जाओ, तुम्हारी भक्तिसे और मेरी शक्तिसे उसे खाने-पीनेकी कमी न रहेगी पर वह पहले-जैसा वैभव नहीं भोग सकेगी। इतना कहकर सूर्य भगवान् अन्तर्धान हो गये।

■

बुधवार

बुधवारका व्रत सद्बुद्धिकी प्राप्तिके लिए किया जाता है। बुध ग्रहको प्रसन्न रखने और यदि कुपित हों तो शान्तिके लिए यह व्रत किया जाता है। आजके दिन कुछ स्थानोंमें शंकरकी पूजा होती है। सफेद फूल और हरे रंगकी वस्तुओंका नैवेद्य चढ़ाया जाता है। कुछ स्थानोंमें विशेषरूपसे कानपुरमें बुधवारके दिन बुढ़ादेवीकी विशेष पूजा होती है। स्त्रियाँ बुधवारको प्रातःकाल स्नान करके पूजाकी तैयारी करती हैं और सारा सामान जुटाती हैं। बुढ़ादेवीकी जो मनौती मानती हैं या व्रतका उद्यापन करती हैं वे पूजामें अतिशय विस्तार करा देती हैं। जल पूर्ण सोने चाँदी, पीतलके कलश भराती हैं। धूम धाम गाजे-बाजेके साथ बधाई चढ़ायी जाती है जिसकी डालीमें कपड़ा-लत्ता गहना-गुरिया, सेन्दुर टिकुली चूरी बिछिया इत्यादि चीजें चढ़ायी जाती हैं। इस क्षेत्रमें बुधवारका व्रत बुढ़ादेवीका व्रत होता है। बुध ग्रहका ज्योतिषके अनुसार बुद्धिसे सम्बन्ध है। और आजके व्रतसे सद्बुद्धिकी ही कामना की जाती है। अस्तु बुधिको बुढ़ादेवीका व्रत-पूजन स्वाभाविक ही है। बुधवारको विशाखा नक्षत्रका यदि योग हो तो व्रत विशेष फलदायी होता है। आजके दिन एक समय भोजन किया जाता है। बुधवारका व्रत रविवारकी भाँति अधिक प्रचलित नहीं है।

यहाँपर दो कथाऐं प्रस्तुत की गयी हैं। जो पूजाके उपरान्त कही जाती हैं। दोनों कथाओंका सम्बन्ध बुढ़ादेवीसे है जिनकी पूजा विशेषत बुधवारको होती है। दोनों कथाओंमें बुढ़ादेवीके माहात्म्यको स्थापित किया गया है। श्री रामप्रताप त्रिपाठीने अपनी पुस्तक 'हिन्दुओंके

व्रत, पर्व और त्योहार' में एक कथा दी है जिसमें बुधवारके दिन जन्म लेनेवाले व्यक्तिके माध्यमसे बुधवारके व्रत-माहात्म्यको प्रस्तुत किया है। कथा इस प्रकार है

'एक बनिया था जो दूर दूर तक घूमकर व्यापार करता था। एक बार जब वह व्यापारके लिए परदेस गया था तो उसकी पत्नीके बुध वारके दिन पुत्र हुआ था। बारह वर्षोंके बाद जब वह घर लौटा तो धन-सम्पत्तिसे लदे उसके छकड़े दलदलमें फँस गये। बड़ी कोशिशें की गयीं परन्तु वे न निकले। शाकुनिकोंने बताया कि बुधवारके दिन पैदा हुआ कोई आदमी यदि मिल जाये तो वह आपकी गाड़ियाँ निकाल सकता है। वह बुधवारको पैदा हुआ आदमी ढूँढ़ता-ढूँढ़ता अपने गाँव पहुँचा। वहाँ उसे मालूम हुआ कि उसके एक बेटा है जो बुधवारको ही पैदा हुआ था। वह अपने बेटेको लेकर गया और सब गाड़ियोंको निकालकर घर ले आया। सब लोग सुखसे रहने लगे। उसका लड़का बड़ा बुद्धिमान् होनहार और श्रीसम्पन्न निकला। तभीसे स्त्रियाँ उसी प्रकारका पुत्र पानेकी लालसासे बुधवारका व्रत-पूजन करती हैं।

१

एक महतारी-बेटा थे। बेटा स्वभावका जिद्दी था। उसने माँसे कहा कि मैं अपनी दुलहिनको विदा कराने जाऊँगा। माँने कहा, 'बेटा! आज मंगल है और कल है बुध। बुधको बिटिया विदा नहीं होती। वह घर नहीं आती। फिर जाना।' बेटा जिद्दी तो था ही अड़ गया। उसने कहा 'मैं तो आज ही जाऊँगा। मैं बुध-सुध कुछ नहीं जानता। मैं तो बुधको ही विदा कराके लाऊँगा।' माँने बहुत समझाया बुझाया पर बेटा न माना सो न माना। झटपट तैयारी करके चल दिया ससुरालको।

बेटा ससुराल पहुँचा। सास-ससुर अपने दामादको आया देखकर

बड़े खुश हुए और बोले, 'बेटा भले आये।' ससुरालमें बड़ी आवभगत हुई। दूसरे दिन बुधवारको सुबह होते ही उसने बिदाके लिए कहा। सास-ससुर बड़े चिन्तित हुए। दामादको बहुत समझाया कि बिटिया बुधको घरसे नहीं बिदा होती, कल चले जाना। एक दिनकी ही तो बात है।" पर वह न माना। हारकर उन्होंने बुधको ही बिटिया बिदा कर दी। वह अपनी दुलहिनको लेकर चला।

रास्तेमें थककर दोनों एक पीपलके पेड़के नीचे विश्राम करने लगे। वह थका तो था ही लेटते ही सो गया। बुढ़ादेवी उसपर नाराज हो गयी थीं। इसलिए मौका पाकर उसकी दुलहिनको उठा ले गयी। जब वह सोकर उठा तो देखा कि उसकी दुलहिन नदारद। उसने आस पास बड़ी खोज की पर वह वहाँ होती तो मिलती। उसे तो बुढ़ादेवी उठा ले गयी थीं। मन मारकर दुःखी मन वह घर लौटा। माँने पूछा, "बेटा! बहू कहाँ है?" बेटेने बतलाया कि जब वे पीपलके नीचे आराम कर रहे थे तो उसकी आँख लग गयी थी और आँख खुलनेपर देखा तो वह वहाँ न थी।" माँ समझ गयी—हो-न-हो बुढ़ादेवीका ही कोप होगा।

उसने बुधवारका व्रत किया। बड़ी विधिसे पूजा की—डाली-बधाई चढ़ायी। बुढ़ादेवी उसकी भक्तिसे प्रसन्न हुईं। उसको सपनाया कि आकर अपनी बहूको ले जाये।

बुढ़ियाने अगले बुधवारके लिए पूजाकी तैयारी की और खूब डाली-बधाई लेकर बुढ़ादेवीके मन्दिरमें पहुँची। मन्दिर पहुँचकर उसने बुढ़ादेवीकी विधिवत् पूजा की। बुढ़ादेवीने प्रसन्न होकर बूढ़ीको उसकी बहू लौटा दी। बूढ़ी बहूको लेकर घर आयी। बेटा दुलहिनको पाकर बड़ा खुश हुआ। तबसे वह भी बुढ़ादेवीका भक्त हो गया। हर बुधवार को व्रत करता और बुढ़ादेवीकी पूजा करता। बुधवारके व्रत और बुढ़ादेवीकी कृपासे सब प्रसन्न हो गये।

एक थीं ननद भौजाई। ननद स्वभावकी बड़ी मीठी और भगतिन थी। प्रति बुधवार वह बुधका व्रत करती और पाटापर बुध-बुधनियाँ रखकर पूजा करती। भौजाईको यह सब पसन्द नहीं था इसलिए वह चुराकर पूजा करती। एक बार बुधको वह उपासी थी। उसने नहाकर पाटापर बुध-बुधनियाँ रखीं और पूजने लगी। इतनेमें भौजाई आ गयी। उसे कुछ न सूझा तो बुध बुधनियोंको उठाकर दहीकी दहेंड़ीमें डाल दिया और माठा मथने लगी। भौजाईने आकर कहा 'अच्छा हटो। लाओ मैं ननू निकाल लूं।' ननद बड़े सकोचमें पड़ गयी पर हटना पड़ा। भौजाईने नैनू निकाला। उसीमें सोनेकी बुध-बुधनियाँ निकल आयीं। सोनेकी बुध-बुधनियोंको उसने अपने पतिको दिखाया और बोली 'देखी अपनी बहनकी करतूत?' उसने पूछा, क्या किया मेरी बहनने जो इस तरह बोल रही हो? उसने बुध-बुधनियाँ उठा कर अपने पतिके सामने रख दीं और कहा कहाँसे आया यह सोना? अगर कहीं चोरी छिनारा नहीं किया? तुम्हारी बहन पापिन है। पर भाईको अपनी पत्नीकी बातोंपर विश्वास नहीं हुआ। परन्तु जब उसने बड़ा महनामथ मचाया तो हारकर भाईने बहनको घरसे निकाल देना स्वीकार कर लिया।

एक दिन भाई जल्दी उठा और जंगल घुमानेके बहाने अपनी बहन को बाहर लिवा गया और जंगलमें उसे छोड़ दिया। जंगली जानवरोंके डरसे वह पीपलके पेड़पर चढ़कर बैठ गयी और सुबक-सुबककर रोने लगी। उसी पेड़के नीचे कहींसे एक राजा आकर बैठ गया था। राजाके ऊपर आँसूकी एक गरम-गरम बूँद गिरी। राजाने सोचा कि मुझसे भी कोई अधिक दुःखी है इस दुनियामें। उसने सिर ऊपर उठाकर पूछा? कौन है? जो कोई हो निकल आओ पुरुष हो तो मेरा धमका भाई और स्त्री हो तो मेरी धर्मकी बहन।" उसने राजासे तीन तिरवाचा करायी और

नीचे आयी। राजाने कहा, "मैं तो समझता था कि मैं ही इस दुनियामें सबसे अधिक दुःखी हूँ। मेरे तो सन्तान नहीं, पर तुम्हें क्या दुःख है ?" उसने बताया कि भौजाईके सिखानेपर मेरे भाईने मुझे इस जंगलमें छोड़ दिया है। मैं सती आदि, बेघर-बार इस जंगलमें पड़ी हूँ।' राजाने कहा, "तुम मेरे साथ चलो। तुम मेरी बहन हो।" दोनों चल दिये। राजा अपनी धर्म-बहनको लेकर घर आया। धर्म बहनका आगमन बड़ा शुभ हुआ। चारों ओरसे विजयके समाचार आने लगे। खजानेमें सम्पदा बढ़ने लगी। एक दिन दासीने सूचना दी कि रानी गर्भिणी हैं। यह सुनकर राजा फूला न समाया। उसने बड़ी खुशियाँ मनायीं और धूम धाम की। खूब अन्न धन लुटाया। प्रजा भी बहुत खुश हुई।

होते करते दसवाँ महीना भी आया। रानीने शुभघड़ीमें एक सुन्दर बालकको जन्म दिया। सारे राज्यमें खुशियाँ मनायी जाने लगीं। राजाने धर्म बहनके शुभ'चपर चन्दनका एक बाग लगवाया और एक महल बनवाना शुरू किया। उधर बहनके घर छोड़ते ही भाई-भौजाईका सारा धन हर-बहुर गया। दाने-दानेको मोहताज हो गये। नौकरीकी तलाशमें देश-देश भटकने लगे। यहाँपर महल बन रहा था इसलिए दोनों यहीपर ईट-गारा ढोनेका काम करने लगे। एक दिन बहन महल देखने आयी। उसने अपने भाई भौजाईको यहींपर मजदूरी करते देखा तो दंग रह गयी। भाईने भी अपनी बहनको पहचाना। दोनों बड़े प्रेमसे मिले। भाईने कहा, 'बहन! मैंने तुमपर अविश्वास करके बड़ा अत्या चार किया है। मेरी भूलको क्षमा कर दो और घर चलो। तुम्हारे घरसे आते ही हम दर-दरके भिखारी हो गये।' भौजाईने भी क्षमा माँगी। अपने कियेपर बहुत पछतायी और घर चलनेको कहा। बहनने कहा, 'राजासे कहो। वह विदा कर देंगे तो मैं बड़ी खुशीसे आप लोगोंके साथ चलूँगी।" भाईने राजासे कहा कि मेरी बहनको विदा कर दो। राजाने कहा, 'तुम्हारी बहन हमारी भी बहन। अब चाहो

बिदा करा ले जाओ।'

भाई भौजाईने घर आकर खूब तैयारी की। एक दिन बड़े ठाठ-बाटसे राजाके घर पहुँचे। राजाने बहनसे बिदा होते समय कहा, 'बहन! तुम्हारे ही प्रतापसे मेरे पुत्र हुआ और मेरा राजपाट बढ़ा।' बहनने कहा, 'राजा! यह सब बुद्धादेवीकी कृपासे हुआ है। मेरा किया कुछ भी नहीं है। तुम बुद्धादेवीकी डाली बधाई चढ़ाना। सोनेका कलश धराना।" राजाने कहा 'सोनेका कलश मैं धरा तो सकता हूँ पर सभी भक्त तो ऐसा नहीं कर सकते। इसलिए मैं मिट्टीके घड़े ही रखाऊँगा।' राजाने अपनी धर्म-बहनको बिदा किया। बड़ी धूम-धामसे बुद्धादेवीकी डाली-बधाई चढ़ामी।

बहनके घर आते ही भाईका घर फिर धन धान्यसे भर गया। अब भौजाई भी नियमसे बुधवारको व्रत करती और बुद्धादेवीकी पूजा करती। बुद्धादेवीकी कृपासे भाई भौजाई फिर सुखपूर्वक रहने लगे।

◘

बृहस्पतिवार

बृहस्पति ग्रहको प्रसन्न करनेके लिए बृहस्पतिवारको व्रत रखा जाता है। बृहस्पतिके रुष्ट हो जानेपर सभी काम बिगड़ जाते हैं। किसी भी क्षेत्रमें सफलता नहीं मिल सकती। जिसके बृहस्पति खराब होते हैं वह बृहस्पतिका व्रत-उपवास करते हैं। इस ग्रहके सन्तुष्ट होनेपर सभी कार्य अनायास ही सिद्ध हो जाते हैं। आजके व्रतमें पीली वस्तुओंका विशेष माहात्म्य है। प्रस्तुत लोक-कथाओंमें दिउल (चनेकी दाल) और गुड़ पूजामें अनिवार्यत काममें आते हैं। पीले वस्त्र, पीले पुष्प, पीले चन्दन एवं पीले खाद्यान्नोंका प्रयोग किया जाता है। इस व्रतमें भी एक बार ही भोजन किया जाता है। पूजाके उपरान्त आगे दी गयी कथाएँ कही जाती हैं। ब्राह्मणको भोजन कराया जाता है तदुपरान्त घरके लोग तथा व्रती भोजन करता है। आज भी हमेशाकी भाँति दान-दक्षिणा अवश्य देना चाहिए। गुरुवारको यदि अनुराधा नक्षत्र हो तो और भी अच्छा होता है। बृहस्पतिका व्रत कमसे कम चार बार तो करना चाहिए। पहली कथामें चार बार लगातार बृहस्पति व्रत करनेसे बृह स्पतिदेवका वचन ईर्ष्यालु भावजको भी प्राप्त होता है। तीसरी कथामें रानी चार बृहस्पति लगातार व्रत रहती है और राजाका फिरसे भाग्योदय हो जाता है।

बृहस्पतिवारको स्त्रियोंको सिर धोना तेल डालने कंघी-चोटी इत्यादि करनेका निषेध है। पुरुषोंको आजके दिन क्षौर कर्म नहीं कराना चाहिए और न तेल लगाना चाहिए। तीसरी कथामें यह दिखाया गया है कि रानी धन-सम्पत्तिकी अधिकतासे ऊब गयी है।

अत: वह नारद मुनिसे पूछती है कि कैसे निर्धन बना जाये। नारद इन्हीं कामोंके करनेकी बात बताते हैं जिनका आजके दिन निषेध है।

'हिन्दू होलीडेज एण्ड सेरीमोनियल्स' नामक पुस्तकमें श्री बी०ए० गुप्तेने एक कथा निम्न प्रकार दी है

"एक राजा था। उसके सात बेटे थे और छावोंकी बहुएँ थीं। चाचा भतीजे दो ब्राह्मण नित्यप्रति भीख माँगने आते। बहुएँ थीं घमण्डिनी। वे हमेशा कह देतीं हाथ खाली नहीं है। परिणाम यह हुआ कि सब धन-सम्पत्ति चली गयी और राजा ग़रीब हो गया। अब घर भरके हाथ खाली हो गये। परन्तु अब भी बड़ी छह बहुएँ यही कहतीं हाथ खाली नहीं है। परन्तु छोटी बहूने यह सब देखा और समझा। उसने उन ब्राह्मणोंसे माफ़ी माँगी और कहा कि भीख न देकर उन्होंने पाप किया है। उसने पूछा कि क्या किया जाये जिससे पहले-जैसी स्थिति फिर हो जाये। ब्राह्मणने बताया कि श्रावणके महीनेमें एक ब्राह्मणको भोजन कराओ और बुध और बृहस्पति ग्रहोंकी शान्तिके लिए पूजा-व्रत करो। अगर किसीका पति परदेश चला गया है और वह उसे वापस चाहती है तो दरवाजेके पीछे दो मानव आकृतियाँ बनाये। अगर उसे धन चाहिए तो उसे उन आकृतियोंको बक्सपर बनाना चाहिए। अगर धान्य चाहिए तो कोठारोंमें बनाये। और ग्रहों की पूजा करके ब्राह्मणको पेट भरकर खिलाये। छोटीने ऐसा ही किया। उसने रातमें सपना देखा कि वह चाँदीके बरतनसे घी परोस रही है। जब उसने अपना सपना औरोंको बताया तो सबने उसका मज़ाक़ बनाया।

उसका पति जिस देशमें कमाने गया था वहाँका राजा मर गया। परन्तु नये राजाकी घोषणाके बिना उसका दाह-संस्कार नहीं किया जा सकता था। उसके कोई पुत्र न था। दरबारियोंने यह निश्चय किया कि हथिनीकी सूँड़में माला दे दी जाये। वह जिसको पहना दे वही राजा

बना दिया जायेगा। ऐसा ही किया गया। इस समारोहको देखनेके लिए बहुत-से लोग एकत्र हो गये। छोटीका पति उसी भीड़में था। हथिनीने जाकर उसीके गलेमें माला पहना दी। दरबारियोंने निश्चय करनेके लिए तीन बार हथिनीको माला दी उसने तीनों बार उसीको पहनायी। वह राजा बना दिया गया। उसने अपने परिवारके लोगोंको बुलवाया परन्तु वे सब काम ढूँढ़नेके लिए कहीं चले गये थे। उसने ढिंढोरा पिट वाया। प्रजाके लिए उसने एक बहुत बड़ा तालाब बनवाना शुरू किया। उसमें हजारों मजदूरोंको काम दिया गया, उसीमें उसके परिवारके लोग भी थे। वह सबको लेकर महलमें आया। और सब लोग सुखपूर्वक रहने लगे। सबने अब छोटीके सपनेपर विश्वास किया और सभी उबसे धर्म कर्म ठीकसे करने लगीं। किसी भिखारीको खाली हाथ न लौटातीं।

एक कथा श्रीरामप्रताप त्रिपाठीने भी लोककथाके रूपमें दी है। संक्षेपमें कथा इस प्रकार है

'एक धनी व्यापारीकी स्त्री बड़ी कंजूस थी। वह दान पुण्य कभी नहीं करती थी। एक बार एक साधु भीख माँगने आया। उसने कह दिया हाथ खाली नहीं है। जितनी बार साधु आया उसने कह दिया हाथ खाली नहीं है। एक दिन सेठानी बोली, "तुम उसी समय आते हो जब हाथ खाली नहीं होते।' साधुने कहा, 'माताजी! तो वह समय बता दो जब आपके हाथ खाली हों। मैं उसी समय आ आऊँगा। सेठानी कुछ नरम पड़ी। उसने कहा, 'महाराज क्या बताऊँ? इतना काम रहता है कि एक पलकी भी फुरसत नहीं मिलती।"

साधु बोला, माताजी! यदि मैं तुम्हें फुरसत पानेके उपाय बता दूँ तो क्या मुझे भिक्षा मिलेगी?' सेठानीने कहा 'ऐसा कर दो फिर क्या कहना साधुने सेठानीसे कहा बृहस्पतिके दिन तुम सब घरका कूड़ा-कबाड़ निकालकर गाय भैंसोंके नीचे डालकर नहा लेना। अपने घरके पुरुषोंसे कह देना कि वे बृहस्पतिको बाल बनवायें। उस दिन

तुम भोजन बनाकर चूल्हेके पीछे धरना सामने नहीं। शामको कुछ देरसे दीपक जलाना। यह सब चार बृहस्पतिको लगातार करनेसे तुम्हें फुरसत मिल जायेगी। किन्तु तब मुझे भिक्षा दोगी न?

सेठानीने कहा, "पहले मैं करके देख लूँ तब तुम भिक्षा लेने आना।' साधु चला गया। सेठानीने वैसा ही किया। चौथे बृहस्पतिके पूरे होते न होते उसकी गृहस्थीसे सब कुछ साफ़ हो गया। धन सम्पत्ति चोर उठा ले गये, पशु मर गये खेती नष्ट हो गयी, व्यापार डूब गया। गरीबी आ गयी और अब सेठानीके पास करनेको कुछ भी न था। यहाँतक कि खाने पीनेके भी लाले पड़ गये। कुछ दिनों बाद वही साधु आया। आते ही भिक्षाकी याचना की। सेठानी दौड़ी हुई आयी। अबतक उसकी अक्ल ठिकाने लग चुकी थी। उसने साधुसे क्षमा याचना की और अपने कियेपर बहुत पछतायी। साधुने सेठानीको व्रत बताया कि अब अपने घरवालोंसे कह दो कि बृहस्पतिको भूलकर भी क्षौर न करायें — बुध या शुक्रको करायें। सब लोग सूर्योदयके पहले ही सोकर उठ जायें। घर-द्वार साफ़ रखें। सन्ध्या होते ही दीपक जलायें। बृहस्पतिको एकाहार करें। रसोई बनाकर चूल्हेके सामने रखें। भूखे प्यासेको अन्न जल देकर तब खायें। महान मानवोंको दान-मानसे सन्तुष्ट रखें। भगवान्‌की प्रार्थना करें और किसीका अहित न चेतें।

सेठानीने साधुकी आज्ञा मानकर बृहस्पतिका व्रत किया और उसकी बतायी विधिके अनुसार जीवन बिताने लगी। ईश्वरकी कृपासे थोड़े दिनोंमें उसके सब दुःख दूर हो गये।

इन दोनों कथाओंके कुछ अभिप्राय हमारी तीसरी कथामें भी प्राप्त हैं। हमारी कथामें रानी धन सम्पत्तिकी अधिकतासे ऊब जाती है और नारद मुनिसे उसके ह्रासकी युक्ति पूछती है। नारदजी लगभग इस साधुकी-सी युक्तियाँ बतलाते हैं। जब गरीबी हो जाती है तो दूसरे चीकी कथानुसार राजा परदेश कमाने जाता है। हमारी कथाका

बना दिया जायेगा। ऐसा ही किया गया। इस तमाशेको देखनेके लिए बहुत-से लोग एकत्र हो गये। छोटीका पति उसी भीड़में था। हथिनीने आकर उसीके गलेमें माला पहना दी। दरबारियोंने निश्चय करनेके लिए तीन बार हथिनीको माला दी उसने तीनों बार उसीको पहनायी। वह राजा बना दिया गया। उसने अपने परिवारके लोगोंको बुलवाया परन्तु वे सब काम ढूँढ़नेके लिए कहीं चले गये थे। उसने ढिंढोरा पिटवाया। प्रजाके लिए उसने एक बहुत बड़ा तालाब बनवाना शुरू किया। उसमें हजारों मजदूरोंको काम दिया गया, उसीमें उसके परिवारके लोग भी थे। वह सबको लेकर महलमें आया। और सब लोग सुखपूर्वक रहने लगे। सबने अब छोटीके सपनेपर विश्वास किया और सभी तबसे धर्म कर्म ठीकसे करने लगीं। किसी भिखारीको खाली हाथ न लौटातीं।

एक कथा श्रीरामप्रताप त्रिपाठीने भी लोककथाके रूपमें दी है। संक्षेपमें कथा इस प्रकार है

'एक धनी व्यापारीकी स्त्री बड़ी कंजूस थी। वह दान पुण्य कभी नहीं करती थी। एक दफ़ा एक साधु भीख माँगने आया। उसने कह दिया हाथ खाली नहीं है। जितनी बार साधु आया उसने कह दिया हाथ खाली नहीं है। एक दिन सेठानी बोली, "तुम उसी समय आते हो जब हाथ खाली नहीं होते। साधुने कहा, 'माताजी! तो वह समय बता दो जब आपके हाथ खाली हों। मैं उसी समय आ जाऊँगा। सेठानी कुछ नरम पड़ी। उसने कहा, 'महाराज क्या बताऊँ? इतना काम रहता है कि एक पलकी भी फ़ुरसत नहीं मिलती।'

साधु बोला 'माताजी! यदि मैं तुम्हें फ़ुरसत पानेके उपाय बता दूँ तो क्या मुझे भिक्षा मिलेगी?" सेठानीने कहा "ऐसा कर दो फिर क्या कहना' साधुने सेठानीसे कहा, "बृहस्पतिके दिन तुम सब घरका कूड़ा-कबाड़ निकालकर गाय भैंसोंके नीचे डालकर नहा लेना। अपने घरके पुरुषोंसे कह देना कि वे बृहस्पतिको बाल बनवायें। उस दिन

तुम भोजन बनाकर चूल्हेके पीछे धरना सामने नहीं। शामको कुछ देरसे दीपक जलाना। यह सब वार बृहस्पतिको लगातार करनेसे तुम्हें फुर सत मिल जायेगी। किन्तु तब मुझे भिक्षा दोगी न ?

सेठानीने कहा "पहले मैं करके देख लूं तब तुम भिक्षा लेने आना।' साधु चला गया। सेठानीने वैसा ही किया। चौथे बृहस्पतिके पूरे होते न होते उसकी गृहस्थीसे सब कुछ साफ़ हो गया। धन सम्पत्ति चोर उठा ले गये, पशु मर गये खेती नष्ट हो गयी व्यापार डूब गया। ग़रीबी आ गयी और अब सेठानीके पास करनेको कुछ भी न था। यहाँतक कि खाने पीनेके भी लाले पड़ गये। कुछ दिनों बाद वही साधु आया। आते ही भिक्षाकी याचना की। सेठानी दौड़ी हुई आयी। अबतक उसकी अक्ल ठिकाने लग चुकी थी। उसने साधुसे क्षमा याचना की और अपने कियेपर बहुत पछतायी। साधुने सेठानीको बत लाया कि अब अपने घरवालोंसे कह दो कि बृहस्पतिको भूलकर भी क्षौर न करायें – बुध या शुक्रको करायें। सब लोग सूर्योदयके पहले ही सोकर उठ जायें। घर-द्वार साफ़ रखें। सन्ध्या होते ही दीपक जलायें। बृहस्पतिको एकाहार करें। रसोई बनाकर चूल्हेके सामने रखें। भूखे प्यासेको अन्न-जल देकर तब खायें। बहन भानजेका दान-मानसे सन्तुष्ट रखें। भगवान्की प्रार्थना करें और किसीका अहित न चेतें।

सेठानीने साधुकी आज्ञा मानकर बृहस्पतिका व्रत किया और उसकी बतायी विधिके अनुसार जीवन बिताने लगी। ईश्वरकी कृपासे थोड़े दिनोंमें उसके सब दुःख दूर हो गये।

इन दोनों कथाओंके कुछ अभिप्राय हमारी तीसरी कथामें भी प्राप्त हैं। हमारी कथामें रानी धन सम्पत्तिकी अधिकतासे ऊब जाती है और नारद मुनिसे उसके ह्रासकी युक्ति पूछती है। नारदजी लगभग इस साधुकी-सी युक्तियाँ बतलाते हैं। जब ग़रीबी हो जाती है तो गुप्त जीकी कथानुसार राजा परदेश कमाने जाता है। हमारी कथाका

अन्तिम अंश इस दोनोंसे भिन्न है परन्तु अभिप्राय लगभग एक ही है। बृहस्पतिकी कृपासे उन्हें धन-सम्पत्ति फिरसे प्राप्त हो जाती है। पहली दो कथाएँ अपनी रचनामें बिलकुल भिन्न हैं। परन्तु उद्देश्य दोनों कथाओंका एक ही है – बृहस्पति माहात्म्य।

अवधी क्षेत्रमें स्त्रियाँ मनौती मानकर व्रत करती हैं। मनौती पूरी हो जानेपर विधिवत् उद्यापन करती हैं। किसी उद्देश्यकी पूर्तिके लिए *जब बृहस्पतिका व्रत किया जाता है तो केवल दो बृहस्पति लगातार* रहकर छोड़ दिये जाते हैं। तीसरा बृहस्पतिका व्रत तभी किया जायेगा जब उद्देश्यकी पूर्ति हो जायेगी। इस प्रकारके व्रतोंमें दिवस-गुड़ चबा जाता है। अन्यथा निराहार रहा जाता है।

१

किसी भाईके एक बहन थी। वह सदा हर बृहस्पतिको उपास रखती। बृहस्पतिदेवकी पूजा करती और कथा सुनाकर पानी पीती। बृहस्पतिदेव प्रसन्न होकर पाँच लड्डू पाँच मोहरें और एक सोनेका कटोरा उसको दिया करते थे। लड्डू तो वह प्रसादमें बाँट देती। थोड़ा अपने लिए रख लेती पर मोहरें और कटोरा भाईको दे देती थी। एक दिन भाईने अपनी स्त्रीसे पूछा, 'यह इतनी मोहरें और सोनेका कटोरा कहाँसे लाती है?" स्त्री बोली "क्या दिखाई नहीं देता? पापकी कमाई है तिसपर भी तुम इस कुलच्छनीको घरमें टिकाये हुए हो। तुमने तो आँखें बन्द कर रखी हैं, और कोई होता तो खड़े-खड़े घरसे निकाल देता। तुम सेंतमेंतमें बदनामी सह रहे हो।' भाई अपनी पत्नीकी बातें सुनकर तैशमें आ गया और बोला, 'अच्छा अभी लो। पल-भरमें निकाले देता हूँ।' भाईने जाकर बहनसे कहा, "चलो बहन तुम्हें जंगल घुमा लायें।' बहन समझ गयी–भाभीने भैयाको कुछ सिखाया-पढ़ाया है। पर कुछ बोली नहीं और चुपचाप भैयाके साथ हो ली।

कुछ देर चलनेके बाद दोनों जंगलमें पहुँचे। बहन बोली, 'भया ! ऐसी जगह छोड़ना जहाँ केलेके पेड़ और पानी हों।' अन्तमें चलते चलते जब ऐसा स्थान आया तो भाई बहनको छोड़कर चल दिया। बृहस्पतिवारका दिन था। बहनने स्नान करके विधिपूर्वक पूजा की। बृहस्पतिदेवने हमेशाकी भाँति पाँच लड्डू, पाँच मोहरें और एक सोने का कटोरा दिया। लड्डू तो बहनने खा लिये। पर मोहरों और कटोरे के बारेमें सोचने लगी। अगर भाई होते तो मोहरें और कटोरा दे देती। वह चारों ओर देखने लगी। भाई कहीं गया तो था नहीं। वहीं पासके पेड़पर चढ़कर वह सब देख रहा था। उतरकर उसने पूछा, "बहन किसे ढूँढ़ रही हो?' बहन भाईको देखकर बड़ी प्रसन्न हुई और बोली, तुम्हींको ढूँढ़ रही थी। यह कटोरा और मोहरें ले लो। यह सुनकर भाई बड़ा लज्जित हुआ। उसने कहा, "बहन घर चलो।" बहन बोली, न भैया जिस घरसे कलंकिनी बनाकर निकाली गयी उस घर अब क्या मुँह लेकर जाऊँ?' भाई बोला बहन ! अब मैं सब अपनी आँखोंसे देख चुका हूँ। तुम सा तो पवित्र इस दुनियामें कोई न होगा। मैं तुम्हारे बिना न जाऊँगा। अब मुझे क्षमा करो बहन ! अन्तमें लाचार होकर बहनको भाईके साथ घर जाना पड़ा।

इधर भाभी अपनी ननदके चले जानेसे बड़ी प्रसन्न थी। उसने सारा घर झाड़ा-पोंछा और सजाया। तरह-तरहकी मिठाइयाँ और पकवान बनाये। इतनेमें ही भाई बहनको लेकर आ पहुँचा। भौजाईने जो ननदको देखा तो सिरसे पाँव तक आग लग गयी। झनकारती हुई बोली, 'फिर ले आये इस दुष्टाको। हद हो गयी। जैसी बहन वैसा भाई।' भाई बोला "दुष्टा यह नहीं तू है। तू इससे जलती है, इसे देख नहीं सकती। इसीलिए तूने यह चाल रचा इसे कलंकिनी बताया। मैं भी मूर्ख था जो तुम्हारी बातोंमें आ गया। इसके समान और कोई पवित्र हो ही नहीं सकता। इसीकी कृपासे आज मुझे बृहस्पतिदेवका दर्शन

हुए। कुलच्छनी तो तू है।"

स्त्री-बोली, 'मैं कैसे समझूँ! मुझे भी भगवान्‌के दर्शन कराओ तो मैं मानूँ। भाई बोला, 'ठीक है।' उसने बहनसे कहा, "इसे भी विश्वास दिलाओ। बहनके जीमें बड़ा गाढ़ पड़ा। उसने भगवान्‌से प्रार्थना की, अब लाज रख लो। मेरी परीक्षा है और तुम्हारी भी।" बृहस्पतिवार आया। बहनने उपास किया पूजा की पर कुछ न हुआ। दूसरे बृहस्पतिवारको बहनने पूजा की और व्रत रखा पर भगवान्‌ने दर्शन न दिये। बहनने तीसरे बृहस्पतिवारको फिर उपवास किया, पूजा की। इस बार भगवान् प्रकट हुए। उस दिन उसकी भौजाईने भी भगवान्‌के दर्शन किये। भगवान्‌के दर्शनोंसे उसके मनकी दुष्टता मिट गयी। वह ननदके पैरोंपर गिर पड़ी और बोली, 'बहन! मुझे क्षमा कर दो। तुम धन्य हो। तुम्हारी कृपासे मुझे भगवान्‌के दर्शन मिले।

सबने बृहस्पतिदेवकी महिमा गायी और सुखी हुए।

२

एक था राजा। एक थी रानी। उनके सात लड़के और छह बहुएँ थीं। सबसे छोटे लड़केका अभी विवाह नहीं हुआ था। कहनेको तो वे राजा रानी थे पर असलमें बे बहुत ग़रीब थे। यहाँतक कि बनियेके यहाँसे रोज सामान तौलकर आता और सबको गिनकर चार रोटियाँ मिलतीं। सास-बहुओंमें-से कोई भी व्रत-उपवास नहीं करती थीं। सातवें लड़केका भी विवाह हुआ। बहू आयी। सासने रोटियोंका हिसाब समझा दिया।

सातवीं बहूको इस हिसाब किताबसे बड़ा अचरज हुआ। पर करती तो क्या करती? बृहस्पतिका दिन आया। छोटी बहूने साससे कहा, 'मैं बृहस्पति देवकी पूजा और कथा करवाना चाहती हूँ।' सास यह सुनकर बहुत बिगड़ी और बोली, हमारे यहाँ टोना-टोटका नहीं

चलेगा। पूजा पाठका टिटम्बर तुम अपने मायकेमें ही किया करो।" न मैं कुछ करती हूं और न ये तुम्हारी जिठानियाँ। न जाने तुम यह टिटम्बर कहाँसे लायी हो?' बहूने जिठानियोंसे सलाह की। उन्होंने भी वही कहा जो सासने कहा था। अन्तमें बहू ससुरके पास गयी और बोली, पिताजी! मैं बृहस्पतिकी पूजा करना चाहती हूं। आपकी क्या आज्ञा है?" ससुरने कहा, 'जरूर करो बेटी!'

घरमें दिउल और गुड़ तक न था। पूजा करती तो कैसे करती? उसने अपना सोनेका कगन ससुरको देकर दिउल और गुड़ लानेको कहा। ससुर कगन लेकर बाहर निकले। बृहस्पतिदेव बनियेका रूप धारण करके उधरसे निकले और पूछा राजा साहेब! कहाँ जा रहे हैं?" राजाने कहा 'बहूने बृहस्पतिकी पूजा मानी है सो दिउल और गुड़ लेने जा रहा हूं।' बनियेने कहा "राजा साहेब! मेरे सिरपर बोझ भारी है मुझसे ही खरीद लीजिए। राजाने कहा इससे अच्छी क्या बात है? आओ तुम्हीसे खरीद लें। बनियेने गुड़ दिउल तोलकर गठरी बाँध दी और कगन लेकर उसी गठरीमें खोंस दिया। बहूने जब गठरी खोली तो देखा कगन रखा है। उसने ससुरसे कहा। ससुरने कहा, 'बेटी! एक बनिया यहीं आ गया था, उसीसे सामान ले लिया था और उसे कंगन दे दिया था।

बहूने पूजा की! चार लड्डू बनाये और फिर ससुरसे बोली, 'पिताजी एक ऐसे ब्राह्मणको बुला दीजिए जो कम खाता हो। ससुर बुलाने चला। बाहर बृहस्पतिदेव बूढ़े ब्राह्मणका रूप धरे बैठे थे। ससुर बाहर आया तो ब्राह्मणने पूछा, 'राजा साहेब? कहाँ चले?' राजाने कहा, 'एक ऐसे ब्राह्मणको खोजने निकला हूं जो कमसे कम खाता हो। बहूने बृहस्पतिदेवकी पूजा की है। बृहस्पतिदेव ने कहा 'राजन! ब्राह्मण तो मैं भी हूं और आप जितना खिलायेंगे उतनेमें ही सन्तुष्ट हो जाऊँगा। राजाने कहा तो आप ही चलिए।

बहूने चारों लड्डू परस दिये और खानेको कहा। पर ब्राह्मण बोला, "अपने सास ससुर, जेठ-जिठानियोंके लिए भी इतने ही लड्डू परस लाओ तो खाऊँगा।" बहू बड़े सोचमें पड़ गयी। बृहस्पतिदेव उसकी हिचकिचाहट समझ गये। बोले "बेटी! अन्दर जाओ और परस लाओ।" बहू अन्दर गयी तो देखा डलियोंमें लड्डू-ही-लड्डू रखे हैं। वह सबके लिए बड़ी खुशीसे लड्डू परोसने लगी। सबने प्रसन्न होकर पेट भर भर लड्डू खाये और बहूको आशीर्वाद दिया।

ब्राह्मण बोला, 'अब आँखें बन्द करके भगवान्‌का ध्यान धरो।' सब आँखें बन्द करके भगवान्‌का ध्यान करने लगे। जब सबने आँखें खोलीं तबतक ब्राह्मण देवता अन्तर्धान हो चुके थे और घरमें कंचन बरस रहा था। सब समझ गये कि आज साक्षात् बृहस्पति देवताने कृपा की है। सारा परिवार सुखसे रहने लगा।

२

एक थे राजा रानी बड़े अमीर, बड़े धनवान्। वे अपने ऐश्वर्य और धन-दौलतसे इतने परेशान थे कि उनकी समझमें ही न आता कि इस धन-सम्पदाका क्या करें और कहाँ धरें? झाड़ूसे बटोरते तो भी बिखरा बिखरा फिरता। एक दिन नारदमुनि भिक्षा लेने आये। रानी ने पूछा 'मुनिवर! कोई ऐसी युक्ति बताइए कि इस धन-दौलतसे छुटकारा मिल जाये।' नारदने कहा 'यह तो बड़ी आसान बात है। राजासे कहना कि बृहस्पतिके दिन तेल उबटन लगवायें और बाल बनवायें। तुम सारे महलमें झाड़ू लगाकर कूड़ेको एक कोनेमें एकत्र कर देना। सिरसे नहा लेना और तेल डालकर चोटी-कंघी कर डालना। तीन बृहस्पति ऐसे ही करना, तुम धन-दौलतकी कठिनाईसे छुटकारा पा जाओगी।

रानीने ऐसा ही किया। राजाने बहुत समझाया कि एकदम

भिखारी होनेसे भी क्या फ़ायदा ? पर रानीके तो सनक सवार थी, वह न मानी। तीसरे बृहस्पतिके आते-आते सारा धन हुर-बदुर गया। राजा रानी कंगाल हो गये। आज खाया तो खाया पर कल क्या खायेंगे — यह उनकी नित्यप्रतिकी समस्या थी। राजाने सोचा कि जिस देशमें राजाकी तरह राज्य किया और शानसे रहे अब उसी देश में दाने-दानेके लिए दूसरोंका मुँह ताकना ठीक नहीं है। अगर भीख ही माँगना है तो किसी दूसरे देशमें माँगेंगे। ऐसा सोचकर वह दूसरे देशको चल दिये। राजा अकेले ही गया रानी वहीं रही। एक बूढ़ी दासीने फिर भी रानीका साथ न छोड़ा। वह कहती 'रानी! अब तुम्हारे सुखके दिन थे तब तो तुमने सुख भोग किया अब दुःखमें कैसे छोड़ दूँ।"

दूसरे देशमें राजाने एक साहूकारके यहाँ नौकरी की। पर वहाँ भी बृहस्पतिका कोप पहुँच गया, भी मन सूत उलझ गया। देनदार धन न लौटाते और खरीददार माल न खरीदते। राजाको बड़ी बातें-कुबातें सहनी पड़तीं। पर वे करते भी क्या ? नौकरी तो नौकरी ही होती है। इधर रानी भी मुसीबतोंमें दिन काट रही थी। दासी रोज दूसरोंके यहाँसे सीधा-सामान माँग लाती और उसीसे दोनों अपना पेट पालतीं। एक बार बृहस्पतिका दिन था, दासी राजाकी बहनके यहाँ सीधा माँगने गयी। बहनने कहा "जरा ठहर जा। पूजा कर लूँ तब दूँ। उसने तो अपनेको कंगाल ही बना लिया। यही चाहती होगी कि दूसरे लोग भी कंगाल हो जायें। दासीको बात लग गयी। पर क्या करती ? रुकी रही। पूजाके बाद सीधा लिया घर आयी और रानीको सब कुछ सुनाया। दासी बोली "रानी! तुमने भी तो अभीतक कुछ नहीं खाया। आज बृहस्पतिका उपवास समझो और बृहस्पतिदेवकी पूजा करके फिर प्रसाद खाओ। तुम्हारा भी बृहस्पतिका व्रत हो जायेगा। रानीने ऐसा ही किया। इसी प्रकार रानीने तीन बृहस्पतिवारोंको व्रत किया और पूजा की। पर धन-धान्यसे फिर भर उठा।

चौथे बृहस्पतिके दिन राजाने स्वप्न देखा कि एक बूढ़ा आदमी उसके सामने खड़ा कह रहा है "राजन् ! घर जाओ।" राजाने कहा, "घर कैसे जाऊँ। तो मन सूत उलझा पड़ा है। देनेवाले दे नहीं गये लेनेवाले ले नहीं गये।" बूढ़ा बोला, "तुम जाओ सुन सुलझ जायेगा। देनेवाले दे जायेंगे और लेनेवाले ले जायेंगे।" सुबह हुई। राजाने साहूकारको अपना सपना सुनाया। साहूकारने कहा "अवश्य ही यह किसी देवताका आदेश है क्योंकि सूत सुलझ गया है और देनवारों तथा लेनवारोंकी भीड़ लगी है। अब तुम देर न करो फ़ौरन अपने घर जाओ।

राजा आज्ञा पाकर अपने घरको चल दिया। घरमें समाचार पहुँच गया कि राजा आ गये। इस प्रकार एक बार फिर दोनों राजा रानी सुखसे रहने लगे।

राजा एक दिन बृहस्पति उपवासे थे। उन्होंने कहा, 'तुम लोगोंने इतने दिनोंमें मेरी बहनकी कोई खबर नहीं ली। मैं बहनके यहाँ जा रहा हूँ।" शाम हो गयी थी। खेतमें एक किसान हल चलाते हुए मिला। राजा बोला 'हे भाई ! आज मैं बृहस्पति उपवासा हूँ। अभी पानी नहीं पिया। तुम जरा बृहस्पतिकी कथा सुन लो तो मैं पानी पी लूँ। किसानने कहा 'जितनी देर मैं तुम्हारी कथा सुनूँगा उतनी देरमें चार फार और जोतूँगा।' इतना कहते ही उसके बैल मर गये। राजा राह में जिससे भी कथा सुननेको कहते वह इनकार कर देता। साथ ही सजा भी भुगतता। चलते-चलते राजा कहीं रातमें बहनके यहाँ पहुँचा। बहनने देखा, बारह बरस बाद भैया आया है पानी लेकर दौड़ी। राजाने कहा "मैं बृहस्पति उपवासा हूँ। जबतक कोई कथा न सुन लेगा मैं पानी नहीं पिऊँगा। इसलिए तुम किसी ऐसे आदमीको लिवा लाओ जिसने अभीतक पानी न पिया हो जो आकर कथा सुन ले।' बहनने सोचा कि इस समय तक तो लोग दो-चार बार खा-पी चुके होंगे। अब तक कौन उपासा बैठा होगा ? एकाएक उसे याद आया कि कुम्हारका

लड़का बहुत बीमार था—अब मरा तब मरा लगा था। उसकी चिंता में शायद उसके घरवालोंने न खाया हो। बहन कुम्हारके घर पहुँची तो देखा कि कुम्हारकी बूढ़ी माँ लड़केके पास बैठी रो रही है। बहन बोली "माँ! आज बारह वर्ष बाद मेरा भैया आया है। यह बृहस्पति उपासा है। तुमने अभीतक कुछ खाया पिया न होगा। चलो चलकर कथा सुन लो जिससे मेरा भाई पानी पी ले।' बुढ़िया बोली, "लो, इसकी बातें सुनो! मेरा तो लड़का मर रहा है और मैं इसके घर जाकर कथा सुनूं?" बहू बैठी सुन रही थी, बोली "अम्मा! तुम जाओ कथा सुन आओ। तुम लड़केके पास बैठकर जिला तो लोगी नहीं। पर जानेसे इनके भाई के प्राणकी रक्षा जरूर कर सकती हो।" इतना सुनकर बुढ़िया मान गयी।

बुढ़िया बहनके साथ घर आयी। राजा कथा कहने लगे बुढ़िया सुनने लगी। राजा जैसे-जैसे अक्षत फेंकते जाते वैसे वैसे उधर कुम्हारके लड़केमें जान आती जाती। कथा पूरी हुई और उधर कुम्हारका लड़का उठकर बैठ गया। बुढ़ियाकी बहू दौड़ी हुई आयी और बोली, 'माँ! तुम्हारा बेटा बैठा खाना माँग रहा है। बुढ़ियाको यह सुनकर बड़ा अचरज हुआ। सबने समझाया कि बृहस्पतिदेवकी कृपासे ही ऐसा हुआ है। बुढ़ियाने गद्‌गद हृदयसे बृहस्पतिदेवको प्रणाम किया। सभी लोगोंने प्रणाम किया। सबके दुःख दूर हो गये।

■

शुक्रवार

अवधी क्षेत्रमें शुक्रवारका व्रत बहुत कम प्रचलित है। शुक्रग्रहकी शान्ति और प्रसन्नताके लिए यह व्रत किया जाता है। विशेष रूपसे धन सम्पत्ति और पुत्रकी दीर्घायुके लिए किया जाता है। शुक्रवारका व्रत लक्ष्मीजीका व्रत भी माना जाता है। भविष्यपुराणमें जो कथा दी है उसका सम्बन्ध लक्ष्मीजीसे है। पूजाविधिमें लक्ष्मीजीका ध्यान कर आवाहन किया जाता है और श्वेत पुष्प श्वेत वस्त्र इत्यादि अर्पित किये जाते हैं और घी शक्करका नैवेद्य चढ़ाया जाता है। भविष्यपुराणकी कथा इस प्रकार है

कैलाश पर्वतपर शंकर भगवान् पार्वतीजीके साथ पाँसे खेल रहे थे। जीतके सम्बन्धमें दोनोंमें विवाद हो गया। चित्रनेमिसे पूछा गया कि किसकी जीत हुई। तो उसने शंकरकी जीत बतला दी। पार्वती जी इसपर नाराज हो गयीं और झूठ बोलनेके अपराधके लिए उन्होंने चित्रनेमिको कोढ़ी होनेका शाप दे दिया। शंकर भगवान्ने पार्वतीजी को समझाया और बताया कि बुद्धिमान् चित्रनेमि कभी झूठ नहीं बोलता। पार्वतीजीने शापमोचनकी युक्ति बतलायी—जब सुन्दर सरोवरपर अप्सराएँ पवित्र व्रत करेंगी और एकाग्रमनसे तुझे बतायेंगी तब तू शापमुक्त होगा। इतना सुनते ही चित्रनेमि वहाँसे गिर गया और उस सरोवरके किनारे कोढ़ी होकर रहने लगा।

एक दिन उसने देवपूजनमें निरत अप्सराओंको देखा और उनसे पूछा आप लोग किसका पूजन करती हैं इसका क्या फल होता है मैं क्या करूँ जिससे शापमुक्त हो सकूँ? उन अप्सराओंने बताया कि

यह श्रेष्ठ व्रत लक्ष्मीजीका है। जब सूर्य कर्क राशिपर हो तथा श्रावण मास हो गंगा-यमुनाके संगमपर या गुंगभद्रा नदीके किनारे श्रावण मासके शुक्ल पक्षके शुक्रवारको लक्ष्मी-व्रत करना चाहिए। अप्सराए विस्तारसे पूजन विधि बतलाती हैं। वे अप्सराएँ विधिवत् पूजन करती हैं। पूजाके अन्तमें वे विप्रनेमिको कहती हैं कि धूपके धुएँ और घृतके दीपकके प्रभावसे वह कुष्ठ रहित हो रहा है। उसने भी फिर विधिवत् लक्ष्मीजीका व्रत किया और पूर्ण स्वस्थ शुद्ध एवं निर्मल शरीर पाकर वह फिर कैलाशपर शंकर भगवानके स्थानपर पहुँचा। पार्वती जीकी कृपा प्राप्त की और उनके पुत्रके समान रहने लगा। शंकरजीने बतलाया कि पार्वतीजीने स्वयं यह व्रत किया था जिसके प्रभावसे उन्हें कार्तिकेय जैसा पुत्ररत्न प्राप्त हुआ था।

शुक्रवारके व्रतके सम्बन्धमें भविष्योत्तर पुराणमें एक भिन्न कथा दी गयी है जो निम्न प्रकार है परन्तु इसके अनुसार भी शुक्रवार व्रत लक्ष्मीजीका व्रत सिद्ध होता है।

शंकर भगवान् पार्वतीजीसे कहते हैं कि जब श्रावण महीनेकी पूर्णमासीको शुक्रवार पड़ता है तब वरलक्ष्मी व्रत करना चाहिए। इस व्रतका माहात्म्य बतलाते हुए कहते हैं कि कौण्डिन्य नगरमें चारुमती नामकी एक ब्राह्मण स्त्री रहती थी। चारुमती बहुत ही पवित्र अच्छे विचारोंकी स्त्री थी। वह बड़ी सुन्दर थी और उसका स्वर बड़ा ही मीठा था। एक दिन लक्ष्मीने उसे सपनाया कि वरलक्ष्मीकी सोनेकी मूर्ति बनवाकर उसकी पूजा करे। घरके पूर्वमें या पूर्व उत्तर दिशामें एक स्थानको शुद्ध करके वहाँपर मूर्तिकी स्थापना करे। स्वस्तिकका चिह्न बनाकर और उसपर एक सेर गेहूँका आटा रखकर और उसपर चावलोंसे भरा हुआ कलश रखकर उसे नये वस्त्रसे ढक दे। फिर इसपर लक्ष्मीजीकी मूर्तिको रखे और विधिवत् पूजा करे। छप्पनों प्रकारके व्यंजन बनाकर लक्ष्मीजीको भोग लगाकर ब्राह्मणको भोजन

कराकर भोजन करें। इस प्रकार आदेश देकर लक्ष्मीजी चली गयीं। चारुमतीने अपने सपनेकी बात घरमें कही और श्रावण महीनेके पूर्णिमा शुक्रवारको विधिवत् पूजन व्रत किया। व्रत और पूजाके फल स्वरूप उसको हाथी घोड़े, गाय बैल, रथ इत्यादि चीजें मिल गयीं और उसका घर धन धान्यसे भर गया। उसके मित्रोंने भी इसी व्रतको किया और वे सब धनवान् हो गयीं। शंकरजीने कहा कि सरस्वती, सावित्री, इन्द्राणी जिसने भी यह व्रत किया वही सब प्रकारसे प्रसन्न हुआ।

श्री बी० ए० गुप्तेने जीवन्तिका पूजनके लिए श्रावणके शुक्रवारों को महत्व दिया है जिसके सम्बन्धमें उन्होंने बहुत ही रोचक कथा दी है जो निम्न प्रकार है

'एक नगरमें एक राजा था। राजाके कोई सन्तान न थी। रानीने चोरी चोरी एक सद्योजात लड़केको गोद ले लिया। वह लड़का एक गरीब ब्राह्मणीका था जिसकी आँखोंपर प्रसवके समय पट्टी बाँध दी गयी थी और बच्चेके स्थानपर पत्थर रख दिया गया। और रानीने ढिंढोरा पिटवा दिया कि राजाके पुत्र हुआ। गाजा-बाजा धूम धड़क्का होने लगा। नक़ली राजकुमार बढ़ने लगा और इधर माँ बड़ी दुःखी और चिन्तित रहती थी। उसे दाईपर शक होता था परन्तु बिना किसी सबूतके वह कुछ न कर सकी। पुत्रोंकी दीर्घायुकी देवी जीवन्तिकाकी पूजाके लिए वह श्रावणके शुक्रवारको व्रत रहने लगी। पूजाके बाद वह अपने पुत्रकी दीर्घायुके लिए शून्यमें अक्षत फेंकती और कहती– 'जीवन्तिका मैया! मेरा बेटा कहीं भी हो उसकी रक्षा करना।"

ये चावल राजकुमारके सिरपर बरस जाते। कुछ दिनों बाद वह राजगद्दीपर बैठा परन्तु उसकी समझमें न आता कि ये चावल कहाँसे आकर ऊपर बरसते हैं। गाय-बछड़े रातमें बातें करते थे जिससे उसे मालूम हुआ कि वह राजाका बेटा नहीं है बल्कि एक ब्राह्मणका लड़का

है। वह पता लगानेके लिए काशी पहुँचा, रास्तेमें वह एक ब्राह्मणके घर टिका। दुर्भाग्यसे ब्राह्मणीका प्रत्येक बच्चा पैदा होनेके पाँचवें दिन मर जाता। उसने एक नये बच्चेको जन्म दिया था और आज पाँचवाँ दिन था। घरमें अधिक जगह नहीं और वह राजाके वेषमें नहीं था अतः घरके बाहर दालानमें प्रवेशके द्वारपर सुलाया गया। आधी रातम सतवाई नामकी राक्षसिनी उस बच्चेको मारने आयी थी। वह बच्चोंका दिन खाती थी। परन्तु राजा रास्तेमें सो रहा था। उसने पूछा तुम कौन हो जो रास्तेमें सो रहे हो? जीवन्तिकाने तुरन्त प्रकट होकर जबाब दिया क्योंकि माँकी पूजाके कारण वह जीवन्तिकाके संरक्षणमें था। दोनोंमें कुछ देर झगड़ा हुआ परन्तु सतवाईको निराश लौटना पड़ा। ब्राह्मण-ब्राह्मणी तो चिन्तामें जाग ही रहे थे। उन्होंने दूसरे दिन भी ठहरनेके लिए राजासे प्रार्थना की। राजाने ब्राह्मण-परिवारके लिए ठहरना स्वीकार किया। वह फिर उसी तरह सोया। सतवाई आयी और जीवन्तिका देवी भी आयीं। दोनोंमें बहस होने लगी। झगड़ा सुबह तक चलता रहा और सतवाईको सवेरेके पहले ही भाग जाना पड़ा। माँ-द्वारा जीवन्तिका पूजनके प्रभावसे राजाकी उपस्थिति ब्राह्मण पुत्रकी रक्षाका कारण बनी। जीवन्तिका राजाकी रक्षा करती थी और इसलिए कोई भी दुष्टात्मा उसको लाँघ भी नहीं सकती थी।

राजा बनारस गया और वहाँसे गया पहुँचा। वहाँपर उसने अपने पितरोंका श्राद्ध किया और पिण्डदान किया परन्तु एकके स्थानपर दो हाथ बढ़ आते। उसने पण्डितसे इसका कारण पूछा। पण्डितोंने कहा कि तुम घर जाओ और एक बहुत बड़ा भोज करो। तभी तुम्हें मालूम होगा। घर जाकर उसने श्रावणके शुक्रवारको भोज किया और सबको न्योता दिया। ब्राह्मणी माँने कहला भेजा कि वह न आ सकेगी क्योंकि वह शुक्रवारका व्रत कर रही थी। व्रतके कारण वह बहुत सी बातें नहीं कर सकती थी और कुछ बातें उसे अनिवार्यतः करनी पड़ती थीं।

यह अब विधि निपयकी सूधी यसका रही थी तो उसने यह भी बतलाया कि वह पूजाके बाद कुछ अक्षत भी फेंकती है जो राजाके सिरपर गिरते हैं। राजाको विश्वास हो गया कि यही मेरी माँ होनी चाहिए। उसने पुष्प-ताम्र गुरु को तब वाईने बतलाया कि वह राजाका नहीं उसी ब्राह्मणोंका लड़का है। उसने अपने माँ बापको बुलवाया और एक सुन्दर महल बनवाकर उसमें रहने लगा। श्रावणके शुक्रवारको जीवन्तिका पूजनका ऐसा कल्याणकारी प्रभाव होता है।

शुक्रवार व्रतके सम्बन्धमें श्री रामप्रताप त्रिपाठीने शुक्र ग्रहसे सम्बन्ध रखनेवाली बड़ी सुन्दर कथा अपनी पुस्तक हिन्दुओंके व्रत पर्व और त्योहार म दी है। इस सम्बन्धमें विचारके लिए यहाँपर प्रस्तुत की जा रही है। कथा इस प्रकार है

'एक कायस्थ और बनियेके लड़केमें बड़ी दोस्ती थी। कायस्थके लड़केका विवाह हो चुका था और स्त्री आ चुकी थी। बनियेके लड़केकी पत्नी अभी मायकेमें थी। एक दिन कायस्थके लड़केने कहा कि मैं तो घर आकर आरामसे खाता पीता हूँ और सोता हूँ एवं पत्नी मेरी प्रतीक्षा करती है। मुझे प्रेमसे खिलाती पिलाती और सुलाती है। और तुमको कौन पूछता है। बनियेके पुत्रको यह बात लग गयी और उसने निश्चय कर लिया कि वह अपनी पत्नीको विदा कराकर जब ले आयेगा तभी भोजन करेगा। जब उसने यह निश्चय अपने घरवालोंको बता लाया तो उन्होंने समझाया कि अभी उसका गौना नहीं हुआ है और आजकल शुक्रास्त है। शुक्रास्तमें जाना नहीं होता। परन्तु वह नहीं माना और ससुराल पहुंच गया।

ससुरालवालोंको दामादके आनेकी प्रसन्नता तो हुई पर जब उसका निश्चय सुना तो सबको बड़ा चिन्ता हुई। उसे बहुत समझाया-बुझाया गया परन्तु सब बेकार। विवश होकर उन्होंने उसकी पत्नीको विदा कर दिया। ससुरालसे वह कुछ ही दूर गया था कि शुक्र देवताने मनुष्यका

रूप धारण करके उसे रोक दिया और पूछा, "क्यों जी ? तुम कहाँसे चोरी करके ला रहे हो ?

सेठके पुत्रने कहा 'कैसी चोरी ? मेरी पत्नी है, उसीको घर ले जा रहा हूँ। किन्तु शुक्र देवताने कहा 'तुम झूठे हो। यह मेरी स्त्री है। तुम चोरीसे इसे लिया जा रहे हो — तो वह स्तम्भित हो गया। दोनोंमें झगड़ा होने लगा। गाँवके लोग एकत्र हो गये। पचायत जुड़ गयी। बनियेके पुत्रने अपने ससुर अपनी ससुरालके गाँवके नाम बता ाये। स्त्रीने भी सब स्वीकार किया। अब शुक्र देवताकी बारी आयी तो वह अन्तर्धान हो गये और आकाशवाणी की— जबतक स्त्रीका गौना नहीं हो जाता तबतक वह शुक्रके अधीन रहती है। पंचोंने इस बातको स्वीकार करते हुए बनियेके पुत्रको ससुराल वापस जानेपर विवश कर दिया। उसे वापस लौटना पड़ा। फिर शुक्रोदय होनेपर विधिपूर्वक बिदाई हुई। तबसे दोनों शुक्रका व्रत पूजन करने लगे।'

लगभग इसी प्रकारकी कथा बुधवारके व्रतके सम्बन्धम प्रस्तुत की जा चुकी है। उस कथामें इस बातपर बल दिया गया है कि बुधवारको लड़कीकी बिदा नहीं होती। इस कथाम शुक्रास्तकी बात है जो अपने शास्त्रीय एवं लौकिक रूपमें सवमान्य है।

यहाँपर जो लोककथा प्रस्तुत की गयी है उसमें शुक्रवारका सम्बन्ध सन्तोषी माँसे बताया गया है। शुक्रवारके दिन सन्तोषी माँकी व्रत-पूजा बहुत ही प्रभावशाली बतायी गयी है। जिस प्रकार श्रावणके शुक्रवारको जीवन्तिका देवीकी पूजा होती है उसी प्रकार इस क्षेत्रम सन्तोषी माँकी पूजा होती है। सन्तोषी माँ प्रसन्न होकर पति पुत्र धन सम्पत्ति इत्यादि सभी प्रकारसे भक्तको सन्तुष्ट करती हैं। इस कथामें धनकी ही बात विशेष प्रतीत होती है जिससे लक्ष्मीव्रतका पौराणिक रूप भी स्पष्ट दिखाई देता है। इस व्रतकी दो बातें विशेष उल्लेखनीय हैं। एक तो खटाई न खानेपर जोर और दूसरे ब्राह्मणको दक्षिणा न देनेकी।

वस्तुत दूसरा निषेध प्रथमके ही कारण है क्योंकि एक बालकने दक्षिणा-में पाये हुए पैसेसे मटाई खरीदकर खा ली थी। इस प्रकार बेचारीका शुक्रवार व्रतका उद्यापन खण्डित हो गया था। शुक्रवारको केवल एक बार भोजन किया जाता है। और ब्राह्मणोंको खीर खिलायी जाती है। यदि ज्येष्ठा नक्षत्रका योग हो तो शुक्रवारका व्रत और भी अधिक प्रभावशाली हो जाता है। दक्षिणमें शुक्रवार-व्रतको अधिक महत्त्व प्रदान किया गया है। शुक्रवारको गोधूलि वेलामें लक्ष्मी घरोंमें पधारती हैं और उस समय यदि दीपक नहीं जलता होता है तो लौट जाती हैं। 'दीपम लक्ष्मीकरम' के रूपमें पूज्य है। शुक्रवार पूजन व्रतके सम्बन्धमें एक कथा तमिलनाडमें प्रचलित है जो निम्न प्रकार है

तमिलनाड देशके गोविन्दपति शहरमें पशुपति नामका एक सेठ रहता था। उसके दो सन्तानें थीं—एक बेटा और एक बेटी। लड़केका नाम था विनीत और लड़कीका नाम था गौरी। इन दोनोंने बचपनमें ही एक-दूसरेको वचन दिया था कि वे अपने बच्चोंके विवाह एक-दूसरेके यहाँ करेंगे। गौरीका विवाह एक धनी घरमें हुआ। उसके तीन लड़कियाँ हुईं। सबसे छोटीका नाम था सगुना। वह बड़ी सुशील थी। विनीतके तीन लड़के हुए। पशुपतिकी मृत्युके बाद विनीतके बुरे दिन आ गये। सारी धन-सम्पत्ति उधार चुकानेमें चली गयी। वह साधारण निर्धन व्यक्तिकी भाँति रहने लगा। गौरी और भी धनवान् हो गयी। अपने धनके घमण्डमें अपने भाईको दिया वचन भूल गयी। उसने अपनी लड़कियोंका अपने ग़रीब भाईके लड़कोंके साथ विवाह करनेमें अपना अपमान समझा। अतः उसने अपनी दो बड़ी लड़कियोंके लिए दो लखपतियोंके बेटे चुने। सगुनाका अभी विवाह नहीं किया। विनीतको अपनी बहनके इस व्यवहारपर बहुत दुःख हुआ। भाई-बहनके वचनके सम्बन्धमें सभीको मालूम था। सभी लोग गौरीकी बुराई करने लगे। सगुनाने भी अपनी माँकी बुराई सुनी। अपनी माँके व्यवहारसे वह

बहुत दुःखी हुई। उसने माँसे पूछा 'माँ! क्या तुमने सचमुच विनीत मामाके लड़कोंसे हमारे विवाहका वचन दिया था? और तुमने ऐसा न करके अपने वचनको तोड़ा है? यदि यह ठीक है तो मैंने मामाके छोटे लड़केसे विवाह करनेका निश्चय कर लिया है नहीं तो मैं विवाह ही नहीं करूँगी। सभी सहेलियाँ तुम्हारे वादे खिलाफीकी बातें करके मुझे तंग करती हैं। माँ बहुत नाराज हुई और बोली, तू एक भिखारीसे विवाह करना चाहती है? अगर तूने अपने मनसे वहाँ विवाह किया तो समझ लेना तेरी माँ तेरे लिए मर गयी और मेरे लिए तू।" अपनी माँकी ऐसी बातोंसे वह और भी दुःखी हुई लेकिन उसने निश्चय न बदला। विनीत सगुनाके इस निश्चयको सुनकर बड़ा प्रसन्न हुआ और उसने अपने बड़े लड़कोंकी शादी कर दी। बादमें छोटे लड़केके साथ सगुनाने विवाह किया और सन्तोषके साथ निर्धनतामें जीवन व्यतीत करने लगी। जंगलसे लकड़ी काटकर लाती तथा घरके सभी काम करती। घरके सभी लोग उसे प्यार करते और उसका आदर करते। समाजकी सभी अन्य लड़कियाँ सगुनाको अपना आदर्श समझने लगीं। वह घरमें सबको खिलाकर जो कुछ बचता उसीमें गुजारा करती। सभी उसे देवी समझते। परन्तु उसके माँ बापने उसकी कोई खोज खबर न ली। और इसी तरह समय बीतता गया।

एक बार ऐसा हुआ कि राजाने नहानेके समय अपनी नवरत्न अँगूठी निकालकर आलेमें रख दी। वह राजाकी सगुनैहिती अँगूठी थी। एक चील उसे खानेकी चीज समझकर उठा ले गयी और सगुनाके घरमें गिरा दी। सगुना उस समय फण्डे पाथ रही थी। उसने गिरनेकी आवाज सुनकर अँगूठी उठा ली और परम देवताओंके पास जहाँ दीप जल रहा था वहीं रख दी। राजाने ढिंढोरा पिटवाया कि उनकी अँगूठी खो गयी है। वापस लाकर देनेवालेको इनाम दिया जायेगा। सगुनाने अपने पतिके भाइयोंसे कहा कि जाकर अगूठी दे आओ और इनाममें

यह माँगना कि हमारी छोटी बहू आपसे मिलना चाहती है। राजा अगूठी वापस पाकर बहुत खुश हुआ और सगुनाको बुलवा भेजा। सगुना राजासे मिली। उसने कहा राजन्! मेरी एक छोटी-सी इच्छा है कि शुक्रवारका कबल उसकी झोपड़ीमें ही दिया जल और कहीं नहीं। राजाने उसकी इच्छा मान ली और सारे राज्यमें ढिंढोरा पिटवा दिया।

दूसरे ही दिन शुक्रवार था। उसने अपना एकमात्र हार बेचकर ससुरको दिया और कहा कि इसे बेचकर दीपक फूल-पत्ती इत्यादि सभी पूजाकी सामग्री लाओ। वह व्रत करेगी। उसने अपने पति और बेटों को समझा दिया कि रातमें खूब सजी-धजी कुछ औरतें आयेंगी। घरमें प्रवेशके पहले उनसे वचन ले लेना कि वे कभी नहीं जायेंगी। इसके बाद एक ग़रीब फटे-फटे वस्त्रोंमें बाहर जाने लगेगी उसे चले जाने देना। उससे भी कभी वापस न आनेका वचन ले लेना। सब यह सुन कर चकित होने लगे परन्तु जो वह कहती सब चुपचाप करते जाते।

रातमें लक्ष्मीजी अपनी आठों सहेलियोंको लिये विश्राम-स्थल ढूँढ़ती-ढूँढ़ती सगुनाकी झोपड़ीमें आयीं। वचन लेकर उन्हें भीतर आने दिया। इसपर वह बुढ़ा विह्वल दरवाजेसे बाहर जाने लगी। बोली मैं इन आठों देवियोंकी बड़ी बहन और दरिद्रताकी देवी हूँ। जहाँ ये आठों रहती हैं मैं नहीं रह सकती। कभी वापस न आनेका वचन देकर वह चली गयी। सुबह होते ही सब कुछ बदल गया। झोपड़ीके स्थानपर विशाल महल हो गया। हाथी घोड़ा, नाव-छकड़ा सभी कुछ हो गया। लक्ष्मीजीकी कृपा हो गयी थी अब किस बातकी कमी थी। शुक्रवारको लक्ष्मीव्रत और दीपकरमसे लक्ष्मीजीका आग मन हुआ। सगुनाको सभी लक्ष्मीका अवतार मानने लगे। एक दिन राजा भी सगुनाके दर्शनोंके लिए इनके घर आये। यह सब देखकर सगुनाके माँ-बाप अपनी भूलपर बहुत पछताये और अपने दुर्व्यवहारके

लिए क्षमा-याचना की। सभी सुखसे रहने लगे।

यह तमिलनाडकी शुक्रवार-माहात्म्य-कथा है जिसका अभिप्राय हमारे दीवालीकी कथाके भाटके व्यवहारसे मिलता है। उन्होंने भी सगुनाकी भाँति राजासे इसी प्रकारकी अनुमति प्राप्त की थी। इन सभी कथाओंसे केवल एक बात सिद्ध होती है कि शुक्रवारका व्रत लक्ष्मीजीका व्रत है और इस व्रतसे लक्ष्मीजी प्रसन्न होकर सभी प्रकारकी ऋद्धि सिद्धि प्रदान करती हैं।

१

एक महतारी-पूत थे। महतारी अपनी बहूको बहुत दुःख देती। काम तो बेचारी सब करती परन्तु सास उसे ठीकसे खानेको भी न देती। वह सारा दिन खेतमें काम करती। घरमें सुबह शाम कण्डे पाथती रोटी, रसोई या चौका-बासन करती। लड़का रोज यह देखता पर माँको कुछ न कहता—कहीं अम्मा बुरा न मान जायें। और अपनी दुलहिनको किन शब्दोंमें समझाये? वह तो बेचारी दिन रात काम कर के भूखी जा रही थी। पेट भर खानेको भी नहीं मिलता। यह सब सोचकर लड़केने अपनी माँसे कहा 'माँ मैं परदेश जाऊँगा।' माँको अपने बेटेकी यह बात पसन्द आयी और तुरन्त जानेकी आज्ञा दे दी। वह परदेशको चल पड़ा। वह वहाँ पहुँचा जहाँ उसकी पत्नी कण्डे पाथ रही थी। अपनी औरतसे बोला 'मैं परदेश जा रहा हूँ कुछ अपनी निशानी दे दो।' औरतने कहा 'मेरे पास है ही क्या जो निशानीके लिए दूँ।' रोती हुई वह पतिके पाँवोंपर गिर पड़ी और गोबर-सने हाथोंसे पीठमें थाप जमा दी। यही निशानी हो गयी। वह परदेश चला गया।

इधर लड़केके चले जानेपर सास अपनी बहूको और भी अधिक दुःख देने लगी। बहूको लकड़ी लानेके लिए जंगल भेजती। बेचारी

जंगलसे लकड़ी काटकर लाती और फिर घरका सारा काम करती। इसी तरह कष्टमें किसी प्रकार अपने दिन काट रही थी। एक दिन भूख प्याससे वह बहुत अकुला उठी। पर कोई उपाय न देखकर वहीं पासके एक मन्दिरमें चली गयी और एक कोनेमें बैठकर पूजा-पाठ देखने लगी। तमाम औरतें सन्तोषी माँकी पूजा कर रही थीं। उसने पूछा, 'बहन किसकी पूजा कर रही हो?' सब औरतें बोलीं, 'आज शुक्रवार है। हम लोग सन्तोषी माँकी पूजा कर रही हैं।' उसने पूछा, "बहन! इनकी पूजासे क्या लाभ है? हमें भी बताओ। उन्होंने कहा, "दुःखको हरनेवाली सुख-सन्तान देनेवाली सन्तोषी माँ हैं। उसने पूजाविधि पूछी। औरतोंने कहा, "इसकी विधि यह है कि शुक्रवारका व्रत करे, नहा धोकर शुद्ध वस्त्र पहनकर एक लोटेमें शुद्ध जल लेकर, एक आनेके भूने हुए चने, गुड़ और फूल चढ़ाये और हर शुक्रवारको दिया जलाये और अपना मनोरथ कहे तो माँ मनोरथ पूरा करती हैं और दुःख-दर्द हरती हैं। अगर सन्तोषी माँका मन्दिर न हो तो पाटा पर एक लोटेमें शुद्ध जल रखकर पूजा करे और यह कथा कहे। हर शुक्रवारको इसी प्रकार पूजा करे और व्रत करे तो सन्तोषी माँकी कृपा से सुख-सन्तान मिलती है। लेकिन आजके व्रतमें न तो खटाई खाये और न किसीको दे। एक वक्त साग-पूरीका भोजन करे, खटाई भूलकर भी न खाये। सन्तोषी माँकी कथा सुनकर वह अपने घर लौटी। सासने पूछा, 'इतनी देर कहाँ लगायी?' बहूने बहाना बनाया कि सूखी लकड़ी कहीं मिली ही नहीं इसीसे देर हो गयी। इतना कहकर वह गोबर पाथने चली गयी।

अब दूसरा शुक्रवार पड़ा तो नहा-धोकर लोटेमें पानी लेकर वह सन्तोषी माँके मन्दिरमें पहुँची। कथा सुनी और प्रसाद खाया। सन्तोषी माँसे प्रार्थना की कि मेरे पतिको खबर कर दो जबसे गए कोई समाचार नहीं मिला। इतना माँगकर वह घर आयी। रातमें सन्तोषी माँने

परदेशमें उसके पतिको सपनाया और कहा कि अपने घर खबर क्यों नही भेजते। उसने एक शुक्रवारको खबर भेज दी दूसरे शुक्रवारको खर्चा भेज दिया। खर्चा पाकर बहूने सन्तोषी माँका व्रत किया। एक आनेके भुने चने मँगाये, एक पैसेका गुड़ और फूल लेकर सन्तोषी माँके मन्दिरमें पहुँची। वहाँ बहुत-सी औरतें पूजा कर रही थीं। इसने भी भक्तिभावसे पूजा की। पूजाके बाद उसने सबसे बतलाया कि सन्तोषी माँकी कृपासे हमारे परदेशसे खबर आयी और खर्चा भी आया। सब औरतें और भी भक्तिसे पूजा करने लगीं। बहूने सन्तोषी माँसे कहा कि जब मेरा पति आ जायेगा तो मैं तुम्हारा उद्यापन करूँगी।

रातमें सन्तोषी माँने उसके पतिको स्वप्न दिया कि बेटा तुम अपने घर क्यों नहीं जाते? उसने कहा "घर कैसे जाऊ? सेठका रुपया अभी आया नहीं, सोना चाँदी अभी बिकी नहीं।' सुबह होते ही उसने अपना सपना सेठको सुनाया। पर सेठने कहा कि 'अभी तुम नहीं जा सकते सोना-चाँदी बिकी नहीं। रुपया आया नहीं। सन्तोषी माँकी कृपासे थोड़ी ही देरमें बहुत-से व्यापारी आये और सब सोना चाँदी खरीद ले गये और कर्जदार रुपये दे गये। सेठने कहा 'अब तुम जा सकते हो और जितना चाहो उतना रुपया-पैसा ले जाओ। रुपया पैसा लेकर वह घर आया और अपनी माँसे मिला और बहुत रुपये दिये। फिर अपनी पत्नीसे मिला और सब रुपये-पैसे उसको सौंप दिये। और कहा मन माना खर्चो-खाओ। अब कष्ट उठानेकी जरूरत नहीं। दुलहिन बोली, 'मुझे तो केवल सन्तोषी माँका उद्यापन करना है। उसने खूब मिठाई, पकवान इत्यादि बनाये और सारे गाँवको न्योता दिया। जबसे ये लोग सुखसे रहने लगे तबसे एक पड़ोसिन उससे जलने लगी थी। उसने अपने लड़कोंको सिखा दिया कि खानेके साथ खटाई जरूर माँगना न दें तो मत खाना। जबतक खटाई न दें खाना न खाना। उसने सन्तोषी माँके मन्दिरमें जाकर विधिवत् उद्यापन किया। लौटकर उसने सबको अपने

हाथों परोसकर खाना खिलाया। पड़ोसिनके लड़के खटाईके लिए मचलने लगे। उसने समझाया 'बेटा, आजके दिन खटाई नहीं खायी जाती। तब बच्चे न माने तो खूब सारे पैसे देकर उन्हें फुसला दिया। बच्चे खा-पीकर पैसा लेकर खुशी-खुशी गये। बाजार जाकर इमली खरीदकर खायी। इससे सन्तोषी माँ फिर रूठ गयीं और उनका सब कुछ हर-बहुर गया। उस बेचारीको उसी तरह दुःख उठाने पड़े। वह सन्तोषी माँके मन्दिरमें दौड़ी गयी और उनके पैर पकड़ लिये। कहने लगी 'माँ मेरा क्या कसूर है जो मेरी यह दशा कर दी। मैंने तो खटाई परोसी भी नहीं। बच्चोंने जाकर खा ली तो मेरा क्या दोष? मुझे क्षमा करो। मैं फिर तुम्हारी विधिवत् पूजा करूँगी। शुक्रवार आया। उसने फिर विधिवत् भक्तिपूर्वक पूजा की। सबको बड़े प्रेमसे खिलाया पिलाया पर इस बार पैसे नहीं दिये। इस पूजासे सन्तोषी माँ फिर खुश हो गयी। उसे खूब धन-दौलत दी। सास बहू-बेटा सन्तोषी माँकी कृपासे फिर सुखसे रहने लगे। (ब्राह्मणोंको आज दक्षिणा नहीं दी जाती)।

■

शनिवार

स्कन्दपुराणमें शनिवार व्रत माहात्म्य सविस्तार वर्णित है। शनि ग्रहकी क्रूर दृष्टिसे छुटकारा पाने और शान्तिके लिए यह व्रत रखा जाता है। शनिके मित्र राहु और केतु भी दुष्ट ग्रह हैं इनकी शान्तिके लिए शनिका व्रत रखा जाता है। इस व्रतके भी प्रारम्भ करनेमें श्रावण महीनेको विशेष प्रमुखता प्राप्त है। शनिका व्रत श्रावणके शनिसे शुरू किया जाता है।

स्कन्द पुराणमें उल्लिखित विधि कुछ इस प्रकार है अश्वत्थके मूलमें वेदी बनाकर उसपर धनुषाकार मण्डल अंकित करके भैंसेपर चढ़ी हुई हाथोंमें दण्ड और पाश लिये हुए, चतुर्भुजी शनैश्चरकी मूर्तिकी स्थापना करके उसकी पूजा करे। 'मेरे सारे रोगोंको दूर करनेके लिए और शनैश्चरके कारण उत्पन्न होनेवाले अनिष्टोंसे मुक्ति पानेके लिए मैं तुम्हारी पूजा करता हूँ। काले अक्षत काले वस्त्र काले पुष्प इत्यादि श्यामवर्णी चीजोंका प्रयोग करे। मूस्ता ब्रह्मणे नमः के मन्त्रको जाप कर सात बार प्रदक्षिणा करे और नमस्कार करे। पूजाके बाद कथा इस प्रकार है

रघुवंशी राजाके शासन कालमें ज्योतिषियोंने बतलाया कि जब शनि कृत्तिकाके अन्तमें रोहिणीको भेद कर जायगा उस समय १२ वर्षों का भयंकर दुर्भिक्ष पड़ेगा। राजाने मन्त्रियोंसे विचार किया। गुरु वसिष्ठ स्वयं निरुपाय हो राजासे कुछ करनेकी प्रार्थना करने लगे। राजा धनुष-बाण लेकर शनिका सामना करनेके लिए तैयार हो गये। शनि कृत्तिकाको लाँघकर ज्यों ही रोहिणीपर पहुँचे राजा दशरथके वीर

वैद्यको देखकर प्रभावित हो गये और बोले, "राजन्! मैं तुम्हारे पराक्रमसे प्रसन्न हुआ हूँ। तुम कोई भी वरदान माँगो मैं दूँगा।" राजा बोले, 'महाराज आप रोहिणीपर न जायें। बस यह मेरी प्रार्थना है।" शनैश्चरने राजाकी प्रार्थना स्वीकार कर ली और उन्हें शनिवार-व्रतकी विधि बतायी जिसके करनेसे संसारके समस्त अनिष्ट दूर हो सकते हैं। राजा दशरथने पृथ्वीपर आकर इस व्रतका प्रचार किया।

शनैश्चरजीने जो पूजा विधि बतलायी वह इस प्रकार है श्रावण शनिवारके दिन दातुन करके सुगन्धित तेलसे स्नान करे। पवित्र हो शमी वृक्ष नहीं तो अश्वत्थ वृक्षके नीचे पूजा करे। पीपलको सात सूतोंसे लपेटे सात प्रदक्षिणा करे और इस कथाको सुने। ऐसे ही छँतीस शनिवार रहकर अन्तमें उद्यापन करे।

श्री बी० ए० गुप्तेने सम्बत् शनिवारके सम्पर्कमें एक रोचक कथा दी है जो निम्न प्रकार है: किसी एक नगरमें एक ब्राह्मण रहता था। उसके तीन बहुएँ थीं। एक बार शनिवारको श्रावण महीनेमें वह अपनी छोटी बहूको घर छोड़कर खेतोंमें काम करने सबको लेकर चला गया। वह छोटीको, जानेके पहले भोजन बनाने और पूजाकी तैयारीका उपदेश देकर चला गया। वह बड़ी दानी स्वभावकी थी। उसके चले जानेपर कोढ़ीका रूप रखकर शनि भगवान् आये। उन्होंने तेल उबटन लगानेके लिए कहा—फिर नहानेके लिए गरम पानी माँगा और फिर पेट भर खाना माँगा। उस दानी स्वभावकी बहूने उनके कहे मुताबिक सब कुछ कर दिया। उन्होंने खूब डटकर भोजन किया और पत्तलको मोड़ कर छप्परमें खोंस गये। शामको परिवारके सभी लोग आये। सभी चीजें तैयार थीं खाली खाना कम था। पूछनेपर पता लगा कि बहूने एक भिखारीको खिलाया था।

ब्राह्मणने उससे असन्तुष्ट होकर दूसरे शनिवारको बड़ी बहूको घरमें रखा और सब लोग खेतोंमें काम करने चले गये। उसी भाँति शनि

भगवान् आये और वही सब माँगा। पर बड़ी बहूने कह दिया, "हमारे यहाँ कुछ नहीं है।' शनि देवताने कह दिया तो ऐसा ही हो' और चले गये। वापस आनेपर ब्राह्मणने देखा कि कुछ भी तैयार नहीं था और भोजन गायब हो गया था। अगले शनिवारको मँझली बहूको घरपर रखा गया और उसने भी बड़ीकी तरह किया और शनि देवताने उसे भी वैसा ही शाप दिया। चौथे शनिवारको फिर छोटीको रखा गया। उसने पहलेकी ही भाँति शनि देवताके आनेपर किया। शनि देवता अपनी झूठी पत्तल छप्परमें फिर खोंसकर चले गये। घर वापस आनेपर सबने देखा कि घर अच्छी-अच्छी चीजोंसे जगर मगर हो रहा है। रसोईमें नाना प्रकारके व्यंजन मिठाई पक्वान्न बने हुए रखे हैं। सबको बड़ा आश्चर्य हुआ कि निर्धनतामें भी यह सब कैसे बन गया। बहूने बतलाया कि 'कोढ़ी आया था उसकी कुछ सेवा कर दी थी और भोजन करा दिया था। ब्राह्मण समझ गया कि शनि देवता आये थे। उन्हींकी कृपासे यह सब हुआ। उसने अपना घर देखना शुरू किया तो छप्परमें खोंसे हुए पत्ते मिले जिनमें हीरा जवाहरात भरे थे। बहूने बतलाया कि 'ये तो भिखारीकी जूठन है। शनि भगवान्की कृपासे उनके घरमें धन-सम्पत्ति भर गयी।

यहाँपर शनि-सम्बन्धी दो कथाएँ प्रस्तुत की गयी हैं। दोनों ही बड़ी रोचक एवं प्रभावशाली हैं। पहली कथामें साढ़े सात सालके लिए शनि ग्रहकी कृपा हो जाती है। वहाँ सब नष्ट हो जाता है। इसीसे साढ़े-साती एक मुहावरा बन गया है जो सम्पूर्ण भारतवर्षमें प्रख्यात है। इसका आधार ज्योतिष है। दूसरी कथामें सत्यके प्रति राजाका आग्रह विशेष द्रष्टव्य है। उसके सत्याग्रहके कारण ही वह धर्मपालन भी कर सका और अपना राज्य भी पा सका। यह एक ऐसी कथा है जो हमारे देशके प्रत्येक व्यक्तिके लिए एक महान् आदर्श प्रस्तुत करती है। इस कथाको तो विद्यार्थियोंकी पाठ्य पुस्तकोंमें महत्त्वपूर्ण स्थान मिलना चाहिए।

किसी देशमें एक राजा राज्य करता था। उसके योग्य और आज्ञाकारी मन्त्रीने स्वप्न देखा कि एक देव-पुरुष उसके सामने खड़ा हुआ कह रहा है मैं शनि हूँ। साढ़े-सात वर्षके लिए राजाके ऊपर आ रहा हूँ।" मन्त्री बहुत घबराया। उसने सोचा, अगर राजाके ऊपर साढ़े सात वर्षके लिए शनिदेव आये तो सब नष्ट भ्रष्ट हो जायेगा। अतः मन्त्रीने शनिदेव की बड़ी पूजा की और उन्हें प्रसन्न करनेके लिए बड़ी तपस्या की। शनि देव मन्त्रीकी पूजा-अर्चनासे बड़े प्रसन्न हुए और बोले, "क्या चाहते हो? मन्त्री बोला, अगर आपको आना ही है तो साढ़े-सात वर्षके लिए मत आइए।' शनिदेव बोले 'अच्छा साढ़े सात महीनेके लिए आऊँगा। मन्त्री बोला, 'महाराज इतना भी बहुत है, आपके भारको हम लोग सभाल न सकेंगे।" 'अच्छा तो साढ़े-सात दिनके लिए आऊँगा।' शनिदेवने कहा। मन्त्री बोला महाराज इतना भी बहुत है।" मन्त्रीने शनिदेवकी बड़ी चिरौरी विनती की। अपनी प्रशंसा और प्रार्थनासे पिघलकर बोले "अच्छा तो ठीक है। मैं केवल ढाई घड़ीके लिए ही आऊँगा।" मन्त्रीने पाँव पकड़ लिये। 'नहीं महाराज! क्या इससे कोई निस्तार नहीं है?' शनि बोले 'नहीं। मेरा आना अनिवार्य है।' मन्त्रीने बड़े उदास मनसे कहा "अगर आपका आना अनिवार्य है तो मेरे ऊपर आइए। शनिने मन्त्रीके आग्रहपर इसको स्वीकार कर लिया।

किसीको पता भी न चला और शनिदेव मन्त्रीपर ढाई घड़ीके लिए आ गये। मन्त्री भक्ति-भावसे शनिदेवकी केवल पूजा करता रहा। शनि देवके प्रतापसे राज्यमें षड्यन्त्र शुरू हो गये। षड्यन्त्रका शिकार हुआ राजाका एकमात्र पुत्र। किसीने गला काटकर राजकुमारका सिर मन्त्री के दरवाजेपर लटका दिया। जब राजाको यह पता चला तो उसको शक न रहा कि मन्त्रीने ही षड्यन्त्र रचकर राजकुमारको मरवाया है। उन्होंने आज्ञा दी कि मन्त्रीको पकड़कर फाँसीपर चढ़ा दो। मन्त्रीको

पकड़कर फाँसीके तख्तेपर ला मा गया। उधर राजकुमारकी अन्त्येष्टि क्रियाकी तैयारियाँ होने लगीं। मन्त्री कुछ भी न बोला। वह केवल ढाई घड़ीके बीतनेकी राह देखने लगा। फाँसीका फन्दा उसके गलेमें डाल दिया गया। और इधर राजकुमारकी चितामें आग लगा दी गयी। उसी वक्त ढाई घड़ी बीत गयी। शनिदेव उतर गये। राजकुमार चितापर उठकर बैठ गया। मन्त्रीके गलेसे फाँसीका फन्दा निकल गया। यह चमत्कार देखकर सबको बड़ा अचरज हुआ।

राजाने मन्त्रीको बुलवाया। मन्त्री राजाको प्रणाम करके उनके सामने आ खड़े हुए। राजाने पूछा 'मन्त्रीजी! यह क्या तमाशा है?' मन्त्रीने बड़ी विनम्रतासे कहा 'महाराज! यह सब शनिदेवकी कृपा थी।' और उन्होंने राजाको पूरी कथा कह सुनायी। 'महाराज! शनि देवका ढाई घड़ीका आगमन जब इतना उत्पात कर सकता है तो यदि यह साढ़े सात वर्षके लिए आते तो न जाने क्या होता? सारे राज्यमें उथल पुथल मच जाती।' राजाने मन्त्रीके त्यागकी बड़ी प्रशंसा की और शनिदेवको हाथ जोड़ शीश नवाया और कृपा बनाये रखनेकी प्रार्थना की।

२

किसी देशमें एक राजा राज्य करता था। उसने अपने नगरमें एक बाजार लगवाया। दूर-दूरसे सौदागर बुलवाये और डुग्गी पिटवा दी कि बाजार उठनेपर जिसका जो भी माल नहीं बिकेगा उसे राजा खरीद लेगा। सौदागर बहुत खुश थे। जिस दिन किसी सौदागरका कोई माल न बिकता राजाके आदमी आते और उचित मूल्य देकर खरीद लेते।

एक दिन एक मतिभ्रष्ट लोहार एक लोहेकी शनिदेवकी मूर्ति बनाकर बाजारमें बेचनेके लिए ले आया। भला शनि-मूर्ति कौन खरीदता? हमेशाकी भाँति पैठके उठनेपर राजाके आदमी उसके पास पहुँचे और मूर्ति खरीदकर राजाके पास ले गये। राजा बड़ा धर्मात्मा और प्रजा पालक था। राजाने बड़े आदरसे शनिदेवकी मूर्तिको महलमें रख लिया।

रातमें जब राजा सोया हुआ था तब उसने देखा कि एक तेजोमयी नारी उसके शरीरसे निकली और द्वारकी ओर बढ़ी। राजाने पूछा "कौन हो ?" नारी-मूर्ति बोली, "राजन् ! मैं लक्ष्मी हूँ। तुम्हारे घरसे विदा होती हूँ। अब तो तुम्हारे घरमें शनिका वास है। हम दोनों एक साथ एक जगहपर नहीं रह सकते।" लक्ष्मीजी चली गयीं पर राजाने नहीं रोका। शनिदेवको आश्रय देकर वह उनका निरादर नहीं कर सकता था और फिर जानेवालेको कौन रोक सकता है ? थोड़ी देरमें एक देव पुरुष निकला और द्वारकी ओर बढ़ा। राजाने पूछा, 'तुम कौन हो ?' देवपुरुष बोला, 'मैं वैभव हूँ। मैं तो लक्ष्मीके साथ ही रहता हूँ। जब लक्ष्मी चली गयी तो मैं कैसे रह सकता हूँ ?" राजाने उसको भी जानेसे नहीं रोका। इसी प्रकार धर्म, धैर्य, क्षमा आदि अन्य गुण भी एक एक करके राजाके पाससे चले गये पर राजाने किसीको नहीं रोका। अन्तमें जब सत्य जाने लगा तो राजाने पूछा, "तुम कौन हो देवपुरुष ?" "राजन् ! मैं सत्य हूँ" सत्य बोला। राजाने लपक कर उसके पाँव पकड़ लिये और बोला, 'सत्यदेव, तुम कैसे जा सकते हो ? तुम्हारे पक्षपर तो मैंने सबका तिरस्कार किया है। मैंने तुमको आज तक नहीं छोड़ा और आज भी मैं तुम्हें नहीं जाने दूँगा। और तुम्हीं मुझे कैसे छोड़ सकते हो ? सारे संसारको छोड़ सकता हूँ पर तुम्हें नहीं।' सत्य लाचार होकर रुक गया। बाहर सब लोग सत्यकी राह देख रहे थे। जब सत्यको बहुत देर हो गयी, फिर भी वह न आया तो धर्म बोला, 'सत्यके बिना मैं नहीं रह सकता। मैं वापस जाता हूँ।' धर्मके पीछे दया, धैर्य क्षमा वैभव, लक्ष्मी सभी लौट आये। लक्ष्मी बोलीं "राजन् ! तुम्हारे सत्यप्रेमने तुम्हारी रक्षा की हमको वापस आना पड़ा। तुम्हारा जैसा सत्यवादी दुःखी नहीं रह सकता। इस प्रकार राजाके सत्य प्रेमके कारण लक्ष्मीजी और शनिदेव एक ही स्थानपर रहने लगे।

■

अमावस्या, पूर्णमासी तथा सक्रान्ति

अमावस्या तथा पूनमका तो हिन्दुओंमें माहात्म्य है ही साथ ही संक्रान्तियों का भी महत्त्व व्यापक रूपसे स्वीकार किया गया है। अमावस्या और पूर्णमासीको पर्व कहा जाता था। महाभारत कालमें लोगोंको ज्ञात था कि ग्रहण अमावस्या या पूर्णिमाको ही लगता है। जब पाण्डव वनवास जाने लगे तो ऐसा ही लिखा है कि अपर्वपर ही सूर्यग्रहण हुआ।[1]

ग्रहण ऐसी घटना है जो एक प्रकारसे अनियमित और अनहोनी है। इसीलिए इसे अशुभका लक्षण मानते हैं। इस अशुभकी आशंका और चन्द्रमाका नितान्त दुराव या उसकी पूर्णता—ऐसी महत्त्वपूर्ण घटनाएं हैं जो संसारके सभी जड़ चेतन प्रकृतिको प्रभावित करती हैं। इसीलिए अन्य सभी तिथियोंसे अमावस्या और पूर्णिमाकी तिथियाँ विशेष एवं प्रभावशाली हैं। चन्द्र एवं सूर्यपर ग्रहणके रूपमें आनेवाली विपदासे मुक्ति दिलानेके लिए और अपने जीवनकी अशुभ बाधाओंसे निवृत्ति पानेके लिए आजके दिन दानका विशेष माहात्म्य है। महाभारत वनपर्व अध्याय २०० पर लिखा है कि पर्वके दिनोंपर दिया जानेवाला दान दुगुना हो जाता है[2]।

इसी कथनके आधारपर संक्रान्ति-सम्बन्धी मान्यताएँ स्पष्ट हो जाती हैं। जिस प्रकार चन्द्रकी गतिके परिणाम स्वरूप होनेवाले

---

१ राहुरग्रसदादित्यमपर्वणि विशांपते। महा० सभा०, अ० ७९, श्लो० १९।
('भारतीय ज्योतिषका इतिहास', डॉ० गोरखप्रसाद पृष्ठ ७४)

२. पर्वसु द्विगुणं दानमृतौ दशगुणं भवेत् ११४। (वही पृष्ठ ७१)

प्राकृतिक परिवर्तन (अमावस्या और पूर्णिमा) को धार्मिक दृष्टिसे विशेष महत्वपूर्ण समझा गया है, उसी प्रकार सूर्यकी गतिके आधार पर होनेवाले ऋतु-परिवर्तनको भी महत्व दिया गया है बल्कि अधिक महत्व दिया गया है क्योंकि कहा गया है ऋतु परिवर्तनपर दिया गया दान दस गुना हो जाता है। कर्क और मकर संक्रान्तिमें सूर्य उत्तरायण और दक्षिणायन होता है। वैसे १२ राशियोंके अनुसार वर्षमें १२ संक्रान्तियाँ होती हैं परन्तु विशेष रूपसे दो—कर्क और मकर संक्रान्तियाँ अधिक महत्वपूर्ण हैं। कर्क संक्रान्तिमें सूर्य उत्तरी गोलार्द्धमें अन्तिम स्थिति तक पहुँचकर प्रत्यागमनके लिए संक्रमण करता है। यह समय हमारे देशमें, विशेषरूपसे उत्तर भारतमें, सबसे अधिक गरम होता है। मकर राशिपर संक्रमण करनेपर मकर संक्रान्ति होती है जो सबसे अधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि सूर्य हमारे गोलार्द्धसे दक्षिणमें चला जाता है जिसके फलस्वरूप भयंकर सर्दी पड़ती है—कहावत है—धन क तरह मकर पचीस, चिल्ला जाड़ा दिन चालीस। इन संक्रमणकालीन स्थितियोंसे निवृत्ति पानेके लिए दानकी व्यवस्था की गयी है। मकर संक्रान्ति (सूर्यकी गतिके आधारपर गणनानुसार हमेशा १४ जनवरीको होती है) का हमारे यहाँ खिचड़ीका भोजन और खिचड़ीका दान विशेष रूपसे दिया जाता है। अस्तु।

ये तीनों पर्व अवसर चन्द्र और सूर्यकी गतियोंके कारण प्रतिफलित हुए हैं। अमावस्या चन्द्रकी वह स्थिति है जब उसका नितान्त अभाव हो जाता है और पूर्णमासी वह स्थिति है जब वह बिलकुल पूर्ण होता है। इस प्रकार चन्द्रकला या गतिविधिका अमावस्या और पूर्णमासी प्रथम और अन्तिम रूप हैं। सूर्यकी गतिमें संक्रान्तियोंका महत्व है—विशेष रूपसे कर्ककी संक्रान्ति जो सूर्यकी गतिका अन्तिम उत्तरी अक्षांश है और मकर संक्रान्ति जो सूर्यका अन्तिम दक्षिणी अक्षांश है। अत: इन सीमाओं तक पहुँचनेवाली चन्द्र और सूर्यकी गति

बनाये रखनेकी अभिलाषासे इन्हें पर्व मानकर पूजा पाठ होता है और दान दिया जाता है।

प्रस्तुत लोक-कथामें भी अमावस्या पूणमासी और सक्रान्तिको बहनें माना गया है। अमावस्याको निर्धन और पूणमासीको सम्पन्न बताया गया है। सक्रान्तिको कृपालु परन्तु पूणमासीको घमण्डिनी बताया गया है।

कथा

पूर्णमासी अमावस्या और सक्रान्ति तीन बहनें थी। पूर्णमासी और सक्रान्ति तो धनवान् थीं पर बेचारी अमावस्या बड़ी ग़रीब थी। अमावस्याने एक दिन अपने बेटे और बहुओंसे कहा, 'चलो कुछ दिन पूण मासी बहनके यहाँ रह आयें। पूणमासी बहनसे मिलना भी हो जायेगा और कुछ दिन वक्त भी कट जायेगा। अमावस्या अपने परिवारको लेकर पूर्णमासीके घर चली।

पूणमासीने इन सबको अपने घरकी ओर आते देखकर अपनी बहूसे कहा, "तुम्हारी मौसी दलबलसे आ रही हैं। मैं पड़ोसमें जा रही हूँ। जब वे आयें तो उनसे कह देना कि मैं कहीं बाहर गयी हूँ। उनके लिए मटरकी दाल और ज्वारकी रोटी बना देना। इतना समझा-बुझाकर पूणमासी चली गयी। अमावस्या अपने बेटे-बहुओंको लेकर पहुँची। पूणमासीकी पतोहुओंने उनका कोई स्वागत न किया। अमावस्याने पूछा, बहू! बहन पूर्णमासी कहाँ गयी हैं?" तो बहुओंने कहा "मौसी! हमको मालूम नहीं कहाँ गयी हैं। ऐसा उत्तर सुनकर अमावस्या उल्टे पाँव वापस जाने लगीं तब पूर्णमासीकी बहुओंने टोका मौसी! न हो तो खा पीकर जाना।" अमावस्या बोली बहू! अब मैं संक्रान्ति बहनके घर जाऊँगी और वहीं खाना-पीना करूँगी।

ऐसा कहकर अमावस्या अपने परिवारके साथ चल दी और थोड़ी देरमें सक्रान्तिके घर पहुँची। सक्रान्ति बहन अमावस्याको देखकर बड़ी खुश हुई। बड़ी आवभगतके साथ सबको घरके अन्दर ले गयी और प्रेमसे पूछा 'बहन! आज कैसे आना हुआ?' अमावस्याने कहा, 'हम लोग पूणमासी बहनके यहाँ गये थे, वहाँ हमारा अपमान हुआ। घर वापस न जाकर, हमने सोचा कि तुम्हीसे मिलते चलें। वैसे तो तुम जानती ही हो कि हम कितने ग़रीब हैं।' सक्रान्तिने उन सबको बड़े प्रेमसे रखा। अमावस्या सक्रान्तिके यहाँ दो एक महीने रहीं। इसके बाद अपने घर लौटीं। रास्तेमें लक्ष्मीजी मिल गयीं और कुछ दूर तक अमावस्याके साथ चलीं। फिर अपने घर चली गयी। लक्ष्मीजीने अमावस्याके दुःखसे दुःखी होकर अपनी कृपा भेज दी। अमावस्या अपने परिवारके साथ जब घर पहुँचीं तो देखा कि उनका घर धन-धान्यसे भरपूर है। किसी चीजकी कमी नहीं, सभी कुछ भरपूर हो गया। आरामसे दिन बीतने लगे।

कुछ दिन बाद अमावस्याने सोचा पिछली बार बहन पूर्णमासीसे भेंट नहीं हुई थी चलो चलें। शायद इस बार भेंट हो जाये। इस बार अमावस्या अकेली ही गयी। पूर्णमासीने देखा कि बहन अमावस्या आ रही हैं। पूणमासीने आगे बढ़कर उनका स्वागत किया। घर लाकर पलंग पर गलीचा बिछाकर बड़ी खातिर की। अमावस्याको बड़ा प्रेम भाव दिखाया। भोजनके लिए सोनेकी रत्न-जटित चौकी रख दी। अमावस्या पलंगसे उतरकर जमीनपर बैठ गयी और जो गहना-गुरिया पहने थी उन्हें उतारकर चौकीपर रख दिया और कहने लगी जेंव रे सोनवा, जेंव रे रुपवा मैंका जेंऊँ मफटे चुचवा। इतना कहकर अमावस्या अपने घर चली आयी। उसी दिनसे पूर्णमासी और अमावस्यामें झगड़ा रहने लगा और तभीसे दोनों बहनें मिलने नहीं पातीं।

■

सोमवती अमावस्या

जब अमावस्या सोमवारी हो तो सोमवती अमावस्याका व्रत किया जाता है। यह व्रत अवश्य फलदायी माना जाता है। इस दिन दानका बड़ा माहात्म्य है और जयपी क्षेत्रमें आजके दिन कोई-न-कोई चीज १०८ की संख्यामें दान की जाती है। सोमवती अमावस्याका व्रत विवाहित स्त्रियाँ किसी हालतमें नहीं छोड़तीं। यदि किसी कारण कभी छूट गया तो दूसरी सोमवती अमावस्याको वह कुछ दोहरा किया जाता है। यदि कोई सोमवती अमावस्या छूट गयी और दूसरीके पहले ग्रहण पड़ गया तो सोमवतीको जब व्रत रहा जायेगा तो तिगुना दान दिया जायेगा। ग्रहणके कारण उठा रखनेवाला दान नष्ट हो जाता है। स्त्रियाँ व्रत करती हैं और नहा धोकर पीपलकी पूजा करके उसके १०८ फेरे लगाती हैं। फेरे लगाते समय सूत लपेटती जाती हैं। यदि कुछ न हो तो कथाके अनुसार १०८ कंकड़ ही डाल दिये जाते हैं। तात्पर्य यह है कि यह व्रत अवश्य किया जाता है।

भविष्यपुराणमें इस व्रतकी सम्पूर्ण विधि और कथा दी गयी है। व्रत पूजन विधिमें पीपल (वासुदेव) के नीचे विष्णुकी पूजा विशेष रूपसे होती है और पीपल वृक्षकी १०८ प्रदक्षिणा की जाती है। शरशैयापर लेटे हुए भीष्मसे उदास युधिष्ठिर पूछते हैं "भाइयोंमें युद्धके परिणाम स्वरूप सब नष्ट हो गया है। केवल हम पाँच भाई बचे हैं। उत्तराके गर्भ से पैदा होनेवाला अश्वत्थामाके अस्त्रसे जल गया है। इन सब बातोंसे मुझे बड़ा सन्ताप हो रहा है। अब आप ही बताइए कि मैं क्या करूँ जिससे चिरंजीवी सन्तति मिले।" तब भीष्मपितामहने बतलाया कि जब अमावस्या

सोमवारी हो उस दिन अश्वत्थके पास जाकर जनार्दनका पूजन करे। अश्वत्थकी १०८ प्रदक्षिणाएँ करे। उसने ही रत्न धातु, फल लकर और उन्हें प्रदक्षिणामें छोड़ता जाये। आगे पूछनेपर भीष्मपितामहने कांचीपुरके देवस्वामी नामक ब्राह्मणकी कथा सुनायी जिसके सात योग्य बेटे-बहुएँ थीं और गुणवती नामकी एक कन्या थी। एक तपस्वीने उसके लिए भविष्यवाणी की थी कि इसका पति सप्तपदीपर ही मर जायेगा। सिंहल द्वीपमें रहनेवाली धर्मनिष्ठ और हमेशा सोमवती अमावस्याका व्रत करनेवाली सोमा धोबिन इसके सौभाग्यको बचा सकती है। छोटा भाई गुणवतीको लेकर सिंहल जाता है और सामा धोबिनकी सेवा करते हैं। ब्राह्मणोंके हाथसे सेवा कराके सोमा लज्जित होती है और इस पापके प्रायश्चित्तके रूपमें वह इसके विवाहमें आकर उसके पति रुद्रशर्माकी प्राणरक्षा करती है जिसमें उसके पुण्यका क्षय हो जाता है और उसके पुत्र पति और दामाद मर जाते हैं। परन्तु वह फिर सोमवतीको अश्वत्थके नीचे विष्णुकी पूजा करके और १०८ प्रदक्षिणाएँ करके सबका फिरसे जिला लेती है।

इस सन्दर्भमें लगभग इसी प्रकारकी लोककथा प्रस्तुत की गयी है, जिसमें सोमाके स्थानपर सोना कहा गया है। ग्रामीण स्त्रियाँ सोमाके स्थानपर साना कहती हैं। बाकी कथा इस पौराणिक कथाके बिलकुल अनुरूप है। यह व्रत सोहागके लिए किया जाता है। कथामें भी सोहागके सरक्षणकी बात कही गयी है। परन्तु भविष्यपुराणके भीष्म और युधिष्ठिरके संलापसे ज्ञात होता है कि यह व्रत सन्ततिके लिए है। लोक-परम्परामें कथाके अभिप्रायके अनुसार ही पतिकी दीर्घायुके लिए यह व्रत किया जाता है। भविष्यपुराणके उपर्युक्त भीष्म-युधिष्ठिर संलापकी भूमिका कथा-अभिप्रायके अनुकूल नहीं प्रतीत होती। पूजाविधि और व्रत प्रभाव सन्ततिके लिए हितकारी हो सकती है परन्तु कथाका सीधा सम्बन्ध युधिष्ठिरकी चिन्ता और उनकी अभिलाषासे प्रतीत नहीं होता।

यहाँ सोहागकी इस सोमा धोबिनकी कथाके कारण ही सोहागिन धोबिन का बड़ा महत्त्व है। विवाहके अवसरपर कन्याको सर्वप्रथम सोहाग धोबिन ही देती है। और प्रात काल गौरहामी न्योतनेके लिए स्त्रियोंका झुमुस धोबिनको भी न्योतता है जिसमें कन्या भी शामिल होती है। अगले जन्ममें दीर्घजीवी पतिकी कामनासे विधवाएँ भी इस व्रतको करती हैं।

कथा

एक ब्राह्मण था। उसके यहाँ भिक्षाके लिए एक साधु आया करता था। जब ब्राह्मणकी बहू भिक्षा देने जाती तो साधु आशीर्वाद देता, "सोहाग बढ़े' और जब ब्राह्मणकी कन्या भिक्षा देने जाती तो साधु कहता 'धर्म बढ़े'। बेटीने जब कई बार साधुको इसी प्रकार आशीर्वाद देते सुना तो एक दिन माँसे कहा 'अम्मा! साधु आशीर्वाद देनेमें भेद करता है।' माँने कहा "ठीक है। मैं एक दिन साधुसे विचारूँगी।"

दूसरे दिन जब साधु भिक्षा लेने आया तो माँ किवाड़की ओटमें छिप गयी। बहूने भिक्षा दी। साधुने आशीर्वाद दिया सोहाग बढ़े।' इसके बाद एक दिन जब साधु भिक्षा माँगने आया तो माँने भिक्षा देने के लिए बेटीको भेजा और खुद आकर किवाड़की ओटमें छिप गयी। बेटीने भिक्षा दी। साधुने भिक्षा लेकर आशीर्वाद दिया "धर्म बढ़े। माँ सब सुन रही थी। माँ ओटसे बाहर आ गयी और साधुसे पूछा 'स्वामीजी! बेटा बेटी दोनों ही मेरी ही कोखके जाये हैं फिर आशीर्वाद देनेमें आप भेद क्यों करते हैं?'

साधुने कहा क्या करेगी यह जानकर? भिक्षा दी। अब जाने दो।"

माँ बोली "न भगवन्! मेरी शंकाका समाधान करना ही पड़ेगा।

साधु बोला, "सुनकर दुख पाओगी। इससे न सुनो सो ही अच्छा है।"

माँ भी जिद पकड़ गयी।—"नहीं स्वामीजी! आपको बताना ही पड़ेगा। जो दुख बदा ही है तो भोगूँगी।'

साधु बोला, 'नहीं मानती हो तो सुनो। तुम्हारी कन्याको सोहाग नहीं बदा है। विवाहके समय ही वह विधवा हो जायेगी। तुम्हारा पुत्र दीर्घजीवी है। इसीलिए मैं ऐसा आशीर्वाद देता हूँ।

माँ यह सुनकर बेहाल हो गयी। उसने अकुलाकर महात्माजीके पाँव पकड़ लिये— 'तो प्रभो! इसका निस्तार भी बताइए। कोई उपाय बताइए महाराज।"

'उपाय बहुत कठिन है, साधु बोला। 'तुम्हारी बेटी इसे कर न सकेगी।"

माँने कहा, "स्वामीजी! सोहागके लिए स्त्रियाँ क्या कुछ नहीं, करतीं? मेरी बेटी सब कुछ करेगी। आप बताइए तो! साधुने कहा, एक सोना धोबिन है। वह उस पार रहती है। वह बड़ी सती साध्वी है। वह सोहाग दे तो तुम्हारी बेटीको सोहाग मिल सकता है। लेकिन है यह बहुत कठिन।'

माँने और भी दुखी होकर पूछा पर यह होगा कैसे? साधु बोला, 'अगर तुम्हारी कन्या बारह बर्ष तक बिना भेदभावके उसके यहाँ छोटेसे छोटा काम करके सोनाको प्रसन्न कर ले और यदि वह तुम्हारी बेटीको अपना सोहाग दे तो मिल सकता है।' इतना कहकर साधु चला गया।

ब्राह्मणी अपनी बेटीके सोहागके लिए गंगा पार गयी। सोना धोबिनके गाँव पहुँची और एक मालिनके यहाँ ठहरी। सोना धोबिनके सात बेटे और सात बहुएँ थीं। वे सभी घरका हर तरहका काम करती थीं। अब माँ बेटीके सामने यह सवाल था कि उसकी बेटी कैसे उसकी

सेवा-टहल करे। सोना धोबिनके तो सात सात बहुएँ हैं टहल करने को। फिर क्या सोना धोबिन उसकी बेटीकी सेवाएँ स्वीकार भी करेगी? वह बड़े असमंजसमें पड़ गयी। उसने सोचा कि बेटीको सेवा-टहलके लिए रातमें भेजा जाये और चोरीसे काम कर आया करे। ऐसा सोचकर उसने अपनी बेटीसे कहा 'तू चुपकेसे रातमें ही सेवा-टहल कर आया कर।"

अब वह सबके सो जानेपर रातमें सोना धोबिनके घर जाती और सब काम करके पो फटनेके पहले चोरकी तरह वापस लौट आती। वह गधोंकी लीद फेंकती सफ़ाई करती लीपती-पोतती चौका-बासन करती और रोटी रसोई करके रख आती।

होते-करते बारह वर्ष बीत गये। पर सोना धोबिनको कुछ पता भी न चला। वह बड़ी निराश और उदास रहने लगी। एक दिन मैंने उदासीका कारण पूछा। उसने सब कुछ बता दिया। मैंने उसे एक तरकीब बतायी कि एक दिन उलटी पुलटी रसोई बना दे। तब सोना धोबिन अपने आप पता लगायेगी कि किसने रसोई बनायी। एक दिन उसने सब काम तो ठीक-ठीक किये पर रसोई उलटी-पुलटी बनाकर रख दी। खीरमें नमक डाल दिया दालमें शक्कर भातमें कंकड़ डाल दिये। सबेरे सोना धोबिन भोजन करने बैठी। मुँहमें कौर डाला तो कंकड़ खीर खायी तो उसमें नमक दाल चखी तो मीठी। वह पाटेपर से उठ आयी। अपनी बहुओंको बुलाया। पूछा आज किसने रसोई बनायी है? सभीने नहीं कर दी। सभीने कहा हमने तो बारह वर्ष से रसोईघरमें पाँव भी नहीं रखा और कोई भी काम नहीं किया।

सोना धोबिन यह सुनकर बोली 'तुममें-से किसीने बारह सालसे रसोई नहीं बनायी—कोई काम नहीं किया तो क्या भूत करने आते हैं। पता लगाओ कि कौन काम करता है? सोना धोबिन सोचने लगी—'ऐसा कौन दुखिया हो सकता है जो बिना बताये बारह वर्षसे

मुझ धोबिनकी सेवा-टहल कर रहा है ?

दूसरी रात सोना धोबिन ताक लगाकर बैठी। ब्राह्मण कन्याने घरमें ज्यों ही पैर रखा, सोनाने लपककर हाथ पकड़ लिया। 'कौन हो तुम ? मुझ अन्त्यजकी सेवा करके मुझे नरकमें डाल दिया।'

ब्राह्मण-कन्याने सारी कथा सुना दी और सोहागकी भीख माँगी। सोना धोबिन बोली, बेटी ! माँग तो बड़ी कठिन है, पर तुम्हारी सेवासे उद्धार होना भी तो बड़ा कठिन है। कहाँ तुम ब्राह्मणकी कुमारी कन्या और कहाँ मैं धोबिन ! खैर, जाओ अपना विवाह रचो। तुम्हारे कम और अपने धमसे मैं तुम्हें सोहाग दूँगी।'

माँ कन्याको लेकर प्रसन्न-मन घर लौटी। धूम धामसे विवाह रचा। भाँवरें शुरू हुईं। सातवीं भाँवरके पूरा होते ही उसका पति विवाह-मण्डपमें ही गिर पड़ा और गिरते ही मर गया। घर-भरमें कोहराम मच गया। माँ सोचने लगी—सोना नहीं आयी। कहीं धोखा तो नहीं कर गयी ? अब वह क्या करे ? बेटी विवाह मण्डपमें धाड़ें मार-मारकर रो रही थी।

सोना धोबिनको घरमेंमें कुछ देर हो गयी। उसने अपने सोते हुए पतिको कोठरीमें बन्द किया और अपने बहू-बेटोंसे कह दिया कि तुम्हारे बाबा कितना ही किवाड़ खुलवायें, खोलना नहीं।

कोलाहलके बीच हाँफती हुई सोना धोबिन आ पहुँची। बेटीकी माँगमें अपनी माँगसे सिन्दूर भरने लगी। ज्यों-ज्यों कन्याकी माँगमें सिन्दूर भरती जाती उधर घरमें सोनाका पति छटपटाने लगता। लड़के पाते चिल्लाने लगे, 'बाबा भूत भये बाबा भूत भये। इधर कन्याका पति जीवित होने लगा। उधर सोनाका पति मरने लगा। और ज्यों ही कन्याका पति जीवित होने लगा। उधर सोनाका पति मरने लगा। और ज्यों ही कन्याका पति जीवित होकर उठ बैठा वैसे ही उधर सोना धोबिनका पति मर गया। सोना धोबिनकी जय-जयकार होने लगी।

इस खुशीके बीच सोना धोबिन न रुक सकी और चुपचाप उठकर चल दी। उसके पास कुछ भी न था। उसका तो समस्त लुट चुका था। मन मारे धरतीपर उठती बैठती कंकड़ चुनती चल दी। गंगा किनारे किनारे। रास्तेमें पीपलका पेड़ पड़ा। सोमवारकी अमावस्या थी। उसने १०८ कंकड़ लेकर पीपलके १०८ चक्कर लगाये। जैसे-जैसे वह चक्कर लगाती जाती उसका पति जीवित होता जाता। १०८ फेरे लगाकर पीपलकी जड़पर उसने अपना सिर रख दिया। उसका पति भी उठा। वह सोधे घर पहुँची और अपने पतिको जीवित पाकर बड़ी प्रसन्न हुई। सोमवती अमावस्याकी पूजासे जैसे सोना धोबिनके दिन फिरे वैसे सबके फिरें।

■

सकठा महारानी

जिला रायबरेलीकी डलमऊ तहसीलमें गंगाके किनारे एक मौजा गेगासों है जो बहुत प्राचीन ग्राम है। यहींपर गर्गमुनिका आश्रम था। इसीसे उनके नामपर इस स्थानका नाम गर्गाश्रम पड़ा। कालान्तरमें यही गर्गाश्रम भ्रष्ट होकर गेगासोंमें परिणत हो गया। यहाँपर अनेक भव्य मन्दिर हैं जिनमें पत्थरकी सुन्दर मूर्तियाँ स्थापित हैं। यहींपर मुण्डमालेश्वरका मन्दिर है जिसमें काले पत्थरका एक खण्डित लिंग है जिसके सम्बन्धमें कहा जाता है कि औरंगजेबके शासनकालमें मूर्ति तोड़ी गयी परन्तु बर्रोंके आक्रमणसे तोड़नेवाले अपना कार्य पूरा किये बिना भाग गये। इस मन्दिरको बहुत ही जीवन्त और मूर्तिको प्रभाव वाली माना जाता है। यहींपर अनेक शंकर मन्दिरोंके बीच संकठा देवीका मन्दिर है जो काफ़ी पुराना है। दक्षिण दिशाकी ओर मन्दिरका मुख्य द्वार है और उसीके सामने गंगा तक जानेवाली ऊँची ऊँची सीढ़ियाँ हैं। पार्श्वके शंकर मन्दिरोंकी सीढ़ियाँ भी गंगा तक जाती हैं। नावसे देखनेसे स्थान और भी शोभापूर्ण दिखाई देता है। मनौतियाँ मानकर दूर-दूरसे लोग संकठा देवीकी पूजाके लिए आते हैं और सालमें हजारों रुपयोंका चढ़ावा चढ़ता है। २० २५ कोस तकके लोग यहींपर अपने बच्चोंके मुण्डन-छेदन कराने आते हैं। सोमवारके दिन प्रात काल यहाँ पर मेला लगता है। कार्तिक पूर्णिमाका मेला तो बहुत ही बड़ा होता है जो लगभग तीन रोज तक रहता है। डलमऊके मेलके मुक़ाबलेमें तो यह मेला काफ़ी छोटा होता है परन्तु संकठाजीके कारण गेगासोंका माहात्म्य अधिक है। यहाँपर कान्यकुब्ज ब्राह्मणोंकी अधिकता है और

यहाँके पाँडे अपनी सामाजिक कुलीनता एवं श्रेष्ठताके लिए प्रसिद्ध हैं। इन पाँडेने गेगासोंसे निकलकर कई शताब्दी पूर्व पश्चिम दिशामें एक छोटा-सा गाँव बसाया था जो शिवपुरीके नामसे आज भी विद्यमान है। इस छोटे-से गाँवमें एक घर नाई, एक घर भाट एक घर तिवारी लोगोंका है बाकी सभी पाँडे हैं जो काफ़ी सम्पन्न हैं। (मैं भी इसी गाँवका रहनेवाला हूँ) पहले यह रियासत बक्सरगाँवके अन्तर्गत था। प्रसिद्ध कवि ठाकुरकी असनीके सामने यह गाँव है—बीचमें पवित्र गंगाकी विशाल धारा है। कोई रेलवे स्टेशन १० मीलसे कम दूर नहीं है। इस गाँवके लिए आज तक कोई सड़क नहीं है फिर भी यहाँके अधिकांश लोग दूर-दूर परदेशोंमें नौकरी करते हैं।

यहाँकी सभी स्त्रियाँ शामको पिछौरी ओढ़-ओढ़कर सकठाजीके दर्शनको जाती हैं। धार्मिक दृष्टिसे सकठाजीका महत्त्व तो है ही परन्तु सांस्कृतिक एवं सामाजिक दृष्टिसे भी सकठाजीका महत्त्व अद्वितीय है। कोई भी सामाजिक अथवा सांस्कृतिक कार्य संकठाजीके बिना नहीं होता। स्त्रियोंके जीवनका तो यह प्रेरणा-स्रोत है यहाँतक कि घुगली चढ़ाव भी यहींसे प्रसारित होता है।

प्रस्तुत कथामें *सकठा-माहात्म्य आख्यान है जिसमें संकठाजीकी* कृपासे दुखी माँका बेटा परदेससे आ जाता है—निष्कासित पत्नीको अपना पति मिल जाता है और राजाको अपना खोया हुआ राजपाट मिल जाता है। गाँवके पुरुषवर्गके परदेश कमानेका उल्लेख यहाँ हुआ है वही स्थिति इस कथामें विद्यमान है। लगभग ८०% पुरुष कलकत्ता कानपुर, लखनऊ रायबरेली लालगंज बम्बई इत्यादि नगरोंमें नौकरी या व्यापार करते हैं। वर्ष-दो वर्षमें एक बार १० १५ दिनके लिए गाँव आते हैं और घर-जमीनका बन्दोबस्त देख भालकर लौट जाते हैं। कुछ लोग खेतीके सहारे यहीं रहते हैं (जो शहरोंमें सफल न हो सके) और खेती कराते हैं। गंगा और सकठा ही इन लोगोंके लिए परम

सहायक हैं।

सभी स्त्रियाँ वर्षमें कभी न कभी मनौतियाँ मानकर संकठाजीकी सोहागिलें करती हैं जिसमें सोहागिन स्त्रियोंको दावत दी जाती है। इसमें कन्याओं और बुढ़ियोंको भी शामिल कर लिया जाता है। सोहागिलें अनेक प्रकारसे खिलायी जाती हैं—कभी चना चबेना, कभी केवल धककर, कभी मिठाई इत्यादि। कुछ स्थानोंपर तो कभी कभी सोहागिलें नंगी होकर भी खायी जाती हैं।

कथा

एक बुढ़िया थी। उसका बेटा परदेश चला गया। बुढ़िया उसके चले जानेसे बड़ी दुःखी रहती। उसकी बहू भी उसको बातें-कुबातें कहती। बुढ़िया कुएँकी जगतपर बैठी रोया करती। एक दिन उस कुएँ से दियेकी माँ निकली। उसने बुढ़ियासे पूछा कि "तुम क्यों रोती हो?' बुढ़ियाने कोई जवाब न दिया और रोती ही रही। पर जब दियेकी माँने बार-बार पूछा तो बुढ़ियाने खीझकर कहा "क्या करोगी जानकर? क्या तुम मेरा दुःख-दर्द मिटा दोगी?" दियेकी माँ बोली, "तुम बताओ तो सही।' उसने बताया 'मेरा बेटा परदेश चला गया है। मेरी बहू मुझे दिन भर कोसती रहती है और बातें-कुबातें कहती है।' दियेकी माँने कहा बनमें संकठा माता रहती हैं। तुम उनसे अरदास करो। वे सब पूरन करेंगी।'

बुढ़िया सकठाजीके पास आयी। उनके पैरोंपर गिरकर खूब रोयी खूब रोयी। संकठाजीने पूछा, "तुम क्यों रोती हो?' बुढ़ियाने कहा "हमारा दुःख दूर करो तो बतायें। संकठाजीने कहा 'तुम कुछ कहो भी तो। दुखियोंका दुःख दूर करना ही हमारा काम है।' बुढ़िया कहने लगी हमारा बेटा परदेश चला गया है। घरमें बहू बातें-कुबातें कहती है। तो संकठाजी बोलीं 'तुम जाओ। सकठाजीकी सुहागिलें मान दो

और उसके लिए लड्डू बनाओ जाकर।

बुढ़ियाने घर आकर लड्डू बनाये। सात लड्डू बनाये तो आठ हो जायें। वह बड़े धर्म-संकटमें पड़ी। सोचने लगी कि क्या किया जाये। बुढ़िया इसी उधेड़बुनमें थी कि सकठाजी एक बुढ़ियाका रूप रखकर उसके दरवाजेपर आयीं। पूछा कि 'आज तुम्हारे घर क्या है?' बुढ़िया बोली 'सकठाकी सुहागिलें हैं सो मैं सात लड्डू बनाती हूँ पर वे आठ हो जाते हैं।' सकठाजीने पूछा 'अरे तुमने कोई बुढ़िया भी न्यवती है?' बुढ़िया बोली, 'नहीं। तुम कौन हो। तब सकठाजी बोलीं मैं बुढ़िया हूँ। मुझको न्योत दो। बुढ़ियाने उस बुढ़ियाको भी न्योत दिया।

सुहागिलें आयीं। और लड्डू खाने लगीं। सुहागिलोंके खाते-ही खाते बुढ़ियाका लड़का आ गया। सब लोगोंने आकर बुढ़ियासे कहा तुम्हारा लड़का आ गया। बुढ़ियाने कहा, बैठने दो। मैं सुहागिलें खिलाकर [illegible] । पर बहू कोथ फेंककर अपने पतिकी आवभगत करने [illegible] 'हम[illegible]ड़का बोला कि हमारी दुलहिन ही अच्छी है जो हमको [illegible]। माँ होकर भी देखने तक न आयी। जब पूजा समाप्त हुई और सुहागिलें बिदा हुईं तो माँ आयी। बेटेने पूछा माँ इतनी देर कहाँ लगायी?' माँ बोली "तुम्हारे लिए सकठा माताकी सुहागिलें मानो थी वही कर रही थी।

संकठा माताकी कृपासे लड़केका मन अपनी पत्नीकी तरफसे फिर गया। उसने कहा या तो मैं ही रहूँगा या यही रहेगी।' बुढ़िया बोली, बेटा तुम्हें तो बड़ी मुश्किलसे पाया है मैं तुम्हें नहीं छोड़ सकती चाहे बहूको छोड़ना पड़े।' तो बहूको छोड़ दिया। बहू घरसे निकलकर एक पीपलके पेड़पर बैठकर रोने लगी। एक राजा उधरसे आ रहा था। उसने देखा तो बोला कि तुम मेरी धर्मबहन हो मत रोओ। नीचे आ जाओ। वह उतरकर राजाके साथ उसके घर पहुँची। राजाने अपनी रानीसे कहा कि यह मेरी धर्मबहन है इसे किसी प्रकारका कष्ट

न होने पाये। बहूने राजाके घर पहुँचकर सकठा माताकी सुहागिनें कीं। लड्डू बनाकर रानीको भी न्योत दिया। जब सभी लड्डू खाने लगीं तो रानीने कहा, "हमको दूधकी मलाई और भाड़की फूटी तो हजम नहीं होती तुम्हारे कटुरगोला जैसे लड्डू कौन खायेगा?" सुहागिनोंके खाते ही-खाते बहूका पति आ गया। पूजा समाप्त होनेपर वह अपने पतिके साथ जाने लगी तो अपनी धम भाभीसे बोली, "हमारे दुख पड़ा तो हम तुम्हारे यहाँ आयीं तुम्हारे यहाँ अगर कभी दुख पड़े तो हमारे यहाँ निसकोच आ जाना।' यह कहकर वह चली गयी। उसके जानेके बाद संकठाजीका निरादर करनेके कारण राजाका सब हुर-बहुर गया। रानी बोली 'न जाने कैसी थी तुम्हारी बहन कि सब पर भाड़ू फेरती चली गयी।" राजा रानीसे बोले कि हमारी बहन कह गयी है कि हमारे दुख पड़ा तो हम तुम्हारे घर आयीं जब तुम्हारे दुख पड़े तो तुम हमारे घर आना।"

सो राजा रानी धम बहनके यहाँ गये। रानी बोली, जब तुरे यहाँ क्या कर आयी हो कि सब हुर-बहुर गया। वह बोली "हमने कुछ नहीं किया। हम कुछ नहीं जानतीं। जो कुछ जानें सो संकठा माता जाने। उनका दान-मान करा दे ही सब फिरसे भरपूर कर देंगे।" राजा-रानीने संकठाजीकी सुहागिनें कीं। उनके फिर दिन फिरे पर जैसा पहले था वैसा नहीं हुआ।

■

अल्पना तथा पूजा-सामग्री

शी
त
ला
ष्ट
मी

परिवार द्वारा पूजा

निरही मार्वे

हृ
र
छ
ठ

दीवालपर अंकित दीवाली

आँगनमें
चौरेठासे बनायी गयी भयादूज

सतको स्याहू-माता

अ
घ
पी
आँ
ठें
प्र
त
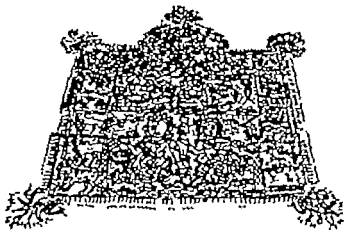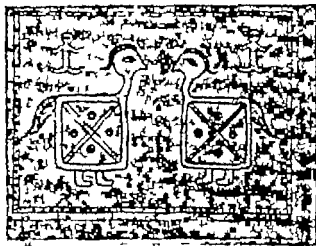
होई
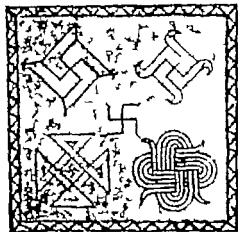
स्वस्तिक
पाँच रूप प्रकार

महाकाली-महालक्ष्मी
दीवारपर बनी अल्पना

चिरैया गौर
[शंकर-पार्वती]

सकठके पुतले
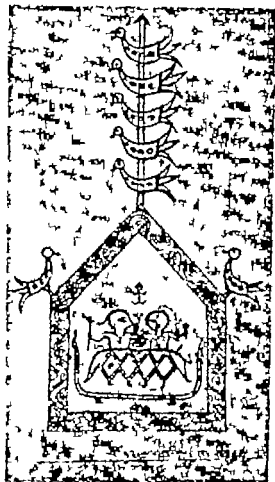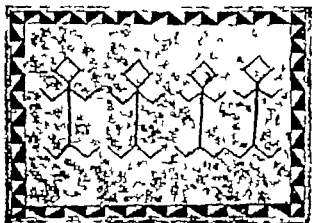
हाथके पाँच प्रकारके थापे
नीचे बीचमें फूल
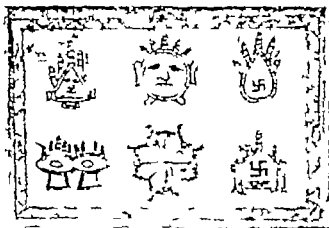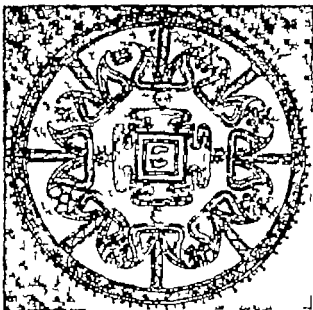
देवोत्थान एकादशी
आँगनमें चौरेठासे आँकी गयी
मल्पना
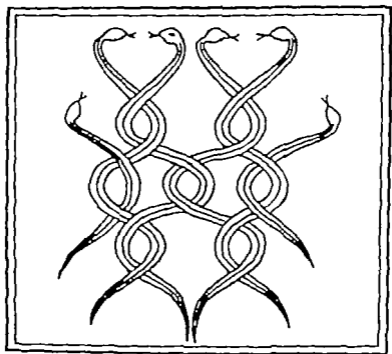
नागपंचमी

नाग देवताकी पूजा-अर्चा

कुछ विशिष्ट अवधी शब्द और उनके अर्थ

अहिवात = सोहाग ।

ऐंठी गोंइठी = आटे या बेसनका बना हुआ एक प्रकारका पक्वान्न ।

ओरमाउब = रस्सीमें बाँधकर पानी भरनेके लिए डोल या बाल्टीको कुएँमें लटकाना ।

कारन = किसीकी मृत्युपर उसके गुणोंको याद करके रोना ।

किसान = यजमान या मालिक जिसके यहाँ ग्रामीण प्रजाजन काम करते हैं ।

कुकुआ = बिना निमन्त्रणके आकर भोजमें शामिल होनेवाले लोग ।

कुल्हवा = मिट्टीका छोटा कुल्हड़ ।

कूरा = ढेर या ढेरी ।

खपरी = मटकीका टूटा हुआ कोई टुकड़ा ।

गटकबु = गटकना घुटकना या लीलना ।

गाढ़ = कष्ट कठिनाई संकट ।

गुधनाव = अप्रसन्न होकर बुदबुदाना बड़बड़ाना ।

गुलगुलिया = छोटे गुलगुले ।

गौद = गुच्छा (आमका)

घमोरी = घमी हुई, धुओई हुई ।

चौरीठ = चावलका आटा भिगोकर अल्पना बनानेके लिए सफेद रंग ।

चसकाइब = रुईका हाथसे तागा निकालना ।

चावत = घमी

जुगाड़ = प्रबन्ध ।

जुड़वावत = शीतल करना।
झून = वक्त, एक बार।
झूरी = सींकों या पौधोंकी बँधी हुई राशि।
टिपरिया = पिटारी।
टेम्हुरा = डण्ठल।
टेरोमा = पत्तियोंदार डण्ठल।
ठमगम = मसरे।
ठपा = तपस्वी।
तिरवाहु = तीन बार कहलाना।
तुतुइया = मिट्टीकी सँकरे मुँहवाली मटकी।
थापकथैया = बेडौल मोटा।
थूनी = बाँस या बल्ली जो छप्परम लगायी जाती है।
दिउल = चनेकी दाल।
दोनैया = छोटा दोना।
धूँधा = भुने ज्वार-बाजरके बने लड्डू।
नार = जानवरोंका रेवड़।
पींडा = गेहूँके आटेको भूनकर बने गुड़का लड्डू।
परई = सकोरा। मिट्टीकी तश्तरी।
पारस = परोसनेका कार्य।
पुन्याय = पुण्य।
पुराही = पुरसे पानी सींचना। पुर चमड़ेका होता है जिसे बैल खींचते हैं।
फरा = दाल भरकर बनता है।
बसेउढ़ा = बासी भोजन।
बहुरी = भुने हुए अन्न।
बियानी = ब्याना-बच्चा देना।
बिराउब = मुँह चिढ़ाना।

बिसेखु = विसेषता लक्षण, प्रभाव ।
बौंडा = अंकुर बढ़े हुए अंकुरका टुकड़ा ।
भकुआ = भोला बेवकूफ ।
मड़नामथ = मचलना शोरगुल मचाना ऊधम करना ।
माबी = जोतनेके समय बैलोंके कन्धोंपर लगायी जाती है ।
मिमुकुरी = मेंढक छोटा मेंढक ।
सगौठा = अरहर या सनका सूखा हुआ डण्ठल ।
लरिकवा = लड़का ।
लरिकौरी = गर्भवती ।
लप्सी = आटा और गुड़से बनती है । एक प्रकारका हलुआ ।
लहरपटोर = लहँगा दुपट्टा ।
भावारी = नाचारी-देवी-गीत ।
लौक = राशि । खेतोंमें खड़ी फ़सल ।
सिम्मित = सिम ।
सुकुआ = भाग ।
बाट = किनारा । देहरीके नीचेका भाग । गोट ।
सिखरन = मट्ठा और भात (गुड़ या शक्कर पड़ा हुआ)
हुरख-मदुरब = गायब होना । (धन-धान्यका चला जाना)
हुलखब = अनादर या तिरस्कार करना ।

■